प० स्कोसिरेव

सोवियत तुर्कमनिस्तान

*

П. СКОСЫРЕВ

ИЗДАТЕЛЬСТВО
ЛИТЕРАТУРЫ
НА ИНОСТРАННЫХ
ЯЗЫКАХ

МОСКВА
1959

प. स्कोसिरेव

सोवियत तुर्कमनिस्तान

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह
मास्को

अनुवादक : डा० नारायणदास खन्ना

विषय-सूची

लेखक की लेखनी से

इस पुस्तक का ग्राधार वह डायरी है जिसे मैंने तुर्कमनिया का भ्रमण करते समय हमेशा बराबर ग्रपने साथ रखा है।

पुस्तक में विवरणों की पूर्णता का कोई दावा नहीं किया गया है। वस्तुतः मेरा ग्रभिप्राय यह था भी नहीं ग्रौर न मैंने इस संबंध में किसी ऐसे कार्य में ही हाथ डाला है जिसे पूरा करने के लिए लेखकों के एक दल की ज़रूरत हो। मेरा तो उद्देश्य यह है कि मैं ग्रपने उस पाठक को, जो कभी तुर्कमनिया नहीं गया है, उस देश की वनस्पति, वहां की ग्रर्थ-व्यवस्था ग्रौर उस जनता के सृजनात्मक परिश्रम से परिचित करा सकूं जिसने ज़ारशाही रूस के इस पिछड़े हुए क्षेत्र को एक सम्पन्न सोवियत प्रजातन्त्र का रूप दिया है।

समस्त सोवियत संघ की भांति सोवियत तुर्कमनिस्तान भी राजनैतिक एवं ग्रार्थिक क्षेत्र में द्रुतगति से उन्नति कर रहा है। लोगों के देखते-देखते वहां ग्रनेकानेक परिवर्तन हो गये हैं। जहां कल तक मरुभूमि थी ग्राज वहां नयी नयी बस्तियां ग्रौर नये नये नगर हैं। ग्रौर सम्प्रति वहां के समस्त ज़िलों ग्रौर क्षेत्रों की तो सूरत ही बदलती जा रही है।

मुझे ग्राशा है कि यदि पाठक को इस पुस्तक में कोई त्रुटियां दिखाई देंगी तो वह मुझे दोष न देगा क्योंकि इन त्रुटियों का कारण युग में द्रुतगति से होनेवाला परिवर्तन ग्रधिक है, मेरी ग़लती या भूल कम।

धूप के उदारदानी और विस्तृत मरुभूमि वाले तुर्कमनिस्तान को लोग 'धुपहले तुर्कमनिस्तान' के नाम से ठीक ही पुकारते हैं।

तुर्कमनिया की गर्म जलवायु ही यहां की सम्पदा और उसकी अनेकानेक आर्थिक कठिनाइयों का मूल-स्रोत रही है। यहां के बड़े बड़े भूखंड—रेगिस्तान, लवण-पंक—बादलहीन आकाश के नीचे सूर्य की गर्मी में बराबर झुलसा करते हैं।

ग्रीष्म के महीनों में यहां का हर प्राणी पानी के लिए तरसता है। किन्तु जहां पानी है वहां भूमि उदार है। हमारे देश को यहां के मुर्ग़ाब नखलिस्तान से सर्वोत्तम प्रकार की महीन रेशे की कपास और कोपेत-दाग़ के पास वाली वादी में पैदा होनेवाले मीठे मीठे अंगूर मिलते हैं। यहां सेब, खूबानी और खरबूज़े होते हैं। यहां अलफ़ालफ़ा (लुसेर्न), जौ और गेहूं की खेती की जाती है। यहां पटसन भी होता है जो सोवियत संघ में हमेशा विदेशों से आता था किंतु युद्धोत्तर काल में तशौज़ और चार्दज्हू के प्रदेशों के सामूहिक फ़ार्मों में पैदा किया जाने लगा है। कपास के खेतों के किनारे किनारे, राजमार्गों के दोनों ओर और खास खास पौधाघरों में, शहतूत के लाखों वृक्ष शाखें पसारे झूमा करते हैं।

कपास, अनाज और फलों के अलावा तुर्कमनिया में कराकुल, ऊन, तेल, ओज़ोकेराइट, बेन्टोनाइट, गन्धक, मछली और मिराबिलाइट भी होता है।

प्रत्येक आनेवाला वर्ष सोवियत तुर्कमनिया में अधिकाधिक समृद्धि और अधिकाधिक खुशहाली का वर्ष होता है।

आइये, हम इस अद्भुत और धुपहली भूमि का, जिसे उपयोग में लाना कोई आसान कार्य नहीं है, आराम से भ्रमण करें और स्वयं अपनी आंखों से देखें कि इस धरा के गर्भ में क्या क्या भरा है।

* * *

नवागन्तुक सर्वप्रथम तुर्कमनिया का वह रूप देखता है जो दूर, बहुत दूर तक फैला हुआ एक रेगिस्तान है, जहां जीवित प्राणी का नामोनिशान नहीं मिलता, जहां आसमान पर बादल नज़र नहीं आते और जहां चारों ओर रेत ही रेत दिखाई पड़ती है।

तुर्कमनिया के एक बड़े विशाल क्षेत्र में स्थायी रूप से हरियाली न होने की बात सुनकर सहसा आपको विश्वास न होगा। परन्तु बात सही है। हां, रेगिस्तान का प्रभाव इससे नष्ट नहीं होता कि वहां हमें फूल, फलोद्यान, खेत, बस्तियां और नगर भी देखने को मिलते हैं।

किन्तु ये नख़लिस्तान जितने ही शीघ्र दिखाई पड़ते हैं उतने ही शीघ्र समाप्त भी हो जाते हैं। सड़क कुछ बाग़ों की परछाइयों के नीचे से जाती और एक-दो बार इधर-उधर घूमती, फलों से लदे हुए वृक्षों के पास बनी हुई मेड़ों से कुछ सीधी सीधी निकलती और कपास के खेतों तथा बस्तियों की सीमाएं बनाती हुई सहसा ऊसर और झुलसी हुई विशाल भूमि पर पहुंचकर समाप्त हो जाती है।

तुर्कमनिया एक विशाल भूखंड है जो पूर्व में आमू-दरिया से लेकर पश्चिम में कास्पियन सागर तक लगभग ७०० मील में और उत्तर से लेकर दक्षिण तक लगभग ३५० मील में बसा है। आकार-प्रकार से यह लगभग स्पेन जितना बड़ा अथवा ब्रिटिश द्वीपों से दूना है।

किन्तु तुर्कमनिया का अधिकांश रेगिस्तान है। मुर्ग़ाब नदी के निचले इलाक़ों और उत्तरीय तशौज़ के क्षेत्र जैसे सबसे घने इलाक़ों में भी नियमित रूप से सिंचित क्षेत्रों की चौड़ाई शायद ही कभी ६ से लेकर ६ मील से अधिक होती हो। यह रेगिस्तान खेती वाली भूमि के दोनों ओर दूर दूर तक फैला दिखाई देता है और यह

भूमि प्रायः सिंचाई की नहरों और नदियों के किनारे किनारे अपेक्षाकृत छोटी छोटी पट्टियों के रूप में नज़र आती है।

तुर्कमान सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र सोवियत संघ के १५ प्रजातंत्रों में सबसे दक्षिण में बसा हुआ है। इसका सबसे उत्तरी सिरा क्रीमिया प्रायद्वीप के सबसे दक्षिणी सिरे से लगभग १२५ मील नीचे है जबकि तुर्कमनिया के सबसे दक्षिण में स्थित कूश्का नगर विषुवत् रेखा से, अल्जीरिया नामक अफ़्रीकी नगर तक की अपेक्षा, निकट है।

प्रजातंत्र के सबसे दक्षिण के क्षेत्र में वर्ष के अधिकांश तक तेज धूप पड़ते रहने के कारण लोग महीन रेशे वाली कपास की सबसे क़ीमती क़िस्में पैदा करते हैं और साथ ही अन्य अनेक उपोष्णदेशीय पौधे भी उगाते हैं। सबसे दक्षिण-पश्चिम के क्षेत्रों में सुम्बार और अत्रेक नदियों की घाटियों में खजूर, ज़ैतून, अनार, ख़ुरमा तथा नींबू-नारंगी आदि के वृक्ष उगे दिखाई पड़ते हैं।

तुर्कमनिया की गर्म जलवायु निश्चय ही उसकी सम्पदा है, किन्तु वहां वर्ष प्रति वर्ष कम वर्षा होना उसके दुर्भाग्य का सूचक है। अशकाबाद में वर्षा का वार्षिक औसत ७.८–६.८ इंच है। अन्य जगहों में तो और भी कम है, उदाहरणार्थ, क्रास्नोवोद्स्क और नेबित-दाग़ में केवल ४.३–४.७ इंच ही है। वर्ष के लगभग २०० दिनों तक वहां के आसमान पर बादल भी नज़र नहीं आते।

तुर्कमनिया की कृषि का आधार प्रायः सिंचाई ही है। किन्तु प्रजातन्त्र के आकार-प्रकार को देखते हुए सिंचित भूमि का कुल क्षेत्रफल बहुत कम है। यद्यपि वह प्रायः उक्रइन की तरह ही लम्बा-चौड़ा है फिर भी उसकी जनसंख्या उक्रइन के तीसवें भाग के बराबर है।

करा-कुम दुनिया भर के बड़े बड़े जलहीन रेगिस्तानों में से एक है और तुर्कमनिया के समस्त केन्द्रीय भाग में फैला हुआ है। यह ठीक है कि करा-कुम एक रेगिस्तान है फिर भी यह कहना ग़लत है कि वहां जीवन नहीं है। सच तो यह है कि वहां सामूहिक फ़ार्मों के बहुत से चरागाह हैं। इस प्रजातन्त्र में कपास-उत्पादन के साथ साथ पशुओं को पालना और उनकी नस्ल बढ़ाना भी एक प्रमुख कार्य है, जो वस्तुतः कृषि का आधार है।

खेती आमू-दरिया, मुर्ग़ाब, तेजेन की घाटियों और पहाड़ियों की तलहटियों, अर्थात् ऐसी जगहों पर की जाती है, जहां बराबर कुछ न कुछ पानी मिलता रहता है। कपास पैदा करने के अलावा यहां के निवासी फल, अंगूर और ख़रबूज़ों की भी खेती करते हैं। अनाज की फ़स्लों में वे चरी और जौ उगाते हैं और पहाड़ी प्रदेशों में गेहूं। इन प्रदेशों में बिना सिंचाई के खेती की जा सकती है।

अधिकांश आबादी नख़लिस्तानों में रहती है किन्तु लोग ऐसी ऐसी जगहों पर भी बसते हैं जहां या तो पानी बिल्कुल नहीं होता, अथवा यदि होता भी है, तो बहुत कम। ऐसे स्थानों पर उनके बसने का कारण यह है कि या तो वहां खनिज-सम्पदा है या कास्पियन समुद्र-तट की भांति की सागर-तलीय सम्पदा। जहां क्रास्नोवोद्स्क, नेबित-दाग़ और कुम-दाग़ के नगर बस गये हैं वहां मीठे पानी के कोई साधन नहीं हैं। यही बात करा-बोगाज़-गोल खाड़ी के आस-पास तथा चेलेकेन प्रायद्वीप की बस्तियों की भी है। यह ठीक है कि पिछले कुछ वर्षों में सोवियत वैज्ञानिकों ने पश्चिमी तुर्कमनिस्तान के अनेक स्थलों पर मीठे पानी के स्रोतों का पता चलाया है किन्तु वे इतनी बड़ी कमी पूरी करने के लिए काफ़ी नहीं हैं।

यदि हम किसी नक्शे पर सभी आबादी वाले स्थानों को, उदाहरणार्थ, हरे रंग से और बहुत कम आबादी वाले या निर्जन स्थानों को पीले (अर्थात् रेगिस्तान-सूचक) रंग से रंग दें तो हम देखेंगे कि जब दक्षिण-पूर्व से लेकर उत्तर-पश्चिम तक की एक बड़ी पट्टी में पीला रंग होगा तो छोटी छोटी-सी पट्टियों में किनारे किनारे पर हरा रंग और कहीं कहीं हरे रंग के बिन्दु-भाग होंगे जो आबादी या जुते-बुए खेतों के सूचक होंगे।

केवल मुर्ग़ाब नख़लिस्तान जनतन्त्र की सीमा का भाग नहीं माना जाता। इस नख़लिस्तान के भूक्षेत्र अधिकांशत: केन्द्रीय और दक्षिण-पूर्वीय करा-कुम के बीच स्थित हैं।

मुर्ग़ाब नख़लिस्तान और उत्तरी तशौज़ क्षेत्र की जनसंख्या सबसे अधिक है।

तुर्कमनिस्तान की आबादी का औसत घनत्व बहुत कम है क्योंकि करा-कुम की विशाल मरुभूमि में प्राय: प्रत्येक सौ वर्ग मील में केवल एक निवासी है। १९ वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, जब तुर्कमनिया रूस का भाग बना था, तुर्कमनिस्तान की आबादी प्रति

वर्ग मील प्राय: एक थी। सोवियत काल में आबादी बढ़ी है किन्तु करा-कुम अब भी सोवियत संघ के सबसे कम बसे हुए क्षेत्रों में से एक है।

करा-कुम (अथवा करा-कुम रेगिस्तान, जैसा कि भूगोलवेत्ताओं ने इस रेतीले प्रदेश का नामकरण किया है) न केवल एक बहुत बड़े क्षेत्र में बसा है अपितु और अधिक क्षेत्र में फैलने की कोशिश भी कर रहा है। कुछ बंजर ज़िलों में—उदाहरणार्थ तशौज़ नख़लिस्तान के दक्षिण में अथवा मुर्ग़ाब के निचले क्षेत्रों के उत्तर में—अब भी कुछ ऐसे भले-भटके आवासों के अवशेष मिल जाते हैं जहां सिंचाई के निमित्त खाइयों की प्रणालियों का विकास किया गया था तथा भूखंडों में खेतीबारी की गयी थी। अब बालू ने इन भूखंडों को ढक दिया है। करा-कुम ने युगों-युगों से खेती से लदे हुए इन भूखंडों पर आक्रमण किया है और मनुष्य के हाथों से उसके खेतों, उसके फलोद्यानों और उसके शाक-सब्ज़ियों के बाग़-बग़ीचों को छीनकर उसकी रत्ती रत्ती भूमि पर अपना अधिकार जमा लिया है।

महान् अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद के वर्षों में प्रकृति के इस प्रकोप के विरुद्ध एक सबल मोर्चा तैयार किया गया। सोवियत जनता ने न केवल इस बढ़ते हुए रेगिस्तान को रोका ही अपितु उससे संघर्ष भी किया, उसपर आक्रमण भी किया।

१७ मई १९१८ को सोवियत शक्ति के उदय की ऊषा-बेला में व्लादीमिर इल्यीच लेनिन ने एक आदेश द्वारा तुर्कमनिस्तान में सिंचाई-साधनों के विकास के लिए ५ करोड़ रूबल की धनराशि निर्दिष्ट की थी।

१९२१ में काकेशिया के साम्यवादियों के नाम अपने एक पत्र में लेनिन ने सिंचाई के प्रमुख महत्त्व की परिभाषा इस प्रकार की थी: "हमें सिंचाई की सबसे अधिक जरूरत है। अन्य बातों की अपेक्षा इसी से प्रदेश की रूप-रेखा बदलेगी, उसमें नवजीवन का संचार होगा, उसका अन्धकारमय विगत काल समाप्त होगा और वह निश्चित रूप से समाजवादी व्यवस्था की ओर बढ़ सकेगा।"

सोवियत शासन-काल में तुर्कमनिया में हज़ारों हैक्टर भूमि में सिंचाई होने लगी है।

ताशकेप्री, कोलख़ोज़-बेन्त और तेजेन जलाशयों का निर्माण पूरा हो चुका है। सिंचाई की बड़ी नहरें—बसागा-केरकी, कराबेकौल, सयात, कुलअरीक, बेर्ज़ेन,

सोवियत-याब आदि बनायी जा चुकी हैं। आमू-दरिया नहर, जो देश भर में सबसे लम्बी नहर (२५० मील से अधिक) होगी, के प्रथम चरण का निर्माण समाप्तप्राय है। इस नहर का प्रसार आमू-दरिया से लेकर मुर्ग़ाब नदी तक होगा।

योजना के दूसरे चरण में तेजेन नदी तक और तीसरे चरण में कोपेत-दाग़ की पहाड़ियों तक, जिसमें प्रजातंत्र की राजधानी अशकाबाद भी शामिल है, आमू-दरिया का पानी लाया जायगा। उपर्युक्त नहर की लम्बाई ५३० मील से अधिक होगी जिसके परिणामस्वरूप फ़स्ल का क्षेत्रफल तो बढ़ेगा ही, साथ ही उससे पास-पड़ोस के घने बसे हुए क्षेत्रों की जलवायु पर भी प्रभाव पड़ेगा।

* * *

एक समय था जब पश्चिम से होकर तुर्कमनिया जाने के लिए कास्पियन सागर का मार्ग ही सबसे छोटा और सबसे सरल पड़ता था। आज भी, जब वायुयानों ने दूरियों को कम कर रखा है, मास्को से अशकाबाद जानेवाले हवाई जहाज़ों को, बाकू और क्रास्नोवोद्स्क के बीच के क्षेत्र में, कास्पियन सागर पार करना पड़ता है। इस प्रकार यात्री को तुर्कमान तट तक पहुंचने के पूर्व लगभग एक घंटे तक इस समुद्र के ऊपर उड़ना पड़ता है।

यदि हवा चल रही हो तो नीला कास्पियन ऐसा दिखाई पड़ेगा मानो बिजली की श्वेत प्रदीप्ति उसका मंथन कर रही हो। समुद्र कभी कभी ही शान्त रहता है। किन्तु इतने बड़े समुद्र पर कहीं न कहीं आंधियां आती ही रहती हैं और फिर दूर दूर तक समुद्र उफनाने लगता है। समुद्र का यह उफान आंधियां थम जाने के बहुत बाद तक बना रहता है। यदि किसीने बाकू से लेकर क्रास्नोवोद्स्क तक की समुद्री यात्रा की है तो उसे यह अवश्य याद रहेगा कि शांत मौसम में भी समुद्र उमड़ा था और उसपर बड़ी बड़ी तरंगें उठी थीं, गिरी थीं—इतनी भयानकता के साथ मानो समुद्र के जल में अधिक गहराई पर कहीं कोई उबाल आ गया हो।

बाकू से लेकर क्रास्नोवोद्स्क तक की यात्रा एक छोटी-सी यात्रा है जिसमें १८ घंटों से कुछ ही अधिक लगते हैं। और जैसे ही जहाज़ चेलेकेन प्रायद्वीप के रेतीले किनारों को छोड़कर क्रास्नोवोद्स्क के किनारे लगने लगता है कि यात्री को

आंधियों तूफ़ानों और समुद्री उफान से मुक्ति मिल जाती है। उत्तर, दक्षिण और पूर्व में क्रास्नोवोद्स्क की खाड़ी मुख्य भूमि से सुरक्षित है। पश्चिम में क्रास्नोवोद्स्क एक अन्तरीप से घिरा है जो समुद्र में बीसों मील तक चला गया है। यही वजह है कि वह प्रथम श्रेणी का बन्दरगाह बन गया है। आस्त्राखान, मख़च-क़ग्रला और बाकू से वर्ष भर क्रास्नोवोद्स्क में आते रहनेवाले माल ढोनेवाले जहाज, यात्री-जहाज़ तथा टैंकर क्रास्नोवोद्स्क में तूफ़ानों और आंधियों से शरण पाते हैं।

यात्री रेल द्वारा भी तुर्कमनिया पहुंच सकता है। यह रेल मार्ग प्रजातंत्र में पूर्व की ओर से प्रवेश करता है। मास्को—अशकाबाद ट्रेन क्यूबिशेव, ताशक़न्द, समरक़न्द और कगान होती हुई तथा खोजा-दवलेत स्टेशन के बाद उज़बेक-तुर्कमान सीमा को पार करती हुई फ़रब पहुंचती है जो तुर्कमनिया में पहला रेलवे-जंकशन है। फ़रब के कई मील आगे आमू-दरिया पर चार्दज्हू रेलवे-पुल है।

चार्दज्हू प्रादेशिक राजधानी और प्रजातंत्र के सबसे बड़े नगरों में से एक है। यहां की चौड़ी सीधी सड़कें आमू-दरिया के पश्चिमी किनारे से लगी लगी बहुत दूर तक चली गयी हैं। ट्रेन चार्दज्हू छोड़ने के प्राय: तत्काल पश्चात् ही करा-कुम में प्रवेश करने लगती है। ट्रेन में बैठे हुए यात्री को वही रेगिस्तान, जो हवाई जहाज़ से एक बड़ा ऊर्मिल मैदान-सा लगता था, एक गहरे समुद्र की भांति प्रतीत होता है। उसे रेलवे-लाइन के पास बड़े बड़े बरख़ान (रेत के लम्बे टीले) दिखाई पड़ते हैं। उसके सामने रेगिस्तान का जो दृश्य पड़ेगा वह उसीको निर्निमेष देखता रह जायगा यद्यपि पहली दृष्टि में उसे उसमें कोई विशेषता नहीं दिखाई देगी। छोटी छोटी पहाड़ियां उन लहरों की भांति प्रतीत होंगी, जो किसी तूफ़ान के कारण ऊंची फेंक तो दी गयी हों, लेकिन बाद में उसी दशा में खड़ी रह गयी हों। मगर उन्हें नज़दीक से देखिये। इन पहाड़ियों पर आपको सकसौल के पेड़ और झाड़ियां दिखाई देंगी। लगभग ५० फ़ीट तक की ऊंची ये पहाड़ियां बालू की ही बनी हुई हैं, जिसमें पैरों के गहरे निशान उसी तरह बन जाते हैं, जिस तरह कीचड़ में बनते हैं। रेगिस्तान उत्तर में सैकड़ों मील तक और दक्षिण में इससे कुछ कम की दूरी में फैला हुआ है। बरख़ान उसी समय तक गतिहीन लगते हैं, जब तक कि हवा में गति नहीं होती। परन्तु जैसे ही हवा चलने लगती है, प्रत्येक

बरख़ान की सतह से बालू के बादल के बादल उड़-उड़कर आकाश में फैलने लगते हैं। यह इस बात का संकेत है कि रेत ने स्थान-परिवर्तन करना आरम्भ कर दिया है।

करा-कुम को पार करने में छ घंटे लगते हैं। और इस सारे समय यात्री को सिवा बरख़ानों के और कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं दिखाई पड़ती। ये बरख़ान कहीं शान्त दिखते हैं, तो कहीं रेत के बादल उड़ाते हुए। यहां अरबों टन रेत है और यहां-वहां लम्बी-पतली व झुकी हुई शाखाओं वाले टेढ़े-मेढ़े वृक्ष बरख़ानों पर ऐसे लगते हैं मानो निर्जीव-से हों। विचित्र विचित्र आकार-प्रकार वाले सकसौल वृक्षों से सुशोभित रेत के इस समुद्र का दृश्य निश्चय ही बड़ा मनोरम है और हृदय पर एक अमिट प्रभाव डालता है—अविस्मरणीय, आकर्षक।

कई घंटों तक रेगिस्तान पर चल चुकने के बाद अन्त में, जब ट्रेन उसे छोड़कर आगे बढ़ती है, तो यात्री को पहले तो मुर्ग़ाब में और फिर तेजेन में कपास के खेत और फलों के बाग़ ही बाग़ दिखाई देते हैं। जिस समय यात्री अशकाबाद में उतरने की तैयारियां करते हैं, तो उन्हें सारे दक्षिणी क्षितिज पर पर्वतमालाएं दिखाई पड़ने लगती हैं।

यदि क्रास्नोवोद्स्क का बन्दरगाह तुर्कमनिया का पश्चिमी द्वार कहला सकता है तो फ़रब और चार्दज्हू के समीप आमू-दरिया पर बना हुआ रेलवे-पुल उसका पूर्वी द्वार कहा जाना चाहिए। प्रजातंत्र की राजधानी अशकाबाद कोपेत-दाग़ पर्वत-श्रेणी के उत्तरी पहाड़ों की तलहटी में, क्रास्नोवोद्स्क और चार्दज्हू के क़रीब क़रीब बीचोंबीच, बसा हुआ एक सुन्दर स्थान है। जहां तक निगाह जाती है, अशकाबाद के उत्तर में दूर दूर तक फैली हुई करा-कुम की बालुकामय भूमि और दक्षिण में पर्वतमालाएं दिखाई पड़ती हैं।

कोपेत-दाग़ प्रजातंत्र की सबसे अधिक प्रभुत्वशाली पर्वतमालाएं है, जो तुर्कमान प्रजातन्त्र और ईरान के बीच सैकड़ों मीलों तक फैली हुई हैं। इसकी कुछ श्रेणियां समुद्र के धरातल से ९५०० फ़ीट तक ऊंची हैं। पर्वतों की तलहटी की संकरी एवं उर्वर घाटी को, जिसके मध्य में अशकाबाद स्थित है, स्वच्छ साफ़ जल उन नदियों, झरनों तथा क्यारिज़ों (भूमिगत जलमार्ग) से मिलता है जो ढालों से आरम्भ होती हैं।

कुगितांग पर्वत-श्रेणी, जो पामीर-अलाई पर्वतमाला का ही एक भाग है, उज़्बेकिस्तान की सीमा के किनारे किनारे तुर्कमनिया के सबसे दक्षिणी-पूर्वी छोर पर छायी हुई है।

कास्पियन सागर के निकट, पश्चिमी तुर्कमनिया में, महान बालख़ान एवं छोटी बालख़ान की सुन्दर श्रेणियां हैं जो सीधे आसमान की ओर चलती चली गयी हैं। सबसे ऊंची चोटी की ऊंचाई ६१६० फ़ीट है। महान बालख़ान श्रेणियों की तलहटी पर एक ज़िला है जहां बहुत अधिक तेल निकाला जाता है। इस ज़िले के बीचोंबीच नेबित-दाग़ नामक एक नगर है।

पश्चिमी तुर्कमनिया का भूखंड प्रजातंत्र का एक औद्योगिक क्षेत्र है। फिर भी यहां पानी की उतनी ही कमी है जितनी कि करा-कुम के बीचोंबीच के इलाक़ों में हो सकती है। यही कारण है कि कोपेत-दाग़ श्रेणियों की, दक्षिणी-पश्चिमी तलहटियों की उर्वरा भूमि, जिसे मेस्सारियन पठार भी कहा जाता है, विकसित नहीं हो सकी है।

* * *

अतीत काल से सिंचित क्षेत्र ही तुर्कमनिया की मुख्य सम्पदा का उत्पादन करते रहे हैं। किन्तु इसके संबंध में पूरी पूरी जानकारी प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि यात्री सम्पूर्ण प्रजातंत्र का निरीक्षण करे और अपने को उन्हीं स्थानों तक सीमित न कर दे जहां पानी मिलता है।

यह सोवियत जनता के अथक परिश्रम का ही फल है कि तुर्कमनिस्तान में जलहीन भूमि का एक नया अर्थ लिया जाने लगा है। अब भूमि के झुलसे हुए या बंजर होने का यह अर्थ नहीं है कि वह निष्प्राण है। महान बालख़ान और छोटी बालख़ान से लेकर तट तक के बीच की विशाल भूमि पर अभी तक ताज़े पानी के स्रोत नहीं मिले हैं। परन्तु क्या उसे निष्प्राण कहा जा सकता है? बाबा-ख़ोजा नामक खारी पानी की सूखी झील के क्षेत्र में तेल निकालने के यन्त्रों की संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। फलतः यहां पिछली दशाब्दी में ही नेबित-दाग़ और कुम-दाग़ जैसे औद्योगिक नगर बस गये थे। प्रादेशिक राजधानी क्रास्नोवोद्स्क एक जलहीन क्षेत्र में है। चेलेकेन प्रायद्वीप में, जहां ताज़े पानी के कोई भी स्रोत नहीं हैं, ओज़ोकेराइट



करा-कुम रेगिस्तान में स्थान परिवर्तित करती हुई बालू का एक दृश्य

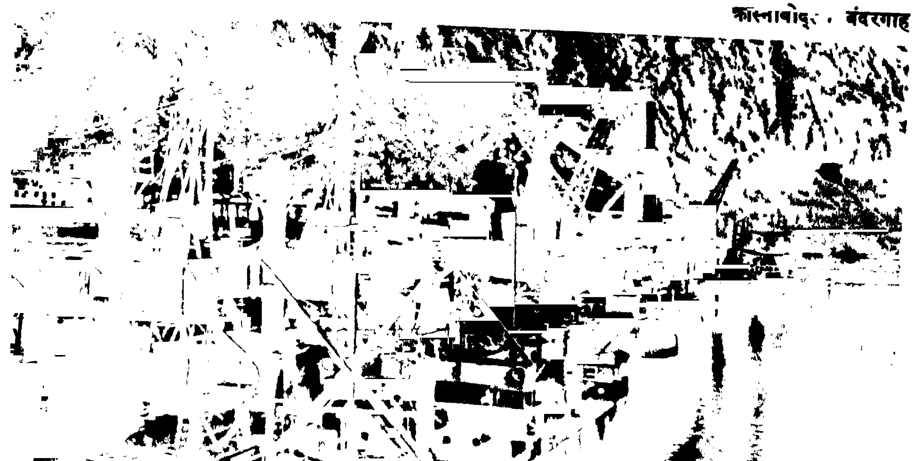
करा-कुम के पेड़-पौधे





क्रास्नोवोद्स्क के समीप कास्पियन सागर का तट

क्रास्नोवोद्स्क : बंदरगाह



तथा अन्य खनिज-पदार्थ बहुत बड़ी मात्रा में निकाले जाते हैं। कास्पियन समुद्र तट पर, जहां यात्री को एक भी नदी-नाला अथवा साफ़ पानी का झरना न दिखाई देगा, सामूहिक रूप से मछलियां पकड़ने का व्यवसाय होता है। एक समय था जब कि क्रास्नोवोद्स्क के उत्तर में स्थित करा-बोगाज़-गोल की खाड़ी निर्जन, जलहीन, निष्प्राण क्षेत्र थी किन्तु आज वहां खनिज-पदार्थों को साफ़ करनेवाले अनेकानेक रासायनिक उद्योग पनप रहे हैं। कुगितांग पर्वतों के ढालों पर आमू-दरिया पार की पेटी में, जो प्रजातन्त्र का एक दूसरा छोर कहा जा सकता है, युद्धोत्तर काल में अनेकानेक रासायनिक तथा कोयला-खान उद्योगों का जन्म हुआ। ये उद्योग बराबर प्रगति करते जा रहे हैं।

सोवियत काल में गन्धक के टीलों में भी जीवन डाला गया। ये टीले ऐसे स्थान पर हैं, जहां किसी ज़माने में मनुष्य तक के दर्शन न होते थे, जो वीरान था, निर्जन था, सुनसान था। करा-कूम में गन्धक-उद्योग में लगे हुए व्यक्तियों को हवाई जहाज़ या मोटर-गाड़ियों द्वारा पानी पहुंचाया जाता है। यहां के लोग सोवियत संघ के अन्य स्थानों पर रहनेवाले लोगों की तरह ही रहते हैं, बसते हैं, काम करते हैं।

सोवियत तुर्कमनिस्तान ने सोवियत देश को कपास, ऊन, करा-कुल, तेल, ओज़ोकेराइट, इमारती सामान, रसायन, लुसेर्न के बीज, फल, शराब, टीन में बन्द खाद्य-पदार्थ, सूती वस्त्र, क़ालीन, कांच तथा अन्य सामान देकर उसकी अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में अपना पूरा योग दिया है।

* * *

१९५९ के आरम्भ में तुर्कमनिया की आबादी १४ लाख थी, जिसमें बहुमत तुर्कमानों का था। यहां रूसी लगभग २० प्रतिशत ही थे। शेष आबादी में उज़्बेक, कज़ाख़, तातार, अर्मेइनी, आज़रबैजानी तथा अन्य क़ौमों के लोग थे।

तुर्कमनिया संसार भर के पुराने सुसभ्य क्षेत्रों में से एक है। वह अनेकानेक ऐतिहासिक झंझाओं और स्मरणीय घटनाओं से होकर गुज़रा है जिनमें से बहुतों ने तो प्राचीन पूर्व तक की बहुत-सी सल्तनतों पर अपना प्रभाव डाला था।

उस क्षेत्र में, जिसे ग्राज मारी प्रदेश कहा जाता है, लगभग ढाई हज़ार वर्ष पूर्व लोगों ने विद्रोह करके कीर को, जो एक फ़ारसी विजेता तथा अकेमेनी सल्तनत का संस्थापक था, क़त्ल कर डाला था।

सिकन्दर महान् तीन शताब्दी ईसा पूर्व अपनी सेनाएं कोपेत-दाग़ की ही उत्तरी तलहटी से होकर ले गया था। ग्रीक विजेता ने मुर्ग़ाब नदी के किनारे मरगियाना का अलेक्सान्द्रिया नामक एक नगर बसाया था जो बाद में मर्व (मारी) के नाम से मशहूर हुआ। आज भी इस नगर के ध्वंसावशेष मारी (मर्व) और बैराम-अली स्टेशनों के बीच, रेलवे-लाइन के उत्तर में, मिलते हैं।

अशकाबाद के निकट, बागीर ग्राम के समीप, सोवियत पुरातत्ववेत्ता नेसा के, जो पर्फ़िया के प्राचीन राज्य की राजधानी था, ध्वंसावशेषों का पता चलाने के लिए खुदाई कर रहे हैं।

सातवीं शताब्दी में अरब के हमलावर उस प्रदेश में घुस आये थे जिसे आज तुर्कमनिया कहा जाता है। अरबों ने सस्सानी शासकों के अन्तिम शासक येज़्देगेर्द तृतीय को गद्दी से उतार दिया था। उसके जीवन का अन्त मारी के समीप मुर्ग़ाब के किनारे हुआ था।

मध्ययुगीन तुर्कमनिस्तान का उत्तरी भाग ख़ोरेज़्म का केन्द्र था जो एशिया की पुरानी सल्तनतों में से एक अति शक्तिशाली सल्तनत और बीजगणित के संस्थापक प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल-ख़ोरेज़्मी की जन्म-भूमि थी। तुर्कमान जनजातियां अपने पड़ोसियों के मध्य बड़े बड़े पशुपालकों, बहादुर लड़ाकुओं और ऐसे मेहनती काश्तकारों के रूप में प्रसिद्ध थीं जो अपने खेतों की सिंचाई के लिए बड़ी योग्यता के साथ नदी-नालों के उसी थोड़े-से जल-संग्रह से काम चलाते थे जो उन्हें वहां उपलब्ध हो जाता था।

शताब्दियों तक तुर्कमानों को शत्रुओं से अपने देश की बार बार रक्षा करनी पड़ी थी। १२ वीं शताब्दी में चंगेज़ख़ां के दलों ने कास्पियन सागर पार के सबसे बड़े नगरों – मर्व और उरगेन्च – को मटियामेट कर दिया था। क़रीब डेढ़ सौ वर्ष बाद तैमूर लंग की सेना ने भी यहां ऐसे ऐसे अत्याचार किये जिन्हें देखकर ज़ालिम चंगेज़ ख़ां की भी आंखें झुक जातीं।

१८ वीं शताब्दी में इन 'विश्व-विजेताओं' के क्षणिक प्रताप ने फ़ारस के नादिर शाह के हृदय में भी बलबला पैदा किया। जन्म से तुर्कमान होते हुए भी उसने अपनी फ़ौजें तुर्कमनिया में, ख़ोरेज़्म और बुख़ारा में, उतारीं। इस हमले ने तुर्कमानों पर अनेकानेक कष्टों और दुखों की वर्षा की।

तेक्के के शासक कीमीर-केर ने अलग अलग जातियों तथा क़ौमों को एकत्र करके नादिर शाह का मुक़ाबला करने का प्रयत्न किया था। इसी लिए आज तक यहां के लोग उसे एक बुद्धिमान और साहसी सेनानी के रूप में याद किया करते हैं। उनके लोक-गीतों में तो वह अमर ही हो गया है।

एक सोवियत नाटककार कराजा बुरूनोव ने कीमीर-केर विषयक दन्त-कथाओं को अपने एक नाटक का आधार बनाया। यह नाटक तुर्कमान के थियेटरों में स्थायी स्थान प्राप्त कर चुका है। अशकाबाद की जनता इस नाटक को बहुत पसन्द करती है।

तुर्कमान के एक प्रतिभाशाली कवि मख़तूमकुली (फ़गी) के गीत और उसकी कविताएं तुर्कमान जनजातियों को लगभग दो सौ वर्षों तक अनुप्राणित और उनमें इस आशा का संचार करती रही हैं कि वह दिन आयेगा जब कि उनके औल (गांव) और बन्जारों के शिविर सुसंगठित होंगे और एक ख़ुशहाल और स्वतंत्र देश का निर्माण करेंगे।

महान् अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति ने जनता के इस स्वप्न को साकार बना दिया। क्रान्ति के पहले तक तुर्कमनिया की न तो अपनी राष्ट्रीय प्रभुता थी और न राजकीय एकता ही। लोगों की दशा ख़राब थी और वे घोर दरिद्रता में बसर कर रहे थे। जनजातियां पानी और सर्वोत्तम चरागाहों तक के सवालों पर आपस में बुरी तरह जूझने लगती थीं। उस समय यहां का समाज भी कुछ ऐसा था जिसमें अमीर-ग़रीब के भेद बड़े प्रखर होते जा रहे थे।

विगत कालों में तुर्कमान जनजातियां अनेकानेक अवसरों पर रूस से सहायता की याचना किया करती थीं। यह बात इतिहास-प्रसिद्ध है कि एक बार मंगुश्लक तुर्कमानों का शासक खोजा नेपेस १८ वीं शताब्दी के आरम्भ में पीटर प्रथम से मिलने के लिए पीटर्सबर्ग आया था। अरल तथा कास्पियन सागरों के बीच जलहीन स्तेपी के पड़ जाने के कारण तुर्कमान बन्जारों को बड़ा कष्ट था। इसीलिए खोजा

नेपेस ने पीटर प्रथम से यह प्रार्थना की थी कि वे "ग्रामू-दरिया का बहाव बदलकर" उसे उसके पुराने मार्ग उज़बोई में करवा दें। उसका कहना था कि यदि नदी का मार्ग बदल दिया गया होता तो पश्चिमी तुर्कमनिस्तान की मरुभूमि इस समय फिर वैसी ही लहलहाती होती जैसी कि जनश्रुतियों में सुनने को मिलती थी।

नेपेस का प्रस्ताव पीटर को बड़ा दिलचस्प लगा। फलतः १७१५-१६ में उसने ग्रलेक्सान्द्र बेकोविच-चेरकास्की के नेतृत्व में एक दल ग्रामू-दरिया के डेल्टा का निरीक्षण करने के लिए भेजा। परन्तु इस दल का ग्रन्त बड़ा दुखद रहा ग्रौर वे लोग ख़ीवा के ख़ान के विश्वासघात के कारण रास्ते में ही मार डाले गये। बेकोविच भी मार डाला गया।

पीटर की रुचि मध्य एशिया की नदियों के ग्रास-पास की ज़मीनों में हमेशा ही बनी रही। १७१७ में उसने फ़्लोरियो बेनेवेनी के नेतृत्व में एक दल मध्य एशिया भेजा था। बेनेवेनी बुख़ारा गया ग्रौर कई वर्ष ख़ीवा में भी रहा तथा ज़ार द्वारा सौंपे गये कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करता रहा। इस दल ने ग्रामू-दरिया के बारे में बहुत-सी उपयोगी सूचनाएं एकत्र कीं।

१६वीं शताब्दी के मध्य में धीरे धीरे रूसी प्रभाव मध्य एशिया में फैलता जा रहा था। उस समय तुर्कमान ग्रसंगठित-से लोग थे। ग्रामू-दरिया के निचले क्षेत्रों में बसनेवाली कुछ जातियां एवं वंश ख़ीवा के ख़ान के ग्रत्याचारों से त्रस्त हो चुके थे। ग्रामू-दरिया के बीच के मार्ग पर स्थित, इस नदी द्वारा सिंचित भूमि पर बसनेवाली तुर्कमान जनता पर बुख़ारा के ग्रमीर का शासन था। इसी प्रकार ग्रन्य क्षेत्रों—करा-कुम, कोपेत-दाग़ की तलहटियों, तथाकथित ग्रख़ाल (ग्रख़ाल-तेक्के नख़लिस्तान) ग्रौर कास्पियन सागर—के इर्द-गिर्द के भूखंड में भी ग्रनेकानेक जनजातियों तथा जातियों के मुखियों, ख़ानों या फिर डंडों के बहादुरों का राज्य था जो परस्पर लड़ भिड़कर ग्रपनी वीरता का परिचय दिया करते ग्रौर ग्रपनी रिग्राया को सताया करते थे।

पानी के स्रोतों पर धनी सामन्तों का प्रभुत्व था। जातियों के बड़े-बूढ़े ख़ान के प्रशासक ग्रौर उसके बहुसंख्यक कर्मचारी निरीह देहक़ानों (ग़रीब किसानों) ग्रौर चबानों (चरवाहों) को ग्रपने ग्रत्याचारों की चक्की में पीस रहे थे।

तुर्कमानों को आजीवन यही चिन्ताएं सताया करती थीं कि उनके अभाव कैसे दूर होंगे, कल क्या होगा, उनके पशुओं के लिए चारे की जितनी कमी है उससे उनका काम कैसे चलेगा, उनके परिवार का जाने कौन कब भूख से तड़पकर जान दे दे, और जाने कब वे किसी धनी और कुलीन के दुर्व्यवहारों का शिकार हो जायें?

तुर्कमनिया का रूस के साथ मिल जाना एक ऐसा प्रगतिशील और ऐतिहासिक क़दम था जिसने तुर्कमानों के भावी जीवन पर गहरा प्रभाव डाला।

शुरू शुरू में औलों के आन्तरिक जीवन में कोई तात्कालिक एवं उल्लेखनीय परिवर्तन देखने में न आया। पहले की ही भांति उस समय भी तुर्कमानों के जीवन-दर्शन थे—शरीअत, इस्लामी सिद्धान्त और आदत, अर्थात् तुर्कमानों का अलिखित रीतिक क़ानून। परिवार के कर्ता को अपने परिवार वालों तथा कनिष्ठ संबंधियों के प्राण ले लेने तक का अधिकार प्राप्त था। पत्नी अपने पति की ग़ुलाम थी और वह उसपर कोई भी अत्याचार कर सकता था। औल में सारी ताक़त मुखियों और मुल्लों के हाथों में थी। पहले की ही भांति, ग़रीबी देहक़ान के पल्ले पड़ी थी। सूखे का डर साग-सब्ज़ी के छोटे से छोटे खेत पर और भूमि के छोटे से छोटे टुकड़े पर बराबर छाया रहता था और शीत हमेशा मानव और पशु दोनों को ही समान रूप से दुर्भिक्ष का सन्देश देकर चला जाता था।

जो भी हो, रूस के साथ तुर्कमनिया के मिल जाने के फलस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था और संस्कृति में क्रान्तिकारी परिवर्तन देखने को मिले। १८८० में रूसी सरकार ने ट्रान्स-कास्पियन (सेन्ट्रल एशियन) रेलवे के निर्माण में हाथ लगाया और अतिशीघ्र उसे पूरा कर लिया। रूस से आये हुए लोग रेलवे के किनारे किनारे बस गये और नयी नयी बस्तियां तथा नगर बसने लगे। कपास के आदि उद्यमों ने वहां पनपना आरम्भ कर दिया और उनमें रूसी नवागन्तुकों के साथ साथ वे तुर्कमान किसान भी काम कर रहे थे जो अपने अपने औलों को छोड़कर ग़रीबी से निजात पाने के लिए मिलों की ओर दौड़ने लगे थे। परन्तु रूसी पूंजीवादियों ने, जो ज़ार की सेना के साथ साथ तुर्कमनिस्तान में प्रवेश करते जा रहे थे, स्थानीय जनता के जीवन को सुखमय बनाने का कोई भी प्रयत्न नहीं किया क्योंकि वे अपना ही घर भरने में लगे हुए थे। हां, इस काल में रूसी श्रमिकों

ग्रौर तुर्कमनिया के ग़रीबों के बीच सम्पर्क ज़रूर बढ़ने लगा। देहक़ान भी यह ग्रनुभव करने लगे थे कि सभी रूसी एक जैसे नहीं होते। ग्रब वे समझने लगे थे कि रूसी ग्रधिकारियों एवं व्यवसायियों तथा रूस के श्रमिकों, जो सभी मेहनतकशों के समान थे, के बीच ज़मीन-ग्रासमान का ग्रन्तर है। रूस के साथ मिल जाने से तुर्कमनिया भी रूस के ग्रार्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक जीवन का एक ग्रंग बन गया। साम्यवादी पार्टी के नेतृत्व में निरंकुशता तथा पूंजीवाद के ख़िलाफ़ जो महान क्रान्तिकारी संघर्ष ग्रारम्भ किया गया उसकी लपटें तुर्कमनिया में भी पहुंचीं। ग्रौर जब महान ग्रक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की विजय हुई तो तुर्कमानों को भी स्वतंत्रता मिली। ग्रब वे ग्राज़ाद हुए ग्रौर तुर्कमानों का भाग्य तथा उनकी जीवन-चर्या हमेशा हमेशा के लिए बदल गयी।

* * *

कास्पियन पार के क्षेत्रों में सोवियत शासन की स्थापना के पूर्व बोल्शेविक संघटनों की मेन्शेविकों, सामाजिक क्रान्तिवादियों ग्रौर बुर्जवा राष्ट्रीयतावादियों से, जिन्होंने ज़ार के सत्ताविहीन होने के बाद से एक तथाकथित तुर्कमान कार्यकारिणी समिति की स्थापना की थी, मुठभेड़ हुई थी। दिसम्बर १९१७ के ग्रारम्भ में ग्रशकाबाद में ट्रान्स-कास्पियन प्रदेश की सोवियतों का एक ग्रधिवेशन हुग्रा जिसमें जन-प्रतिनिधियों की एक परिषद् का निर्वाचन किया गया ग्रौर ग्रक्तूबर क्रान्ति के पूर्ण समर्थन की घोषणा की गयी। जन-प्रतिनिधि-परिषद् ने १५०० जवानों का एक रेड-गार्ड तैयार किया। किन्तु इस समय नव सोवियत सरकार की स्थिति बड़ी विषम थी। कास्पियन पार के नगरों ग्रौर बस्तियों में श्रमिकों की संख्या कम थी, ग्रौर इधर विदेशी साम्राज्यवादियों का सहारा पाकर सामाजिक क्रान्तिवादी ग्रौर मेन्शेविक क्रान्ति के विरुद्ध ग्रपनी ग्रावाज़ें बुलन्द कर रहे थे।

१९१८ के ग्रीष्म-काल में एक प्रतिक्रान्तिवादी विद्रोह का जन्म हुग्रा। सामाजिक क्रान्तिवादियों तथा मेन्शेविकों ने ग्रशकाबाद पर ग्रधिकार कर लिया, वहां के कमीसरों – जितनीकोव, मोलीबोज्को, तेल्लिया – तथा ग्रन्य लोगों की निर्ममतापूर्वक हत्या की ग्रौर दूसरे देशों से सहायता की ग्रपील की।

कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने लाल सेना का संचालन करने के निमित्त मिख़ाईल फ्रूंज़े और वलेरियन कूइबिशेव को मध्य एशिया भेजा। फलतः दुशाक, कॉख़का तथा क्रास्नोवोद्स्क जानेवाले मार्गों पर हमलावरों और बसमाचियों का सफ़ाया किया गया। फ़र्वरी १९२० में लाल सेना की बहादुरी के कारण आक्रमणकारियों के छक्के छूट गये और उन्हें कास्पियन पार का अपना अन्तिम गढ़ क्रास्नोवोद्स्क भी ख़ाली कर देना पड़ा।

"तुर्किस्तान के साम्यवादी साथियों के नाम" १९१९ में अपने एक पत्र में व्लादीमिर इल्यीच लेनिन ने कहा था कि मध्य एशिया में सोवियत शासन का सबसे पहला तात्कालिक कर्त्तव्य यह है कि वह "तुर्किस्तान के लोगों के साथ सम्यक् संबंध स्थापित करे... और अपने कार्यों से यह सिद्ध कर दे कि हम सचमुच साम्राज्यवाद का नामोनिशान तक मिटा डालना चाहते हैं।"*

गृह-युद्ध के पश्चात् तुर्कमान जनता के इतिहास में शान्तिमय एवं रचनात्मक जीवन के प्रथम युग का उदय हुआ।

मध्य एशिया में सोवियत शासन का एक प्रमुख कार्य जनता के सांस्कृतिक स्तर के उत्थान में शीघ्रातिशीघ्र सहायता देना था।

* * *

२०वीं शताब्दी के आरम्भ में तो तुर्कमानों में साक्षरता के दर्शन यत्र-तत्र और यदा-कदा ही होते थे। प्रत्येक एक हज़ार की आबादी पर शायद छ या सात को ही दस्तख़त कर लेने भर का ज्ञान होता था। सारे ट्रान्स-कास्पियन में केवल ५८ स्कूल थे जहां विद्यार्थियों को अरबी में शिक्षा दी जाती थी, जिसे जनसाधारण नहीं समझ पाते थे।

फिर भी गृह-युद्ध के चार ही वर्ष बाद तुर्कमनिया के नगरों तथा औलों में अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करनेवाले स्कूली बच्चों और प्रौढ़ों की संख्या १७,००० हो गयी।

* लेनिन ग्रंथ संग्रह, खण्ड ३०, पृष्ठ ११७

आज तुर्कमनिस्तान में सर्वत्र साक्षरता है। इस प्रजातंत्र में १२१८ माध्यमिक स्कूल, ३० टेकनिकल स्कूल और ६ उच्च शिक्षा की संस्थाएं हैं।

१९२४ में तुर्कमनिया में एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी। उस वर्ष मध्य एशिया की श्रमिक जनता की इच्छानुसार सोवियत तुर्किस्तान और खोरेज़्म तथा बुख़ारा की प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय सीमाओं का परिसीमन किया गया था। इस कार्य ने एक स्वतंत्र राज्य में रहनेवाली तुर्कमान जनता को उनके लम्बे इतिहास में प्रथम बार एक सूत्र में बांधा। और इस प्रकार तुर्कमान सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र की स्थापना हुई।

प्रजातंत्र की सोवियतों के प्रथम अधिवेशन में स्त्रियों की समानता और जल तथा भूमि संबंधी सुधारों जैसे अनेक सवालों पर जो निर्णय किये गये, उन्होंने औल के प्राचीन जीवन में एक क्रांति उपस्थित कर दी।

१९२५ में मारी और अशकाबाद के सिर्फ़ इन्हीं दो ज़िलों में लगभग २५०० शासकों के अधिकारों को छीना गया और लगभग ३०,००० भूमिहीन और ग़रीब देहक़ानों को भूमि और सिंचाई के लिए पानी का उचित कोटा दिया गया।

सोवियत तुर्कमनिया अब बढ़ते बढ़ते एक उन्नतिशील समाजवादी प्रजातन्त्र बन गया है, जिसकी एक उच्च राष्ट्रीय संस्कृति है, उत्तरोत्तर बढ़ते हुए उद्योग-धंधे हैं और जहां बड़े पैमाने पर यंत्रीकृत कृषि की जाती है। प्रथम पंचवर्षीय योजना-काल (१९२८–१९३३) में अशकाबाद में सूती कपड़ों की एक मिल, जूतों की एक फ़ैक्ट्री, सिलाई का एक कारख़ाना और रेशम की एक फ़ैक्ट्री की स्थापना की गयी; करा-बोगाज़-गोल की खाड़ी और करा-कुम में बड़े बड़े रसायनिक उद्यमों का निर्माण किया गया; धातु के कामों के एक उद्योग की स्थापना की गयी, और तेल के उत्पादन में काफ़ी वृद्धि हुई। यह आर्थिक विकास दूसरी तथा तीसरी पंचवर्षीय योजना-कालों में भी होता रहा। इन योजना-वर्षों में ३०० औद्योगिक प्रतिष्ठान, बिजलीघर तथा जलशक्ति की योजनाएं चालू की गयीं। द्रुतगति से औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप प्रजातंत्र की अर्थ-व्यवस्था में भी मूलभूत परिवर्तन देखने में आये। पहली पंचवर्षीय योजना के प्रथम वर्ष में तुर्कमान अर्थ-व्यवस्था में उद्योगों का अंश तीस प्रतिशत से कुछ ही अधिक था। १९५२ में—चौथी पंचवर्षीय

योजना के अंत तक—उद्योगों में लगी हुई पूंजी प्रजातंत्र की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के कुल विनियोजन की ७५ प्रतिशत हो गयी।

युद्ध के पश्चात् सोवियत तुर्कमनिया और भी तेज़ी के साथ आगे बढ़ने लगा। १९४८ के भूकम्प के कारण उसे बहुत अधिक क्षति पहुंची थी। किन्तु सोवियत जनता की सहायता से उसके वे घाव बहुत शीघ्र भर गये जो इस प्राकृतिक संकट ने उसपर किये थे।

तुर्कमनिस्तान में कपास का क्षेत्रफल बढ़ने के साथ साथ उसकी पैदावार भी बढ़ती जा रही है। १९५७ में तुर्कमनिस्तान में ३७२ हज़ार टन कपास जमा की गयी थी। यह ध्यान रखना चाहिए कि कपास तुर्कमनिया की खेतिहर फ़स्लों में से एक मुख्य फ़स्ल है।

तेल-उद्योग में भी बड़ी सफलता के साथ विकास हो रहा है। नेबित-दाग़, जो रेगिस्तान के क़रीब क़रीब बीच में बस गया था, अब उन्नति कर रहा है। कुम-दाग़ नाम का एक नया नगर भी बरखानों के बीच पनप रहा है और क्रास्नोवोद्स्क तो प्रमुख बंदरगाह ही बन गया है।

पश्चिमी तुर्कमनिस्तान, जो कभी एक रेगिस्तान था, अब एक प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है।

पूर्वी ज़िलों में बड़े बड़े परिवर्तन हो रहे हैं। चार्दज्हू—उर्गेन्च रेलवे, जो पांचवीं पंचवर्षीय योजना का एक महत्त्वपूर्ण निर्माण-कार्य है, खुल गयी है। फलतः तशौज़ प्रदेश के घने बसे हुए ज़िलों और करा-कल्पकिया तथा ख़ोरेज़्म की जनता को दुनिया के साथ यातायात के प्रथम विश्वस्त साधन उपलब्ध हुए। इन ज़िलों तथा देश के अन्य भागों के बीच माल का आना-जाना अब केवल आमू-दरिया की मेहरबानी पर ही निर्भर नहीं रह गया है। इस नदी पर जल-यातायात हमेशा ही एक बड़ी खतरनाक और इतनी कठिन बात समझी जाती थी कि लोग उससे होकर यात्रा करने का जल्दी साहस न कर पाते थे। बीच बीच में रेत के टीलों, छिछले पानी तथा अकस्मात् मोड़ आ जाने के कारण कभी कभी तो इतनी बाधा पड़ती थी कि तशौज़ और चार्दज्हू के बीच माल मोटर-गाड़ियों पर लाद लादकर भेजा जाता था, यद्यपि रेत में पहियेदार गाड़ियों का चलना खुद ही एक कठिन कार्य है। यदि

अभी हाल तक भी इस रास्ते से होकर सामानों का आना-जाना ऊंटों के क़ाफ़िलों पर होता रहा हो तो आश्चर्य की बात नहीं।

आमू-दरिया के किनारे किनारे नयी रेलवे बन जाने से उन ज़िलों का द्रुतगति से और अधिक विकास होने लगेगा जो मध्य एशिया की इस बड़ी नदी के डेल्टा के आस-पास बसे हुए हैं।

दक्षिणी प्रदेशों की रूप-रेखा भी बदल रही है। करा-कुम नहर का निर्माण पूरे ज़ोरों से हो रहा है। १९५८ में इस नहर के पानी के कारण मुर्ग़ाब नख़लिस्तान का क्षेत्र काफ़ी बढ़ा और करा-कुम के दक्षिणी-पूर्वी भागों की तो काया ही पलट गयी।

आज तुर्कमनिया जानेवाला यात्री वहां किसी भी जगह क्यों न पहुंच जाय – कास्पियन के असुविधाजनक तटों पर, तशौज़ और मुर्ग़ाब के कृषि-प्रदेशों में, कोपेत-दाग़ की तलहटियों में, नेबित-दाग़ के तेल-क्षेत्रों में अथवा आमू-दरिया के किनारे – उसे जन-जीवन के आर्थिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों और मनुष्य के दिन प्रतिदिन के जीवन में प्रगति के, उन्नति के लक्षण अवश्य दिखाई पड़ेंगे। हर जगह, हर चीज़ में जीवन का एक नया दृष्टिकोण है, उसमें एक नूतनता है। और इसका कारण यह है कि यहां की जनता साम्यवाद के अपने लक्ष्य के मार्ग में आनेवाली समस्त कठिनाइयों और विरोधों को पार करती हुई शान के साथ आगे बढ़ रही है।

तुर्कमान समुद्री तट के किनारे-किनारे

अध्याय १

१

यदि तुर्कमनिया के कास्पियन तट को उत्तर से दक्षिण तक एक सीध में नापा जाय तो उसकी लम्बाई ३१० मील निकलेगी। किन्तु यदि तट के घुमाव-फिराव और करा-बोगाज़-गोल की दूर तक प्रविष्ट खाड़ी का भी हिसाब लगा लिया जाय तो तुर्कमान प्रजातंत्र का समुद्री तट इससे दो से लेकर ढाई गुना तक लम्बा होगा।

तुर्कमनिया के विषय में लोगों का यह विश्वास जम चुका है कि वह जलहीन क्षेत्रों तथा क़ाफ़िले के प्राचीन मार्गों की भूमि है। किन्तु इसके विपरीत भी हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि समुद्र के निकट होने के कारण वह एक ऐसा देश है जहां से समुद्री मार्ग से यातायात हुआ करता था। अतीत काल से ही उसका समुद्री तट बाहरी दुनिया के लिए उसके प्रवेश-द्वार का काम करता रहा है।

पीटर प्रथम द्वारा बेकोविच-चेरकास्की के नेतृत्व में भेजा गया विशिष्ट दल समुद्र के रास्ते ही कास्पियन पार की मरुभूमि में पहुंचा था। ख़ोजा नेपेस ने भी आस्त्राख़ान तक तो समुद्री मार्ग पकड़ा था, परन्तु उसके बाद वह वोल्गा के रास्ते रूस होता हुआ ही रूसी जार के दरबार तक पहुंच सका था। बाद के वे समस्त अभियान, जिन्होंने तुर्कमनिया को एक नया स्वरूप दिया है (इन अभियानों में वैज्ञानिक अभियान भी शामिल थे), समुद्र द्वारा ही उस दूरस्थ भूमि तक पहुंचे थे।

किन्तु तुर्कमनिया के समुद्री क्षेत्रों का वास्तविक अध्ययन केवल सोवियत शासन-काल में ही सम्भव हो सका था।

सभी अनुसन्धानकर्त्ता इस बात से सहमत थे कि इस प्रदेश की विशेषताएं दो हैं – खनिज-पदार्थों की बहुतायत तथा पानी की अत्यधिक कमी। यद्यपि सम्पूर्ण प्रजातंत्र में (आमू-दरिया की घाटी तथा मुर्ग़ाब नख़्लिस्तान को छोड़कर) पानी की कमी है फिर भी सबसे अधिक कमी पश्चिमी तुर्कमनिस्तान में है।

तुर्कमनिया के बारे में प्राचीन विचार-धारा यह थी कि वह एक ऐसी भूमि है जहां पानी का पूर्ण अभाव है। किन्तु युद्धोत्तर काल में सोवियत जल-वैज्ञानिकों ने बहुत हद तक इस विचार-धारा को असत्य सिद्ध कर दिया है। द्‌जैबेल के निकट नये नये भूमिगत स्रोतों का पता चला है। अब पिछले कई वर्षों से नेबित-दाग़ जैसे बड़े नगर में पानी की कमी का ज़रा भी अनुभव नहीं हो रहा है और प्रजातंत्र के कुम-दाग़ और चेलेकेन जैसे नये नये नगरों के निवासियों को तो पानी बम्बों और नलों की सहायता से मिलने लगा है। अब वे उन दिनों को भूल गये हैं जब उनके यहां पानी देने का कार्य भिश्ती किया करते थे अथवा उन्हें जल साफ़ करनेवाले स्टेशनों पर निर्भर रहना पड़ता था।

बाकू से आनेवाले जहाज़ जिस समय क्रास्नोवोद्स्क में समुद्र में धंसी हुई सफ़ेद चूने के पत्थर की चट्टानों के पास से मुड़ते हुए निकलते हैं, उस समय उन्हें तुर्कमनिया की कुछ ऊंची और पथरीली ज़मीन दिखने लगती है। इस स्थान से समुद्री तट एक गुलाबी नुकीली दीवाल की भांति लगता है अथवा यदि उसका और ठीक-ठीक वर्णन किया जाय तो कहा जा सकता है कि वह उन अनेक दीवालों की भांति है जो खाड़ी की कांच जैसी चिकनी और पीलापन लिये हुए हरी हरी सतह से चिपकी-सी दिखाई पड़ती हैं। चट्टानों की तलहटी के पास बंदरगाह की क्रेनें, जहाज़ों की चिमनियां और लोकोमोटिव-इंजनों के धुएं भी वातावरण का एक अंग हैं। गुलाबी, भूरी या सफ़ेद रंग के पत्थर से बनी इमारतें या मकान बन्दरगाह के आस-पास बड़े सुन्दर से प्रतीत होते हैं। तट के दाहिनी और बायीं ओर लम्बी लम्बी क़तारों में इस प्रकार के भवन मन को विशेष रूप से अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। यहां

गोल जल-टंकियों की रूप-रेखाएं आसमान में बहुत दूर, ऊंचाई तक, चली गयी हैं। यह है क्रास्नोवोद्स्क।

यद्यपि क्रास्नोवोद्स्क के चारों ओर तट की निकटवर्ती पर्वत-श्रेणियां दुमंज़िली या तिमंज़िली इमारतों की तुलना में काफ़ी ऊंची ऊंची दिखाई पड़ती हैं, फिर भी इनकी सबसे ऊंची चोटी समुद्री धरातल से केवल ८५० फ़ीट ऊंची है।

क्रास्नोवोद्स्क पर्वतमालाओं की तलहटी में बसा है जहां बनस्पति का नामोनिशान तक नहीं मिलता। यदि आप किसी जहाज़ पर से इस नगर की ओर देखें तो आपको साफ़ आसमान, मकानों की छतों के भी ऊपर निकली हुई भूरी भूरी पहाड़ियों की नोकें, दूर तक पूर्व में फैली हुई कुबा-दाग़ पर्वत-श्रेणी, शानदार संस्कृति-प्रासाद, जिसके आगे नगर की बाक़ी सारी इमारतें बौनी-सी लगती हैं, और जहाज़ी गोदामों के निकट लंगर डाले हुए जहाज़ों से निकलता हुआ धुआं दिखाई देगा।

जैसे ही जैसे आप समुद्र-तट के निकट आते जायेंगे आपको हरे हरे कोहरे के धब्बों जैसी कोई चीज़ दिखाई देगी। ये नये नये पेड़-पौधों की पत्तियां हैं जिन्हें देखकर क्रास्नोवोद्स्क के निवासी मारे प्रसन्नता के अपनी सुध-बुध खो देते हैं। इनपर उन्हें गर्व है। वे प्रत्येक पौधे की, जो उनकी ज़मीन में जड़ जमा लेता है, और उस प्रत्येक छोटी छोटी टहनी की क़द्र करते हैं जिसमें पत्तियां फूट आती हैं।

नगर की सीमाएं बनाती हुई अनेक पर्वत-श्रेणियां हैं जिनमें पश्चिम में शा-क़दम की श्रेणी मुख्य है। छोटी छोटी श्रेणियां, जिन्हें हम शा-क़दम की ही बहनें कह सकते हैं, धीरे धीरे खाड़ी की ओर ढलवां होती हुई उस छोटी-सी पहाड़ी पर समाप्त हो जाती हैं जो किसी तिमंज़िले मकान से ऊंची नहीं प्रतीत होती।

क्रास्नोवोद्स्क एक हल्के ढालू तट पर बसा है जहां ऊंचे-नीचे पहाड़ों ने तट से कुछ दूर एक विशाल प्लेटफ़ार्म बना रखा है।

नगर की मुख्य सड़कें समुद्र से लेकर इसी प्लेटफ़ार्म तक जाती हैं। क्रास्नोवोद्स्क प्रगतिशील है। पहले वह एक ज़िले का नगर था लेकिन अब एक प्रदेश की राजधानी है। भावी क्रास्नोवोद्स्क की भी एक सामान्य योजना तैयार कर ली गयी है। शा-क़दम की पर्वत-श्रेणी पश्चिम दिशा से नगर को बन्द कर लेती है। निकट भविष्य में नये नये सुन्दर मकान रमणीक शा-क़दम के ऊंचे पर्वत के चारों

ओर एक आकर्षण पैदा करेंगे, नगर का केन्द्रीय भाग पश्चिम की ओर हटा दिया जायेगा और तिकोनी चोटी, जिसके कारण नगर के सौन्दर्य में चार चांद लग गये हैं, और समुद्री तट के बीच नयी नयी सड़कें बन जायेंगी। योजना में न केवल मकानों के शिल्प की ही व्यवस्था है अपितु उसमें इस बात की भी चर्चा है कि वृक्षारोपण की योजना क्या होगी।

२

क्रास्नोवोद्स्क न सिर्फ़ समुद्र की ओर से तुर्कमनिया का एक द्वार है अपितु तुर्कमान तट का भी सबसे बड़ा नगर है। क्रास्नोवोद्स्क प्रजातंत्र के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन का केन्द्र है। यहां यातायात की भी अच्छी व्यवस्था है और यातायात के ही कारण वह अशकाबाद, करा-बोगाज़-गोल और चेलेकेन के उद्योगों तथा समुद्री किनारे के सामूहिक मीनाशयों तथा पृष्ठप्रदेश के पशु-पालन-फ़ार्मों से संबद्ध है। यह पृष्ठप्रदेश पश्चिमी तुर्कमनिस्तान का रेतीला अथवा पहाड़ी क्षेत्र है।

यह नगर अपेक्षाकृत नया है। इसकी स्थापना १८६९ में हुई थी, यद्यपि रूस मे आकर यहां बसनेवाले सबसे पहले बाशिन्दे इससे भी लगभग ड़ेढ सौ वर्ष पहले बस गये थे। बेकोविच-चेरकास्की के नेतृत्व में एक अभियान-दल के खीवा भेजे जाने मे पूर्व पीटर प्रथम ने कास्पियन सागर के पूर्वी किनारे पर क्रास्नोवोद्स्क नामक एक गढ़ बनाने के आदेश दिये थे। किन्तु इस दल के सदस्यों के मारे जाने के पश्चात् उसे भी नष्ट कर डाला गया। परन्तु इसकी यादगार अब अमर भी है। क्रास्नोवोद्स्क की समुद्र में चली गयी नुकीली ज़मीन पर स्थित किज़ील-सू नामक बस्ती में एक स्मारक है जहां उन रूसी सैनिकों की क़ब्रें हैं जिनकी वहां मृत्यु हुई थी। 'किज़ील-सू' (रूसी में – 'क्रास्नाया वोदा') का अर्थ होता है 'लाल पानी'। पीटर के ज़माने का क्रास्नोवोद्स्क गढ़ उस स्थान के निकट था जहां अब किज़ील-सू का वह फ़ार्म है जहां मछलियां पकड़ी जाती हैं।

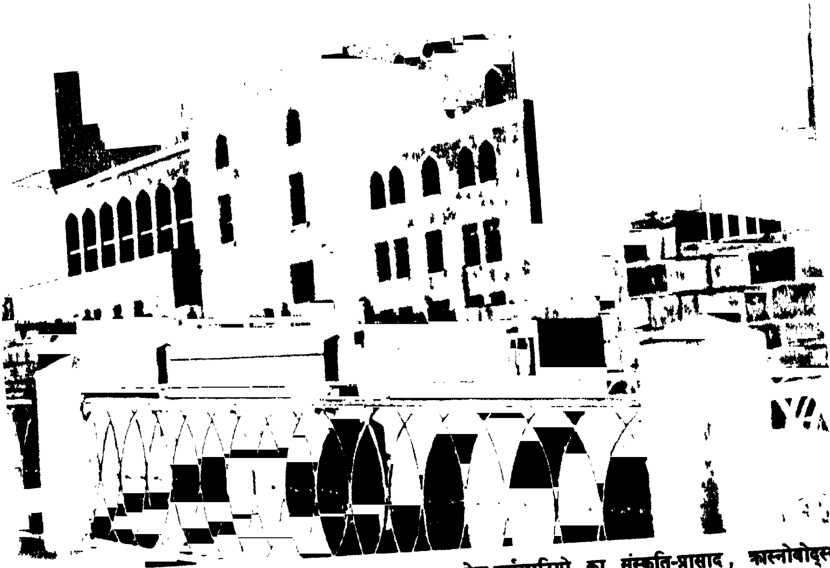
बेकोविच-चेरकास्की की मृत्यु के प्रायः सौ वर्ष बाद जनरल अ० येरमोलोव ने काकेशिया से कास्पियन सागर के पूर्वी तट का अनुसन्धान कराने के लिए न० मुराव्योव तथा ल० पोनोमार्योव नामक दो अफ़सरों को भेजा था।



कीरोव मार्ग, क्रास्नोवोद्स्क

श्रमिक-जन-प्रतिनिधि की क्रास्नोवोद्स्क नगर-सोवियत का भवन





तेल-कर्मचारियो का संस्कृति-प्रासाद, कास्नोवोद्स्क

तेल-कर्मचारियो के लिए पोलीक्लीनिक, कास्नोवोद्स्क



उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि उन्हें "क्रास्नोवोद्स्क खाड़ी के किनारे एक ऐसे सुन्दर स्थल का पता चला है जो ट्रेड-फ़ैक्ट्री अथवा गढ़ के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है"।

मुराव्योव-पोनोमार्योव अभियान के कोई आधी शताब्दी बाद उस स्थान पर एक नगर की स्थापना की गयी थी जिसे अभियान ने निर्दिष्ट किया था। उस ज़माने में वह काकेशिया पार के सैनिक प्रदेश के अधीन एक एकाकी दुर्ग था जिसके पास मध्य एशिया के साथ संवहन बनाये रखने के कोई साधन न थे। इस स्थिति में उस समय तक कोई परिवर्तन न हुआ जब तक कि मध्य एशियाई रेलवे को उज़ून-अदा, जो खाड़ी के दक्षिण-पूर्वी किनारे पर बसी एक बस्ती है, के अपने प्रारंभिक स्थल से हटाकर उपर्युक्त दुर्ग से आरम्भ न कर दिया गया।

क्रास्नोवोद्स्क में पहली ट्रेन की सीटी १८९६ में सुनाई दी और उसके साथ ही साथ इस दूरस्थ गढ़ के लिए एक नये युग का उदय हुआ। यह वह युग था जिसमें युरोप और एशिया को मिलानेवाली संवहन-लाइनों पर पड़ने के कारण क्रास्नोवोद्स्क का महत्त्व बहुत बढ़ गया था।

अब यह वह स्थान बन गया था जहां युरोपीय रूस, काकेशिया या ईरान से मध्य एशिया के भीतरी भागों को जानेवाले यात्री अपनी समुद्री यात्रा समाप्त करते थे और फिर ख़ुश्की की यात्रा आरम्भ कर देते थे। यही बात ढुलाई के माल के संबंध में भी होती थी।

शताब्दी के आरम्भ में क्रास्नोवोद्स्क में अनेकानेक उद्यम पनपने लगे जिनमें से मुख्य थे—जहाज़ों की मरम्मत के कारख़ाने तथा एक इंजन-यार्ड, एक लकड़ी-गोदाम और एक छोटी-सी मछली-फ़ैक्ट्री जो वास्तव में मछलियों को धुएं में सुखाने के सायबान के अलावा और कुछ भी न थी।

ज़ारों के अधिकारी कभी क्रास्नोवोद्स्क जाना पसन्द न करते थे क्योंकि वे वहां जाना कालेपानी की सज़ा समझते थे। उनका ख़्याल था कि चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ यह नगर एक गढ़-कारावास है और वहां के नीचे, चौरस छतों वाले पत्थर के मकानों में उनका दम घुट जायेगा। सड़कें काफ़ी चौड़ी थीं किन्तु मकान इतने छोटे कि उनसे साया तक न मिल पाता। चूंकि क्रास्नोवोद्स्क

देश के अत्यधिक गर्म नगरों में से एक है इसलिए इसकी सड़कों पर साये की व्यवस्था न होना लोगों के लिए बड़ा कष्टकर था।

ताज़े पानी की निरन्तर कमी बनी रहने के कारण गर्म जलवायु और भी असह्य हो जाती थी। आस-पास के पर्वतों से तो रत्ती भर नमी की आशा न की जा सकती थी। वर्षा कभी कभी ही होती थी। प्रतिवर्ष ३.६-४.७ इंच तक वर्षा हो जाने से न तो ज़मीन ही भीगती है और न जनता को पानी ही मिल पाता है। ताज़ा पानी या तो रेल से लाना पड़ता था या समुद्र से, या फिर वहीं समुद्री पानी को साफ़ करके बनाना पड़ता था। सोवियत शासन-काल में अनुसन्धानकर्त्ताओं को क्रास्नोवोद्स्क के उत्तर के रेगिस्तान में पानी के स्रोत का पता चला। यद्यपि यह पानी कुछ खारी है फिर भी उस पानी की अपेक्षा स्वादिष्ट है जिसे जल साफ़ करनेवाले केन्द्र सप्लाई किया करते थे। इस नये स्रोत से नलों द्वारा जल-वितरण की व्यवस्था द्वितीय विश्व-युद्ध काल में की गयी। इस व्यवस्था से पानी की सप्लाई में एक-तिहाई की वृद्धि हुई, साथ ही इससे क्रास्नोवोद्स्क की सड़कों पर पेड़ लगाने तथा दो पार्कों का निर्माण करने में भी मदद मिली। शौम्यान मार्ग के दोनों ओर वृक्षों की क़तारें लगायी गयीं और अगले वसन्त तक उनमें पत्तियां भी फूट आयीं। इस प्रकार जिस नगर में पहले पहाड़ियों के भिन्न भिन्न प्रकार के लाल-भूरे और समुद्र तथा आकाश के विविध नीले रंग दिखाई पड़ते थे अब वहां हरियाली का भी प्रादुर्भाव हुआ।

क्रान्ति के पूर्व कहा जाता था कि यदि क्रास्नोवोद्स्क में पानी की बहुतायत भी होती, तो भी वहां की पथरीली और रेतीली भूमि वनस्पति के लिए बिल्कुल बेकार थी। इस कथन को सिद्ध करने के लिए नगर के उस एकमात्र छोटे सार्वजनिक उद्यान का ज़िक्र किया जाता था जहां सक्सौल के वृक्ष, जंगली ज़ैतून और रेगिस्तानी बबूल प्रत्येक शरद्-ऋतु तक धूल तथा टूटे-फूटे पत्थरों के बीच सूख जाया करते थे।

यह कथन असत्य था। यदि उन दिनों में भी नगर के जीवन पर एक विवेकपूर्ण दृष्टि डाली जाती तो उक्त कथन असत्य सिद्ध हो गया होता। यहां के निवासी वर्षों तक पानी का प्रयोग करने में कंजूसी बरतते आये थे, फिर भी जलकल पर बाल्टियां भरते समय उनका कुछ न कुछ पानी छलक ही जाता था (यह उल्लेखनीय है कि यहां क्रान्ति के पूर्व और क्रान्ति के कुछ समय बाद तक पानी का राशन

था)। चूंकि जलकल थोड़े ही थे और प्रातःकाल से लेकर रात में देर तक टोंटियां चलती रहती थीं, अतएव दिन में वहां पर एक छोटी-मोटी नाली-सी बन जाती थी। इतना पानी इन व्यस्त जलकलों के समीप वृक्षों को उगाने भर को काफ़ी था। इस प्रकार वहां बेंत के तीन वृक्ष उग आये — एक नगर के मध्य में, उस सड़क पर जिसे आजकल कार्ल मार्क्स सड़क कहते हैं, और दो रेलवे-स्टेशन के समीप एक रेलवे क्षेत्र में।

जलकलों के पास उगे हुए बेंत वृक्ष इस बात का प्रमाण हैं कि वहां की मिट्टी बंजर नहीं है और यदि पानी दिया जाय, तो वहां भी हरियाली लहलहा सकती है।

३

यद्यपि क्रास्नोवोद्स्क का तीव्रगति से विकास हुआ है फिर भी वह एक प्रकार से बाक़ी तुर्किस्तान से कटा कटा ही रहा। क्रास्नोवोद्स्क कास्पियन पार के सैनिक ज़िले का भाग था और प्रशासनीय दृष्टि से मध्य एशिया से संबद्ध न था। क्रास्नोवोद्स्क उएज़्द की स्थापना १९ वीं शताब्दी के अन्त में ट्रान्स-कास्पियन प्रदेश के बन जाने के बाद हुई थी। क्रान्ति-काल में क्रास्नोवोद्स्क को शत्रुओं का उपनिवेश बनना पड़ा था। देनीकिन तथा सामाजिक क्रान्तिवादियों ने १९१८ के ग्रीष्म-काल में स्थानीय सोवियत के प्रमुख प्रतिनिधियों की अपमानजनक हत्या करके अशकाबाद पर क़ब्ज़ा कर लिया लेकिन वे उस लाल सेना के आक्रमण के आगे न टिक सके जो चार्दज्हू से बढ़ती हुई वहां तक आयी थी। इसी समय श्वेत रक्षकों की सहायता के लिए आक्रामकों ने भी तुर्कमनिया पर हमला किया जिसके परिणामस्वरूप ट्रांस-कास्पियन के अधिकृत इलाक़ों की भांति क्रास्नोवोद्स्क में भी एक औपनिवेशिक शासन स्थापित हो गया। यहां श्रमिक जनता पर अमानवीय अत्याचार किये गये। बाद में ब्रिटिश कमांडर जनरल मालेसन ने लिखा था कि वह सेन्ट्रल एशियन रेलवे और यदि संभव हो तो कास्पियन के सभी समुद्री मार्गों पर अधिकार करने के लिए कुछ भी करने को तैयार था। पावेल बेस्शापोचनी नामक एक श्रमिक ज़िन्दा गाड़ दिया गया था। हमलावरों ने बंदरगाह पर एक तैरता हुआ क़ैदख़ाना ही बना लिया था जो बाद में

बहुत-से सोवियत नागरिकों की क़ब्र साबित हुआ। नगर के २७ निर्दोष निवासियों को यगमान नामक एक रेलवे-स्टेशन तक ले जाया गया और मौत के घाट उतार दिया गया।

हमलावरों ने एक पूर्व-निश्चित योजना के अनुसार १६१८ के ग्रीष्म-काल में चेलेकेन के तेल-क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया और वहां 'माबराद' ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनी की नींव डाली जिसके द्वारा उन्होंने सारा तेल ईरान के रास्ते इंगलैंड भेज दिया।

सितम्बर १६१८ में बाकू के २६ कमीसर श्वेत रक्षकों द्वारा पकड़े गये 'तुर्कमान' नामक जहाज़ में क्रास्नोवोद्स्क लाये गये। जब हमलावरों को उनके क़ैदियों के बारे में मालूम हुआ तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। जनरल मालेसन ने लिखा था— "निश्चय ही यह समाचार बड़े महत्त्व का था। यह रूस के उन आन्दोलनकारियों का पहला जत्था था जो हमारे समुद्री तटों पर आये थे।"

यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि मालेसन ने 'हमारे तट' का प्रयोग किया था।

बन्दरगाह के समीप नगर के एक मैदान में पत्थर की एक नीची इमारत है। यह एक बन्दी-मौत-घर था। अब यह २६ कमीसरों का संग्रहालय (म्यूज़ियम) है। इसके मुख्य द्वार के सामने शौम्यान, फ़िओलेतोव, जपरीद्ज़े और अज़ीज़बकोव की ऊर्ध्वप्रतिमाएं बनायी गयी हैं।

संग्रहालय के द्वार शायद कभी नहीं बन्द होते। इस नगर में भ्रमणार्थ आनेवाले लोग इस संग्रहालय को अवश्य देखते हैं। आतपस्नात् मैदान में प्रसन्नचित सोवियत बच्चों की चहल-पहल, बसों की पों-पों और उत्तरोत्तर बढ़ते हुए एक तटवर्ती औद्योगिक नगर के कोलाहल के बीच से होता हुआ पर्यटक जब संग्रहालय में प्रवेश करने के पश्चात् सीखचों की खिड़की वाले एक लोहे के दरवाज़े के सामने आकर खड़ा होता है, तो उसका हृदय भावुकता और करुणा से भर जाता है। जिस समय वह खिड़की में से खुरदरे खुरदरे लकड़ी के कुछ पटरों, मिट्टी के गन्दे-से फ़र्श और सफ़ेदी से पुती हुई एक नीची छत को देखता है, तो उसे चालीस वर्ष पहले का वह दिन याद आ जाता है जब इसी जगह पर खड़े होकर जल्लादों की क्रूर आंखों ने बहादुर

बन्दियों को घूरा था, और बुज़दिल न्यायाधीशों ने उन वीरों को मौत का हुक्म सुनाया था जिन्हें मरकर अमर होना था। सोवियत जनता उनके नामों को कभी न भूलेगी।

क्रास्नोवोद्स्क की बहुत-सी सड़कों के नाम इन्हीं मृत वीरों के नामों पर रखे गये हैं। एक मुख्य सड़क का नाम स्तेपान शौम्यान के नाम पर है। दूसरी सड़कों के नाम हैं—फ़िओलेतोव, अज़ीज़बेकोव और जपरीद्ज़े मार्ग।

पहले कुछ पंचवर्षीय योजना-कालों में तुर्कमनिस्तान के उद्योगों में विकास हुआ। क्रास्नोवोद्स्क में अर्द्धादिकालीन स्मोक ड्राइंग शेड के स्थान पर अब आधुनिक ढंग का एक बड़ा मछली कम्बाइन बनाया गया है।

नगर के आस-पास इमारती पत्थर बहुतायत से पाया जाता है। यहां उसकी खुदाई का काम बहुत बड़े पैमाने पर आरम्भ किया गया था।

यह पत्थर देखने में खूबसूरत, हल्का, मज़बूत और झंझरीदार है। इसका प्रयोग नगर की सर्वोत्तम इमारतें बनाने में किया गया था। इस पत्थर का स्थानीय नाम 'ग्युशा' है। इसे एक मामूली आरे से काटा जा सकता है तथा कुल्हाड़ी या चाकू से छीला या बराबर किया जा सकता है।

अन्य इमारती सामानों—अलबास्टर तथा सिलखड़ी—का उत्पादन भी बढ़ रहा है।

बन्दरगाह के रूप में क्रास्नोवोद्स्क का महत्त्व बराबर बढ़ता जा रहा है।

समुद्र द्वारा तुर्कमनिया तथा मध्य एशिया के अन्य प्रजातंत्रों को ले जाये जानेवाले सामानों में उत्तरी काकेशिया, उक्रइन तथा वोल्गा क्षेत्र का अनाज, रूस के उत्तरी इलाक़ों की इमारती लकड़ी, उराल का लोहा, दोनबास का कोयला, मास्को के निर्मित सामान, मशीन के औज़ार, कारें, लारियां तथा ट्रैक्टर भी शामिल हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि वे सारी चीज़ें, जो अभी तक तुर्कमनिस्तान के उद्योग-धंधों में नहीं बनायी जा रही हैं, और वह सारा माल, जिसका उत्पादन अभी वहां की मिट्टी में सम्भव नहीं हो पा रहा है, इस नगर से होकर ही जाता है। तुर्कमनिया कपास, तेल, नमक, सल्फ़ेट, गन्धक, ओज़ोकेराइट, ऊन, फ़र, कांच, शराब, ब्रोमाइन, आयोडीन, गोश्त, मछली, फल, अल्फ़ालफ़ा के बीज, नट (काष्ठफल), रेशम, रंग, प्रजनन के काम आनेवाले घोड़े और तुर्कमान क़ालीन, जो वहां की हस्तकला के

उत्कृष्ट नमूने हैं, 'क्रास्नोवोद्स्क के फाटकों' के रास्ते काकेशिया, उक्राइन तथा रूसी प्रजातन्त्र को भेजता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध में अन्तिम विजय प्राप्त करने में क्रास्नोवोद्स्क बन्दरगाह का विशेष हाथ रहा है। जिस समय फ़ासिस्टों की सेनाएं स्तालिनग्राद में घुस आयी थीं उस समय एक यही बन्दरगाह था जो काकेशिया को बाक़ी देश से मिलाता था। इससे वह समस्त राष्ट्र में संवहन का एक प्रमुख केन्द्र बन गया था। उस समय रात-दिन जहाज़ों पर माल लादने या उतारते रहने के कारण यहां के लोगों को एक क्षण का भी अवकाश न था। माल रखने के लिए यहां नये नये गोदाम भी बनवाये गये थे। इस नगर के श्रमिकों और निवासियों के कामों में हाथ बंटाने के लिए कास्पियन सागर-तट के आस-पास फैले हुए सामूहिक फ़ार्मों के मछुए भी आगे आये और इन सबकी मेहनत के परिणामस्वरूप सैनिक दस्ते, शस्त्रास्त्र तथा टैंक क्रास्नोवोद्स्क के रास्ते काकेशिया भेजे गये। बाकू तथा ग्रोज़्नी का तेल क्रास्नोवोद्स्क के रास्ते रूस भेजा जाता था।

इन स्मरणीय दिवसों के कारण ही क्रास्नोवोद्स्क का नाम सोवियत भूमि के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया।

क्रास्नोवोद्स्क ने काकेशिया और उक्राइन से आने-जानेवाले हज़ारों निष्क्रमणार्थियों को शरण दी। उनके रहने और उनकी भोजन-व्यवस्था का काम आसान न था। उनके लिए पानी का प्रबन्ध भी करना होता था और यह समस्या सबसे अधिक जटिल थी। युद्ध-काल में काकेशिया के लोगों को ही वहां से हटने के लिए मजबूर न होना पड़ा था, अपितु उन फ़ैक्ट्रियों को भी वहां से हटाना पड़ा था जिन्हें दुश्मन ने नष्ट-भ्रष्ट कर डालने की धमकी दी थी।

समाजवादी निर्माण-काल में नगर में अभूतपूर्व विकास हुआ है। विकास केवल नगर की बाह्य आकृति में ही नहीं अपितु उसकी जनता में भी हुआ है। क्रान्ति से पूर्व क्रास्नोवोद्स्क जानेवाले यात्री को भली भांति याद होगा कि बन्दरगाहों तथा रेलवे-स्टेशनों पर मैले-कुचैले कपड़े पहने कुली काम की झोंक में इधर-उधर मारे मारे दिखाई पड़ते थे (इन कुलियों को वहां अम्बाल कहा जाता था)। नंगे भूरे हृष्ट-पुष्ट हाथों वाले ये लोग, जिनके कन्धों पर रस्सी तथा पीठों पर 'ज़ीन' होती थी, प्राय: रेलवे और बन्दरगाहों में माल लादने-उतारने के काम में लगे रहते थे।

जब क्रास्नोवोद्स्क एक प्रादेशिक उएज़्द था उस ज़माने में अम्बाल क्रास्नोवोद्स्क का एक मामूली मज़दूर समझा जाता था। उसे बहुत कम तनख़्वाह मिलती थी। उसके रहने का भी कोई ठिकाना न था—कभी किसी गोदाम के किसी गन्दे कोने में पड़ रहता तो कभी बन्दरगाह के निकटस्थ किसी अहाते में। उसके मनोरंजन का एकमात्र साधन था शराबख़ाना।

आज क्रास्नोवोद्स्क सोवियत संघ की भूमि पर बहनेवाले समुद्रों के सर्वाधिक साज-सज्जापूर्ण बन्दरगाहों में से एक है। आज मशीनें प्रायः वह सारा काम कर लेती हैं जिसमें शारीरिक श्रम की ज़रूरत पड़ा करती थी। इन्हें देखकर तो अम्बालों का पुराने ज़माने का कार्य तो एक भूली हुई सी बात लगती है।

क्रास्नोवोद्स्क, जो वस्तुतः समुद्री कर्मचारियों और रेलवे-श्रमिकों का ही एक नगर है, युद्धोत्तर वर्षों में औद्योगिक कर्मचारियों का नगर भी बन गया है। अब तो यहां इंजीनियरों और टेक्नीशियनों की एक पूरी फ़ौज ही है।

इस बड़े औद्योगिक नगर—क्रास्नोवोद्स्क— में सम्प्रति बहुत-सी शिक्षा-संस्थाएं हैं, नये नये स्कूल हैं और एक संगीत-विद्यालय है।

क्रास्नोवोद्स्क के सोवियत मेहनतकशों—रूसी, तुर्कमान, कज़ाख़, आज़रबैजानी, आरमेनियन—का अन्तर्राष्ट्रीय परिवार अपने नगर से प्यार करता है और उसे उसपर गर्व है।

इस नगर को इसके प्रथम उपोष्णदेशीय पौधे—खजूर तथा कैक्टस— १९४५ की बसन्त-ऋतु में प्राप्त हुए थे। इनकी कलमों ने वहां आसानी से जड़ पकड़ ली। किन्तु जब जाड़ा आया तो पूरे नगर की आंखें उन्हीं पौधों की ओर लगी रहीं क्योंकि जनवरी और फ़रवरी के महीनों में किसी भी क्षण पहाड़ों से उत्तरी बर्फ़ीली हवाओं के चलने की आशंका की जा सकती है। क्रास्नोवोद्स्क में औसत वार्षिक तापमान उस तापमान से ऊपर रहता है जिसपर पानी जमकर बर्फ़ हो जाता है। फिर भी उत्तरी हवाओं के झोंके इतने ठंडे होते हैं कि स्वयं खाड़ी तक थोड़े थोड़े समय के लिए जम जाती है। ऐसे ठंडे मौसम की सर्द हवाओं के आक्रमण से उपोष्णदेशीय पौधों को सुरक्षित रखना कोई आसान काम न था।

लेकिन अब कुछ वर्षों से खजूर के पौधे यहां की जलवायु के अभ्यस्त होकर पूरे वृक्ष बन गये हैं।

युद्ध के बाद से क्रास्नोवोद्स्क नगर आकार-प्रकार में बहुत अधिक बढ़-चढ़ गया है। अभी हाल ही तक सारे नगर को आधे घंटे में देखा जा सकता था। परन्तु अब कम से कम इतना ही समय बन्दरगाह से लेकर नये इलाक़े के बीचोंबीच बसे हुए निर्माता-भवन तक बस द्वारा जाने में लग जाता है।

अध्याय २

१

क्रास्नोवोद्स्क के इर्द-गिर्द स्थित पीले भूरे रंग की कुबा-दाग़ पर्वत-श्रेणियां कोई स्वतंत्र श्रेणियां नहीं हैं। वे तो उस बड़ी पर्वत-माला के वस्तुतः एक उठे हुए छोर के समान हैं जो प्रायः सम्पूर्ण प्रायद्वीप में फैली हुई है तथा जिसकी सीमा पर क्रास्नोवोद्स्क स्थित है। इसके दक्षिण में खाड़ी, पश्चिम में खुला समुद्र और उत्तर में करा-बोगाज़-गोल है।

इस पर्वत-माला को क्रास्नोवोद्स्क पठार कहते हैं। इसकी ऊंचाई समुद्री धरातल से ९१२ फ़ीट है। यह पर्वत-माला धीरे धीरे उत्तर की ओर ढालू होती गयी है। दूर से वह एक ऐसे मैदान की भांति प्रतीत होती है जिसके बीच बीच में पहाड़ियां, बहुत-सी जलदरियां (जल-मार्ग) तथा वर्षाकालीन झरनों के सूखे तल हों। किन्तु करा-बोगाज़-गोल तक पहुंचने के पहले पठार की ऊंचाई बढ़नी शुरू हो जाती है। एक स्थल पर तो उसकी ऊंचाई ८७६ फीट हो जाती है।

इस पठार की विशेषताएं हैं—गहरी जलदरियां तथा खड्ड, जो पत्थर के उन बड़े बड़े 'बाथ-टबों' के समान प्रतीत होते हैं जिनसे पानी निकाल दिया गया है। इनमें से कुछ 'बाथ-टब' २६० फ़ीट से भी अधिक गहरे हैं।

भूगर्भशास्त्रियों का मत है कि ये 'बाथ-टब' भूमि के धरातल में विकार पैदा होने के परिणामस्वरूप बन गये हैं। इस बात को दृष्टि में रखते हुए कि इस क्षेत्र में प्रायः भूकम्प आया करते हैं यह मत सम्भाव्य प्रतीत होता है।

कुछ भूकम्पों ने तो बहुत अधिक विध्वंस किये हैं, उदाहरणार्थ, १८९५ के ग्रीष्म-काल का एक भूकम्प इसी प्रकार का एक अत्यधिक विध्वंसकारी भूकम्प था। इसके पहले धक्के प्रातःकाल दो बजकर पचीस मिनट पर लगे थे। सुबह होते होते तो कास्पियन तट के बहुत-से इलाक़ों की रूप-रेखा भी पहचानी न जा सकती थी। उज़ुन-अदा की बस्ती जो उस समय रेलवे का उद्गम-स्थल था का तो नामोनिशान ही मिट गया था। रेलवे की इमारतें, आस-पास के मकान और प्रायः सभी वस्तुएं भूमिसात् हो गयी थीं, जगह जगह पर ज़मीन फट गयी थी तथा उसमें से पानी फूट फूटकर बहने लगा था। कुछ ही घंटों में पानी ने रेलों, स्लीपरों और दीवालों सभी को अपनी लपेट में लेकर इस तरह नष्ट कर डाला कि उनका निर्माण करने में कई वर्ष लग गये। उज़ुन-अदा और कज़ांजीक के बीच की रेलवे-लाइन की तो शकल ही बदल गयी।

कुछ भूकम्प ऐसे आये हैं जो काफ़ी लम्बे लम्बे अरसे तक रहे हैं और जिनसे बड़ी हानियां हुई हैं। मसलन, जून में आरम्भ हुए झटके बराबर अक्तूबर तक चलते रहे और एक बड़े व्यापक क्षेत्र में फैल गये—उत्तर में समारा (कूइबिशेव) तक तथा पूर्व में ताशक़न्द तक।

भूकम्प-उपरिकेंद्र क्रास्नोवोद्स्क तथा उज़ुन-अदा के बीच किसी जगह पर रहा होगा।

उज़ुन-अदा भकम्पों द्वारा नष्ट-भ्रष्ट हो गया था। तब से इसका पुनर्निर्माण नहीं किया गया है। यद्यपि रेलवे को क्रास्नोवोद्स्क से आरम्भ करने का प्रश्न काफ़ी पहले उठाया जा चुका था, फिर भी यह काम पूरा इसलिए किया गया कि उज़ुन-अदा में आये दिन भूकम्प आया करते थे। उज़ुन-अदा से क्रास्नोवोद्स्क की स्थिति इस माने में भी अच्छी है कि वहां की खाड़ी अधिक गहरी है। क्रास्नोवोद्स्क के बन्दरगाह-गोदामों तक हर प्रकार के जहाज़ चले जाते हैं जब कि उज़ुन-अदा के गोदामों तक वे ही जहाज़ जा पाते थे जिनका तला चिपटा होता था। इसका परिणाम यह होता था कि उज़ुन-अदा के लिए जानेवाले जहाज़ों को किनारे से दूर रुककर अपना माल बजरों पर लदवा-लदवाकर वहां तक पहुंचाना होता था। फलतः मध्य एशिया के साथ संवहन-कार्यों का विकास अवरुद्ध हो गया।

क्रास्नोवोद्स्क पठार में चूने के पत्थर के अलावा ग्रेनाइट और पोरफ़ुरी जैसी लावा-चट्टानें भी हैं। इस क्षेत्र में वर्षाओं की कमी ही इस बात को स्पष्ट कर देती है कि ये पठार वर्ष के अधिकतर भागों में सूर्य की किरणों में तपते रहते हैं और वनस्पति का नामोनिशान तक नहीं मिलता।

कहीं कहीं रेतीली भूमि दिखाई पड़ जाती है जहां कभी कभी कोई वनस्पति उग आती है। परन्तु जब बसन्त-काल में सूर्य की तेज़ किरणें उसपर पड़ती हैं तो वह भी माफ़ हो जाती है। वर्षा-जल का संग्रह करने के लिए यहां कुछ कुएं और मनुष्य द्वारा बनाये गये कुछ गड्ढे हैं। लेकिन जल के ये स्रोत हैं बहुत कम और पठार भर में यत्र-तत्र ही मिलते हैं। इन्हीं से यहां की थोड़ी-सी आबादी को पशु-पालन संबंधी कार्यों में कुछ सुविधा मिल जाती है। यहां के औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं की तुलना में पशु-पालन की गुंजाइश बहुत कम है।

तुर्कमान समुद्री तट की जनता मुख्यतया नगरों में और नगरों की तरह की बस्तियों में रहती है।

२

तुर्कमनिया के सल्फ़ेट निकालने के उद्योग क्रास्नोवोद्स्क के उत्तर में करा-बोगाज़-गोल की खाड़ी के तटों पर हैं।

क्रास्नोवोद्स्क से इस खाड़ी तक पहुंचने के लिए क्रास्नोवोद्स्क पठार से होकर जाने की ज़रूरत नहीं है। वहां तक पहुंचने के लिये छोटे तेज़ जहाज़ की सैर बहुत ही आनन्ददायक है परन्तु वहां जाने का सबसे सरल तरीक़ा है मोटर-कार। आप मोटर-कार में बैठ लीजिए और चल दीजिए। शा-क़दम की पहाड़ी चट्टानों को पार करते ही आपकी कार उत्तर की ओर बढ़ने लगेगी और फिर दाहिनी ओर की पहाड़ियों और पठारों तथा बायीं ओर की लम्बी और संकरी कूली नाम की झील के बीच रेतीली एवं ढालू तटवर्ती सड़क पर चार-पांच घंटे तक चल लेने के पश्चात् आपके कानों में दोनों ओर के रेतीले अन्तरीपों से आती हुई आवाजें पड़ने लगेंगी। इन अन्तरीपों के पूर्व में झील के समान एक बड़ी-सी खाड़ी है जिसके अति खारे जल ने यहां की जनता को शताब्दियों तक भयग्रस्त तथा व्याकुल कर रखा था। इसका करा-बोगाज़-गोल

नाम तुर्कमान और कज़ाख़ मछुओं का रखा हुआ है और इसका वास्तविक अर्थ है 'काले मुंह की खाड़ी' या 'अधम भुक्खड़'।

जिस खाड़ी ने इतना नाम कमाया है वह सोवियत संघ की एक दर्शनीय एवं दिलचस्प जगह है।

कास्पियन सागर का पानी छलछलाते हुए संकरे करा-बोगाज़ जलडमरूमध्य से होता हुआ एक अनन्त धारा-प्रवाह के रूप में इस खाड़ी में गिरता है। पुराने ज़माने में लोग यह भी न जान पाये थे कि यह पानी यहां से जाता कहां है। लदोगा झील के समान बड़ी इस खाड़ी के पानी की सतह हमेशा समुद्र से नीची रहती है। यही कारण था कि स्थानीय मछुए समझते थे कि बीच के जल-निकास के लिए कहीं कोई 'काला मुंह' ज़रूर है।

सतहों में भिन्नताओं और फलतः पानी के तेज़ खिंचाव का स्पष्टीकरण यह दिया गया है कि खुले समुद्र की अपेक्षा छिछली खाड़ी में पानी भाप बनकर जल्दी उड़ता है क्योंकि खाड़ी एक ब्वायलर के समान है। लेकिन जब पानी भाप बनकर उड़ने लगता है तो अपना नमक छोड़ देता है और चूंकि यह प्रक्रिया शताब्दियों से होती आयी है इसलिए यहां के पानी में नमक की मात्रा समुद्री पानी की अपेक्षा २० गुनी अधिक हो गयी है। दुनिया में खारे जल की इतनी बड़ी कोई दूसरी झील नहीं है। समुद्र की धाराएं जिन मछलियों को बहाकर खाड़ी में ले आती हैं वे यहां सांस नहीं ले पातीं और मर जाती हैं। कभी कभी मछली मारने के निमित्त जलग्रीवा की ओर से होकर आनेवाले मामूली जलपोत भी इस खारी पानी का दबाव बरदाश्त नहीं कर पाते, फलतः उनमें दरारें पड़ जाती हैं और वे खाड़ी की गहराइयों में समा जाते हैं। इन घटनाओं को देख देखकर मछुओं का यह विश्वास बराबर बढ़ता रहा था कि यह खाड़ी मनुष्य को सीधे नर्क के द्वार तक ले जाती है।

समुद्र से यात्रा करनेवाले रूसियों ने 'काले मुंह' के रहस्यों का पता लगाने के बड़े बड़े प्रयास किये। इस संबंध में दो नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—पहला ग० करेलिन का जिन्होंने सन् १८३६ में इस खाड़ी का परीक्षण एवं अनुसन्धान किया था और दूसरा लेफ़्टिनेन्ट जेरेबत्सोव का, जिनके नेतृत्व में सन् १८४७ में समुद्री यात्रियों का एक दल यहां के पानी की जांच करने के लिए आया था।

करेलिन ने लिखा था कि "पीटर महान के समय से चला आता हुआ वह विश्वास सत्य है जिसके आधार पर कहा जाता है कि कास्पियन का जल निरन्तर इतनी तेज़ी के साथ कुली-दरिया में (स्थानीय जनता कभी कभी करा-बोगाज़-गोल की खाड़ी को इसी नाम से पुकारती थी) दौड़ा करता है कि लौटते समय पूरी शक्ति से खींचे जाने पर भी नौकाएं अपनी वापसी यात्रा बहुत ही मुश्किल से कर पाती थीं।"

लेफ़्टिनेन्ट जेरेबत्सोव ने भी खाड़ी का बड़ा रोचक वर्णन किया है जिसके कुछ अंश यहां दिये जा रहे हैं–

"उत्तरी तट ढालू तथा ऊबड़-खाबड़ है। वहां खारी मिट्टी तथा सफ़ेद जिप्स मिलता है। यहां न पेड़ उगते हैं और न घास। पूर्व में एकाकी पर्वत-श्रेणियां हैं और दक्षिण में अनेकानेक खारी झीलों से परिपूर्ण नीचा तट।

"सारा तट मरुभूमि है जहां एक बूद भी ताजा पानी नहीं मिल सकता। मैंने ऐसा एक भी सोता नहीं देखा जो इस वास्तविक मृत समुद्र में गिरता हो।

"यहां जहाज़ों के लिए सुविधाजनक स्थान नहीं हैं। परन्तु इसके कारण जहाज़ों के आने-जाने में कोई बाधा नहीं पड़ती। चूंकि खाड़ी की हर जगह गहराई नाम मात्र की ही है इसलिए जहाज़ कहीं भी लंगर डाल सकते हैं। पानी छिछला होने के कारण जहाज़ की नावों तक को काफ़ी दूर ठहरना होता है और तट तक पहुंचने के लिए लोगों को टखने टखने तक पानी में आधे आधे घंटे और कभी कभी उससे भी अधिक समय तक चलना पड़ता है।

"हम लोग पानी में चट्टानों अथवा द्वीपों से गुज़रते हुए नहीं गये ... पूर्व में चलनेवाली वे तेज़ आंधियां जो समुद्र तक का मंथन कर डालती हैं, हमारे लिए बराबर चिन्ता का विषय बनी रहीं। खाड़ी में पानी असाधारण रूप से खारी और गहन है जिसके फलस्वरूप यहां की लहरें समुद्र की अपेक्षा अधिक विध्वंसात्मक सिद्ध हुई हैं। यहां तूफ़ानी आंधियों को पानी में खलबली पैदा करने के लिए काफ़ी ज़ोर लगाना पड़ता है। यहां का दृश्य सचमुच विचित्र है क्योंकि जिस समय समुद्र में तूफ़ान उठते हैं और ऊंची-ऊंची तरंगें दिखाई पड़ती हैं उस समय खाड़ी का जल प्राय: शान्त बना रहता है। लेकिन यदि एक बार भी इस पानी में खलबली मच

गयी तो फिर वह जल्दी शान्त होने का नाम नहीं लेती और तट की ओर घंटों तरंगें उठा करती हैं।

"समुद्र की ओर से खाड़ी एक लाल लाल भट्टी की तरह दिखाई पड़ती है। फलतः शताब्दियों तक समुद्र यात्री यहां आने से डरते रहे हैं। लोग हमेशा से यही विश्वास करते रहे कि यह प्रक्रिया वहां पानी के भाप बन जाने के कारण होती है। यह याद रखना चाहिए कि खाड़ी के चारों ओर झुलसता हुआ सफेद रेगिस्तान है। यदि हम तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो खाड़ी हमें एक कड़ाही के समान प्रतीत होगी जिसमें कास्पियन का जल उबला करता है।

"खाड़ी का तल भी उल्लेखनीय है—ऊपर नमक की पर्त और नीचे चूने की मिट्टी। मैं समझता हूं कि यह विशेष प्रकार का नमक है। इसके गुण उस नमक से भिन्न हैं जिसे हम खाने या अचार आदि डालने के काम में लाते हैं।

"खाड़ी में थोड़े समय तक के लिए रुकना भी मुश्किल हो जाता है। मन ऊबने लगता है और यही इच्छा होती है कि उन स्थानों पर चला जाऊं जहां आदमी रहते हैं, वनस्पति उगती है। यद्यपि मैंने सैकड़ों मील तक तट की यात्रा की थी फिर भी मुझे किसी भी व्यक्ति के दर्शन न हुए। हां, कड़ुवा नागदौना तथा सूखे नरकट इधर-उधर ज़रूर दिखाई दिये, परन्तु वहां घास का एक तिनका भी नज़र न आया। इन तटों पर नमक है, बालू है और सर्वभक्षी गर्मी है।

"यहां का जल पारदर्शक नहीं है और जो मछलियां समुद्र से बहकर इधर आती हैं वे मर जाती हैं और उतराने लगती हैं। हमने किनारे पर मरी हुई तथा नमकीन ऐसी बहुत-सी मछलियां देखी थीं।

"दूसरे दिन हम उत्तरी तट के किनारे किनारे यात्रा करते रहे और करा-सुकुत के उस नुकीले भाग तक पहुंच गये जो समुद्र में धंसा हुआ था। हमें यहां की लहरों में लाल रंग का फेन उठता हुआ दिखाई दिया। इस अस्वाभाविक रंग ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया और मैं एक नाव पर लहरों के समीप पहुंच गया। जब मैंने झुककर उस फेन को हाथ में लिया तो मुझे इस लाल रंग का रहस्य मालूम हुआ। वहां छोटे छोटे केकड़ों के अंडे थे जिनके कारण जल का रंग लाल हो रहा था। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस खारी पानी में भी यह अंडे जीवित हैं। मैं उस जलपट्टी की ओर

थोड़ा और आगे बढ़ा जो पहले से कुछ अधिक चौड़ी, कुछ अधिक गुलाबी थी। वहां एक विचित्र घटना घटी। 'फेन' हवा में उड़ने और हमारी नाव तथा स्तम्भित मल्लाहों के सिरों के ऊपर से जाता हुआ दिखाई देने लगा। वस्तुतः यह मराल पक्षियों (फ़्लमिंगो) का झुंड था। करा-सुकुत में हमने बहुत-से जंगली हंस और सख़्त मिज़ाज पेलिकन पक्षी भी देखे जिन्हें वहां के लोग 'बाबा' कहा करते थे।"

यह वर्णन इतना यथावत है कि इसमें कुछ और घटाना-बढ़ाना उचित नहीं प्रतीत होता। स्मरण रहे कि ये बातें सौ वर्ष पूर्व लिखी गयी थीं, जिनमें बहुत-सी तो आज भी सत्य हैं। हां, मराल जैसे पक्षी खाड़ी में अब यदा-कदा ही दिखाई पड़ते हैं। अब वे जाड़ों में तुर्कमनिस्तान के सबसे दक्षिण-पश्चिमी छोर पर अत्रेक नदी के किनारों पर पाये जाते हैं।

यह कहना कि करा-बोगाज़-गोल के तटों पर मनुष्यों के दर्शन नहीं होते एक पुरानी बात है। पहली कुछ पंचवर्षीय योजनाओं में वह खाड़ी, जहां कभी प्राणियों तक का निवास न था, अब सल्फ़ेट निकालने के उद्योग का एक बड़ा केन्द्र बन गयी है। जेरेबत्सोव का कहना ठीक था कि जो नमक खाड़ी और उसके किनारे की सतह पर जमा हुआ है वह वास्तव में "खाने या अचार आदि डालने के काम" आनेवाला नमक नहीं है। खाड़ी में पाये जानेवाले विभिन्न क़िस्म के नमकों में तथाकथित ग्लवर लवण या मिराबिलाइट अधिक महत्त्वपूर्ण है। धूप में सुखा लेने पर यह नमक सल्फ़ेट का रूप ले लेता है। सल्फ़ेट रासायनिक उद्योग में काम आनेवाला एक कच्चा माल है।

कोयले, चूने के पत्थर अथवा क्वार्ट्स बालू के साथ मिश्रित कर देने पर सल्फ़ेट से कास्टिक सोडा, गंधक का तेज़ाब, सोडियम सल्फ़ाइट, हाइड्रो-सल्फ़ाइड, सोडियम अथवा अन्य ऐसे ऐसे उपयोगी पदार्थ बन सकते हैं जो उद्योग और कृषि की भिन्न-भिन्न शाखाओं में काम आते हैं।

दुनिया भर में सबसे अधिक सल्फ़ेट करा-बोगाज़-गोल की खाड़ी में पाया जाता है।

मिराबिलाइट अपने आप पानी से अलग हो होकर खाड़ी के तल में तथा किनारों पर इतनी बड़ी मात्रा में जम जाता है कि उसे बोरों में बालू की तरह भरा जा सकता है। सल्फ़ेट निकालने के लिए सिर्फ़ दो सीधी-सादी प्रक्रियाओं की ज़रूरत है—मिराबिलाइट इकट्ठा करना और उसे धूप में सुखा लेना। खाड़ी के तल में मिराबिलाइट के जमने

के लिए दो बातें जरूरी हैं—पहली यह कि समुद्र से पानी निरंतर खाड़ी में आता जाय और दूसरी यह कि पानी का तापमान ३९ से लेकर ४३ डिगरी फ़ारेनहाइट तक रहे। ये दोनों ही बातें जनवरी से लेकर अप्रैल तक के जाड़े के मौसम में करा-बोगाज़-गोल की खाड़ी में पायी जाती हैं।

अप्रैल में पानी गर्म हो जाता है और मिराबिलाइट घुल जाता है जिसके परिणामस्वरूप यहां सल्फ़ेट निकालने का उद्योग केवल मौसमी होकर रह गया है।

करा-बोगाज़-गोल में अरबों टन मिराबिलाइट का भण्डार है जिसे देखकर कहा जा सकता है कि वह कभी समाप्त ही न होगा।

औद्योगिक तरीक़ों से सल्फ़ेट निकालने का काम सबसे पहले सन् १९२४ में आरम्भ किया गया था। प्रायः उसी काल में सोवियत संघ की विज्ञान-अकादमी ने खाड़ी तथा उसके आस-पास की झीलों में जल के रासायनिक गुणों का अध्ययन करने के निमित्त एक विशेष वैज्ञानिक दल भेजा था जिसने अपना कार्य बड़ी लगन से पूरा किया और परिणामतः शीघ्र ही उस स्थल से, जहां खाड़ी समुद्र से मिलती है, दक्षिण की ओर किनारे पर एक अच्छी-खासी बस्ती बस गयी।

इस नये उद्योग को विधिवत् संघटित करने के मार्ग में अनेकानेक बाधाएं आयी जिनके बारे में यह समझा जाता था कि मनुष्य उन्हें दूर नहीं कर सकता। इनमें से मुख्य बाधाएं थीं—ग्रीष्म-काल की अत्यधिक गर्मी और ताज़े पानी का पूर्ण अभाव। खाड़ी के इलाक़े में रासायनिक दृष्टि से शुद्ध पत्थर का चूना, कोयला, क्वार्ट्स बालू, चिकनी मिट्टी तथा अन्य बहुत-से खनिज-पदार्थ मिले थे। यहां एक ही महत्त्वपूर्ण 'खनिज-पदार्थ' की कमी थी और वह था ताज़ा पेय जल। पानी विशेष बजरों द्वारा काकेशिया के किनारे से लाना पड़ता था। उस इलाक़े में ऐसी कोई भी चीज़ न थी जो श्रमिकों के निमित्त ईंधन अथवा उनके निवास के लिए इमारती सामानों के रूप में उपयोगी होती। फलतः बाकू, मख़च-कअला अथवा आस्त्राख़ान से जहाज़ द्वारा सभी तरह की चीज़ें मंगानी पड़ीं चाहे वे कीलें रही हों या समोवर के लिए लकड़ी की चैलियां या फ़र्श साफ़ करने के लिए झाड़ू।

करा-बोगाज़-गोल का सल्फ़ेट-क्षेत्र इस समय तुर्कमनिया के प्रमुखतम उद्यमों में एक है। जिस समय लेफ़्टिनेन्ट जेरेबत्सोव ने खाड़ी को 'मृत समुद्र' की संज्ञा दी थी उस समय उसने निश्चय ही बड़ी भूल की थी। मृत कभी जीवित नहीं हो सकते लेकिन 'काले मुंह की खाड़ी' के निर्जन तटों में अब जीवन है और जीवन की बहार भी। बेकदाश का बंदरगाह सदैव कार्यव्यस्त रहता है और बस्ती में भी क्रियाशीलता की कमी नहीं आने पाती। सड़कों पर लोग अपने अपने कामों पर और बच्चे स्कूलों की ओर जाते हुए दिखाई देते हैं। अब प्रत्येक मकान के सामने छोटे छोटे पेड़-पौधे हैं और उसके पीछे के हिस्से में साग-सब्ज़ी। शरद्-ऋतु में आपको वहां सदैव सरदे, टमाटर और बढ़िया-बढ़िया खरबूज़े मिलेंगे। अब वे वहां सैकड़ों मील दूर से जहाज़ों द्वारा नहीं लाये जाते अपितु उन खाइयों में ही उगा लिये जाते हैं जहां भूगर्भ-स्थित जल उन तक पहुंच जाता है और कृत्रिम सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। अब यहां के मालियों ने इन फलों को पैदा करना सीख लिया है।

इन किनारों पर सेव और नाशपाती के वृक्ष हैं और अंगूर की लताएं। यहां ३२ एकड़ क्षेत्रफल का एक बग़ीचा है जिसपर औद्योगिक बस्ती को गर्व है।

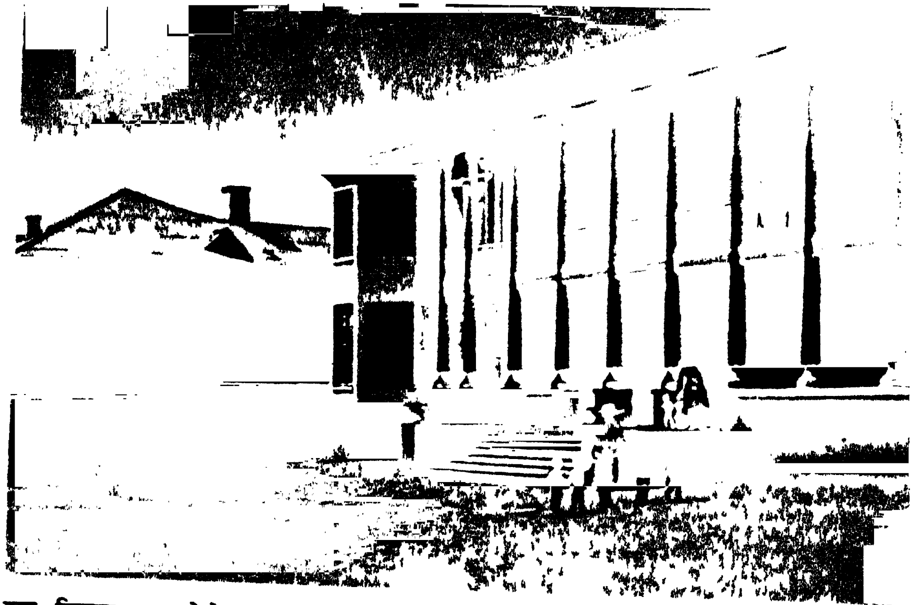
ओमर-आता की बस्ती अब बढ़कर एक नगर बन गयी है। वहां के करा-बोगाज़-गोल की सल्फ़ेट-कम्बाइन के श्रमिकों के फ़्लेटों में क्राम्नोवोद्स्क के लोगों की तरह ही नलों से पानी मिलने लगेगा।

सम्प्रति यहां ताज़ा पानी नही है। यहां ताज़ा पानी काकेशिया से लाया जाता है।

३

पिछले दस-पन्द्रह वर्षों में कास्पियन की सतह काफ़ी नीचे तक गिर गयी है। अब पानी बहकर खाड़ी के भीतर नहीं आता और इसीलिए सल्फ़ेट-उद्योग के केन्द्र को करा-बोगाज़ साउन्ड के दक्षिण से हटाकर उसके उत्तरी तट तक ले जाने की ज़रूरत महसूस हुई है।

प्रथम पंचवर्षीय योजना-काल में दक्षिणी तट पर बसायी गयी बस्ती को छोड़ देना पड़ा था। अब उद्योग का केन्द्र बेकदाश में है और सल्फ़ेट सीधे खाड़ी से नहीं अपितु एक स्वतंत्र जलाशय से निकाला जाता है, जिसे 'छठी झील' का नाम दिया गया है।



नया शिशुगृह, क्रास्नोवोद्स्क

करा-बोगाज़-गोल के तट पर मिराबिलाइट संग्रह





क्रास्नोवोद्स्क के समीप मछलियां पकड़ने का उद्योग

इस अपेक्षाकृत छोटी-सी झील में एक कृत्रिम नहर के रास्ते खाड़ी का पानी लाया जाता है, और तल में मिराबिलाइट जमाने के लिए समुद्र का जल नलों द्वारा खींचकर वहां डाला जाता है।

जलाशयों में पानी संग्रह करने की यह नयी पद्धति उस पुरानी पद्धति से अधिक वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील है जिसके अनुसार पानी अपने आप ही बहाकर लाया जाता था। इस व्यवस्था से अब उद्योग को प्रकृति की मनमानियों पर और सर्वाधिक कास्पियन की उस सतह पर निर्भर नहीं रहना पड़ता, जिसका प्रभाव (उस समय जब सल्फ़ेट निकालने का कार्य पहले-पहल आरम्भ किया गया था) खाड़ी में समुद्री पानी के बहाव पर और फलतः उन दशाओं पर पड़ता था, जिनमें यह खनिज पदार्थ निकाला जाता था।

कास्पियन सागर की सतह में कमी-बेशी के उल्लेख बहुत प्राचीन काल से मिलते हैं। १८ वीं और १६ वीं शताब्दी के बहुत-से यात्रियों ने इस विषय पर बहुत कुछ लिखा है।

आइये, हम उत्तर से लेकर दक्षिण तक तुर्कमान समुद्री तट की एक काल्पनिक यात्रा करें और जो कुछ देखें उसकी उन उल्लेखों से तुलना करें जो हमें प्राचीन काल से प्राप्त होते रहे हैं।

१८ वीं और १६ वीं शताब्दी के अनुसन्धानकर्त्ताओं ने उस नौगम्य जलडमरूमध्य का ज़िक्र किया है जो करा-बोगाज़-गोल की खाड़ी का सम्पर्क कास्पियन से स्थापित करता था। इसका उल्लेख तुर्कमानों और कज़ाखों की पौराणिक कथाओं में भी मिलता है। इससे पता चलता है कि पुराने ज़माने की तुलना में कास्पियन सागर की सतह काफ़ी नीची हो गयी है।

करा-बोगाज़-गोल की खाड़ी के दक्षिण में कूली नामक एक लम्बी संकरी झील है जो खान-पान में काम आनेवाले सामान्य नमक के सम्पन्न भण्डारों के लिये विख्यात है। स्थानीय बड़े-बूढ़ों को खाड़ी के दिन अब भी याद होंगे। अब कूली झील घोंघे के टीलों और बालू के एक चौड़े भूडमरूमध्य के आने-जाने के कारण अलग हो गयी है।

और भी दक्षिण की ओर संकरा क्रास्नोवोद्स्क स्पिट है जो समुद्र में दूर तक धंसता चला गया है। यह वह प्रमुख स्थान है जहां गसन-कुली, चिकिशलार, क्रास्नोवोद्स्क

और ओगुरचिन्स्की द्वीप के मछुए मछली पकड़ने आया करते हैं। किज़ील-सू की बस्ती समुद्र-तट के सबसे बड़े सामूहिक मीनाशयों में से एक का केन्द्र तथा मछली के कारखाने का निर्दिष्ट एक स्थल है। खाड़ी में प्रवेश करने से पूर्व, सभी जहाज़ों को क्रास्नोवोद्स्क स्पिट के किनारे किनारे आकर और स्पिट तथा चेलेकेन प्रायद्वीप के बीच साउंड के मध्य मे होकर इसलिए बड़ी सतर्कता के साथ बढ़ना पड़ता है कि कहीं वे छिछले पानी में न धंस जायं। फिर भी १६ वीं शताब्दी के अन्त तक यह साउंड एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक नौगम्य थी।

आइये, अब हम थोड़ा और दक्षिण की ओर बढ़ें।

क्रास्नोवोद्स्क की खाड़ी का वर्णन करते समय बेकोविच-चेरकास्की ने उसकी दक्षिणी सीमा पर स्थित दो द्वीपों का उल्लेख किया है जिनके नाम थे नेफ़्त्यानोई द्वीप जिसे आजकल चेलेकेन कहते हैं और दरगान द्वीप जिसे आजकल दर्जा कहते हैं। लेकिन इन दोनों में से कोई भी द्वीप नहीं है। दर्जा १६ वीं शताब्दी के अन्त में एक प्रायद्वीप हो गया और चेलेकेन अभी हाल ही में मुख्य प्रदेश का एक भाग बन गया। ऐसा उस समय हुआ जब कि कास्पियन सागर की सतह गिरने लगी और पानी मुख्य प्रदेश से दोनों द्वीपों को अलग करता हुआ जलडमरूमध्यों से वापस आ गया।

चेलेकेन के दक्षिण में एक द्वीप और था – दर्विश द्वीप। इसे कास्पियन सागर के उस नक्शे में दिखाया गया है जो सन् १७२० में प्रकाशित हुआ था। किन्तु इसके प्रकाशन के कुछ वर्षों बाद जब फ़० सोइमोनोव नामक एक यात्री वहां गया तो उसे पता चला कि इस द्वीप का नामोनिशान तक नहीं रह गया है। दर्विश द्वीप और चेलेकेन के बीच का जलडमरूमध्य सूख गया था और अब चेलेकेन द्वीप से लेकर ओगुरचिन्स्की तक एक बालू का टीला मात्र रह गया है।

लगभग पन्द्रह-बीस वर्ष पहले एक खाड़ी थी जो दर्जा प्रायद्वीप (जिसे पहले दरगान द्वीप कहते थे) के उत्तरी तटों और क्रास्नोवोद्स्क पठार के दक्षिणी सिरे के बीच पड़ती थी, और जो यात्री अशकाबाद से क्रास्नोवोद्स्क को जाता था उसे यात्रा समाप्त होने के घंटों पहले से ही समुद्र दिखने लगता था।

यदि जाड़े की ऋतु होती थी तो उसे तट के किनारे किनारे बहुत बड़ी संख्या में बतखों को देखकर आश्चर्य भी होता था। अब वहां नीली खाड़ी के स्थान पर सूखा मटीला मैदान है और बतखों के स्थान पर कछुए।

इस सूखी खाड़ी को बलख़ान कहते थे। यह अभी कुछ ही दशाब्दियों पहले समुद्र से अलग हो गयी थी।

१८ वीं शताब्दी में प्रकाशित कुछ नक़्शों में एक अन्य चौड़ी गहरी खाड़ी दिखायी गयी थी जो दर्जा के दक्षिण में ख़ुश्की से होकर जाती थी। यह ख़ीवा की खाड़ी थी और महान् बलख़ान तथा लघु बलख़ान की तलहटियों तक फैली हुई थी। इस खाड़ी के बीच में नेबित-दाग़ और मुंजूक्ली नाम के दो द्वीप भी दिखाये गये थे।

किन्तु जब १९ वीं शताब्दी में यहां कुछ यात्री आये तो उन्हें कोई भी खाड़ी न दिखी। मुराव्योव (१८२१), बसरगिन (१८२६), करेलिन (१८३६) तथा अन्य अनुसन्धानकर्त्ताओं को तो इसमें भी सन्देह था कि वहां वास्तव में कभी कोई खाड़ी थी भी। उन्होंने बड़ी खारी झील का ज़िक्र किया था जो नेफ़्तयानया पहाड़ तथा मुंजूक्ली के इर्द-गिर्द थी।

सौ वर्ष बाद अर्थात् २०वीं शताब्दी के आरम्भ में इस झील के सारे निशानात मिट गये। अब नेबित-दाग़ और मुंजूक्ली वृहत् केलकोर खार से घिरे हुए हैं जिसमे होकर वह मुख्य सड़क जाती है जो नेबित-दाग़ के नगर को आसपास के तेल-क्षेत्रों से मिलाती है।

और अधिक दक्षिण में, चेलेकेन तथा ईरानी सीमा के बीच, ऐसे कुछ चिह्न मिले हैं जिनसे पता चलता है कि विगत कुछ दशाब्दियों में कास्पियन की समुद्री सतह कितनी नीची गिरी है।

इस नग्न एवं समुद्र से लगे हुए किनारे पर बसी हुई सबसे प्रमुख बस्ती गसन-कुली नगर या, यदि अधिक ठीक ठीक कहा जाय तो, गसन-कुली बस्ती है (जिसे वहां के लोग एसेन-कुली कहते हैं)। सन् १९४१ से पहले जितने भी नक़्शे प्रकाशित हुए थे उन सभी में गसन-कुली को गसन-कुली की खाड़ी का एक बन्दरगाह दिखाया गया था। किन्तु यदि आज कोई यात्री गसन-कुली जाय और वहां से समुद्र देखना चाहे तो उसे सिर्फ़ निराशा ही हाथ लगेगी। इस नगर में ऐसा कोई भी चिह्न नहीं है जिससे वहां समुद्र होने का पता चलता हो। गसन-कुली का 'बन्दरगाह' चारों ओर भूमि से घिरा हुआ है। समुद्र गसन-कुली से मीलों पीछे हट गया है।

पृथ्वी के भूगर्भ संबंधी इतिहास के अध्ययन से पता चलता है कि कास्पियन सागर की सतह बराबर घटती-बढ़ती रही है। किन्तु जिस ऐतिहासिक काल का हमें

ज्ञान है उसमें यह सतह नियमित रूप से घटती ही रही है। पिछली कुछ दशाब्दियों में कास्पियन की सतह बराबर घटती जा रही है।

सतह घटने का कारण यह है कि कास्पियन में, विशेषकर उसके दक्षिणी क्षेत्रों में, समुद्री पानी के भाप बनने की क्रिया बहुत अधिक तीव्र है। इस प्रक्रिया के द्वारा प्रतिवर्ष प्राय: १५६ घन मील पानी भाप बनकर उड़ जाता है। यदि इस जल को समुद्र की सारी सतह पर बांट दिया जाय तो पता चलेगा कि प्रतिवर्ष ३६ से लेकर ४० इंच तक की जल-हानि होती है। इस हानि की पूर्ति वर्षा तथा बर्फ़ को करनी पड़ती है।

वोल्गा कास्पियन सागर में ६८ घन मील से अधिक पानी गिराती है और बाक़ी पानी कास्पियन बेसिन की अन्य नदियों—उराल, कुरा और तेरेक—द्वारा लाया जाता है।

उपर्युक्त तथ्यों को देख लेने के पश्चात् हम आसानी से समझ सकते हैं कि नदियों द्वारा समुद्र में लाये गये जल अथवा वर्षा तथा बर्फ़ की मात्रा में कोई भी परिवर्तन होने से कास्पियन की सतह में अन्तर अवश्य आ जायेगा।

पिछले १५-१८ वर्षों में वोल्गा बेसिन की दो विशेषताएं रही हैं—पानी की नीची सतह और ऊंचे तापमान। बहुत सम्भव है कि कास्पियन सागर की सतह में तेज़ी के साथ जो गिरावट आयी है उसका कारण यही रहा हो।

४

क्रास्नोवोद्स्क रेलवे-लाइन का एक प्रमुख केन्द्र है। ट्रेन यहां से आरम्भ होकर पूर्व की ओर, नेबित-दाग़ से गुज़रती हुई, बलख़ान पर्वत-श्रेणियों के बीचोंबीच से, तथा कोपेत-दाग़ की तलहटियों के साथ साथ अशकाबाद तक, और फिर उसके और आगे मारी, चार्दज्हू, बुख़ारा, समरक़न्द तथा ताशक़न्द तक चली गयी है। समुद्री मार्ग क्रास्नोवोद्स्क से उत्तर, पश्चिम और दक्षिण तक जाते हैं—पश्चिम में बाकू और मख़च-कअला; उत्तर में आस्त्राख़ान, दक्षिण में चेलेकेन, ओगुरचिन्स्की द्वीप तथा उसके आगे चिकिशलार और गसन-कुली।

इसके अतिरिक्त वहां हवाई मार्ग भी हैं। क्रास्नोवोद्स्क से वायुयान चारों दिशाओं में चला करते हैं और मुख्यतया यात्रियों तथा डाक को लाते व ले जाते हैं। सामान तथा अन्य बहुत-से यात्री पूर्व की ओर रेल द्वारा और पश्चिम की ओर समुद्र द्वारा जाते हैं। दक्षिणी समुद्री मार्ग क्रास्नोवोद्स्क के उन उद्योगों से सम्बन्ध स्थापित करते हैं जो तटों पर बिखरे पड़े हैं। इन उद्योगों में चेलेकेन प्रायद्वीप के उद्योग प्रजातंत्र की अर्थ-व्यवस्था के लिए सर्वाधिक महत्त्व के हैं।

समुद्र से चेलेकेन के वे रेतीले तट, जो हल्के धुएं से ढके रहते हैं, परित्यक्त तथा निर्जीव-से प्रतीत होते हैं। पश्चिमी किनारे का केन्द्रीय भाग समुद्री धरातल से ६५ – ८० फ़ुट ऊंचा है। इस ऊंची भूमि को चोखरक कहते हैं, और यह प्रायद्वीप के बीचोंबीच ३३० फ़ुट से ऊंची चली गयी है। चोखरक एक ऐसा स्थान है जहां हमेशा आंधियां चला करती हैं और इसके परिणामस्वरूप वहां बालू के टीले-से बन जाते हैं। अभी हाल ही तक प्रायद्वीप में किसी प्रकार की भी वनस्पति नहीं पायी जाती थी। केवल युद्ध काल में ही श्रमिकों की बस्तियों के निकट खरबूज़ों और साग-सब्ज़ियों के पौधे लगाये गये थे। यदि यहां पर विभिन्न प्रकार के और अधिक मात्रा में ऐसे खनिज-पदार्थ न मिलते होते जिनके कारण चेलेकेन का प्रायद्वीप तुर्कमनिया के उद्योगों का प्रमुख स्थल बन गया है तो शायद मनुष्य इस भूमि पर बसना भी पसन्द न करता।

किन्तु इसकी देनें इतनी मूल्यवान हैं कि लोग दशाब्दियों और शताब्दियों से इस बंजर, रेतीली तथा आंधियों वाली भूमि की ओर खिंचते चले आ रहे हैं।

कास्पियन सागर के पूर्व में स्थित भूमि का वर्णन करते हुए प्राचीन यूनानी भौगोलिक स्त्रैबों ने, जो हमारे ही युग के आरम्भ में जीवित था, लिखा है कि "मज़दूरों ने ओख़ नदी के समीप तेल पाया। निश्चय ही यदि इस भूमि में क्षार है, अस्फ़ाल्ट है और गंधक है तो यहां तेल की खानें भी ज़रूर होंगी।"

अत्रेक ही, जो चेलेकेन के दक्षिण में कास्पियन सागर में गिरती है, वह ओख़ नदी है जिसका उल्लेख स्त्रैबों ने किया था। स्थानीय जनता में अब भी यही पुराना नाम मशहूर है। और निश्चय ही चेलेकेन भी वही भूमि है जिसका उस पुराने विद्वान ने यह कहकर उल्लेख किया है कि वहां बहुत अधिक खनिज-पदार्थ मिलते थे। सचमुच आज भी यहां अनेक प्रकार के दुर्लभ खनिज-पदार्थ प्राप्त होते हैं। विद्वान

अ० फ़ेर्समन ने, जो सोवियत संघ की खनिज-सम्पदा के विषय में एक बड़े अधिकारी विद्वान माने जाते हैं, चेलेकेन के बारे में बड़े उत्साह से कहा था कि यह वह स्थान है जहां प्रत्येक वस्तु "उबलती है, गलगलाती है। यहां हर जगह सोते हैं जो तरह तरह के लवणों से परिपूर्ण हैं।"

सबसे पहले अनुसन्धानकर्त्ता चेलेकेन की ओर इसीलिए आकृष्ट हुए थे कि वहां तेल था और ओज़ोकेराइट थी।

१८ और १९ वीं शताब्दी के रूसी यात्रियों ने इस द्वीप (उस समय चेलेकेन एक द्वीप था) की तेल की खानों के बारे में बहुत कुछ लिखा है। और जब बेकोविच-चेरकास्की को वहां तेल दिखाई पड़ा तो उसने इसका नाम ही नेफ़्त्यानोई (तेल का) द्वीप रख दिया।

औद्योगिक ढंग से तेल निकालने की व्यवस्था पहले-पहल १९ वीं शताब्दी के अन्त में की गयी थी। क्रान्तिपूर्व के वर्षों में इसका सबसे अधिक समृद्ध काल सन् १९०९ और सन् १९१२ के बीच का काल था। परन्तु उसके बाद से इसका ह्रास शुरू होने लगा। नेबित-दाग़ में तेल की प्राप्ति के कारण चेलेकेन में तेल की निकासी बहुत काल तक अत्यधिक कम रही। प्रथम युद्धोत्तर पंचवर्षीय योजना के अन्त तक चेलेकेन के तेल-उद्योग की ओर भी देश का ध्यान आकृष्ट हुआ और विद्वान गुबकिन का यह मत ठीक मालूम पड़ने लगा कि "जहां तक तेल का प्रश्न है चेलेकेन में अभी तक उसकी पूरी पूरी खोज नहीं हो सकी है और इस बात की आवश्यकता है कि वहां पहले की अपेक्षा अधिक गहरी 'बोरिंग' की जाय।"

चेलेकेन आज भी अपने ओज़ोकेराइट के क्षेत्रों के लिए मशहूर है। ओज़ोकेराइट अथवा खनिज मोम, जैसा कि पहले इसका नाम था, एक अति दुर्लभ खनिज-पदार्थ है। यह पैराफ़िन तेल का ही एक अंश है जो पैराफ़िन के स्फटिकों के अलग-अलग हो जाने तथा निकटवर्ती चट्टानों में बैठ जाने के कारण बनता है। इसके बहुत-से औद्योगिक उपयोग हैं–विशेष रूप से यह सेरेसिन के उत्पादन के काम आता है जो सूती वस्त्रों के लिए एक अपरिहार्य इन्सुलेटिंग और वाटर-प्रूफ़िंग वस्तु है। दुनिया में ओज़ोकेराइट की खानें कम हैं। सोवियत संघ में सबसे बड़ी खानें चेलेकेन में ही हैं।

पिछले कुछ वर्षों में सोवियत डाक्टर गठिया, स्नायु रोग, रक्त-धमनियों के रोग आदि गम्भीर बीमारियों के उपचारार्थ ओज़ोकेराइट का अधिकाधिक प्रयोग करते रहे हैं।

चेलेकेन में खनिज मोम निकालने का काम बहुत पुराने ज़माने से ही आरम्भ हो गया था। जिस समय स्त्रैबों ने कास्पियन के समुद्री किनारे पर अस्फ़ाल्ट मिलने की बात कही थी उस समय उसका तात्पर्य चेलेकेन के ओज़ोकेराइट से था क्योंकि इसे प्राकृतिक अस्फ़ाल्ट भी कहते हैं। रूसी भौगोलिकों ने १८३४ में चेलेकेन का जो वर्णन किया है उसमें करा-सिल्ल नामक एक स्थान के निकट ओज़ोकेराइट मिलने का भी उल्लेख है। ऊंटों के क़ाफ़िले खनिज मोम को चेलेकेन से बुखारा ले जाया करते थे। वहां इसे मोमबत्तियां बनाने के काम में लाया जाता था जो सारे मध्य एशिया में भेजी जाती थीं। पहले मनुष्य के हाथ ही इस खनिज को बाहर निकालते थे किन्तु अब इस आदिकालीन व्यवस्था के स्थान पर एक ऐसी विधि-पद्धति काम में लायी जा रही है जिसके अनुसार पानी के शक्तिशाली 'जेट' चट्टानों को धोते हुए ओज़ोकेराइट को सतह तक ले आते हैं।

आज भी चेलेकेन में गर्म पानी के उतने ही सोते हैं जितने स्त्रैबों के ज़माने में थे। एक में पानी का तापमान १४५ अंश फ़ारेनहाइट है जब कि तेल के पुराने कुओं से बाहर छलकनेवाले पानी का १५८-१६३ अंश फ़ारेनहाइट। कुछ कुओं से गर्म पानी निश्चित समयान्तरों पर निकला करता है और ऐसा लगता है मानो उसे पृथ्वी की गहराई में लगे हुए बड़े बड़े पम्पों द्वारा निकाला जा रहा है।

चेलेकेन की प्रत्येक वस्तु से पता चलता है कि किसी समय यहां ज्वालामुखी पर्वत थे। ऐसे कुछ पर्वत प्रत्यक्षतः निर्जीव हो गये हैं इसलिए उनके मुंहों को अस्फ़ाल्ट से बन्द करके चौरस कर दिया गया है। वास्तव में ये वे पुराने ज्वालामुखी हैं जिनका लावा सख्त पड़ गया है। कुछ अन्य मुंहों में अब इतना अधिक पानी भर गया है कि वहां गोल-मटोल झीलें-सी दिखाई पड़ने लगी हैं। पोर्सुगोल नामक ऐसी ही एक झील में पानी का रंग गुलाबी है और हर समय खौलता रहता है। यहां कुछ जीवित ज्वालामुखी भी हैं। इनमें से एक के मुंह में तेल भरा है और उसमें से समय समय पर गैस निकलती रहती है। यहां की चट्टानें कुछ इतनी टूटी-फूटी तथा मिली-जुली हैं कि इन्हें

देखकर न० अन्द्रुसोव ने, जो चेलेकेन विषयक अपने अनुसन्धानों के लिए बड़ा विख्यात रहा है, उनकी तुलना एक टूटे-फूटे बर्तन से कर डाली थी। विद्वान फ़ेर्समन का कहना है कि चेलेकेन एक 'गर्म किये हुए तवे' के समान है।

यह बिल्कुल ठीक है कि चेलेकेन की प्रत्येक वस्तु उबलती और छलछलाती है। पृथ्वी से गैस, तेल, ठंढा-गर्म कीचड़ और ठंढा या गुनगुना ऐसा पानी निकलता रहता है जिसमें अलग अलग लौह-उत्पादक आयोडिन, ब्रोमीन और गन्धक मिले होते हैं।

यहां के कीचड़ तथा जल की ओर निस्सारण-उद्योग का ध्यान आकृष्ट हुआ है। चेलेकेन में ओज़ोकेराइट के प्राचीन क्षेत्रों के अलावा अब दो नये उद्योग और भी हो गये हैं–आयोडिन तथा ब्रोमीन, जो पंचवर्षीय योजना-कालों में चालू किये गये थे।

चेलेकेन के भूगर्भस्थ पानी में आयोडिन होने का पता बहुत पुराने ज़माने में ही चल गया था। लगभग २०० साल से भी पहले वहां एक रूसी जहाज़ जाकर रुका था। इस जहाज़ के कप्तान ने उस पानी की जांच करने के पश्चात् बताया था कि उसमें कुछ असाधारणता अवश्य है। पानी में आयोडिन तथा ब्रोमीन मिले हुए थे। ज़ारकालीन रूस में इस खोज को अपेक्षित महत्त्व न दिया गया जो इसी एक बात से स्पष्ट है कि क्रान्ति पूर्व तक यहां से कुल ४४० पौंड आयोडिन प्राप्त की गयी। अब प्राप्त आयोडिन की मात्रा तब से बीसियों गुना बढ़ गयी है। ब्रोमीन की मात्रा तो अपेक्षाकृत और भी अधिक है। चेलेकेन के प्रति लिटर पानी में लगभग २५ मिलीग्राम आयोडिन और १,००० मिलीग्राम ब्रोमीन है। इन पदार्थों के इतने अधिक परिमाण को देखकर हम अनुमान लगा सकते हैं कि यहां ये वस्तुएं अनन्त काल तक प्राप्त होती रहेंगी।

चेलेकेन में निस्सारण-उद्योग पहाड़ों में ही स्थापित किये गये हैं। प्रायद्वीप के निचले क्षेत्र रेगिस्तान हैं, फलतः लवण-युक्त मिट्टी आसानी से धूल बन जाती है जो हल्की से हल्की हवा का सहारा पाकर उड़ने लगती है और फिर उसे ज़मीन पर आने में काफ़ी समय लग जाता है। प्रायद्वीप समुद्र पर से शायद ही कभी दिखलाई पड़ता हो क्योंकि यहां उठनेवाली इस रंगहीन धूल से वातावरण तक पारदर्शक नहीं रह जाता। जिन दिनों धूल भरी आंधियां चलती हैं उन दिनों बादलहीन आकाश में से दिखाई पड़ता हुआ सूर्य चांद जैसा प्रतीत होता है।

एक समय था जब कास्पियन सागर की लहरें 'साउन्ड' से होती हुई निर्बाध गति से आगे बढ़ती थीं, किन्तु यहां छिछलापन इतना अधिक था कि कभी कभी अनुभवी जहाज़-चालक तक धोखा खा जाते थे। उस समय वे इन लहरों को देखकर समझने लगते थे कि रास्ता साफ़ है और अपने जहाज़ों को आगे बढ़ा देते थे जिसके परिणाम-स्वरूप कभी कभी जहाज़ ज़मीन में भी धंस जाते थे। लेकिन समय ने करवट ली। अब अनुभवहीन आंखें भी धोखा नहीं खातीं। अब वे देख सकती हैं कि 'साउन्ड' से होकर कोई रास्ता नहीं है (यद्यपि वहां लहरें अब भी पहले की ही तरह उठती हैं) क्योंकि अब उन्हें द्वीप और मुख्य प्रदेश के बीच की चौरस ज़मीन साफ़ दिखती है। इस ज़मीन पर सूर्य की किरणें पड़ने से मृग-मरीचिका जैसा अनुभव होता है और लगता है कि वहां पानी है, लेकिन वस्तुतः वहां गीली रेत को छोड़कर और कुछ भी नहीं होता। समुद्र का यह छिछला भाग सूर्य के प्रकाश में आ गया था। पहले यहां की भूमि दलदली थी इसलिए उसे पैदल अथवा गाड़ी पर पार करने का प्रश्न ही न उठता था। लेकिन जैसे समय बीतता गया दलदल सूखता गया और एक दिन वह भी आया जब एक बहादुर मोटर-चालक ने, जो नेबित-दाग़ से आ रहा था, अपनी ट्रक पर इस मार्ग से होकर जाने का ख़तरा उठाया। उस समय स्वभावतया यह किसीने सोचा तक न था कि मुख्य प्रदेश और भूतपूर्व द्वीप के बीच होकर स्थायी मार्ग भी निकल सकता है। किन्तु आज वह मार्ग है और लोग उसपर आते-जाते हैं। आज प्रायः प्रतिदिन ही भरी-भराई ट्रकें नेबित-दाग़ से चेलेकेन तक पहुंचती हैं उस स्थान से होती हुई जहां अभी हाल ही तक समुद्र का तल था।

चेलेकेन के बहुत-से निवासी उन परिवारों में से हैं जो ओज़ोकेराइट अथवा तेल निकालने के कामों में अरसे से लगे हुए हैं। वे अपने व्यापार को और अपने द्वीप को (यहां के निवासी अभी भी इसे द्वीप कहकर ही पुकारते हैं) प्यार करते हैं। बहुत सम्भव है कि यह नाम बना ही रहे, वैसे ही जैसे मास्को के लोग उस सड़क को, जहां एक भी नदी नहीं है, कुज़नेत्स्की मोस्त (कुज़नेत्स्की पुल) कहकर या उस मैदान को, जहां एक भी फाटक नहीं है, क्रासनिये वोरोता (सुन्दर फाटक) कहकर अमर बनाये हुए हैं। कौन जाने कि वह दिन कब आ जाय जब किसी बस का कन्डक्टर या सम्भवतः किसी विद्युत-ट्रेन का (जो नेबित-दाग़ से होकर चेलेकेन तक के लिए शायद बन ही जाय)

गार्ड चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे—"तीन स्टेशनों तक जाना है—'चेलेकेन द्वीप', 'ग्रोज़ोकेराइट सैनेटोरियम' और 'सांस्कृतिक उद्यान'। जो यात्री समुद्र में स्नान करना चाहें उनके लिए यही स्टेशन है!"

बेशक अभी ये सुविधाएं वहां नहीं हैं, परन्तु उनकी आशा की जा सकती है। सम्प्रति वहां चेलेकेन नामक एक नया नगर है, जो प्रायद्वीप के पश्चिमी किनारे पर विकसित हो रहा है। अब वहां पत्थर के नये नये मकान हैं जिनकी खिड़कियों में से आप असीम नील कास्पियन और उससे लगा हुआ समुद्री तट देख सकते हैं। यहां के निवासियों ने अपने लिए खेल-कूद का एक स्टेडियन बनवा लिया है। घरों में नलों द्वारा जल दिया जाता है और अब वहां के लोग वनस्पति पैदा करने की दिशा में प्रयत्नशील हैं। एक उपनगर क्षेत्र में साग-सब्ज़ियों का बाग़ लगाने के निमित्त वहां सन् १९५३ के शरद्-काल में प्रथम २५ एकड़ ज़मीन पर जुताई की गयी थी। निश्चय ही पश्चिमी तुर्कमनिस्तान का सबसे अल्पायु नगर, चेलेकेन, उन्नति कर रहा है।

पश्चिमी तुर्कमनिस्तान के अन्य बहुत-से स्थानों की तरह चेलेकेन में अब भी ताज़े पानी के अपने स्रोत नहीं हैं। वस्तुतः समुद्री पानी को डिस्टिल करके ही साफ़ और ताज़ा बनाया जाता है। सम्प्रति बलखान की तलहटियों से यहां तक पाइप लगाये गये हैं।

५

चेलेकेन के अधिकांश निवासी खनिज-उद्योग में लगे हुए हैं। फिर भी यहां की कुछ आबादी मछली मारने के व्यवसाय में लगी हुई है। यहां मछली मारने का एक प्रसिद्ध स्थान है करा-गेल।

मछली मारना अतीत काल से ही तुर्कमान समुद्री तट के आस-पास बसे हुए अनेक गांवों का मुख्य धंधा रहा है और आज इस व्यवसाय का प्रजातंत्र की अर्थ-व्यवस्था में विशेष महत्त्व है।

कास्पियन सागर में नौगमन संबंधी अनेकानेक अप्रत्याशित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। सबसे शान्त दिनों में भी सहसा अकारण ही समुद्र में ऊंची ऊंची लहरें उठने लगती हैं और वह उबलने तथा छलछलाने लगता है। साफ़

मौसम में भी यात्रा आरम्भ करनवाले जहाज़ों को कुछ ही समय बाद अप्रत्याशित ऊंची ऊंची लहरों का सामना करना पड़ सकता है और वे पानी पर तैरने-उतराने लगते हैं। यहां का मौसम कुछ इतना निराला होता है कि नीले आसमान पर तेज़ी से चमकते हुए सूर्य और शान्त हवा के होते हुए भी समुद्र पर एकाएक ऐसे तूफ़ान आ जाते हैं जिनका हमें पूर्वाभास तक नहीं हो पाता। कभी कभी तो ऐसा लगता है कि जहाज़ दैत्याकार तरंगों की दया पर ही निर्भर हैं।

बड़े बड़े जहाज़ों तक के कर्मचारी इस विभीषिका के प्रति उदासीन नहीं रहते किन्तु तुर्कमान मछुए अपनी साधारण लम्बी नावों में, जिन्हें तैमून या तैमील कहते हैं, इन तूफ़ानों का सामना करते हैं और उसपर विजय पाते हैं। शताब्दियों से तुर्कमान लोग बंजारों, अच्छे घुड़सवारों और कुशल नाविकों के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। हमें १९३६ की वह घटना आज भी याद है जब कि 'तैमून' शब्द सोवियत संघ के हर व्यक्ति की ज़बान पर था। उस वर्ष १५ तुर्कमान मछुओं के एक दल ने अपने हल्के-से जलपोतों में कास्पियन सागर को पार करने के बाद वोल्गा, ओका तथा मास्को नदियों के बीच से गुज़रते हुए तीन हफ़्तों में क्रास्नोवोद्स्क से मास्को तक की यात्रा की थी।

कास्पियन में विभिन्न प्रकार की मछलियां पायी जाती हैं जिनमें प्रसिद्ध कास्पियन बेलुगा, स्टर्जन, सेवर्यूगा, सैमेन परिवार की मछलियां तथा रोच, पर्च, साज़न (कार्प परिवार की मछली), ब्रीम और लिंग जैसी सफ़ेद मछलियां हैं।

किन्तु कास्पियन की मुख्य मछली हेरिंग है और यहां यह बहुत बड़ी मात्रा में पायी जाती है। वैज्ञानिकों का मत है कि यहां इस्प्राट मछलियों की विपुलता है, अक्षयता है। यहां इस्प्राट मछलियों को पकड़ने के व्यवसाय को सीमित कर दिया गया है, इसलिए नहीं कि मछलियां कम हैं अपितु इसलिए कि यहां इन्हें पकड़ने और इनपर प्रक्रियाएं करने की औद्योगिक संभावनाएं परिमित हैं।

१९३१ – ३४ में ग्रेमुलेट नाम की मछलियां काला सागर से लाकर कास्पियन में डाली गयी थीं। इन मछलियों ने शीघ्र ही अपने को इस नये वातावरण के अनुकूल बना लिया और अब, विशेष रूप से समुद्र के केन्द्रीय तथा दक्षिणी भागों में, उनकी संख्या द्रुतगति से बढ़ती जा रही है।

कास्पियन के निकट स्थित अन्य प्रजातंत्रों तथा क्षेत्रों के मछुओं की भांति तुर्कमनिया के मछुए भी यहां वर्ष भर व्यस्त रहते हैं और विभिन्न मौसमों में विभिन्न भागों से विभिन्न प्रकार की मछलियां लाया करते हैं। फ़रवरी और मार्च में सबसे अधिक मछलियां ओगुरचिंस्की और गसन-कुली के सामने के तुर्कमान तटों से पकड़ी जाती हैं। यहां मछलियों का शिकार करने के लिए मछुए आस्त्रखान, मखच-क़अला, गूर्येव, क्रास्नोवोद्स्क और बाकू से आया करते हैं। साल के पश्चाद्वर्ती महीनों में मछलियां मारनेवाले छोटे-बड़े जलपोतों का दल पश्चिम की तरफ़ आज़रबैजान की ओर बढ़ता है जहां वह लेनकोरन के आसपास रुक जाता है। तत्पश्चात् वह दगेस्तान की ओर चल देता है। एक-दो महीनों के बाद मछलियां पकड़नेवाली तुर्कमान नावें तथा आज़रबैजान और दगेस्तान के मछुओं के जलपोत कास्पियन के उत्तरी तटों के निकट कार्यरत दिखाई पड़ते हैं। इसके बाद उन्हें फ़ोर्ट शेवचेन्को से देखा जा सकता है। चेलेकेन, गसन-कुली तथा ओगुरचिन्स्की से मछली का शिकार करने के लिए चली हुई नावें कास्पियन सागर का पूरा चक्कर लगा लेने और मछलियों के हर मौसम से लाभ उठा लेने के बाद कुछ काल के लिए अपने अपने मूलस्थानों को लौट आती हैं। इस काल में मछुओं को अपने व्यस्त जीवन से अवकाश मिल जाता है और वे थोड़ा आराम करते हैं।

अभी हाल ही में तुर्कमनिया भर की ८५' प्रतिशत मछलियां सिर्फ़ गसन-कुली से भेजी गयी थीं। यह नगर प्रजातंत्र में मछली मारने के सबसे प्रमुख केन्द्रों में से एक है।

इस नगर में आनेवाले जहाज़ किनारे से काफ़ी दूर हटकर खड़े हो जाते हैं और अपने यात्रियों को मछली मारनेवाली बड़ी बड़ी नावों पर उतार देते हैं। किन्तु ये नावें भी किनारों की ओर कुछ मील तक चल लेने के बाद रुकने के लिए मजबूर हो जाती हैं। यहां का समुद्र इतना छिछला है कि नावों के तल यहां की बालू को छूने लगते हैं। अब यात्रियों को अपनी नाव फिर बदलनी पड़ती है और वे चौरस तलों वाली नाव पर आ जाते हैं। ये नावें उन्हें समुद्र तट तक ले आती हैं जहां से वे गाड़ियों पर अपनी यात्रा आरम्भ करते हैं।

गसन-कुली के आस-पास समुद्र की सतह इतनी कम हो गयी है कि अब वह एक बड़ा छिछला-सा तालाब प्रतीत होने लगा है जहां छोटी छोटी तरंगें उठा करती हैं। जब कभी आंधी चलती है तो इन तरंगों का आकार बढ़ जाता है और वे किनारों से ऊपर काफ़ी दूर तक फैल जाती हैं और गसन-कुली के आस-पास मीलों दूर तक की मिट्टी गीली कर डालती हैं।

नवागन्तुक की पहली नज़र लट्ठों पर बने हुए पुराने मकानों पर पड़ती है। एक ज़माने में समुद्र बहुत पास था और ये लट्ठे उसकी खारी लहरों के आक्रमण से मकानों की रक्षा करते थे। अब कास्पियन का जल भयानक तूफ़ानों के समय भी इन मकानों के समीप नहीं भटकने पाता। इन लट्ठों के नीचे का स्थान या तो सायबान के रूप में या पशुओं के ओसारे के रूप में काम में लाया जाता है।

प्रायः सभी मकान एकमंज़िले हैं और पटरों या लट्ठों के बने हैं। उनकी छतें भी पतले पटरों की हैं। प्रत्येक मकान के चारों ओर एक संकरा-सा बरामदा है जिसके जंगले में लगी हुई सलाखों पर मछुए प्रायः अपने जाल सुखाते हैं और साथ ही मछलियां सुखाने के लिये उन्हें रस्सियों से बांध बांधकर लटका देते हैं। यहां कहीं भी कोई पेड़-पौधा नहीं उगता क्योंकि यहां अच्छे जल की कोई स्थायी व्यवस्था नहीं है। जो कुछ पानी मिलता है वह या तो जाड़े में होनेवाली वर्षा से मिलता है या फिर पानी साफ़ करने के कारखाने से। जिस स्थान पर यह कारखाना स्थित है वह किसी समय समुद्र-तट के बहुत निकट था किन्तु अब समुद्र बहुत पीछे हट गया है और उसका पानी नलों द्वारा यहां तक लाना पड़ता है। प्रत्येक मकान की नालियों के नीचे बड़ी बड़ी नांदें हैं जहां वर्षा का जल इकट्ठा किया जाता है। यह जल धातु की बड़ी बड़ी बाल्टियों में भी रखा जाता है जो प्रत्येक घर के प्रायः प्रत्येक कमरे में रखी हुई दिखाई पड़ती हैं। जब नांदों और बाल्टियों का पानी समाप्त हो जाता है तो लोग चिकिशलार जानेवाली सड़क पर स्थित दूरस्थ कुओं से पानी लाते हैं। ईंधनों के लिए भी उन्हें काफ़ी दूर दूर तक अत्रेक नदी के किनारों तक, जहां सरपत की बहुसंख्यक झाड़ियां हैं, जाना पड़ता है।

गसन-कुली की स्त्रियां क़ालीन बुनने में बड़ी पटु हैं। ये क़ालीन फ़र्शों तथा बरामदों की दीवालों और मछुआ-संस्कृति-भवन की शोभा बढ़ाते हैं। लकड़ी वाले इस

व्यस्त नगर से मछली की बू के साथ साथ आयोडिन की भी गन्ध घुली-मिली मिलती है। क़ालीनों की सुन्दरता से यहां के मकानों की शोभा भी दूनी हो जाती है।

गसन-कुली कास्पियन के दक्षिणी भाग की अन्तिम बस्ती है। लगभग छ या सात मील की दूरी पर ईरान की सीमा है जो अत्रेक की एक सहायक नदी के साथ साथ दूर तक चली गयी है। दक्षिण में नीले एलबुर्ज़ पर्वत हैं।

कास्पियन तटवर्ती गसन-कुली के क्षेत्र में पक्षियों का एक शरणस्थल है जो उत्तर में चिकिशलार से लेकर दक्षिण में राज्य की सीमा तक और पूर्व में करा-बाबा की पहाड़ियों तक के एक बड़े क्षेत्र को घेरे हुए है, जो यात्रियों के लिये निश्चय ही मनोरंजन का एक स्थान है।

सितम्बर के उत्तरार्द्ध के आरम्भ से चिड़ियां एशिया और योरोप के दूरस्थ क्षेत्रों से अत्रेक के किनारे किनारे आने लगती हैं। बत्तख, हंस, सफ़ेद तथा भूरे बगुले, भारी क़द के पेलिकन और गुलाबी रंग के मराल यहां अपना जाड़ा बिताते हैं। मार्च समाप्त होते होते ये पक्षी अपने गर्मियों के निवास के लिए उत्तर की ओर चले जाते हैं।

प्रोफ़ेसर लप्तेव की प्रेरणा से सोवियत सरकार ने यहां क्रांति-पश्चात् के पहले कुछ वर्षों में एक सुरक्षा-स्थल की स्थापना की थी किन्तु दुर्भाग्यवश वर्ष-प्रतिवर्ष अत्रेक नदी सूखती ही जा रही है।

अब उपर्युक्त पक्षी यहां उतनी संख्या में नही आते जितनी संख्या में पहले आया करते थे, क्योंकि अब उन्हें जाड़े में ताज़ा पानी मिलने का विश्वास नहीं रहता। मराल इन पक्षियों में सबसे मूल्यवान हैं। कई वर्ष पहले ये बड़े बड़े सुन्दर पक्षी यहां इतनी बड़ी संख्या में आया करते थे कि दिसम्बर और जनवरी के महीनों में अत्रेक के तट ऐसे लगते थे मानो उनपर गुलाबी रंग का क़ालीन बिछा दिया गया हो। किन्तु इस सुरक्षा-स्थल में काम करनेवाले वैज्ञानिकों ने यह सूचना दी है कि विगत कुछ जाड़ों से इनकी संख्या बराबर कम होती जा रही है और अब वे केवल कोड़ियों की संख्या में ही रह गये हैं। पेलिकन पक्षियों की संख्या भी बहुत थोड़ी रह गयी है।

अत्रेक में पानी की कमी होने के कारण पक्षियों को अन्य सुरक्षा-स्थलों में जाने के लिए बाध्य होना पड़ा है। अब बहुत-से पक्षी गसन-कुली से लगभग २० मील दूर अत्रेक के ऊपरी क्षेत्रों में महान् देलिली और लघु देलिली झीलों के आस-पास बस गये हैं।

अत्रेक नदी के छिछली हो जाने के कारण समुद्र के तट के निकट पायी जानेवाली मछलियों को भी अपनी आदतें बदलने के लिए मजबूर होना पड़ा। किसी ज़माने में इस नदी के डेल्टा में अंडे देने के लिए अनेक प्रकार की मछलियों की भी बहुतायत थी। अब ये मछलियां अन्यत्र चली गयी हैं। यहां मत्स्य-पालन की आवश्यकता-पूर्ति के लिए एक विशेष नहर भी बनवायी गयी है।

किन्तु सम्प्रति सामूहिक मीनाशयों से यहां पकड़ी गयी मछलियों की संख्या घटने के बजाय निरंतर बढ़ती जा रही है, यद्यपि समुद्र की सतह गिरती जा रही है। और इस वृद्धि का कारण सामूहिक मत्स्य-व्यवस्था तथा अद्ययुगीन वह उन्नत साधन है जो पुराने ढंग से मछली मारने की वैयक्तिक प्रणाली से बिल्कुल भिन्न है। तेज़ चलनेवाली मोटर-बोटें और ड्रिफ़्टर तथा स्काउटिंग एयरक्रैफ़्ट सामूहिक मछुओं के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। सरकार द्वारा स्थापित मोटर-मत्स्य-केन्द्र सामूहिक फ़ार्मों की बहुत अधिक सहायता कर रहे हैं।

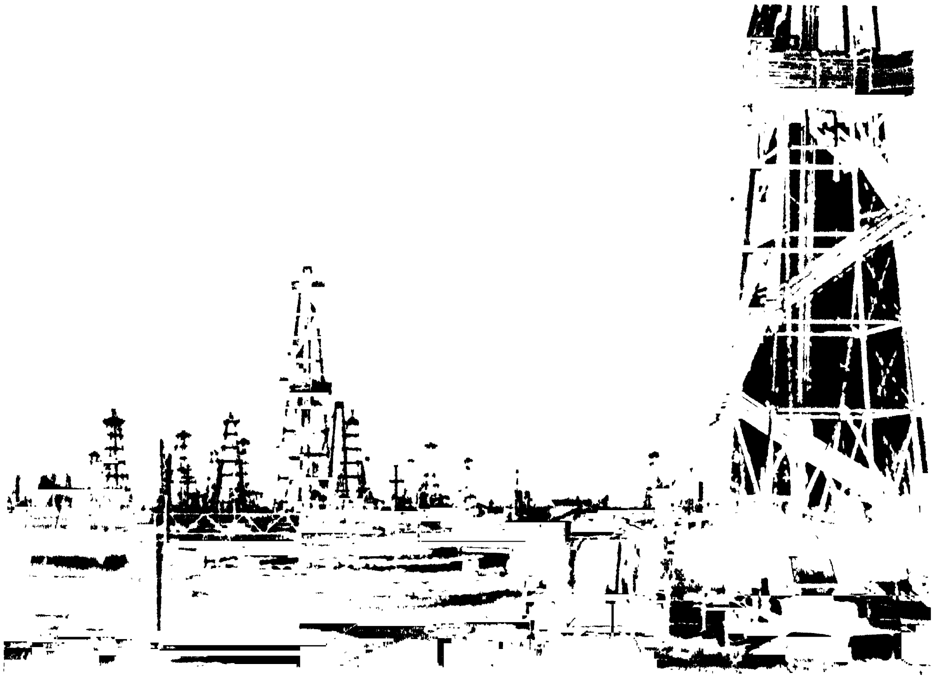
मछली के मौसम में पकड़ी गयी मछलियों पर गसन-कुली, किज़ील-सू और क्रास्नोवोद्स्क के कारखानों में प्रक्रियाएं की जाती हैं। क्रास्नोवोद्स्क प्लान्ट के विभागों में मछलियों को नमकीन बनाया जाता है, धुएं में सुखाया जाता है अथवा डब्बों में बन्द किया जाता है।

सोवियत शासन-काल में तुर्कमान समुद्री तट का मछली-उद्योग, जो कभी केवल आदिकालीन उद्योग था, प्रजातंत्र के खाद्य-उद्योग का एक प्रमुख तथा अत्यधिक यन्त्रीकृत उद्योग बन गया है।



करा-बोगाज़-गोल इलाक़े में माध्यमिक स्कूल

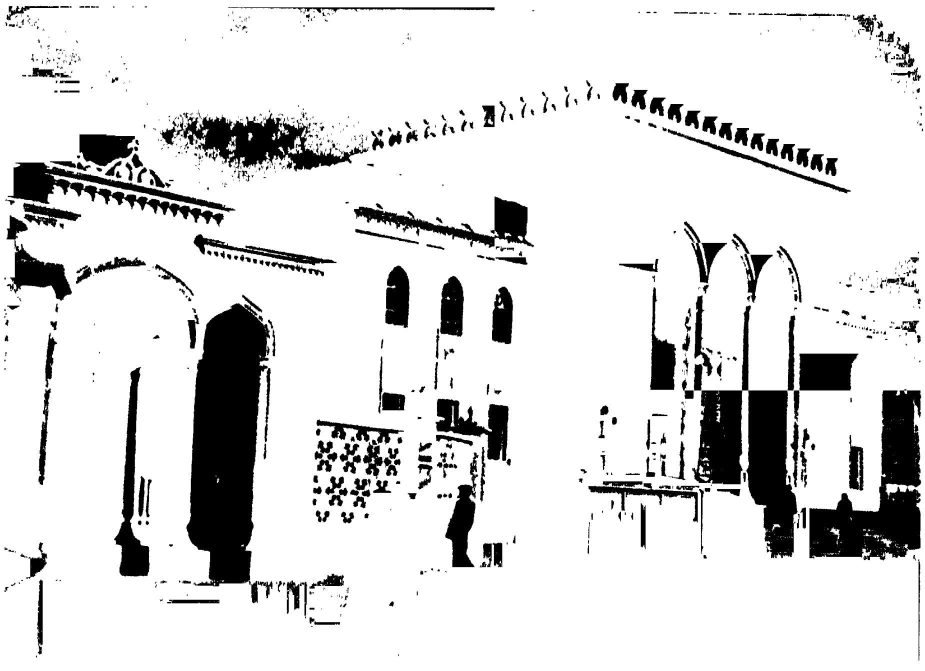
नेबित-दाग़ का तेल-क्षेत्र





मई दिवस मार्ग। नेबित-दाग

तेल [illegible] का मस्कृति-प्रासाद। नेबित-दाग



तेल-पर्वत

अध्याय १

१

क्रास्नोवोद्स्क से आगे ट्रेन कूबा-दाग पर्वत-माला की खड़ी चट्टानों के नीचे नीचे ६० मील से भी अधिक दूरी तक चली जाती है। इस पर्वत-माला के बाद से क्यूरयानीन-क्यूरे की पहाड़ियां आरम्भ हो जाती हैं। रेलवे के दक्षिण में पहले-पहल यात्री को खाड़ी का शान्त नीला जल और फिर मिट्टी तथा बालू का एक रंगहीन प्रदेश दिखाई देगा। यह प्रदेश तुर्कमनिया में आनेवाले यात्री का ध्यान बराबर अपनी ओर आकृष्ट करता रहता है। यह प्रदेश कभी ट्रेन के दाहिनी ओर कभी बायीं ओर, मतलब यह कि हर समय यात्री के साथ साथ, रहता है। नखलिस्तानों के दिखने पर यह प्रदेश क्षितिज की ओर छिपता हुआ-सा प्रतीत होता है, किन्तु जैसे ही ट्रेन उन्हें छोड़कर आगे बढ़ती है कि वह फिर निगाहों के सामने आ जाता है।

पश्चिमी तुर्कमनिस्तान के इस भाग में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो आंखों को सुखकर प्रतीत हो। यहां के पर्वतों के ढाल सूखी घाटी की तरह ही निर्जीव और नीरस हैं। हां, कभी कभी पत्थरों के बीच चरता हुआ कोई ऊंट अथवा निर्जन स्तेपी में कोई एकाकी किबितका अथवा ईंटों का मकान अवश्य दिख जाता है और तब यात्री को निश्चय ही बड़ा आश्चर्य होता है खासकर यह सोचकर कि आखिर इन पत्थरों में या बालू से भरी हुई यहां की मिट्टी में ऊंट क्या खाता है और इस निर्जन प्रदेश में, जहां न पानी है न वनस्पति, लोग कैसे रहते हैं।

कास्पियन समुद्र तट का यह भाग आज भी अधिकांश जन-संख्या के लिए खाने की चीज़ों की सुव्यवस्था करने में असमर्थ है। फिर भी कुछ बस्तियों की जल-सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति दूर दूर पर स्थित कुओं से हो जाती है जब कि यहां यत्र-तत्र पायी जानेवाली थोड़ी-सी वनस्पति 'रेगिस्तान के जहाज़' अर्थात् ऊंट के लिए काफ़ी है। यहां की मज़बूत घास तथा झाड़-झंखाड़ ऊंटों को बड़े प्रिय हैं। वे यहां की चट्टानों तथा सूखी मिट्टी के साथ परस्पर इतने अधिक घुले-मिले हैं कि मनुष्य की तेज़ निगाहें भी उन्हें जल्दी नहीं देख पातीं।

क्यूरयानीन-क्यूरे पर्वतों के ढालों पर उत्तर-पूर्व की ओर बीसियों मील की यात्रा कर लेने के पश्चात् यात्री चिल-ममेद-कुम रेगिस्तान में पहुंच जाता है। पहली नज़र में ऐसा लगता है कि रेत में धंसे हुए झाड़-झंखाड़ निर्जीव हैं, नीरस हैं, सिर्फ़ आग जलाने के लिए हैं और इनसे रत्ती भर भी पौष्टिक रस नहीं निकाला जा सकता। लेकिन फिर लोग अपने ऊंटों को भी यहीं चरने के लिए छोड़ देते हैं। यद्यपि नागदौना, सलसोला, कन्दिम तथा अन्य घासें तथा झाड़ियां आंखों को नहीं भातीं फिर भी ऊंट इन्हीको सबसे अधिक पसन्द करते हैं। इनके अतिरिक्त यनतक नामक एक पौधा और भी है जिसे ऊंट बहुत पसन्द करते हैं। यनतक को ऊंट का कांटा भी कहते हैं। पास-पड़ोस के बहुत-से पशु-पालन फ़ार्म अपने जानवरों को रेतीले मैदानों में, जो पूर्व में क्रास्नोवोद्स्क पठार से लगे हुए हैं, चरने के लिए भेज देते हैं। ऊंट कुओं के हल्के खारी पानी पर भी रह सकते हैं। ऊंट-पालन के सबसे बड़े स्टेट फ़ार्मों में से एक जेबेल के पास है।

जेबेल क्रास्नोवोद्स्क के बाद सबसे प्रमुख रेलवे-स्टेशन है। यह कास्पियन की नीची भूमि में उस स्थान पर स्थित है जहां से क्रास्नोवोद्स्क पठार के उभरे हुए भाग समाप्त होकर उत्तर-पूर्व से आनेवाली पर्वतों की वे अन्य श्रेणियां शुरू हो जाती हैं, जो कूबा-दाग़ से भी अधिक आकर्षक हैं। यह महान् बलख़ान पर्वत-श्रेणी है, जहां बहुत-से शिकारी तथा चरवाहे क्रमशः शिकार करते या पशु चराते हैं। यह वह श्रेणी है जो तुर्कमनिया की कविताओं और लोक-गीतों में आज भी जीवित है।

महान् बलख़ान पर्वत-श्रेणी १३५० वर्ग मील के क्षेत्र में फैली हुई है। पूर्व से पश्चिम की ओर इसकी लम्बाई ४५ मील और उत्तर से दक्षिण की ओर ३० मील है।

महान् बलखान के दक्षिण की ओर उसी दिशा में फैली हुई एक छोटी पर्वत-श्रेणी और है जिसका नाम है लघु बलखान पर्वत-श्रेणी। इन दोनों पर्वत-श्रेणियों के बीच की घाटी में एक रेलवे-लाइन भी बनी हुई है।

महान् बलखान बहुत ऊंचे नहीं हैं—सबसे ऊंची श्रेणी समुद्री धरातल से ६१६८ फ़ीट ऊंची है। इस उंचाई पर वायुमंडल की आर्द्रता बनी रहती है जब कि अन्य स्थानों पर इस आर्द्रता को आंधी उड़ा ले जाती हैं। आस-पास के मैदानों की तुलना में बलखानों में वर्षा अधिक होती है। इन सीधे पहाड़ी ढालों तथा ऊंचे-नीचे अनेक कटावदार पत्थरों को पार करता हुआ जो यात्री ऊपर चोटी तक पहुंचता है, उसका स्वागत करने के लिए पठार की हरियाली—घास-फूस, झाड़ियां तथा ऊंचे ऊंचे जूनिपर वृक्ष बांहें पसार देते हैं, और वह प्रकृति की इस मनोरम छटा के बीच बेसुध हो जाता है। यह वनस्पति महान् बलखानों की चोटी से आरम्भ होकर नीचे कन्दराओं में होती हुई उन सोतों और कुओं के आस-पास इकट्ठी हो जाती है जिनमें वर्ष के अधिकांश तक पानी रहता है।

स्थानीय जनश्रुति है कि एक ज़माना था जब इन पहाड़ों पर तुर्कमनिया की सबसे बड़ी जनजाति—तेक्के—का निवास था। यह कहना कठिन है कि इसमें कितना सत्य है परन्तु ऐसा सम्भव है कि इस जनश्रुति का संबंध उस अतीत युग से हो जब कि बलखानों के पूर्व और दक्षिण में सरीकामिश झील से आता हुआ उज़बोई का पानी बहा करता था।

नीची उज़बोई का तल अब सूख गया है और यहां से होकर एक रेलवे-लाइन महान तथा लघु बलख़ानों के बीच से होती हुई जाती है। दक्षिण में महान् बलखानों की सीमा बनाता हुआ यह तल उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ता हुआ एक दूसरी किन्तु अधिक चौड़ी घाटी की तरफ़ जाता है। यह घाटी कभी एक खाड़ी थी। यदि हम कल्पना करें कि इन दोनों स्थानों में पानी भरा है तो हमें प्रतीत होगा कि महान् बलखान कभी एक प्रायद्वीप था जिसके सामने पश्चिम में एक खाड़ी तथा दक्षिणी और पूर्वी ढालों पर उज़बोई का जल था।

यहां नदी का प्राचीन तल अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक प्रभावोत्पादक नहीं है। बलखानों के पश्चिम में इस तल के शायद ही कोई निशान बाक़ी रह गये हों।

यहां की भूमि कुछ इतनी एकरूप हो गयी है कि नजदीक के तट कहां थे इसका अनुमान भर लगाया जा सकता है। अब यत्र-तत्र कुछ अधसूखी खारी झीलें और दलदल बच रहे हैं जिनसे पता चलता है यहां पर कभी कोई नदी भी थी। इनमें से कुछ झीलें और दलदल स्वास्थ्यप्रद भी हैं और उनमें पाये जानेवाले लवण गठियाबाई तथा चर्म-रोगों एवं अन्य बीमारियों के लिए बड़े उपयोगी हैं।

जेबेल से कुछ मील दूर तक छोटी-सी खारी झील के किनारे मोल्ला-कोरा नाम का एक सैनेटोरियम है जिसे एक ब्रांच-लाइन जेबेल से मिलाती है। जो लोग इलाज के लिए अशकाबाद, नेबिन-दाग, क्रास्नोवोद्स्क, मारी, चार्दज्हू तथा तुर्कमनिया के दूसरे स्थानों से यहां आते हैं वे प्रायः यह नहीं जानते कि औषधि-गुण वाले जल की यह छोटी-सी झील कभी एक पुराने प्रसिद्ध जलमार्ग का ही भाग थी।

२

मोल्ला-कोरा स्वास्थ्य-केन्द्र की एक अपनी विशेषता है, एक अपनी दृश्यावली, जो सोवियत संघ के अन्य किसी भी स्वास्थ्य-केन्द्र से क़रीब-क़रीब भिन्न है।

जब हम किसी स्वास्थ्य-केन्द्र की बात करते हैं तो साधारणतया हमारी कल्पना के समक्ष अति सौन्दर्यपूर्ण कोई ऐसा स्थल घूम जाता है जहां प्रकृति अपनी अनुपम छटा बिखेरने में इतनी उदार रहती है कि उसके दर्शन मात्र से ही रोग या तो समाप्त हो जाते हैं या कम हो जाते हैं। किन्तु मोल्ला-कोरा में प्रकृति न तो समृद्ध है और न ऐश्वर्यपूर्ण। यहां के सैनेटोरियम-काटेजों के आस-पास सकसौल से परिपूर्ण बरख़ानों के सिवा और कुछ भी नहीं। यह ठीक है कि इनमें बहुत-से वृक्ष लम्बे तथा टहनीदार हैं मगर हैं वे सब सकसौल के वृक्ष ही, खजूर के नहीं। रेत के बीच खारी पानी की एक छोटी किन्तु लम्बी झील है। ग्रीष्म-काल समाप्त होते होते इसका पानी कुछ लाल रंग का दिखाई पड़ने लगता है मानो उसके ऊपर मोर्चे की पर्त चढ़ी हो। सच पूछो तो मोल्ला-कोरा का स्वास्थ्य-केन्द्र अंशतया करा-कुम और अंशतया उज़बोई के पुराने तल में है। इसके

उत्तर में क्षितिज के पास सौन्दर्यपूर्ण महान् बलखान पर्वत-श्रेणी नज़र आती है। स्वास्थ्यवर्धक मौसम मई में आरम्भ होकर अक्तूबर के अन्त में समाप्त हो जाता है। ग्रीष्म-काल में यहां का औसत तापमान १०४ अंश फ़ारेनहाइट रहता है और इतनी गर्मी से बचने के लिए वहां कोई स्थान नहीं है। शाखादार सकसौल वृक्ष या हाल के बरामदे भी गर्मी से लोगों की रक्षा नहीं कर सकते। धूप में तो यह और अधिक हो जाता है।

फिर यह प्रश्न स्वाभाविक है कि ऐसी जलवायु में यहां लोग आराम और इलाज के लिए आते ही क्यों हैं अर्थात् कौनसी ऐसी चीज़ है जो उन्हें इस ओर खींचती है? इसमें सन्देह नहीं कि इस केन्द्र की प्रसिद्धि दूर दूर तक फैल रही है। और इसका कारण है। यहां की खारी झीलों, गर्म पंकस्नानों, धुपहली मरुभूमि की पारदर्शक स्वच्छ ताज़ी हवा तथा उष्णता और धूप सभी में नीरोगता के गुण हैं, आरोग्यवर्धक शक्तियां हैं और वे रोगियों के लिए इतनी लाभदायक हैं कि स्ट्रेचरों पर लादकर लाये गये बीमार भी यहां रह लेने के बाद इतने स्वस्थ हो जाते हैं कि घर जानेवाली गाड़ी पकड़ने के लिए भागते हुए स्टेशन तक जा सकते हैं और उन्हें सहारे के लिए छड़ी तक की ज़रूरत नहीं पड़ती।

मोल्ला-कोरा आनेवाले रोगी जब लौटते हैं तो यहां के औषधि-गुण-युक्त पंकों तथा यहां की प्रकृति के सौन्दर्य को नहीं भूल पाते। जो लोग करा-कुम में पहले-पहल बरख़ानों को देखते हैं वे सहसा कह उठते हैं कि इस निर्जन मरुभूमि में कोई भी नहीं रह सकता। किन्तु ये स्थान निष्प्राण नहीं हैं, यहां की रेत मृत नहीं है। बादलहीन आकाश के नीचे रेत की मृदु सरसराहट में, सकसौल वृक्षों के ख़ूबसूरत टेढ़े-मेढ़े तनों में, ऊर्मिल क्षितिज में (जिसके उत्तर में बलख़ान की वे श्रेणियां हैं जो सैनेटोरियम से कुछ मील दूर रेलवे के उस पार से आरम्भ हो जाती हैं) एक विशेष आकर्षण है, विशेष जादू है।

निश्चय ही मोल्ला-कोरा का भविष्य उज्ज्वल है। अब यहां और भी प्रगति हो रही है। पहले इस केन्द्र में ताज़े पानी का अपना स्रोत न था। जल यहां रेल द्वारा लाना पड़ता था। किन्तु सन् १९५३ में यहां पानी के नल लगाये गये और इसके साथ ही यहां के जीवन में एक नये युग का आरम्भ हुआ।

इसी प्रकार अति निकट नेबित-दाग़ नामक एक बड़ा नगर होने के कारण भी मोल्ला-कोरा के विकास में बड़ी मदद मिल रही है। पहले यहां पर सिवा उन लोगों के, जिन्हें इलाज की ज़रूरत होती थी, और कोई भी न आता था, क्योंकि उस समय यहां था भी क्या? चारों तरफ़ रेत और मरुभूमि। पास में सिर्फ़ एक ही बसी हुई बस्ती थी—जेवेल। किन्तु अब यहां से १६ मील पूर्व नेबित-दाग़ एक बड़ा नगर है। गर्मियों में प्रत्येक सप्ताह के अन्त में इस तेल वाले नगर के श्रमिक कार, मोटरसाइकिल अथवा बाइसिकिल द्वारा और पैदल भी मोल्ला-कोरा तक आया करते हैं। उन्हें यहां तक आने में भी सुविधा होती है क्योंकि सारी सड़क अस्फ़ाल्ट की है। जहां तक नेबित-दाग़ नगर के लोगों का प्रश्न है उनके लिए तो प्रकृति का सौन्दर्य सकसौल के टहनीदार वृक्षों और बरखानों के बीच स्थित दर्पण जैसी झील में ही है। यहां यह उल्लेखनीय है कि झील के पानी में इतना अधिक नमक है कि आप उसपर उसी प्रकार टांगें फैलाकर लेट सकते हैं जैसे किसी गद्दे पर लेटते हैं। नहानेवाले पानी के बारे में कहा जाता है कि "वह आपको नीचे से सहारा देता है और डूबने नहीं देता।"

किन्तु बिना डाक्टर की सलाह के झील में नहाना मुनासिब नहीं। साधारणतया जो लोग छुट्टियों में आराम करने आते हैं वे सकसौल वृक्षों तथा बेंतों की थोड़ी-बहुत छाया में आराम से पड़े रहते हैं क्योंकि आख़िरकार इस प्रकार उन्हें जलती हुई धूप में कुछ तो राहत मिल ही जाती है।

३

रेलवे के पश्चिमी सेक्टर से रेगिस्तान के पार यात्रा कर लेने के बाद यात्री को जेबेल के रेलवे-स्टेशन की चहल-पहल और ताज़गी का परिचय मिलता है।

जिस समय रेलवे बनी थी उस समय वहां के निवासियों ने स्टेशन के निकट एक बाग़ लगा लिया था क्योंकि उनके नगर को बलख़ानों से काफ़ी पानी मिल जाया करता था। उस रेगिस्तानी भूमि पर चालीस-पचास बड़े बड़े वृक्षों का एक साथ होना आने-जानेवालों तथा रेलवे-लाइन के क्रास्नोवोद्स्क सेक्शन पर काम करनेवालों के लिए एक आश्चर्यजनक दृश्य था। नेबित-दाग़ के लोगों को भी जेबेल में बबूल,

हनी-लोकस्ट तथा थूजा को देखकर ईर्ष्या होने लगती थी। किन्तु पिछले कुछ वर्षों में स्वयं नेबित-दाग़ नगर में इतनी अधिक प्रगति एवं उन्नति हुई है कि वनस्पति के क्षेत्र में जेबेल बहुत पीछे छूट गया है।

अब नेबित-दाग़ के निवासी जेबेल बस्ती से केवल एक ही बात में ईर्ष्या करते हैं और वह है वहां की जलवायु। जेबेल बस्ती वलग्वानों की एक लम्बी-चौड़ी दीवाल के कारण सर्द आंधियों से बची रहती है। ऐसा प्राय: होती है कि जब आंधियां नेबित-दाग़ के तारों के खंभों पर बैठी हुई चिड़ियों तक को झकझोर डालती हैं तो जेबेल के स्टेशन-उद्यान में टहनी तक नहीं हिलती।

जिस दिन जेबेल नगर बसाया गया है तभी से वह रेलवे-स्टेशन के निकट एक छोटी-सी बस्ती के रूप में लोगों को आकृष्ट करता रहा है। निकट भविष्य में इसका महत्त्व और भी बढ़ जायेगा क्योंकि यहां से उत्तर-पूर्व में, लगभग २२ मील की दूरी पर, अगलानली नामक एक स्थान पर बेन्टोनाइट नाम की दुर्लभ मिट्टी मिलती है।

लोहे तथा इस्पात-उद्योगों के कर्मचारी बेन्टोनाइट से बड़ा लाभ उठाते हैं। जब इसे उस मिट्टी में, जिससे मोल्डिंग बक्स बनते हैं, मिलाया जाता है तो वह ढलाई के लिए अधिक उपयोगी हो जाती है। लोहे तथा इस्पात-उद्योगों के अलावा भी बेन्टोनाइट एक बड़े काम की वस्तु सिद्ध हुई है। इसका प्रयोग टेक्निकल आयल तथा खानेवाले तेलों को साफ़ करने, साबुन को उबालने, दाग़ों, घावों में पीप पड़ने तथा वायु विकार जैसे रोगों में किया जाता है।

सोवियत डाक्टरों ने इस बात का पता चलाया है कि बेन्टोनाइट को औषधि बनाने के एक बड़े प्रभावकर तत्व के रूप में, जिसे वे 'जेबेलाइट' कहते हैं, परिवर्तित किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त जेबेल का एक उपयोगी पड़ोसी और भी है – उत्तर में स्थित तुआर-किर का कोयला-क्षेत्र। सम्प्रति इस कोयला-क्षेत्र का शोषण एक जटिल कार्य है क्योंकि यहां पानी का पूर्ण अभाव है और यातायात की कठिनाइयां हैं।

जेबेल से बाहर कुछ मील दूर अशकाबाद की दिशा में चौरस चोटियों वाली दो पहाड़ियां हैं जो क्षितिज की पृष्ठ-भूमि में सुन्दर कृष्ण वर्ण की प्रतीत होती हैं। इन पहाड़ियों के चारों ओर मिट्टी तथा बालू की चौरस भूमि है जिसके ठीक बाद खार-क्षेत्र पड़ता है। ये नेबित-दाग़ और मुंजूक्ली की तेल-उत्पादक पहाड़ियां हैं और एक दूसरे से ९ मील दूर हैं।

जिन यात्रियों ने १८वीं तथा १९वीं शताब्दी में इन स्थानों का भ्रमण किया है उन्होंने तेल-पर्वत पर तेल मिलने का उल्लेख किया है (नेबित-दाग़ का अनुवाद 'तेल-पर्वत' है)। सोवियत सत्ता की स्थापना तक ट्रान्स-कास्पियन के उद्योगपतियों तथा वैज्ञानिकों का ध्यान एकमात्र चेलेकेन के तेल-क्षेत्रों पर ही केन्द्रित रहा था। किसीने भी तेल-पर्वत पर विशेष ध्यान नहीं दिया था। बरानोव नामक एक यात्री ने अपनी डायरी में सन् १८२५ में लिखा था कि "तुर्कमानों ने उसी ज़माने से यहां तेल निकालना आरम्भ कर दिया था जब तेल-पर्वत एक द्वीप मात्र था किन्तु जब बाबा-खोजा नामक झील छिछली होकर एक बड़े खारे दलदल में परिवर्तित हो गयी, तो तेल निकालने का काम भी बन्द कर दिया गया क्योंकि तब इसे बाहर भेजने का कोई साधन नहीं रह गया था।"

जिस समय मध्य एशियाई रेलवे चालू हुई थी उस समय तेल-पर्वत पर परीक्षा की दृष्टि से बोरिंग की गयी थी। किन्तु अलाभप्रद होने के कारण यह कार्य शीघ्र ही स्थगित कर देना पड़ा, और उस समय तक इस दिशा में कोई भी कार्य न किया गया जब तक कि सोवियत भूगर्भशास्त्रियों ने इस क्षेत्र पर ध्यान देना आरम्भ न किया। सन् १९२७ में ड्रिलिंग शुरू की गयी किन्तु अनेक बार विफलताएं मिलने के कारण यह निश्चय किया गया कि इस योजना को स्थगित ही कर दिया जाय।

किन्तु जिस समय कार्य-समाप्ति-आयोग तेल-पर्वत के संबंध में अपना अन्तिम फ़ैसला देनेवाला था कि एक कुएं से तेल की धारा फूट निकली। यह बात मई सन् १९३१ की है। लगभग साढ़े तीन घंटे में कुएं मे ५०० टन तेल बह निकला और

इस एक घटना ने तेल-पर्वत के भाग्य का फ़ैसला कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि न केवल ड्रिलिंग जारी रखने का ही अपितु यथासम्भव अधिक से अधिक द्रुतगति से अपेक्षित कार्य-क्षेत्र में विस्तार करने का भी फ़ैसला किया गया।

किन्तु बाद में जो ड्रिलिंग की गयी वह बेकार साबित हुई और फिर जब लोगों ने यह कहना शुरू किया कि काम जारी रखने मे कोई लाभ नहीं तो सहसा १२ वें नम्बर के कुएं से तेल निकलना शुरू हो गया जो बराबर ५६ घंटे तक बहता रहा। इससे प्रति २४ घंटे में निकले हुए तेल की मात्रा ५,००० टन थी। तेल इतनी अधिक मात्रा में निकला था कि उससे सारे संग्रहकोष भर गये। इसके अलावा जल्दी जल्दी नये गड्ढे और खोदे गये तथा तेल को बहाकर उनतक पहुंचाया गया। मगर फिर भी सारा तेल इधर-उधर बहता रहा। ऐसा लगता था मानो तेल का कोई ज्वालामुखी ही फूट पड़ा हो।

उस दिन से ही किसीने भी यह नहीं कहा कि नेबित-दाग़ उद्यम लाभकर नहीं है। अब तो यह पूरे विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि तेल-पर्वत के संबंध में जो जो आशाएं लगायी गयी थीं वे पूर्णतः उचित थीं। तेल का दूसरा सोता, जो दुनिया के सबसे बड़े सोतों में से एक था, ३० जनवरी सन् १९३३ को फूटा था। इस प्रकार नेबित-दाग़ के तेल-निकासी-उद्योग में उत्तरोत्तर विकास का एक नया युग आरम्भ हुआ।

५

नेबित-दाग़, जिसका निर्माण सोवियत शासन-काल में हुआ था, एक ऐसा नगर है जहां कोई उपनगर नहीं है।

यात्री ने एक, दो या तीन घंटे पहले रेलवे की ओर बढ़ते हुए मटीले या रेतीले प्रदेश और उत्तर में शान से सिर ऊंचा किये दिखाई पड़नेवाली महान् बलख़ान श्रेणियों के रूप में प्रकृति का जो नीरस दृश्य देखा था वही दृश्य रेलवे-लाइन के दोनों ओर उसे उस समय भी दिखाई देता है जब ट्रेन जेबेल से बाहर निकलने लगती है। रेलवे से लगभग तीन फ़रलांग की दूरी पर, पर्वतों की पृष्ठभूमि में, उसे सहसा नगरों जैसा कोई मकान दिख जाता है। और फिर वैसा ही एक दूसरा मकान, और फिर वैसे ही और बहुत-से मकान, और उसे आश्चर्य होता है कि इस रेगिस्तान में ईंटों के ये

मकान कैसे ? गाड़ी रेगिस्तान पार करती हुई तेज़ रफ़्तार से बढ़ती है और उसके एक ओर अधिकाधिक मकान आते जाते हैं जो ऐसे लगते हैं मानो किसी सड़क के किनारे बने हों। जैसे ही जैसे गाड़ी बढ़ती है यात्री को रेलवे तथा पहाड़ के ढालों के बीच की भूतपूर्व मरुभूमि पर दो-दो तीन-तीन मंज़िल के मकान नज़र आते हैं। उसे सड़कें भी दिखाई देती हैं जो कच्ची नहीं, अस्फ़ाल्ट की हैं। वह पगडंडियों के दोनों ओर छोटे छोटे वृक्ष देखता है। सहसा उसकी नज़र उन स्कूली लड़कियों की पोशाकों पर पड़ जाती है जो बस पकड़ने के लिए भाग रही हैं, और फिर तेज़ी से भागती हुई उन बाइसिकिलों पर जिनकी तीलियां तेज़ धूप में चमचमा रही हैं, और फिर पीछे आती हुई कारों पर। वह सड़क पर एक दूसरे के पीछे भागती हुई उन ट्रकों को भी देखता है जो पत्थर के मकानों के चारों ओर की सफ़ेद पत्थर की दीवारों के पास से होकर सर्र से गुज़र जाती हैं। अब वह एक ऐसा सुन्दर शहर देखता है जो पश्चिम से लेकर पूर्व तक – रेलवे के समानान्तर मीलों दूर तक – फैला हुआ है और तब उसे मालूम होता है कि वह तुर्कमनिस्तान के सबसे प्रमुख नगरों में से एक है – नेबित-दाग़। यह नगर रेगिस्तानी ज़मीन पर तैयार होकर अब इस उन्नत दशा को पहुंचा है।

४० वर्ष पूर्व २६ बहादुर बाकू कमीसरों को, जिन्हें विदेशी जल्लादों ने गिरफ़्तार किया था, इन्हीं पहाड़ों और इन्हीं जगहों में इधर-उधर घुमाया गया था और रेगिस्तान में उनकी हत्या की गयी थी क्योंकि उन्हें गिरफ़्तार करनेवालों ने समझा था कि वे अपने भीरु कार्यों पर पर्दा डालकर दुनिया की आंखों में धूल झोंक सकेंगे।

काश ये मृत व्यक्ति ज़िन्दा हो जाते! तो वे देखते कि अखची-कुईमा जिस में उनकी हत्या की गयी थी, वहीं रेलवे-साइडिंग से कुछ दर्जन मीलों की दूरी पर उस महान् शक्ति ने, जिसके पक्ष में लड़ते हुए उन्होंने अपना जीवन निछावर किया था, एक नगर की स्थापना की है, उसमें जीवन डाला है।

दुश्मनों ने अपराध करने के लिए एक दूरस्थ स्थान चुना था क्योंकि वे समझते थे कि कोई भी व्यक्ति उनके बलि के बकरों की क़ब्र का पता न लगा सकेगा।

वे समझते थे कि महान् बलख़ान और लघु बलख़ान के बीच की टुकड़ी का यह दूरस्थ किनारा उनके कुकर्मों के लिए एक आदर्श-स्थान है। फलतः उन्होंने गाड़ी रुकवायी, मुहरबन्द डिब्बे के दरवाज़े खुलवाये और २६ बन्दियों को मरुभूमि में ले

जाकर मौत के घाट उतार दिया। उनका जीवन-दीप ज़रूर बुझ गया लेकिन उनका यश और उनके कार्य अमर हो गये।

चारों तरफ़ रेतीला रेगिस्तान था और रात का समय। साम्राज्यवादियों के इन पुतलों ने समझा था कि उन्होंने अपने अपराध के सभी चिह्न दफ़ना दिये हैं—पानी में नहीं, बालू में, उस बालू में जिसमें पानी की ही तरह गोपनीयता बनाये रखने की शक्ति है। इन व्यक्तियों की हत्या करके उन्होंने आशा की थी कि वे उस विचार की भी हत्या कर रहे हैं जिसने इन वीरों को बिना मृत्यु-भय के लड़ने और मरने की शक्ति दी थी। परन्तु, जो महान् विचार मनुष्यों को आगे बढ़ाते हैं उन्हें मृत्यु का डर नहीं रहता। वास्तविकता यह है कि यही विचार मृतकों में भी जीवन फूंकते हैं। पहले जहां क्रान्ति के पूर्व मरुभूमि में आंधियां उड़ा करती थीं आज वहां पक्की सड़क है जिसपर मोटरें नेबित-दाग़ के श्रमिकों को लिए हुए तेज़ी से तेल-क्षेत्रों को दौड़ती हैं। अब इस नये नगर की छतों के ऊपर 'एरियल' बंधे हुए हैं जो वायु का स्पर्श पाकर सनसनाते हैं। इस नगर के ऊपर वायुयान भी उड़ते हैं जो तुर्कमान जनतंत्र के लोगों को पूर्व से पश्चिम—अशकाबाद से मास्को—ले जाते हैं। इन्हीं घरों के ऊपर से ऐसे जहाज़ भी उड़ते दिखाई पड़ते है जो मास्को, लेनिनग्राद, खारकोव और बाकू के उन व्यक्तियों को पश्चिम से पूरब की ओर ले जाते हैं, जिन्हें तुर्कमनिस्तान के हित और क्रिया-कलाप अपने ही क्षेत्रों के समान प्रिय हैं।

उपर्युक्त २६ कमीसारों के अवशेषों को सितम्बर सन् १९२० में बड़ी सावधानी के साथ आज़रबैजान की राजधानी बाकू ले जाया गया, जहां उन्हें नगर के बीचोंबीच आज़ाद मैदान में दफ़नाया गया।

अध्याय २

१

नेबित-दाग़ का स्टेशन उस स्थल पर बना है जहां पहले 'रेलवे-साइडिंग नं. १३' की एक भोंड़ी-सी इमारत थी। उसीके पास बालू में आधे आधे धंसे हुए तीन-चार छोटे छोटे मकान थे जिनमें कुछ कर्मचारी रहा करते थे।

सन् १६३५ में जब तेल-पर्वत का तेल-क्षेत्र अन्तिम रूप से कार्ययोग्य हो गया तो 'रेलवे-साइडिंग नं. १३' के निकट एक बस्ती बसना आरम्भ हो गयी। साइडिंग का नाम बदलकर नेबित-दाग़ स्टेशन कर दिया गया और जब उपर्युक्त बस्ती में काफ़ी चहल-पहल हो गयी तो वह नेबित-दाग़ नगर के नाम से जानी जाने लगी।

सम्प्रति नेबित-दाग़ तुर्कमनिस्तान के बड़े बड़े नगरों में से एक है।

आइये, हम भी उस यात्री के साथ हो लें जो आज नेबित-दाग़ का भ्रमण करने निकला है।

रेलवे-स्टेशन मैदान। एक ऐसे स्थल पर, जो हज़ारों वर्षों से एक जलहीन रेगिस्तान का भाग रहा है, एक छोटा-सा बाग़ है जहां लगभग एक दर्जन छोटे छोटे वृक्ष लहलहाते हैं। बाग़ के चारों ओर के मार्ग में करा-कुम की सुन्दर सूखी रेत बराबर बराबर बिछी हुई है। जब तक भूमि के वास्तविक शासक – सोवियत जनता – का यहां आगमन न हुआ था, तब तक यहां एकमात्र बालू का ही साम्राज्य था।

मैदान से उत्तर की ओर जानेवाले स्टेशन-मार्ग के अन्त में तैलिकों का एक संस्कृति-प्रासाद है जिसकी सुन्दरता अपूर्व है।

इस मार्ग को एक दूसरी सड़क काटती है, जिसका नाम है २६ बाकू कमीसार सड़क। इस सड़क के उस ओर नगर का सबसे पुराना मार्ग पेर्वोमैस्काया है। पूर्व और पश्चिम में अच्छे अच्छे तथा सुन्दर पत्थर के मकान हैं जो हल्के तथा बड़े बड़े हैं और क्रास्नोवोद्स्क के नये नये मुहल्लों की याद दिलाते हैं। इन मकानों को अलग अलग करने के लिए सुन्दर सुसज्जित बाड़े हैं। इस नये नगर में यात्री वृक्षों की बहुलता देखकर चकित रह जाता है। जब वह अस्फ़ाल्ट की चौड़ी चौड़ी सड़कें और उनके दोनों ओर बने हुए नये नये मकान देखता है तो वह भूल जाता है कि वह नेबित-दाग़ रेगिस्तान में है। एक सड़क है जहां पापलर का एक वृक्ष बड़े बड़े बरामदों वाली गुलाबी रंग की एक दुमंज़िली इमारत के सबसे ऊंचे भाग को छूता है। इसी सड़क पर हनी-लोकस्ट, तमरिस्क, जंगली ज़ैतून, बबूल, शहतूत और करागाच वृक्ष भी झूमते हैं। अब सोवियत संघ भर में वृक्ष लगाये जा रहे हैं। इसलिए सम्भव है कि नवागन्तुक का ध्यान नेबित-दाग़ की सड़कों के दोनों ओर स्थित वृक्षों की ओर न आकृष्ट हो क्योंकि उसे इनमें कोई भी असाधारणता न दिखेगी खासकर इसलिए कि वे न तो सायादार

ही हैं श्रौर न श्रधिक पत्तेदार ही। किन्तु जो लोग यहां पहले श्रा चुके हैं, उन्हें यह देखकर श्रवश्य श्राश्चर्य होगा कि इस नगर की सड़कों पर श्रौर बाग़ों में लाखों हरे हरे वृक्ष हैं। श्राश्चर्य इसलिए श्रौर होगा कि श्रभी लगभग बीस ही वर्ष पहले यहां बालू श्रौर गर्मी के सिवा श्रौर कुछ भी न था। यह स्थल करा-कुम का सबसे सूखा श्रौर बंजर क्षेत्र था जहां प्रकृति कभी प्राणि मात्र की उपेक्षा किया करती थी।

नेबित-दाग़ का पहला बाग़ २६ वर्ष पहले लगाया गया था। यह ७० क़दम लम्बा श्रौर ५० क़दम चौड़ा था। इस स्थान पर तीन फ़ुट गहरी रेत थी जिसे फावड़ों द्वारा साफ़ किया गया श्रौर फिर ट्रकों में भर-भरकर नगर के बाहर डाला गया। इस बंजर भूमि को उर्वर बनाया गया श्रौर वृक्ष लगाने के लिए वहां गड्ढे खोदे गये। दूसरे वर्ष यहां थोड़े-से वृक्षों (हनी-लोकस्ट, शहतूत श्रौर बबूल) में, मानवता के सम्पूर्ण इतिहास में पहली बार हरियाली दिखाई दी श्रौर वे पत्तों से लद गये। एक श्रौर साल बीतने पर नेबित-दाग़ में पार्क बनाया गया। १५ एकड़ क्षेत्र में तीन हज़ार वृक्ष लगाये गये हैं जो इस बात के प्रमाण हैं कि सोवियत मिचूरिन-विज्ञानानुयायियों ने रेगिस्तान की बंजर श्रौर कठोर भूमि के ख़िलाफ़ संघर्ष छेड़ दिया है।

यह संघर्ष श्रब भी जारी है। यहां के लोग वैज्ञानिक सफलताश्रों का उपयोग श्रौर परीक्षण कर रहे हैं श्रौर वह दिन दूर नहीं जब उन्हें श्रपने कार्यों में मन-वांछित सफलता प्राप्त होगी।

सन् १९५१ तक नेबित-दाग़ की सड़कों पर ३०,००० वृक्ष लहलहा रहे थे। वहां साये की श्रब भी कमी है किन्तु वृक्ष नगर की दर्शनीयता में वृद्धि करते हैं श्रौर नगर की शोभा का एक श्रविच्छिन्न श्रंग बन गये हैं। जलाभाव के कारण यहां काफ़ी समय तक हरियाली के विकास में बाधा पड़ी थी। वहां दिन-ब-दिन बढ़ती हुई श्राबादी की श्रावश्यकता-पूर्ति के लिए सिर्फ़ एक ही कुश्रां था। किन्तु श्रब पास-पड़ोस के क्षेत्रों में ताज़े पानी के नये नये स्रोत मिल गये हैं श्रौर श्राज तो नेबित-दाग़ की एक श्रपनी जल-वितरण-व्यवस्था है।

सामान्यत: यह विश्वास किया जाता था कि नेबित-दाग़ में खुश्क जलवायु में पैदा हो सकनेवाले विशेष पेड़-पौधे ही उग सकते हैं, किन्तु इस बात को येमेल्यान नुइकिन नामक एक माली ने ग़लत सिद्ध कर दिया है। श्राज नगर में श्रनार, श्राड़ू

तथा अंजीर के वृक्ष लहलहा रहे हैं। सन् १९५३ में नुइकिन ने अपने अंगूर के बाग़ में आधे टन अंगूर इकट्ठा किये। वह अपने बाग़ में मैलो, आलिएण्डर (करवीर) तथा पेतूनिया नामक पौधे उगाता है। तथ्यों से पता चलता है कि नेबित-दाग़ में फल-फूल या साग-सब्ज़ी उगाने के लिए सिर्फ़ पानी की ज़रूरत है। निकट भविष्य में यहां के बाग़ों में जनता की ज़रूरत भर के लिए फल होने लगेंगे।

नगर में तेल-उद्योगों में लगे हुए वे व्यक्ति, जिन्हें पेड़-पौधों में रुचि है, नगर में झाड़ियां लगाने तथा उपनगरों में मनोविनोद के निमित्त पार्कों की व्यवस्था करने की योजनाएं बना रहे हैं।

प्रत्येक निर्माणाधीन मकान के पास फल के वृक्षों तथा फुलवारी के लिए जगह छोड़ दी जाती है। तैलिकों के संस्कृति-प्रासाद में, जो कला का एक सुन्दर नमूना होगा, नहाने के तालाब, झरने तथा लताओं से आच्छादित बरामदे होंगे। बेर, ख़ूबानी, सेब, बकाइन तथा अन्य प्रकार के जो पेड़-पौधे कुछ वर्ष पूर्व मकानों के अहातों में लगाये गये थे तेज़ी के साथ बढ़ने लगे हैं और अब तो इतने बड़े हो गये हैं कि उनके पीछे के मकानों तक का पहचानना मुश्किल हो गया है।

जिस समय शाम होती है और महान् बलख़ानों पर सूर्यास्त का गुलाबी और सुनहरा रंग सहसा अंधेरे में विलीन हो जाता है (जैसा कि दक्षिण में प्रायः देखने को मिलता है) तो नगर सड़कों पर लगे हुए बिजली के बल्बों के प्रकाश में जगमगाने लगता है और सायंकालीन शीतलता का आनन्द लेने के लिए विद्यार्थियों, स्कूली बच्चों और दिन की पारी में काम करनेवाले तेल-कर्मचारियों का समुदाय घर से निकल पड़ता है। इस समय क्लबों, सिनेमा-घरों और पुस्तकालयों के द्वार खुले रहते हैं।

२

नेबित-दाग़ की द्रुतगति से उन्नति होने का कारण मुख्यतः तुर्कमान तेल-उद्योग का विकास है। प्रजातन्त्र के तेल-कर्मचारियों ने प्रथम युद्धोत्तर पंचवर्षीय योजना के लक्ष्यों को तीन ही वर्ष में पूरा कर लिया था। १९४० की अपेक्षा १९५० में उन कुओं की संख्या साढ़े तीन गुनी बढ़ गयी थी जिनमें तेल निकालने के काम हो रहे थे। नेबित-दाग़ में तेल की निकासी में होनेवाली इस वृद्धि का एक कारण तो यह है कि यहां

बोरिंग तथा जांच-पड़ताल की प्राचीन विधियों के स्थान पर सोवियत निर्मित नयी नयी मशीनें काम में लायी गयीं और दूसरा तथा मुख्य कारण यह है कि समस्त तुर्कमानों का द्रुतगित से राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान हुआ।

तुर्कमान श्रमिक वर्ग की वास्तविक उत्पत्ति क्रान्ति के तत्काल पश्चात् के वर्षों में हुई। सोवियत सरकार ने, गृह-युद्ध समाप्त होने के तत्काल बाद ही, तुर्कमनिया के बड़े बड़े रेगिस्तानी क्षेत्रों के औद्योगीकरण में हाथ लगाया। युवक तुर्कमान मध्य रूस, उराल, उक्रइन और काकेशिया के नगरों में कल-कारख़ानों में होनेवाले उत्पादन का रहस्य सीखने के लिए अपने औलों और नगरों से बाहर आये। और पुरानी पीढ़ी का प्रत्येक तुर्कमान श्रमिक पहली कुछ पंचवर्षीय योजनाओं में ही अपने व्यवसाय के मूलतत्वों से परिचित हो गया। मास्को, स्वेर्दलोव्स्क, बाकू अथवा ग्रोज़्नी से आये हुए श्रमिक ही अध्यापक बने। रूसी श्रमिक-समुदाय और हितैषी जनता द्वारा दी गयी सहायता का परिणाम यह हुआ कि अत्यन्त अल्पकाल में तुर्कमनिस्तान के राष्ट्रीय उद्योग का विकास हुआ। तुर्कमान समाजवादी सोवियत प्रजातंत्र के प्रथम जयन्ती समारोह के अवसर पर, १९२५ में, तुर्कमनिया के औद्योगिक उद्यमों में दसियों हज़ार श्रमिक काम कर रहे थे। यह उल्लेखनीय है कि इसके कुछ ही पूर्व, अर्थात् बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में, इन श्रमिकों की संख्या २,००० से अधिक न थी, जिनमें से कुछ ही तुर्कमनिया के निवासी थे।

औलों के भूतपूर्व निवासी, जो कभी चरवाहे या किसान थे, अब इंजन-ड्राइवर, समुद्री जहाज़ों के कप्तान, चेलेकेन के श्रमिक, अशकाबाद मशीन-कारख़ाने के ढलाई-मज़दूर, तेल के कुओं के ड्रिलर, इंजीनियर अथवा भूगर्भवेत्ता हैं।

नेबित-दाग़ के पहले निपुण तेल-कर्मचारी वे लोग थे जो बाकू या ग्रोज़्नी के तेल-विशेषज्ञ थे। उनके अनुभवों से उस श्रमिक-समुदाय ने लाभ उठाया जिस पर तुर्कमान जनतंत्र को गर्व है, जो उसका सिर ऊंचा कर रहा है।

इनमें से एक हादिर बेर्दियेव है। वह चिकिशलार के एक तटवर्ती औल के एक मछुवा-परिवार में पैदा हुआ था। हादिर एक स्थानीय तुर्कमान शासक के ऊंटों तथा भेड़ों की देख-रेख रखता था और उसका पिता अपनी तैमून में बैठकर समुद्र में मछलियां मारा करता था। बच्चा एक रेगिस्तानी चरवाहा था। इसके अलावा

उसमें दूसरा कोई भी गुण न था। अपनी जवानी में उसका सांसारिक अनुभव तथा उसकी शिक्षा-दीक्षा केवल उस ज्ञान तक ही परिमित रही जो उसे कास्पियन के मछुओं और चबानों के घरों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी से मिला था। क्रान्ति ने तुर्कमान देहक़ान और चबान के रहन-सहन के पुराने तरीक़ों में महान् परिवर्तन कर दिया था। नवयुवक बड़ी उत्सुकता के साथ उन महान् परिवर्तनों के समाचारों की प्रतीक्षा कर रहे थे जो जनतंत्र तथा सारी सोवियत भूमि में हो रहे थे। वे उस नये जीवन तथा व्यवसायों का स्वप्न देख रहे थे जो उस समय औलों की जनता के लिए वर्जित थे। हादिर ने उस तेल-निरीक्षक-दल में शामिल होने का निश्चय किया जो चिकिशलार के पास-पड़ोस में कार्य कर रहा था। उसके पिता ने आपत्ति की परन्तु हादिर ने उन्हें समझाया और पिता को उसकी बात माननी पड़ी। उस समय औल या नगर का कोई भी निवासी ऐसा न था जिसपर उस काल के अनेकानेक परिवर्तनों का प्रभाव न पड़ा हो।

सन् १६३१ में हादिर एक ड्रिलिंग टीम के साथ काम करने लगा। यद्यपि कार्य मुश्किल था, फिर भी रोचक था और उसमें इस भूतपूर्व चरवाहे को मज़ा आने लगा था। ख़ास बात यह थी कि उसने अच्छी तरह समझ लिया था कि सोवियत अर्थ-व्यवस्था के लिए तेल की ज़रूरत है और जो व्यक्ति इसकी निकासी में मदद देंगे वे ही समाजवाद के लिए संघर्ष करनेवालों में अग्रणी गिने जायेंगे। हादिर ने अपना काम बड़ी लगन से किया और सदा उन लोगों के परामर्श पर चलता रहा जो उस काम को उससे ज्यादा समझते थे। ग्रोज्नी तथा बाकू के ड्रिलरों ने, जो उन वर्षों में पश्चिमी तुर्कमनिस्तान में काम करते थे, इस युवक तुर्कमान श्रमिक को अपना गुर सिखाया। तत्पश्चात् हादिर नेबित-दाग़ चला गया। वहां उसे एक और अधिक ज़िम्मेदारी का काम सौंपा गया। वहां पहले तो उसने ड्रिलर के सहायक का और फिर स्वयं ड्रिलर का काम किया। आज अनेकानेक व्यक्तियों के प्रयास तथा मूल्यवान् यन्त्रों की कार्य-कुशलता हादिर के ज्ञान, अनुभव, निपुणता, विवेक तथा क्षमता पर निर्भर हैं। सन् १६४६ में वह टीम का फ़ोरमैन हो गया। उसने नेबित-दाग़ नगर की सोवियत के सदस्य के रूप में नगर के विकास में अपना पूर्ण सहयोग दिया। सन् १६५० में नेबित-दाग़ की जनता ने उसे तुर्कमान जनतंत्र की सर्वोच्च सोवियत का सदस्य चुना। बाद

में हादिर तथा उसके दल को कुम-दाग़ के तेल-क्षेत्रों में स्थानान्तरित कर दिया गया जहां सन् १६५३ में उनकी गणना सोवियत तैलिकों के अग्रणियों में की जाने लगी।

नेबित-दाग़ की जनता उन अग्रणी श्रमिकों की इज़्ज़त करती है जो युवकों को शिक्षा देने के निमित्त अन्य क्षेत्रों तथा प्रदेशों से तेल-क्षेत्रों में आये थे। इनमें से एक व्यक्ति का नाम फ़्योदोर चेरतोव है जो '२६ बाकू कमीसर' नामक तेल-क्षेत्र नं० १ का एक सक्रिय कार्यकर्त्ता है। उसका जन्म बाकू में हुआ था। गृह-युद्ध में उसने काकेशिया-पार क्षेत्रों में सोवियत शक्ति की स्थापना के लिए संघर्ष किया था और क्रान्तिकारी के रूप में उसके कार्यों के कारण उसका सम्पर्क बाकू के उन कम्युनिस्टों से भी हुआ था जिनके नाम पर इस तेल-क्षेत्र का नामकरण हुआ है। बाद को वह इस नगर में एक बड़ा मशहूर श्रमिक गिना जाने लगा। बहुत से तुर्कमान तैलिकों की सफलता का कारण इसी रूसी श्रमिक का अनुभव तथा ज्ञान है। फ़्योदोर चेरतोव के शिष्यों में से अधिकतर नेबित-दाग़ के प्रमुख तैलिक हैं। वृद्धावस्था के कारण फ़्योदोर चेरतोव रिटायर होने के पश्चात् अब तुर्कमनिस्तान से बाहर चला गया है। किन्तु उसके दोस्तों और भूतपूर्व शिष्यों ने उसे कभी नहीं भुलाया। वे आज भी उसकी याद कर लिया करते हैं। यद्यपि वह अब किस्लोवोद्स्क के निकट रह रहा है फिर भी प्रतिवर्ष नेबित-दाग़ से बहुत-से लोग उससे मिलने और उसकी सलाह लेने के लिए आया करते हैं। तुर्कमनिया के तैलिक उसे तुर्कमान तेल-उद्योग का अग्रणी समझते हैं और जब कभी वे काकेशिया के स्वास्थ्य-केन्द्रों में अपनी छुट्टियां बिताने जाते हैं तो उससे मिलने अवश्य जाते हैं और उसे महान् बलखान की तलहटी पर बसे हुए नगर तथा वहां के उन तेल-क्षेत्रों की ख़बरें सुनाया करते हैं जहां उसने अपने जीवन का अधिकांश बिताया है, जहां के उद्योग से उसका रत्ती-रत्ती परिचय है।

३

कुम-दाग़ अपनी बड़ी बहन नेबित-दाग़ से कई मानों में मिलता-जुलता है। आज यह नगर बहुत कुछ वैसा ही दिखाई पड़ता है जैसा कि नेबित-दाग़ १२–१४ वर्ष पूर्व दिखता था। एक सड़क का केवल एक भाग अस्फ़ाल्ट का है। यहां दूसरी चौड़ी चौड़ी सड़कें भी हैं किन्तु वे कच्ची हैं और उनपर बराबर धूल उड़ा करती है। इन

सड़कों के दोनों ओर एक-एक या दो-दो मंजिल के मकान हैं जो एक दूसरे से कुछ हटकर बने हुए हैं। नेबित-दाग़ में तो वर्षों से मरुभूमि के दर्शन नहीं हुए हैं क्योंकि अब उसका राज्य नगर की सीमाओं के बाहर है, भीतर नहीं। किन्तु कुम-दाग़ में रेगिस्तान जगह जगह देखा जा सकता है। ऐसा लगता है मानो कुम-दाग़ ने अभी कल ही जन्म लिया हो। यहां जब कभी थोड़ी-सी भी हवा चलती है तो रेत के बादल उड़ने लगते हैं और चारों ओर रेत ही रेत दिखाई पड़ती है। यदि यहां कई कई दिनों तक आंधी चलती रहे, जैसा कि करा-कुम में प्रायः होता है, तो मकान के दरवाज़ों के बाहर बालू के बड़े बड़े ढेर लग जाते हैं और उसे उसी प्रकार साफ़ करना पड़ता है जैसे कि सोवियत संघ के उत्तरी क्षेत्रों में बर्फ़ के तूफ़ान के बाद बर्फ़ को। फिर भी प्रायः सभी जगह रेगिस्तान तेज़ी से पीछे हट रहा है। नेबित-दाग से आनेवाली सड़क पर, जो कुम-दाग की भी एक मुख्य सड़क है, कहीं कहीं पेड़-पौधे लगे हुए दिखाई देते हैं। ये पेड़-पौधे स्कूल तथा क्लब के सामने स्थान स्थान पर नज़र आ जाते हैं। अभी ये पौधे छोटे ही हैं किन्तु शीघ्र ही बड़े होकर नगर की हरियाली में वृद्धि करेंगे और लोगों के आमोद-प्रमोद तथा उनके चहल-पहल के स्थानों की शोभा बढ़ायेंगे। कुछ ही वर्ष पहले नेबित-दाग़ की वे चौड़ी चौड़ी सड़कें, जिनके दोनों ओर आज अच्छे अच्छे वृक्ष लहलहा रहे हैं, इसी नगर की सड़कों की भांति दिखाई पड़ती थीं।

दस वर्ष बाद कुम-दाग़ आज के नेबित-दाग़ की भांति ही एक सौन्दर्यपूर्ण स्थल बन जायेगा। इस समय भी कुम-दाग़ में बिजली, गैस, एक पुस्तकालय, एक जलपान-गृह, एक क्लब, दूकानें तथा स्कूल हैं। इन दोनों नगरों की वास्तु-कला, उद्योग और इतिहास में बहुत कुछ समानता है। यह उल्लेखनीय है कि नेबित-दाग़ की तरह कुम-दाग़ की बस्ती भी एक स्कूल से ही शुरू हुई थी। नेबित-दाग़ की पहली इमारतें थीं नगर के नवागन्तुकों के आवासों के निकट बना एक अस्पताल और एक स्कूल।

अब कुम-दाग़ और नेबित-दाग़ के बीच मास्को की बनी बड़ी-बड़ी बसें चलती हैं और इस यात्रा में उन्हें केवल एक घंटा लगता है। जब आंधी चलती है तो रेत सड़क पर ऐसे बिछ जाती है कि लगता है जैसे उसपर हज़ारों सांप रेंग रहे हों। और जब आंधी तेज़ होती है तो सारी सड़क रेत से ढंक जाती है। ऐसे समय रास्ता प्रायः बिल्कुल नहीं दिखाई देता और बसें केंचुए की चाल से आगे

बढ़ती हैं। रेत की आंधियों के समय रेगिस्तान बालू की एक तेज़ बहती हुई नदी के समान प्रतीत होता है। ऐसे समय नगर की बड़ी बड़ी इमारतें और वह महान् बलख़ान तक दृष्टि से ओझल हो जाते हैं जो दिन साफ़ रहने पर बहुत दूर ही से नज़र आ जाते हैं।

४

रेगिस्तान से उठने और चलनेवाली तेज़ आंधियां पश्चिमी तुर्कमनिस्तान के इस भाग की जलवायु की एक विशेषता है। करा-कुम एक इतना बड़ा क्षेत्र है जहां अरबों टन बालू है और जहां यत्र-तत्र थोड़े-से पौधे भी मिल जाते हैं। जब तेज़ आंधियां चलती हैं तो बालू उड़ उड़कर सारे वातावरण को घेर लेती है और नयी नयी जगहों पर इकट्ठा हो जाती है।

करा-कुम की ये आंधियां बड़ी वीभत्स होती हैं। यदि उनके मार्ग में कोई बाधक न बने तो वे अपना क्रोध कास्पियन पर ही उतार देंगी। और फिर वहां बहुत कुछ वैसी बूंदें पड़ने लगेंगी जैसी कि मूसलाधार वर्षा के समय दिखाई पड़ती हैं। हां, यदि उनके मार्ग में कोई पहाड़, मकान, पत्थर, वृक्ष या कोई छोटी-सी झाड़ी पड़ जाये तो वे उसके चारों ओर रेत के लाखों कण बिखेर देंगी। इसी प्रकार जब उत्तरी स्तेपी में शीतकालीन बर्फ़ीले तूफ़ान चलते हैं तो वे झाड़-झंखाड़ों और झोंपड़ों आदि को बर्फ़ से ढक देते हैं। किन्तु इन दोनों तूफ़ानों में कुछ अन्तर है–बर्फ़ में पिघलने की क्षमता है और जब वह पिघल जाती है तो उसमें दबी हुई वस्तुएं साफ़ निकल आती हैं, जब कि रेत के नीचे दबी हुई चीज़ों को निकालने के लिए कठोर श्रम और खोद-खाद की ज़रूरत पड़ती है।

यदि नेबित-दाग़ के उत्तर में स्थित महान् बलख़ान पर्वत-माला की स्थिति कुछ भिन्न होती तो वह रेत की आंधियों से नगर तथा तेल-क्षेत्रों की रक्षा करने में भी सहायक होती। यदि उसका घुमाव केवल ३० डिगरी तक ही होता तो भी नेबित-दाग़ के तेल-क्षेत्रों पर आंधियां चलने की नौबत न आती और वहां जेबेल की भांति सुखद बयार बहती होती। लेकिन स्थिति यह है कि दक्षिण में बसे हुए केलकोर के खार से लेकर करा-कुम तक फैले हुए महान् बलख़ान और इससे भी दक्षिण में स्थित लघु बलख़ान

के संकरे क्षेत्र में रेतीली आंधियों की रफ़्तार और उनका भार बढ़ जाता है और वे तेल-क्षेत्रों पर टूट पड़ती हैं। जाड़े की ऋतु में वे विशेष रूप से तेज़ होती हैं क्योंकि इस समय ठंडे करा-कुम से बड़ी बड़ी आंधियां कास्पियम के गर्म किनारों की ओर चलने लगती हैं। वर्ष के इस काल में उपर्युक्त पर्वत-श्रेणियों के बीच के क्षेत्र में प्राय: आंधियां चला करती हैं। आंधियां अपने साथ बालू तो लाती ही हैं, साथ ही कंकड़-पत्थर भी नहीं छोड़तीं और कुछ ही दिनों में हज़ार हज़ार टन वाले बरख़ानों को एक स्थान से ढकेलकर दूसरे स्थान तक पहुंचा देती हैं। नवम्बर सन् १९५२ में कुम-दाग़ में एक तूफ़ान आया था जो बराबर चार दिनों तक चलता रहा और इसका नतीजा यह हुआ कि एक बरख़ान, जिसकी ऊंचाई सात फ़ीट और आयतन लगभग ४५,००० घन फ़ुट था, कुछ ही दिनों में हटकर १५० फ़ीट से भी अधिक दूरी पर पहुंच गया।

जिस समय कुम-दाग़ में पहले-पहल तेल-क्षेत्रों की स्थापना हुई थी उस समय वीश्का बस्ती के पास एक रोटी-कारख़ाना भी बनाया गया था जो एक भयंकर तूफ़ान के समय प्राय: सारे का सारा बालू से ढंक गया था। सिर्फ़ उसकी छत का एक भाग दिखाई पड़ता था। चूंकि उन दिनों इमारती सामान मुश्किल से प्राप्त होते थे इसलिए रोटी-कारख़ाने का एकदम परित्याग करना सम्भव न था। अतएव छत ही में एक बड़ा-सा सूराख़ कर लिया गया था, और रोटियां पकाने की व्यवस्था पूर्ववत् होती रही थी।

सोवियत वैज्ञानिक बालू की आंधियां रोकने तथा बालू से क्षेत्रों के ढंक जाने जैसी समस्याओं का अध्ययन कर रहे हैं। एतदर्थ विशेष गवेषणा-केन्द्रों की स्थापना की गयी है। ऐसे केन्द्र जेबेल और नेबित-दाग़ दोनों ही जगहों पर हैं। वैज्ञानिकों को इस समस्या का सर्वप्रथम उस समय सामना करना पड़ा था जब मध्य एशियाई रेलवे की पहले-पहल स्थापना हुई थी, और उसी समय इस बात की ओर भी उनका ध्यान आकृष्ट हुआ था कि यदि आंधियों के रास्ते में कोई अवरोध हो तो उनसे काफ़ी बचत हो सकती है। जब इस प्रकार का कोई अवरोध—वृक्ष, झाड़ी, संरचना, नरकटों का बना बाड़ा या मिट्टी का उठा हुआ चबूतरा—उस वस्तु से कुछ दूर पर रख दिया जाय जिसपर आंधी का प्रभाव पड़ने की सम्भावना हो, तो आंधी इससे टकराकर अपना ज़ोर खो देगी। इस बात का भी अनुभव हुआ था कि सकसौल, बबूल, सलसोला

अथवा कन्दीम के वृक्ष आंधियों के मार्ग में सबसे बड़े अवरोध होते हैं। यही कारण है कि यहां के वैज्ञानिक सूखी कठोर जलवायु में रह सकनेवाले पेड़-पौधों का अध्ययन कर रहे हैं। यहां रेलवे-लाइन के किनारे किनारे लाखों वृक्ष लगाये जा चुके हैं फिर भी वे काफ़ी नहीं हैं। नेबित-दाग़ और कुम-दाग़ के चारों ओर चेलेकेन जानेवाले मार्गों पर पेड़-पौधों की रक्षक-पंक्ति लगाये जाने की योजना है और तुर्कमान वन-वैज्ञानिक इन कार्यों में लगे हुए हैं। इसमें सन्देह नहीं कि वायुयानों की सहायता से बोये गये सकसौल के वृक्ष तथा अन्य झाड़ियां बालू की आंधियों से मोर्चा लेने के निमित्त बड़ी महत्त्वपूर्ण सिद्ध होंगी।

पश्चिमी तुर्कमनिस्तान में जितने अनुसन्धान किये गये हैं उनकी व्यापकता का पता हमें इसी एक बात से लग जाता है कि गर्मी के प्रत्येक मौसम में करा-कुम में अध्ययन के निमित्त बीसियों दल भेजे जाते हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि जिस एक दल ने इस क्षेत्र की मिट्टी का नक़्शा तैयार किया था केवल उसीमें तुर्कमान विज्ञान-अकादमी के ४०० वैज्ञानिक काम कर रहे थे।

अध्याय १

१

महान् तथा लघु बलख़ान श्रेणियों के बीच से होती हुई ट्रेन जब इन्हें पार करके कास्पियन की चौरस रेतीली भूमि पर आती है तो दक्षिण में कुछ पहाड़ियों और टीलों की रूप-रेखाएं दिखाई पड़ती हैं। और जैसे ही जैसे ट्रेन आगे बढ़ती है वैसे ही वैसे उन पहाड़ियों की आकृतियां स्पष्ट से स्पष्टतर होने लगती हैं और अन्त में निकट आने पर दूर दूर तक फैली हुई ऊंची ऊंची पर्वत-मालाओं का रूप ले लेती हैं। यह कोपेत-दाग़ पर्वत-माला है जो तुर्कमनिया भर में सबसे बड़ी पर्वत-श्रेणी है। कज़ांजीक नगर के समीप रेलवे इन पहाड़ियों के पास से होकर गुज़रती है और फिर लगभग ३०० मील तक उनके समानान्तर चली जाती है।

बहुत प्राचीन काल से कोपेत-दाग़ की उत्तरी तलहटी में तुर्कमान लोग रहते हैं।

पुराने ज़माने में तुर्कमनिस्तान के ट्रान्स-कास्पियन प्रदेश में ऐसे कम या अधिक घने बसे क्षेत्रों की संख्या कम ही थी। उत्तर में आमू-दरिया के निचले भागों के पश्चिम में एक ऐसा ही क्षेत्र था जिसे आजकल तशौज़ क्षेत्र कहते हैं। दूसरा स्थान करा-बोगाज़-गोल के उत्तर में था जिसे मंगिश्लक प्रायद्वीप कहते हैं। दक्षिण में तुर्कमान लोग मुर्ग़ाब और तेजेन की घाटियों, बलखान पहाड़ों और कोपेत-दाग़ पर्वत-श्रेणियों की उत्तरी और पश्चिमी तलहटियों में तथा अत्रेक, गुरगेन और सुम्बार नदियों की घाटियों में बस गये थे।

इन स्थानों पर जल के स्रोत थे जिनके बीच बीच रेगिस्तान पड़ जाने के कारण संवहन में बाधा पड़ती थी। कोपेत-दाग़ की तलहटियों से तशौज़ तक की यात्रा में ऊंटों के तेज़ से तेज़ क़ाफ़िले को भी एक पखवारा और कभी कभी इससे भी अधिक दिन लग जाते थे। प्रायः इतना ही समय तशौज़ से मुर्ग़ाब या मुर्ग़ाब से बलख़ान पहाड़ों तक की यात्रा में लगता था।

जन-जातियों में तुर्कमान जनता के विभाजन का असर तुर्कमनिया के क्रान्ति-पूर्व इतिहास पर पड़ा था। मुख्य जन-जातियों के नाम थे—तेक्के, योमूद, सलोर, गोकलेन, एरसारी और चौदोर।

कभी कभी ये जातियां आपस में मिलकर रहतीं तो कभी सर्वोत्तम चरागाहों तथा कुओं के सवालों पर लड़ बैठतीं, क्योंकि वे उनके और उनके पशुओं के लिए जीवन-यापन के साधन थे। इनकी इस पारस्परिक शत्रुता से वे क्षेत्रीय शासक तथा मुखिये लाभ उठाया करते थे, जिन्हें अपना स्वार्थ-साधन करना होता था। इस प्रकार लाभ उठाने का उनका एक तरीक़ा था—तुर्कमान जातियों में आपसी फूट डलवाना और एक को दूसरे से लड़वा देना।

सोवियत शासन-काल में, अपने इतिहास में पहली बार, तुर्कमान जनता संघटित होकर एक हुई, एकता के सूत्र में बंधी।

अब उनकी जन-जातियों के नाम भर रह गये हैं और वे भी भौगोलिक, आर्थिक, पारिवारिक और चाक्षुष विषयों में। उदाहरणार्थ कोपेत-दाग़ की उत्तरी ढालों के समानान्तर फैली हुई तलहटियां अख़ाल-तेक्के कहलाती हैं। अख़ाल-तेक्के नाम अच्छी क़िस्म के तुर्कमान घोड़ों का भी है। घोड़ों की एक दूसरी क़िस्म योमूद कहलाती है जो तुर्कमानों की एक जन-जाति का नाम था। तेक्के तथा योमूद के क़ालीनों में भी फ़र्क़ है। बुज़ुर्ग तुर्कमान यह ठीक ठीक बता देंगे कि तेक्के और योमूद में ऊपरी पोशाकों को सीने के तरीक़ों में अथवा मेमनों की खाल की टोपियों में क्या फ़र्क़ है। योमूद टोपी नीची और चौड़ी होती है और तेक्के टोपी ऊंची और संकरी। किन्तु आज इन नामों और विभेदों के वे ही अर्थ नहीं हैं जो तीस वर्ष पहले थे। अब जन-जातियों के विभेद-सूचक ये नाम धीरे धीरे लुप्त होते जा रहे हैं।

कोपेत-दाग़ तलहटियों के निकट ही कज़ांजीक नामक एक नगर है जो सम्प्रति द्रुतगति से विकसित हो रहा है। अभी कुछ ही वर्ष पूर्व यह नगर तुर्कमान समुद्री

तट को कोपेत-दाग़ तलहटियों के तथाकथित अख़ाल नख़लिस्तान से मिलाता था। अपनी स्थिति, ताज़े पानी के अपेक्षाकृत आधिक्य, जलवायु तथा अर्थ-व्यवस्था, जिसके अंतर्गत पशुओं की नस्लकशी और तटवर्ती निस्सारक उद्योग भी हैं, कृषि और फल तथा तरकारियों की खेती के कारण कज़ांजीक के चतुर्दिक क्षेत्र को कोपेत-दाग़ पट्टी का एक भाग समझा जा सकता है। लेकिन पुराने ज़माने से समझा जाता कि अख़ाल-तेक्के नख़लिस्तान किज़ील-अरवात नगर क्षेत्र से ही आरम्भ होता है। यह नगर कज़ांजीक के पूर्व में कुछेक बीस मीलों की दूरी पर है।

समुद्र-तट की बिख़री बिखरी वनस्पति के बाद जब हम कज़ांजीक का क्षेत्र देखते हैं तो बरबस सोचने लगते हैं कि यदि पानी मिले तो तुर्कमान की मिट्टी भी सोना उगल सकती है।

कज़ांजीक को पानी क्यारिज़ों से मिलता है। क्यारिज़ें प्राचीन ढंग की वे नहरें हैं जिनका निर्माण मनुष्य और प्रकृति के सम्मिलित प्रयासों के परिणामस्वरूप हुआ है। वे कोपेत-दाग़ के ढालों तथा ताजिकिस्तान और उज़बेकिस्तान के कुछ स्थानों को छोड़कर और कहीं भी दिखाई नहीं पड़तीं।

पहाड़ों में पानी जमा होकर अपने साथ खड़िया और सिलखड़ी की तहें बहा ले जाता है और तत्पश्चात् पानी न केवल नदी-नालों के रूप में ही अपितु उन भूमिगत मार्गों में से भी बहता है जो कभी कभी करा-कुम के नीचे गहराई में होते हैं।

गफ़ूरोव कृत 'ताजिक जनता का इतिहास' नामक पुस्तक में क्यारिज़ों का यह वर्णन मिलता है—"क्यारिज़ें उन अनेक कुओं को कहते हैं जो भूमिगत पानी के धरातल के अनुसार १० से लेकर १५ फ़ुट तक की दूरी पर खोदे जाते हैं। ये कुएं उस भूमिगत जल-मार्ग द्वारा परस्पर जुड़े रहते हैं जो एक कुएं का पानी दूसरे तक पहुंचाता है। कुएं ६ से लेकर १० मील और कभी कभी कुछ अधिक क्षेत्र में खोद लिये जाते थे और जो पानी इन अनेक कुओं से होता हुआ बहता था वह अन्त में एक छोटी-सी नहर द्वारा खेतों में पहुंचाया जाता था।"

इस पुस्तक में आगे लिखा है कि "क्यारिज़ों द्वारा खेतों की सिंचाई में इतनी अधिक मेहनत लगती थी कि कुछ अनुसंधानकर्त्ता तो उसका मुक़ाबला मिस्र के पिरामिडों के निर्माण में लगनेवाले श्रम से कर बैठते हैं। आज सिंचाई की यह

पद्धति मध्य एशिया के उन्हीं स्थानों में इस्तेमाल की जाती है जहां कृषि के लिए प्राप्त होनेवाला जल अपर्याप्त था और है। उदाहरणार्थ क्यारिज़ों की प्रणाली का महत्त्व उज़बेक सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र के नुराता ज़िले में अब भी कम नहीं हुआ है। तुर्कमान प्रजातंत्र में क्यारिज़ों का प्रयोग अब भी बड़ा व्यापक है।"

गफ़ूरोव ने एक दूसरे प्रकार की क्यारिज़ों का भी उल्लेख किया है जो भूमिगत वे नहरें हैं जिन्हें ज़मीन के नोचे के जल-स्रोतों से पानी मिलता है और जो इस जल को उन खेतों तक पहुंचाती हैं जहां सामान्य तथा खुली हुई नहरों से सिंचाई करना सम्भव नहीं होता।

दोनों प्रकार की क्यारिज़ें तुर्कमनिया में प्रयोग में लायी जाती हैं।

यदि इस इलाक़े में आप प्यास से व्याकुल हो रहे हों तो निश्चय ही आप पानी की तलाश में थके-मांदे कोपेत-दाग़ के ढालों तक जायेंगे। परन्तु आपको यह ख़्याल शायद ही आये कि जहां आप खड़े हुए हैं ठीक उसी स्थान के नीचे या उससे बहुत पास कहीं कोई भूमिगत सोता अवश्य है जो आपकी प्यास बुझा सकता है। ऐसे सोतों की संख्या यहां काफ़ी है जो ज़मीन के नीचे नीचे पहाड़ी भूमि में दूर तक की यात्रा कर चुकने के बाद कहीं किसी रेतीले प्रदेश में जाकर विलीन हो जाते हैं और इस प्रकार या तो खारी दलदलों का या फिर भूमिगत झीलों का निर्माण करते हैं। यहां की जनता के लिए यह बात अत्यधिक उपयोगी है कि यहां प्रत्येक भूमिगत सोते की तलाश की जाय और उसके पानी की अन्तिम बूंद तक का इस्तेमाल कर लिया जाय।

शताब्दियों से स्थानीय प्रकृतिवादी भूमिगत सोतों की तलाश करते थे। ऐसे लोगों में कुछ तो बड़े अनुभवी भी हो गये थे। अख़ाल-तेक्के नख़लिस्तान में बड़े बड़े जल-खोजकों के नाम साइबेरियाई तैगा में सोने की खानों का पता लगानेवालों के नामों की तरह लोगों की ज़बानों पर नाचा करते थे। ये जल-खोजक कुछ ऊपरी चिह्न—पहाड़ी ढालों पर पत्थरों का रंग, पौधों का रूप-रंग और पथरीली भूमि पर डंडों की चोट पड़ने पर निकलनेवाली आवाज़ या कीड़े-मकोड़ों के जाने की दिशा, जो कोपेत-दाग़ों की तलहटियों के आस-पास ढेर के ढेर उड़ते या रेंगते हैं,—देखकर ही पानी का अनुमान लगा लेते। इस प्रकार वे निश्चय करते थे कि किस स्थान पर पानी है और कहां कुओं की खुदाई की जानी चाहिए।

यद्यपि क्यारिज़-पद्धति में अनेक असुविधाएं हैं फिर भी इससे एक बड़ा लाभ है। इस पद्धति से संचित जल का कोई भी अंश भाप बनकर नहीं उड़ सकता। इस लाभ का महत्त्व तो हमें तब समझ में आ सकता है जब हम इस बात पर विचार करें कि तुर्कमनिस्तान की जलवायु कितनी ख़ुश्क है और वहां गर्मी कितनी सख़्त पड़ती है। कज़ांजीक और किज़ील-अर्वात में औसत वार्षिक तापमान ६१ डिगरी फ़ारेनहाइट है। जनवरी तक में, जो वर्ष भर का सबसे सर्द महीना है, वहां का तापमान शून्य अंश सेन्टीग्रेड से शायद ही कभी नीचे आता हो। हवा में आर्द्रता बहुत कम होती है। इन परिस्थितियों में यह स्पष्ट है कि जो सोता पहाड़ों पर से खुले मार्ग पर होता हुआ किसी खेत तक जायेगा उसका जितना जल खेत को मिलेगा उससे कहीं अधिक भाप बनकर उड़ जायेगा। क्यारिज़ों पर सूर्य की किरणें नहीं पड़ पातीं इसलिए इसके पानी के भाप बनकर उड़ जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। हां, इसके पानी का कुछ अंश आस-पास की मिट्टी में मिल जाने के कारण नष्ट अवश्य हो जाता है।

कज़ांजीक में खुले सोते भी हैं और क्यारिज़ें भी। यही कारण है कि पश्चिमी तुर्कमनिस्तान की उन बस्तियों तथा नगरों के निवासी, जहां अभी हाल ही तक पानी की बड़ी कमी थी, कोपेत-दाग़ की उत्तरी-पश्चिमी तलहटियों पर बसे हुए इस छोटे-से नगर के बारे में यह समझा करते थे कि वह तुर्कमनिया के सबसे दुर्लभ पदार्थ—ताज़े पानी—की पूर्ति करने का एक बहुमूल्य साधन

२

यद्यपि भूमिगत सोतों को देखकर यह अनुमान लगता है कि जल की व्यवस्था करने में प्रकृति ने कितनी मितव्ययता से काम लिया है, फिर भी कोपेत-दाग़ में हमें एक ऐसी चीज़ देखने को मिलती है जो हमारे उक्त अनुमान पर कुठाराघात करती है और हमें यह सोचने के लिए विवश कर देती है कि प्रकृति जल को लुटा भी सकती है और बरबाद भी कर सकती है—और वह चीज़ है वहां की तथाकथित धाराएं।

कज़ांजीक के पूर्व में, कोपेत-दाग़ के उत्तरी ढालों के समानान्तर यात्री को चौड़ी तथा चौरस ऐसी ऐसी जल-दरियां मिलेंगी जिन्हें देखकर नदियों के सूखे हुए

तलों का भ्रम होता है। ये जल-दरियां इस पथरीली भूमि में उस समय बन गयी थीं जब मूसलाधार पानी बरसने के कारण यहां की भूमि पर जल की तूफ़ानी धारायें बहने लगी थीं। ये धारायें कभी कभी दैवी आपदाओं का रूप ले लेती हैं। यदि वर्षा बहुत काल तक होती रहती है तो उसका जल ढालों पर से बालू, मिट्टी और पत्थरों को बहाता हुआ घाटी में प्रलय के दृश्य खड़े कर देता है। इस घाटी के लोगों को उन औलों के नाम अब भी याद हैं जिन्हें इन धाराओं ने पूर्णतः ध्वस्त कर दिया था। यदि ऐसी विशालकाय धाराएं पहाड़ियों पर से एक या दो घंटे तक ही बहती रहें तो भी वे घाटी की हर वस्तु को नष्ट कर डालने अथवा उन्हें बहा ले जाने में प्रायः समर्थ होती हैं। पेड़-पौधे, जानवर, मकान, रेलवे-स्लीपर, रेल की पटरियां और कभी कभी आदमी, औरतें तथा बच्चे तक इसकी लपेट में आ जाते हैं और बहते हुए रेगिस्तानों तक चले जाते हैं।

इन धाराओं में एक वर्ष के दौरान में इतना अधिक पानी बह जाता है कि यदि इसे नष्ट न करके केवल सिंचाई के काम में लगाया जाय तो कोपेत-दाग़ की तलहटियों की फ़स्लों का क्षेत्र दूना अवश्य हो जायगा। यदि मनुष्य इन धाराओं को जलाशयों में भरकर रखना सीख ले तो वहां अंगूरों तथा फलों के बाग़ों की संख्या बढ़ जायेगी और शहतूत की खेती पहले से कहीं अधिक की जाने लगेगी। वहां खरबूज़े अधिक ोंगे, अनाज अधिक होगा और इस प्रकार उस खर्च में बहुत-सी बचत हो जायेगी जो दूरस्थ साइबेरिया, उत्तरी काकेशिया और वोल्गा के क्षेत्रों से अनाज मंगाने में होता है। कोपेत-दाग़ की तलहटी में कपास के लिए बड़ी अनुकूल जलवायु है। यदि इसकी मिट्टी को बराबर पानी मिलता रहे तो यहां कपास की फ़स्ल में भी काफ़ी वृद्धि हो सकती है। परन्तु सम्प्रति वैसी व्यवस्था नहीं है, इसलिए यहां कपास की उपज बढ़ने की फ़िलहाल सम्भावना नहीं है। यदि यहां ढेरों जलाशय तथा विशेष जल-अवरोधक बना लिये जायें तो कोपेत-दाग़ की तलहटी के नगरों तथा गांवों में और भी अधिक बिजली मिलने लगेगी, क्योंकि जब इस जल में फ़स्लें और मकान तक बहा ले जाने की शक्ति है तो पन-चक्कियां तो बहुत आसानी से चल सकती हैं।

कोपेत-दाग़ के सभी ढालों पर मूसलाधार वर्षाओं से पैदा हुई धाराएं होती हैं। उनका क्या कारण है?

कोपेत-दाग़ (जिसे तुर्कमान-ख़ोरासां की पर्वत-श्रेणी भी कहते हैं क्योंकि कोपेत-दाग़ इस पर्वत-माला का ही भाग है) पर्वतों की एक बड़ी लम्बी श्रेणी है। उसका दक्षिणी भाग ईरान में है जहां वह समानान्तर फैली हुई पर्वत-श्रेणियों के रूप में ढालू होता है। उन पर्वत-मालाओं के बीच बीच में नदियों की बहुसंख्यक चौड़ी चौड़ी घाटियां आ गयी हैं।

तुर्कमनिया की ओर कोपेत-दाग़ के ढाल सीधे हैं और वहां न तो कोई समानान्तर पर्वत-श्रेणियां ही हैं और न घाटियां ही।

अरल सागर, कास्पियन सागर तथा और भी दूर से हवा जिन वर्षा के बादलों को बहाकर लाती है, वे कोपेत-दाग़ पर्वत-श्रेणियों से रुककर वहीं बरस पड़ते हैं। वर्षा के इस पानी को रोकने के लिए वहां कोई भी अवरोधक नहीं है, इसलिए वह तेज़ धाराओं में बह निकलता है। ढालों की छितरी हुई वनस्पति भी इस धारा को रोकने में असमर्थ है।

तुर्कमनिया में एक छोटा-सा क्षेत्र है जहां कोपेत-दाग़ पर्वत-श्रेणी बिल्कुल सीधी नहीं है। यह क्षेत्र रेलवे के दक्षिण में कज़ांजीक और किज़ील-अर्वात नामक स्टेशनों के बीच पड़ता है और इसे करा-क़ला ज़िला या सुम्बार की घाटी कहते हैं। यह नाम सुम्बार नदी के नाम पर पड़ा है। इसी नदी के किनारे करा-क़ला नामक एक छोटा-सा नगर है जो ज़िले का केन्द्र है। कभी कभी इसे अत्रेक भी कहते हैं क्योंकि सुम्बार अत्रेक की ही एक सहायक नदी है। प्रायः इस क्षेत्र को कोई भौगोलिक नाम नहीं दिया जाता। इसे केवल 'हमारा उपोष्णदेश' या 'तुर्कमनिया का सूखा उपोष्णदेश' कहा जाता है।

३

इस उपोष्णदेश की ओर जानेवाली दो सड़कें हैं – एक किज़ील-अर्वात के रेलवे-स्टेशन से उत्तर से आती हुई, और दूसरी मछलियां पकड़ने के एक प्रसिद्ध केन्द्र, गसन-कुली नगर से दक्षिण-पश्चिम से आती हुई। मगर चूंकि गसन-कुली प्रजातन्त्र के मुख्य

संवहन मार्गों से दूर पड़ता है इसलिए तुर्कमान उपोष्णदेश को जानेवाला आम रास्ता किज़ील-अर्वात से किज़ील-अत्रेक को जानेवाली मुख्य सड़क पर है। किज़ील-अत्रेक तुर्कमान उपोष्णदेशीय क्षेत्र का मुख्य नगर है। यह मुख्य सड़क सुम्बार नदी के किनारे किनारे करा-क़ला से होती हुई जाती है।

किज़ील-अर्वात और किज़ील-अत्रेक के बीच जानेवाला मार्ग लगभग दो-तिहाई दूरी तक तलहटियों और पहाड़ों से गुज़रता हुआ जाता है। सुम्बार की घाटी पार हो जाने पर यह रास्ता एक खुली हुई तथा लम्बी-चौड़ी स्तेपी में पहुंचता है। यहीं पास में पंकिल अत्रेक भी बहती हुई दिखाई देती है।

किज़ील-अर्वात के उस पार इस मार्ग पर अनेकानेक पहाड़ पड़ते हैं जो निर्जन तथा नीचे हैं। और यदि यहां सड़क के समीप उत्तर की ओर आती हुई पहाड़ी नदी न होती, तो इस क्षेत्र को देखकर यात्री को निर्जन क्रास्नोवोद्स्क पठार की याद आ गयी होती।

सर्वप्रथम सड़क दक्षिण की ओर बढ़ती है और यदि यात्री इस सड़क पर कार द्वारा आधे घंटे तक चलता रहे तो वह कतिपय उन पथरीले पहाड़ों को पार कर लेगा जो किज़ील-अर्वात से दिखाई पड़ते हैं। तत्पश्चात् धीरे धीरे पूर्व की ओर बढ़ने पर यह मार्ग उस घाटी में उतरने लगता है जिसका दक्षिणी सिरा एक पर्वत-श्रेणी से घिरा हुआ प्रतीत होता है। यद्यपि ये पहाड़ पहली पर्वत-माला से कुछ ऊंचे हैं फिर भी हैं उन्हीं की तरह निर्जन और सुनसान। इनके ठीक बाद एक तीसरी पर्वत-श्रेणी है जो पहली दो पर्वत-श्रेणियों से कहीं ऊंची है—इसकी ऊंचाई ३,००० फ़ुट से भी अधिक है। दक्षिण की ओर स्थित इन पहाड़ों को देखकर ऐसा लगता है मानो क्षितिज में बादल मंडरा रहे हों। यहां सड़क टेढ़ी-मेढ़ी होकर सहसा मुड़ जाती है।

पहाड़ों की ये तीन श्रेणियां सुम्बार और उसकी सहायक चन्दीर की घाटियों को करा-कुम के रेगिस्तान से अलग करती हैं और इन घाटियों को ठंडी हवाओं के हमलों से बचाती हैं। इसका परिणाम यह होता है कि करा-क़ला ज़िले में उपोष्णदेशीय जलवायु है और वहां जाड़े में सर्दी बहुत ही कम होती है।

जब यात्री की कार सुम्बार की घाटी में प्रवेश करती है तो उसके समक्ष प्रकृति अपना जो सुन्दर रूप बिखेरती है उसे देखकर वह किज़ील-अर्वात के बाद के निर्जन दृश्यों को एकदम भूल जाता है। जहां तक नज़र जा सकती है नदी के दाहिने और बायें दोनों किनारों पर पेड़-पौधों की हरियाली दिखाई देती है और वातावरण सुरभित रहता है। यह हरियाली पार्श्वस्थ कन्दराओं में विशेष रूप से घनी लगती है। सुम्बार की छोटी छोटी सहायक नदियों से घिरी हुई तथा भिन्न भिन्न पौधों, लताओं, घासों, फलफूलों तथा काष्ठ-फलों से लदे हुए वृक्षों और तरह तरह की आकृतियों और रंगों वाली पत्तियों से सुशोभित ये कन्दराएं बहुरंगे जल-स्रोतों के समान दिखाई पड़ती हैं। यहां फलों के प्रायः वे सभी वृक्ष होते हैं जिनके नाम सारी, समरकंद, लेनिनाबाद, फ़रगाना तथा मध्य एशिया के दूसरे फलोत्पादक क्षेत्रों में बसनेवाले लोग जानते हैं।

करा-क़ला सुम्बार घाटी का एक प्रशासनीय तथा आर्थिक केन्द्र है। यहां के लोग अनेकानेक प्रकार के पेड़-पौधों को अपने मकानों के आस-पास लगाने में बड़ी रुचि लेते हैं। अखिल संघीय पौध-पालन-संस्था के करा-क़ला केन्द्र ने उपोष्णदेशीय वनस्पति का विशेष अध्ययन किया है और उसने ऐसे ऐसे पौधों का पता लगाया है जिनकी स्थानीय रूप से अच्छी और लाभप्रद खेती की जा सकती है। आजकल करा-क़ला के सामूहिक फ़ार्मों में अनार की खेती विशेष रूप से की जाती है और यदि प्रयत्न किये जायें तो निश्चय ही वहां अंजीर तथा बादाम भी बहुतायत से हो सकेंगे। इसी क्षेत्र में पुष्टिकारक तथा स्वादिष्ट जापानी खुरमा भी होता है। यहां के लोग तुर्कमान उद्यानों के प्रसिद्ध सेबों, नाशपाती और ख़ूबानियों की तरह उसे भी बहुत पसंद करते हैं। क्रीमियाई ज़ैतून के संबंध में यहां किये गये परीक्षणों से पता चलता है कि यहां इस वृक्ष में इसके मूल प्रदेश क्रीम से भी अधिक फल लगते हैं। सुम्बार के अंगूर तुर्कमनिया भर में तथा अन्य प्रजातन्त्रों में भी पसन्द किये जाते हैं। जब किसी शराब की बोतल पर 'आय-देरे' की छाप होती है तो इसका अर्थ यह होता है कि शराब आय-देरे कन्दरा के अंगूरों से तैयार की गयी है। यह कन्दरा सुम्बार की घाटी का एक बड़ा मनोरम और दर्शनीय स्थल है।

यहां रबड़ पैदा करनेवाले पौधे लगाने के प्रयास भी किये जा रहे हैं।

तुर्कमनिया में बीस वर्ष से कुछ ही पूर्व से उपोष्णदेशीय पेड़-पौधे उगाये जाने लगे थे। अक्तूबर क्रान्ति से पूर्व लोगों ने इन पेड़-पौधों के तुर्कमनिया में लगाये जाने का ज़ोरदार विरोध किया था। इतना ही नहीं सोवियत शासन की स्थापना हो जाने के बाद भी कई वर्षों तक यही कहा जाता रहा कि उपोष्णदेशीय पेड़-पौधे एकमात्र ट्रान्स-काकेशस क्षेत्र की ही वस्तु हैं। इसका कारण यह था कि तुर्कमनिया की हवा बहुत अधिक खुश्क थी और जाड़े बहुत अधिक सर्द।

कुछ ख़ास स्थानों को छोड़कर उपोष्णदेशीय पेड़-पौधों को बाक़ी प्रायः सम्पूर्ण तुर्कमनिया में उगाया जा सकता है। हां, वहां के सबसे उत्तरी क्षेत्रों में—तशौज़ तथा करा-बोगाज़-गोल के उत्तरी किनारे पर—जहां जाड़े की ऋतु लम्बी और सर्द होती है, ये पेड़-पौधे नहीं ठहर सकते। अन्य स्थानों में इन पेड़-पौधों के लिए यह आवश्यक है कि कोहरे के समय उनके चारों ओर साये की व्यवस्था की जाय। स्वाभाविक है कि जिन स्थानों पर वृक्षों की सर्द हवाओं से रक्षा के लिए अवरोध के रूप में पर्वत-मालाएं हैं वे स्थान निश्चय ही उपोष्णदेशीय पेड़-पौधों के लिए बड़े उपयुक्त हैं। ऐसे स्थानों में सुम्बार, चन्दीर और अत्रेक की घाटियां हैं जहां कुहरा कभी कभी ही दिखाई पड़ता है।

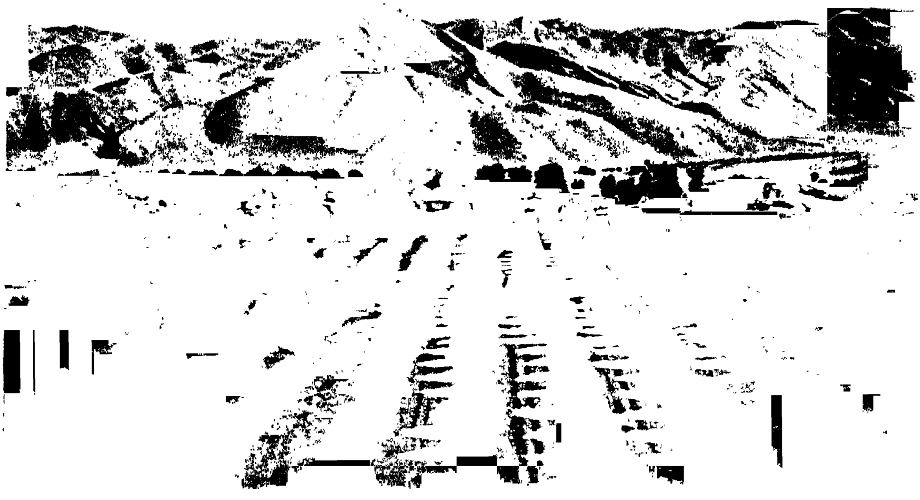
इन स्थानों पर उपोष्णदेशीय वनस्पति की सामान्य वृद्धि के लिए थोड़े समय तक ठंडक अवश्य हो। दीर्घकालीन गर्मी के बाद अनार, अंजीर और खजूर जैसे वृक्षों के लिए कुछ काल तक सर्द जलवायु की ज़रूरत पड़ती है। बहुत-से उपोष्णदेशीय पौधे ऐसे भी हैं जो तापमान न गिरने की दशा में जीवित भी नहीं रह सकते। उदाहरणार्थ, खजूर का वृक्ष उष्णदेशों में नहीं बढ़ता, किन्तु दक्षिण-पश्चिमी तुर्कमनिया में उसकी बहुतायत हो सकती है जहां वह पहाड़ों से सुरक्षित रहता है।

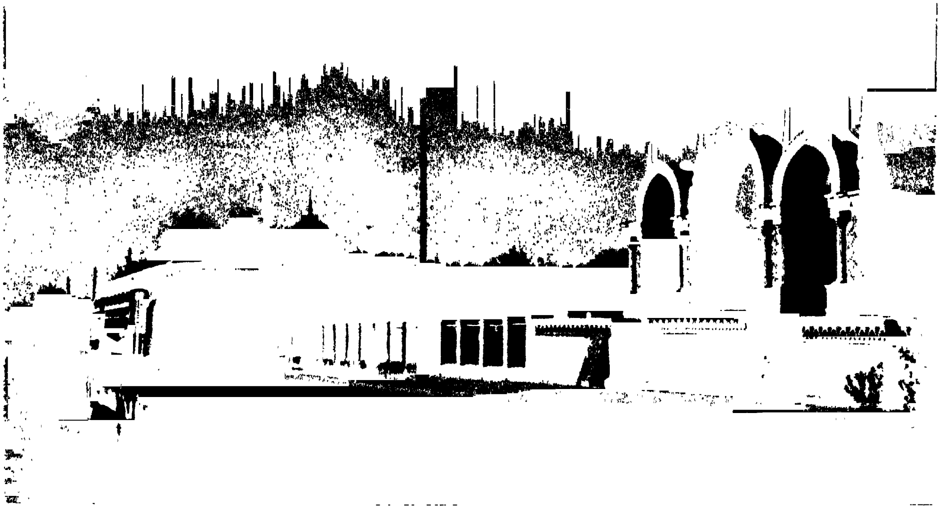
फ़िलहाल खजूर के पेड़ किज़ील-अत्रेक के आस-पास अत्रेक नदी के मध्यवर्ती क्षेत्रों में उगाये जाते हैं। जब यात्री सुम्बार की घाटी को पार कर लेने के पश्चात् अत्रेक के किनारों पर पहुंच जाता है, तो नदी मुड़ने के स्थान पर उसे जो मनोरम दृश्य दिखाई पड़ता है, वह उसे अफ़्रीका के दृश्यों की याद दिलाने लगता है क्योंकि दोनों में विचित्र समानता है। प्रायः वह चौड़े चौड़े पत्तों वाले ताड़ के पेड़ों और रेगिस्तान से निकलकर उनतक जाते हुए क़ाफ़िले को देखता है और उसका चित्त



अखाल-तेक्के के घोड़े

कोपेत-दाग़ घाटी का एक फलोद्यान





स्वोबोदा मार्ग, अशक़ाबाद

अशक़ाबाद की कताई और बुनाई मिल के श्रमिकों के आवास



गद्गद हो जाता है। नहीं, यह किसी विदेशी भूमि का उष्णदेश नहीं, अपितु सोवियत तुर्कमनिया के उपोष्णदेश का एक भाग है।

यह यहां की जलवायु का ही प्रसाद है कि अत्रेक के किनारे किनारे खजूर के वृक्ष उतनी ही अधिक संख्या में उग सकते हैं जितनी संख्या में शहतूत, थुजा तथा बबूल के वृक्ष कोपेत-दाग़ के पास वाली घाटी में उगते हैं।

४

जब यात्री किज़ील-अर्वात में अशकाबाद जानेवाली ट्रेन पकड़ने के लिए सुम्बार की धुपहली घाटी से प्रस्थान करता है, तो वहां की समृद्ध वनस्पति तथा मीठे फलों की याद उसके लिए एक अमर निधि बन जाती है।

पुराने ज़माने के प्रसिद्ध कवि मख्तूमकुली ने एक बार इसी रमणीक स्थान में शरण ली थी।

सितम्बर १९४५ में, जो द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद पहला शान्तिपूर्ण शरद्-काल था, मास्को में तुर्कमान साहित्य के संबंध में अनेक वाचन हुए थे और वह पहला अवसर था जब कि सोवियत संघ के सामान्य पाठक को दूरस्थ दक्षिणी प्रजातन्त्र के लेखकों की रचनाओं का ज्ञान कराया गया था। उस समय तक तुर्कमान लेखकों के थोड़े-से ग्रन्थों का ही रूसी में अनुवाद हो पाया था। युद्ध के पूर्व तक १८ वीं और १९ वीं शताब्दी के कवियों – मख़तूमकुली, केमीने और मोल्ला नेपेस – की दो-तीन पुस्तकें ही प्रकाशित हो पायी थीं। इस प्रकार के साहित्य के संबंध में दस दिवसीय गोष्ठियों से ही रूसी पाठक को सोवियत तुर्कमान कविता का कुछ परिचय मिला था। मास्को के लोगों पर लोक-गायक अता-सालिख़ की देशभक्तिपूर्ण, वीररस से ओत-प्रोत और सीधी-सादी कविताओं, द० ख़ल्दुरदा का सोवियत सैनिकों की वीरता से संबद्ध ओजपूर्ण गीतिकाव्य, करा सेनलियेव द्वारा अशकाबाद को समर्पित सुरीले गीत और कवयित्री तौशान एसेनोवा द्वारा सोवियत नारियों की प्रशंसा में बनायी गयी कविता का बड़ा प्रभाव पड़ा था।

मास्को में तुर्कमान कविता की चर्चा करते हुए सोवियत तुर्कमान लेखक बेर्दी केर्बबायेव ने तुर्कमान साहित्य की अभिवृद्धि में मख़तूमकुली का योग इस विषय पर कहा था कि

"पुराने ज़माने में हमारे समक्ष एक कठिनाई थी जिसके कारण साहित्य के विकास में काफ़ी विलम्ब हो सकता था। उस ज़माने में भाषा में इतनी अधिक कृत्रिमता और दुरूहता आ गयी थी कि साहित्य जनता की सृजनात्मक शक्तियों के प्राय: परे जा चुका था। मख़्तूमकुली ने इस कृत्रिमता को दूर किया, बड़ी हिम्मत के साथ साहित्य में लोक-भाषा तथा लोक-गीतों के विभिन्न स्वरूपों को प्रचलित किया और साहित्य को जन-जीवन तथा जन-जन के विचारों से संबद्ध किया। वह जनता के लिए जिया, उसने जनता के लिए सोचा-विचारा और जनता के लिए ही उसने कष्ट झेला। उसने अपनी एक कविता में यह घोषणा की थी—

वेदनाएं मातृभू की
हो रहीं मख़्तूमकुली की...

"कवि ने इसी एक बात की अभिव्यक्ति अपनी समस्त रचनाओं और जीवनचर्या में की। वह कवि था, नागरिक था, सिपाही था। लेकिन मुल्लों तथा इशानों ने उसे नास्तिक और पागल कहना शुरू किया, और उसकी पुस्तकें स्कूलों के लिए निषिद्ध घोषित कर दी गयीं। किन्तु जनता ने उसकी कविताओं को ज़बानी याद कर रखा था।"

मख़्तूमकुली के काव्य की यह सराहना बिल्कुल उचित है यद्यपि उसकी भिन्न भिन्न रचनाओं का कलात्मक, आदर्शात्मक और साहित्यिक दृष्टिकोण से भिन्न भिन्न मूल्यांकन किया जा सकता है। बेर्दी केर्बबायेव ने ठीक ही कहा था कि मख़्तूमकुली ने सबसे पहले अपनी जनता के हितों और उसकी समृद्धि की ओर ध्यान दिया और हिंसा, अन्याय तथा दुष्टता के विरुद्ध अपनी आवाज़ उठायी।

मख़्तूमकुली दक्षिण-पश्चिमी तुर्कमनिया में पैदा हुआ और वहीं उसने अपने जीवन का अधिकांश समय बिताया। वह गोकलेन जन-जाति का था जिसका प्रदेश करा-क़ला क्षेत्र के निकट है।

साहित्यिकों का ख़्याल है कि मख़्तूमकुली का जन्म १८वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के अन्त में हुआ था। ये वर्ष तुर्कमान जनता के लिए बड़े संकट के थे। इस समय ईरान के बादशाह नादिरशाह ने चंगेज़ ख़ां तथा तैमूरलंग की पुरानी सलतनत को

फिर से संगठित करने का संकल्प किया था और पास-पड़ोस की जनता के ख़िलाफ़ विजयाकांक्षी युद्ध छेड़ा था। फलत: नादिरशाह के विरुद्ध जो लड़ाई लड़ी गयी उसमें तुर्कमान जन-जातियों को बड़ी गम्भीर हानियां उठानी पड़ीं। निश्चय ही उनका मोर्चा सबल था और वे लड़े भी बड़ी बहादुरी से, परन्तु आपसी झगड़ों और फूट ने उन्हें अशक्त कर दिया था। मख़तूमकुली ने अपने बचपन से ही जनता के कष्टों को देखा था और यही कारण था कि उसके ग्रन्थों में उन्हीं की अभिव्यक्ति हुई है।

जन-श्रुति है कि मख़तूमकुली ने बाल्यावस्था से ही कविता करनी आरम्भ कर दी थी। उसकी आदर्श-कविताएं केवल वे गीत ही न होते जिन्हें सामान्य जनता गाती थी, उसने साहित्यिक कविता को भी अपने काव्य का आधार बनाया था। उन दिनों के साहित्यिक स्तर को देखते हुए कहा जा सकता है कि उसके पिता दौलत मुहम्मद आज़ादी भी एक प्रसिद्ध कवि थे।

मख़तूमकुली ने ख़ीवा के उच्चतर मुसलिम स्कूल में अध्ययन किया था। जब वह पढ़ाई समाप्त करके घर लौटा तो उसने औलों में बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। उसने अपना कुछ समय कविता और दस्तकारी में भी लगाया। मख़तूमकुली ने दूर दूर तक की यात्रा की थी–ख़ीवा, बुख़ारा, ईरान, कांकेशिया और आस्त्राख़ान गया। अपने जीवन में उसने तरह तरह के अनुभव किये और इस प्रकार उसके विचारों में नूतनता और सबलता आयी। उसने उन भेद-भावों को देखा जो तुर्कमान जन-जातियों को मटियामेट किये दे रहे थे। उसने औलों की निरक्षरता और पिछड़ेपन पर ध्यान दिया और अनुभव किया कि शत्रुओं के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तुर्कमानों को सबसे ज़्यादा ज़रूरत है एकता की, मिल-जुलकर ठोस काम करने की। किन्तु शायद वह यह नहीं समझ सका था कि राष्ट्रीय एकता के प्रमुख शत्रु वे स्थानीय शासक और मुखिये थे जो जन-जातियों के भेद-भावों और उनकी कमज़ोरियों के कारण ही वहां अपना अधिकार जमाये हुए थे। मख़तूमकुली ने अपने काव्य में उन दुर्गुणों पर प्रकाश डाला जो जनता को गर्त की ओर लिये जा रहे थे। यही कारण था कि उसकी कविता जन-जन के गले का हार हो रही थी। उसके काव्य में सौन्दर्य है और है तत्कालीन जीवन की एक झांकी।

मखतूमकुली अपनी जनता को प्यार करता था किन्तु वह उसकी पारस्परिक फूटों को देखकर उग्र एवं कटु हो गया था क्योंकि उसे इस राष्ट्रीय विपत्ति से छुटकारा मिलने का कोई मार्ग नहीं दिख रहा था। वह उस दिन की बाट जोह रहा था जब ये दुर्गुण तुर्कमान जन-जीवन के अंग न रह जायेंगे, जब जनता सुखी होगी। लेकिन कवि यह नहीं जानता था कि यह सब होगा कैसे। वह बराबर इसी आशा में रहा कि एक दिन आयेगा जब जनता समझेगी कि दुष्टता, असत्य और अन्याय की अपेक्षा सद्गुण, एकता और न्याय में अधिक शक्ति है, अधिक बल है।

कहते हैं मखतूमकुली "जन-जीवन का नाश करनेवाली विध्वंसक लड़ाइयों के कारण ही दुखी होकर" १८ वीं शताब्दी के अन्त में मर गया। यह लोक-कथा ही उस आदर व सम्मान का प्रमाण है जो तुर्कमान जनता के स्मृति-पटल पर इस कवि के नाम के प्रति बना हुआ है।

अध्याय २

१

अभी हाल तक तुर्कमान समुद्र-तटवर्ती नगरों में मुश्किल से ही कहीं कोई वनस्पति दिखाई देती थी। यही कारण है कि क्रास्नोवोद्स्क, नेबित-दाग़ और कुम-दाग़ में लोग वहां उग आनेवाली एक-एक क़लम और एक-एक पेड़-पौधे को देखकर फूले नहीं समाते थे। किन्तु मध्य एशिया के पुराने बसे हुए नख़लिस्तानों में स्थिति एकदम भिन्न है क्योंकि वहां पेड़ों की संख्या मकानों की संख्या से प्रायः अधिक है। पगडंडियों के किनारे किनारे उगे हुए बबूल, शहतूत, पापलर वृक्ष और चिनार वहां की प्राकृतिक सुषमा के अनिवार्य अंग हैं, फलतः मध्य एशिया के अनेक नगर पार्कों के समान लगते हैं। कुछ नगरों में तो हरियाली इतनी अधिक है कि वे न केवल उसमें छिप ही जाते हैं अपितु ऐसा प्रतीत होता है कि वे उसमें डूबे हुए हैं। उदाहरणार्थ, हम उज़बेकिस्तान में फ़र्गाना और तुर्कमनिस्तान में बैराम-अली नामक नगरों को ले सकते हैं। बहुत-सी सड़कों पर तो मकान ऊंची

ऊंची ग्रौर घनी घनी वनस्पतियों से प्रायः ढके-से हैं। ये मकान स्थानीय रूप से पाई जानेवाली ऐसी मिट्टी की ईंटों से बने हैं जो भट्टियों में ग्रथवा सिर्फ़ धूप में सुखाये जाने पर भी मूल रंग को पूर्ववत् रखती है।

मध्य एशिया के प्राकृतिक दृश्यों का रंग-रूप सैकड़ों मीलों तक एक जैसा है। वहां भूरे-पीले रंग वाली विशाल स्तेपी तेज़ धूप में सफ़ेद दिखती है। यहां-वहां हरियाली ग्रथवा छोटी-मोटी झाड़ियां दिखाई पड़ती हैं। दूर से वृक्ष धूमिल-से लगते हैं किन्तु ज्यों ज्यों यात्री उनके निकट पहुंचता जाता है वे ग्रपने सामान्य हरे रंग में दिखने लगते हैं ग्रौर फिर सहसा यात्री को ऊंचे ऊंचे वृक्षों के बीच से झांकती हुई छतों के सिरे भी दिखाई पड़ने लगते हैं। मध्य रूस ग्रौर साइबेरिया में वन का ग्रर्थ है निर्जनता ग्रौर नगरों की चिल्लपों से लोगों की मुक्ति। किन्तु मध्य एशिया में वृक्षों तथा मनुष्य के निवास-स्थानों को एक दूसरे से ग्रलग नहीं किया जा सकता। यदि वृक्षों की छाया न होती तो यहां रहना, काम करना ग्रथवा सड़कों पर चलना-फिरना तक कठिन हो गया होता, क्योंकि यहां की सड़कों पर वर्ष भर के प्रायः २०० दिनों तक इतनी तेज़ धूप रहती है कि कभी कभी सड़कों का तापमान १२२ ग्रंश फ़ारेनहाइट तक पहुंच जाता है।

जिन स्थानों तथा बस्तियों में ताज़े पानी की कमी है वे वीरान-सी लगती हैं, उदाहरणार्थ, कास्पियन का समुद्री तट। किन्तु स्वयं यहां भी वृक्षों का ग्रपना महत्त्व है। वह दिन दूर नहीं जब क्रास्नोवोद्स्क ग्रौर नेबित-दाग़ नगरों में भी चार्दज़ू ग्रथवा बैराम-ग्रली जैसे पार्क हो जायंगे। सम्प्रति कास्पियन से तुर्कमनिस्तान को जानेवाली रेलवे पर जिस पहले स्थान पर वास्तव में कुछ हरियाली है वह है किज़ील-ग्रर्वात, ग्रशकाबाद क्षेत्र का एक ज़िला-केन्द्र।

किज़ील-ग्रर्वात रेलों में काम करनेवालों का नगर तथा कोपेत-दाग़ की तलहटियों के किनारे किनारे बसी हुई बस्तियों में पहली प्रमुख बस्ती है। मध्य एशिया के इस छोटे-से नगर में, जहां ग्ररिक तथा छायादार वृक्षों की क़तारें हैं, ग्रधिकांश लोग इंजनों की मरम्मत के कार्यों ग्रथवा रेलवे से संबद्ध ग्रन्य उद्यमों में लगे हुए हैं।

किज़ील-ग्रर्वात नगर का इतिहास वस्तुतः रेलवे के इतिहास से ही सम्बद्ध है।

जब जारशाही सरकार ने कास्पियन के समुद्री तटों से आखल-तेक्के के नख़लिस्तान तक एक रेलवे बनाने का निर्णय किया था उस समय किज़ील-अर्वात को उसके अन्तिम स्टेशन के रूप में चुना गया था।

सन् १८८५ में रेलवे-लाइन बढ़ाकर अशकाबाद तक ले जायी गयी। दो साल बाद आमू-दरिया पर एक पुल बनाकर मध्य एशियाई रेलवे को बुख़ारा होते हुए धीरे धीरे समरक़न्द तक ले जाया गया। आरम्भ में यह सैनिक महत्त्व की एक छोटी-सी स्थानीय रेलवे थी किन्तु बढ़ते बढ़ते १९वीं शताब्दी में यातायात की सबसे बड़ी योजनाओं में से एक हो गयी।

किन्तु मध्य एशियाई रेलवे का इतिहास अभी भी लिखित रूप में नहीं मिलता। यह लाइन जितनी अवधि में बनकर तैयार हुई थी, वह उन दिनों बहुत ही थोड़ी समझी गयी थी। इस रेलवे को देखकर हम कह सकते हैं कि वह क्रान्तिपूर्वक रूसी इंजीनियरिंग की एक बहुत बड़ी सफलता है।

जिस क्षेत्र में यह रेलवे बनायी जानेवाली थी वहां पानी का पूर्ण अभाव था और इस बात की सम्भावना बराबर बनी रहती थी कि तेज़ तूफ़ान की दशा में लाइन तो लाइन यात्रियों सहित ट्रेन तक बालू से ढक सकती है। इस लाइन को हमारे देश के सबसे दक्षिण तथा संसार के एक सबसे गर्म इलाक़े से होकर जाना था। कर्मचारियों के लिए पटरियों और कीलों से लेकर ताज़ा पानी और घोड़ों का चारा तक काकेशिया या मध्य रूस से मंगाना पड़ता था।

जहाज़ यहां रूस के कर्मचारियों और ज़रूरी सामानों को लाया करते थे। इन कर्मचारियों को जल का अभाव इतना अधिक खला कि वहां तुरन्त ही पानी साफ़ करने के एक कारख़ाने की स्थापना की गयी जिसकी पानी स्वच्छ करने की प्रतिदिन की क्षमता ४,००० बाल्टी थी। नियोजित मार्ग पर केवल दो स्थलों पर ही ताज़ा पानी मिल सकता था—कज़ांजीक और किज़ील-अर्वात पर, और प्रतिदिन पहला काम यही होता था कि पानी इन स्थानों से समस्त निर्माण-स्थलों तक पहुंचाया जाता था।

विदेशी पर्यवेक्षकों ने भविष्यवाणी की थी कि इन रूसियों के करे-धरे कुछ न हो सकेगा। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि बालू रूसी इंजीनियरों के ऊंचे ऊंचे स्वप्नों को धराशायी कर देगी और कोपेत-दाग़ की तलहटियों तक रेल बनाने का उनका

विचार जहां का तहां धरा रह जायेगा। इसमें सन्देह नहीं कि कभी कभी इन इंजीनियरों को निराश होना पड़ा था – बालू की आंधियां उनके मार्ग में अनेकानेक बाधाएं खड़ी कर देती थीं और प्रायः ऐसा भी होता था कि बालू का तूफ़ान उनके सारे किये-धरे पर एक ही रात में पानी फेर देता और उनकी सारी चीज़ें रेत की मोटी मोटी तहों से ढक जातीं। कभी कभी इसके ठीक विपरीत भी कोई घटना घट जाती थी – रेत के तूफ़ान के बाद वे देखते कि स्लीपरों के बीच की मिट्टी उड़ गयी है और रेल की पटरियां हवा में लटकी हुई हैं। और ऐसे भी क्षण आते जब निर्माण-कार्यों में लगे हुए लोग सुरंग खोदने की बात भी सोचने लगते।

अन्त में इंजीनियरों की प्रतिभा और मनोयोग ही काम आया। बालू को मज़बूत जमाने के लिए अफ्रीका से एस्पार्टो नामक घास मंगायी गयी जिसके स्थान पर बाद में स्थानीय तमरिस्क और सकसौल का प्रयोग किया गया। मिट्टी के उड़ने अथवा हट जाने की क्रिया रोकने के लिए पटरियों को चिकनी मिट्टी पर बिछाया गया, जिसके परिणामस्वरूप मुख्य ख़तरा दूर हो गया और लाइन इतनी सख़्त हो गयी मानो वह रेगिस्तान में न होकर वोरोनेज या ओर्योल की काली मिट्टी वाले प्रदेश में बनी हो।

उन वर्षों में रेगिस्तान के बारे में लोगों की जानकारी बहुत ही कम थी। कोई भी व्यक्ति निश्चयपूर्वक यह नहीं बता सकता था कि बरख़ान कितनी शीघ्रता के साथ अथवा किन किन दशाओं में स्थान-परिवर्तन करते हैं अथवा यह कि बालू को कैसे जमाना चाहिए। लोगों को तो इसमें भी सन्देह था कि बालू जम सकती है। निर्माताओं ने लाइन की सुरक्षा के लिए जो कुछ भी किया था वह उनकी निजी खोजों पर आधृत था। बहुत समय बाद, और ख़ासकर रेपेतेक वैज्ञानिक केन्द्र की स्थापना के बाद, जब वैज्ञानिकों ने करा-कुम का वैज्ञानिक अध्ययन आरम्भ किया तो उन व्यक्तियों के अनुभवों से लाभ उठाने की ओर भी ध्यान दिया गया, जिन्होंने ट्रान्स-कास्पियन रेलवे का निर्माण किया था।

यह अनुभव भी हुआ था कि मिट्टी के कमज़ोर पड़ने अथवा बालू के स्थान-परिवर्तन के कारण लाइन को पहुंचनेवाली हानि दूर करने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि बालू के साथ ऐसे पौधे भी जमा दिये जायें जिनपर सूखे का असर न पड़ता

हो। ऐसे पौधे उन स्थानों पर पाये जाते थे जहां बालू स्थिर होती थी। ये पौधे अपनी अपनी जड़ों के बल सधे रहते थे। सकसौल और तमरिस्क के अलावा इन पौधों में अरिस्तिदस, सलसोला, कन्दीम, रेगिस्तानी बबूल तथा अन्य रेगिस्तानी झाड़ियों जैसी वह वनस्पति, जो करा-कुम के बड़े बड़े क्षेत्रों पर छाई हुई है, भी होती है। आज वे पौधे अशकाबाद रेलवे के एक विशेष विभाग द्वारा लाइन के किनारे किनारे लगाये जा रहे हैं।

इस रेलवे को स्थापित हुए ७० वर्ष से अधिक हो गये हैं। इस सारे काल में ऐसा एक भी वर्ष नहीं गया जब कि लाइन के किनारे किनारे अधिकाधिक पौधे न लगाये गये हों। इस अविराम कार्य का, जो सोवियत शासन-काल में अभूतपूर्व पैमाने पर निरंतर होता ही रहा है, नतीजा यह हुआ कि बालू के स्थान-परिवर्तन के कारण रेलों का चलना न रुका। आगे के उल्लेखों से यह स्पष्ट हो जायेगा कि रेतीली आंधियों से रेलों की सुरक्षा के लिये क्या क्या किया गया है।

केवल १९४९ में ही रेलवे के किनारे किनारे बालू रोकनेवाले बीस लाख से भी अधिक पौधे लगाये गये थे। अब इस लाइन के दोनों ओर लगभग ३५० मील तक हरियाली ही हरियाली नज़र आती है।

ज़ारशाही सरकार ने मध्य एशियाई रेलवे इस उद्देश्य से बनायी थी कि रूस की दूरस्थ एशियाई सीमाओं की अतिक्रमणों और आक्रमणों से रक्षा की जा सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति हुई।

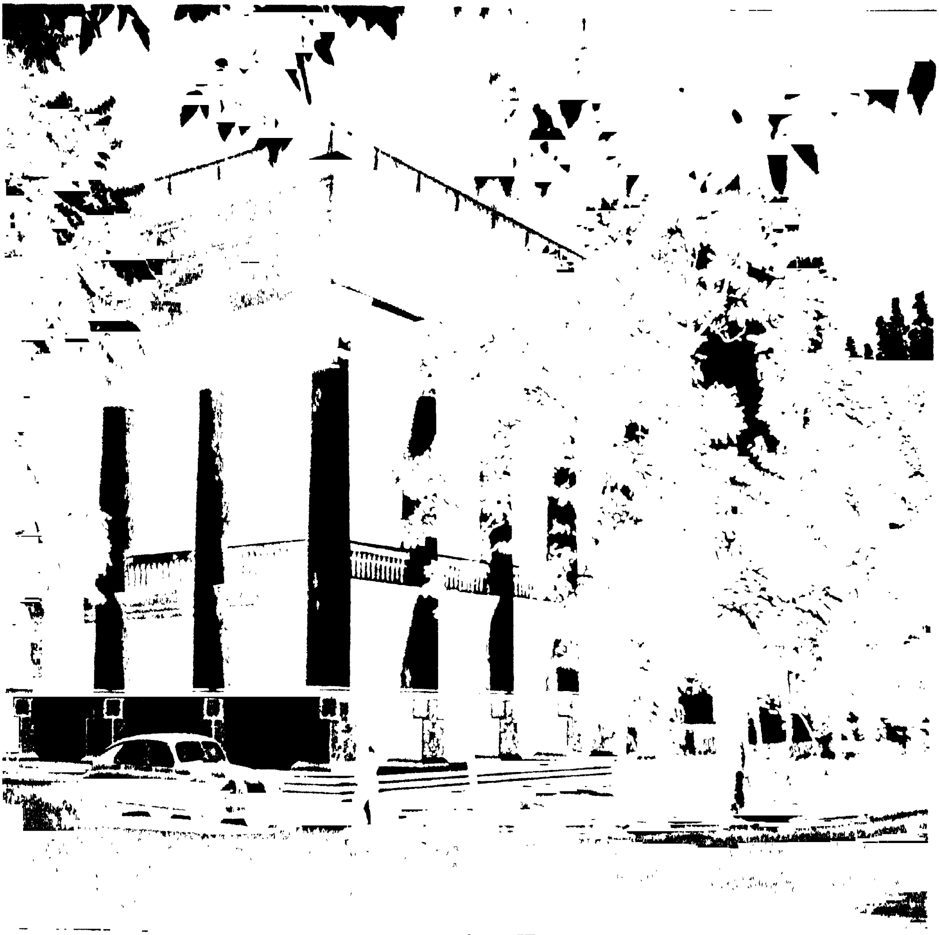
दूसरी ओर, रेलवे बन जाने से पास-पड़ोस के रेगिस्तानी बंजर इलाक़ों में रहनेवाले लोगों में भी कुछ चख-चख शुरू हुई। आधुनिक सभ्यता के केन्द्रों से दूर किसी ऐसे देश के लिए इंजन की सीटी उन शक्तियों से भिन्न महाबली शक्तियों की परिचायक थी जिनका उस रेगिस्तानी इलाक़े में असंख्य शताब्दियों से प्रभुत्व था और जिन्हें बन्जारे सर्वशक्तिमान और अजेय समझते थे। कोपेत-दाग़ पर्वत-मालाओं को जानेवाले रेल के पहले इंजन ने इस क्षेत्र में, जहां प्राचीन काल से ही मध्ययुगीन वातावरण छाया हुआ था, १९वीं शताब्दी की, अर्थात् शिल्पिक प्रगति एवं औद्योगिक विकासों की शताब्दी की, भावनाओं का विकास किया और तुर्कमान औलों में रहनेवाली जनता के मस्तिष्क पर एक गहरा प्रभाव डाला।



तुर्कमान सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र का कृषि-मंत्रालय

अशक़ाबाद की कताई और बुनाई मिल का एक भाग





रेलवेमैनों का भवन, अशक़ाबाद

तुर्कमनिया के रूस में शामिल हो जाने के लगभग आधी शताब्दी बाद, महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की ज्वाला भड़कने पर, ज़ारकालीन रूस के समस्त लोगों को वास्तविक और स्थायी स्वतंत्रता मिली। क्रान्ति ने रूसी अधिकारियों, बुख़ारा और ख़ीवा के रईसों, तुर्कमान सरदारों और शासकों तथा ख़ानों की सत्ता को समाप्त किया और ज़ारशाही सरकार ने रूसी श्रमिकों और तुर्कमान जनता का पसीना बहा बहाकर तुर्कमनिया में जिन जिन वस्तुओं को बनवाया था, उन सभी को उस जनता को दे दिया गया जो समस्त फलोद्यानों, नगरों, नदियों, पहाड़ों की वास्तविक मालिक है। अब जनता ही उस रेल की भी मालिक बनी जिसे बनाने में इतनी धैर्य और श्रम की ज़रूरत पड़ी थी।

सोवियत शक्ति की स्थापना के बाद के पहले कुछ वर्षों में मध्य एशियाई रेलवे की वही दशा रही जो १९वीं शताब्दी में उसके बनने के समय थी। हर जगह रहने का पुराना तरीक़ा बदलता जा रहा था और लोग एक नये तरीक़े से सोचने-विचारने तथा काम करने लगे थे। लेकिन रेलवे की साज-सज्जा में कोई भी उल्लेखनीय परिवर्तन न आया। यद्यपि रेलवे-लाइन पर पड़नेवाले नगरों तथा औलों की काया-पलट हो रही थी और रेलों द्वारा तरह तरह का माल जगह जगह भेजा जाने लगा था तथा साथ ही नये नये लोग भी यात्राएं करने लगे थे, तथापि रेलवे का प्राविधिक स्तर जैसे का तैसा ही बना रहा। किन्तु पंचवर्षीय योजना-कालों में रेलवे में भी अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए और भाप के उन इंजनों के स्थान पर, जिनमें ईंधन और पानी की बहुत अधिक खपत होती थी, डीज़ल के कम ख़र्चे वाले एवं अधिक शक्तिशाली इंजनों का प्रयोग किया गया।

सोवियत संघ में अशकाबाद रेलवे ही वह पहली रेलवे थी जिसने डीज़ल-इंजनों का सबसे अधिक प्रयोग किया था।

२

क्रान्ति-पूर्व काल में किज़ील-अर्वात कास्पियन-पार के प्रदेश का प्रमुख श्रमिक केन्द्र था। सन् १९१७ में किज़ील-अर्वात रेलवे-वर्कशापों में लगभग २,००० कर्मचारी थे। सन् १९०५ में यहां के लोगों ने क्रांतिकारी कार्यों में सबसे

अधिक भाग लिया और सन् १९१८ में यहां वह दुखद घटना हुई जिसका संबंध उस क्षेत्र में भड़क उठनेवाले गृह-युद्ध से था।

१७ जून सन् १९१८ को काउन्ट दोरेर और वैरिस्टर दोखोव के नेतृत्व में कुछ सामाजिक क्रान्तिकारियों ने अशकाबाद में उपद्रव किये। उन्होंने नगर के पार्क में सोवियत अधिकारियों द्वारा आयोजित एक सभा को भंग कर दिया और तत्पश्चात् नगर-सोवियत पर अधिकार कर लिया। कुछ दिनों बाद कास्पियन-पार के इलाक़े में सुव्यवस्था बनाये रखने के निमित्त तुर्किस्तान कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने फ़ोलोव नामक एक सैनिक अधिकारी को वहां भेजा, जिसने लाल रक्षकों की एक टुकड़ी के प्रधान के रूप में नगर में प्रवेश किया।

फ़ोलोव ने प्रतिक्रांतिवादियों के उपद्रव को शान्त किया लेकिन उसी समय उसे यह खबर मिली कि किज़ील-अर्वात में सामाजिक क्रान्तिवादी उपद्रव करने पर तुले हुए हैं और इसलिए उसे तुरन्त ही अपनी टुकड़ी के साथ वहां जाना पड़ा।

उसके चले जाने के पश्चात् सामाजिक क्रान्तिवादियों ने अशकाबाद में फिर सिर उठाया और कई सौ श्वेत रक्षकों को लाल रक्षकों की टुकड़ी का पीछा करने के लिए भेज दिया।

जिस समय सामाजिक क्रान्तिवादी और बसमाची नगर के सीमा-क्षेत्रों पर पहुंचे उस समय फ़ोलोव और किज़ील-अरवात के बोलशेविक नगर में एक निर्वाचन-सभा करने की तैयारी कर रहे थे। श्वेत रक्षक चुपके से नगर-द्वारों तक आ धमके और उन्होंने गोलियां चलानी आरम्भ कर दीं। हमला पूर्णतः अप्रत्याशित था। लाल रक्षक छोटी छोटी कई टुकड़ियों में नगर के भिन्न भिन्न भागों में बंटे हुए थे। इस समय किज़ील-अरवात के सामाजिक क्रान्तिवादियों ने हमलावरों का साथ देकर नगर के जल-बुर्ज, वहां की सबसे ऊंची इमारत, पर क़ब्ज़ा कर लिया।

फ़ोलोव को पश्चिमी रूस से आकर बसे लोगों द्वारा निर्मित रोमन कैथालिक गिरजाघर के समीप घेर लिया गया। लाल रक्षकों ने गिरजे की मज़बूत दीवालों के पीछे छिपकर अपनी जान बचाने की कोशिश की किन्तु वे तालाबन्द फाटकों को खोलकर भीतर न जा सके। इस मुठभेड़ में फ़ोलोव मारा गया और लाल रक्षकों को बन्दी बनाकर गोली से उड़ा दिया गया।

अब नगर में श्वेत रक्षकों का अत्याचारी शासन आरम्भ हुआ और किज़ील-अरवात के सभी कम्यूनिस्टों को मौत के घाट उतार दिया गया। रेलवे के किनारे किनारे के स्थानों पर सामाजिक क्रान्तिवादियों का एक यूनिट लूट-मार करता और किज़ील-अरवात और क्रास्नोवोद्स्क के सभी स्टेशनों पर सोवियत कर्मचारियों को गोलियों का निशाना बनाता हुआ आगे बढ़ता गया। उसी दिन (यह बात १२ जुलाई सन् १९१८ की है) अशकाबाद में एक नये 'केन्द्रीय' प्राधिकार की भी घोषणा की गयी जिसने अपने काले कारनामों को छिपाने की ग़रज़ से अब अपने आपको 'रेलवे-हड़ताल-समिति' के नाम से पुकारना शुरू कर दिया।

यह आश्वासन प्राप्त कर लेने के पश्चात् कि फ़ोलोव की मृत्यु हो गयी है, अशकाबाद की समिति के सामाजिक क्रान्तिकारी सदस्यों ने नगर के प्रमुख सोवियत अधिकारियों—जीत्लिकोव, तेल्लिया, मोलिबोज्को, बत्मानोव तथा अन्य लोगों—की हत्या कर डाली।

जैसे ही जैसे उन श्रमिकों और सैनिक दलों ने, जिन्हें सोवियत शक्ति के प्रति अब भी निष्ठा बनी हुई थी, चार्दज्हू से प्रत्याक्रमण आरम्भ किया वैसे ही वैसे सामाजिक क्रान्तिवादियों ने 'क्रान्ति के संरक्षकों' की अपनी नक़ाब उतारकर सहायता के लिए विदेशी साम्राज्यवादी शक्तियों से खुली अपील की।

सामाजिक क्रान्तिवादी सरकार के प्रधान श्वेत रक्षक फ़ून्तिकोव ने अपनी डायरी में लिखा था कि "... मर्व से हमारे हटने के समय कोई गड़बड़ी नहीं हुई इसलिए कि अंग्रेज़ सिपाही हमारे साथ थे। हम अंग्रेज़ों की सहायता से ही दुश्मन के हमलों को रोके रहे ..."

लगभग डेढ़ वर्ष तक तुर्कमनिया एक भयंकर गृह-युद्ध का अखाड़ा बना रहा। यहां हस्तक्षेप करनेवाले दुश्मनों ने बसमाची दलों को शस्त्रादि दिये और उनके साथ न केवल तुर्कमनिया के औलों और नगरों को ही लूटा-खसोटा अथवा जलाया अपितु वहां के बहुसंख्यक नर-नारियों को भी मौत के घाट उतार दिया, क्योंकि उनका एकमात्र अपराध यही था कि वे अपनी जनता से और अपनी सोवियत मातृभूमि से प्रेम करते थे और उसपर जान देते थे। १५ अक्तूबर १९१८ को प्रातःकाल अज़ीज़-खां के नेतृत्व में बसमाचियों ने तेजेन पर हमला किया और शीघ्र ही उसे मिट्टी

में मिला दिया। इन लुटेरों ने सारे नगर को न सिर्फ़ तहस-नहस ही किया अपितु वहां के सारे पुरुषों को मौत के घाट भी उतार दिया। इस गड़बड़ी में कुछ स्त्रियां भी मारी गयीं और बाक़ी बन्दी बना ली गयीं। मुझे गृह-युद्ध काल में तेजेन जाने का मौक़ा मिला था, और मैंने देखा था कि वहां की दस-बारह इमारतें भी अछूती नहीं बची हैं। जितनी क्षति और जितने कष्ट तुर्कमनिया पर इन हस्तक्षेप करनेवालों और प्रतिक्रान्तिवादी दलों ने पहुंचाये हैं, उतने तो भूकम्प से भी नहीं पहुंच सकते।

आक्रामकों की विजय अल्पकालीन ही सिद्ध हुई और हस्तक्षेप करनेवालों, सामाजिक क्रान्तिवादी तथा बसमाची, लाल सेना के समक्ष ठहर न सकने के कारण, पश्चिम की ओर भाग गये। इस प्रकार जून सन् १९१९ में अशकाबाद में शान्ति की स्थापना हुई तथा फ़रवरी सन् १९२० में आक्रामकों को क्रास्नोवोद्स्क ख़ाली करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

सोवियतों का विजय-ध्वज अब तुर्कमनिया पर हमेशा हमेशा के लिए फहराने लगा।

३

अन्त में यात्री प्रसिद्ध अख़ाल-तेक्के नख़लिस्तान में पहुंचता है जिसके यश का वर्णन बड़े बड़े कवियों, यात्रियों तथा इतिहासज्ञों ने किया है। आजकल यह नाम प्रायः कोपेत-दाग़ की तलहटियों के लिए प्रयोग में लाया जाता है। अख़ाल-तेक्के का नख़लिस्तान तुर्कमनिया में अंगूर, फल तथा तर-तरकारियों का केन्द्र है। यहां प्रजातन्त्र के प्रायः समस्त उद्यम, प्रमुख हल्के उद्योग, कांच के उद्योग और समस्त सांस्कृतिक एवं गवेषणात्मक संस्थाओं की ९५ प्रतिशत संस्थाएं हैं। तुर्कमान प्रजातंत्र की राजधानी और सबसे बड़ा नगर अशकाबाद यहीं पर स्थित है।

पुराने ज़माने में बसी हुई भूमियों और जुते-बुए खेतों की यह पट्टी चौड़ी नहीं है। इसकी उत्तरी सीमा पर करा-कुम का रेगिस्तान और दक्षिणी सीमा पर पर्वतों की श्रेणियां हैं। यहां का बसा हुआ क्षेत्र सात मील से कुछ ही अधिक चौड़ा है; कहीं कहीं यह चौड़ाई सिकुड़कर केवल दो मील ही रह गयी है। इस क्षेत्र में

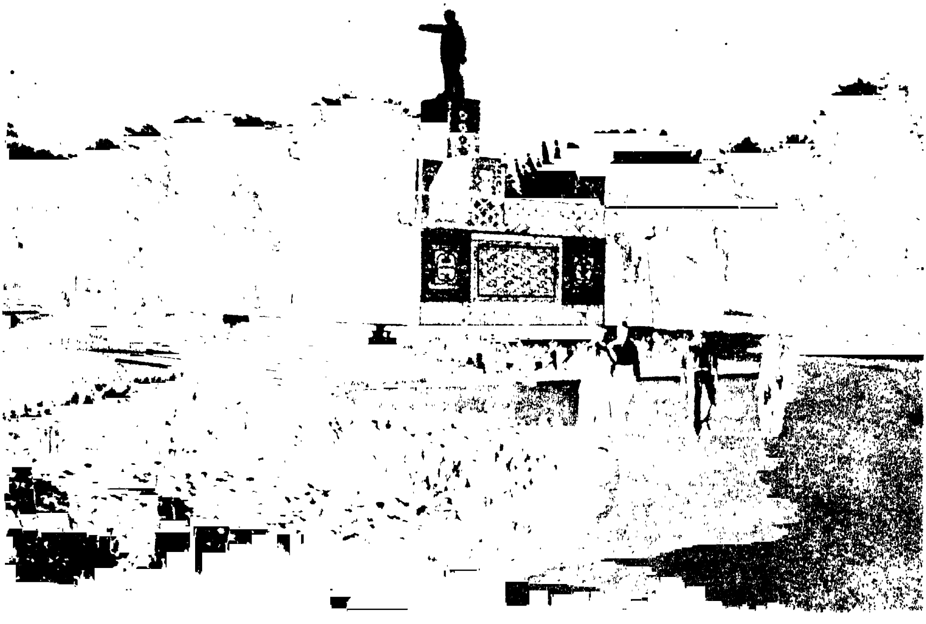


पोलीक्लीनिक नं.१, अशक़ाबाद



प्रजातंत्रीय ललित कला संग्रहालय, अशक़ाबाद

लेनिन स्मारक, अशक़ाबाद



कहीं कहीं कुछ रेतीले स्थल भी आ गये हैं और नग्न तकूर सीधे पहाड़ों की ओर चलते चले गये हैं। इस खेतिहर भूमि के उत्तरी किनारे तक रेलवे-लाइन बनी हुई है।

अख़ाल-तेक्के नख़लिस्तान तुर्कमनिस्तान के अन्य बसे हुए स्थानों की तरह नहीं है। प्रजातन्त्र के मुख्य नख़लिस्तान – मुर्गाब, तशौज़ और चार्दज्हू – काफ़ी घने बसे हुए क्षेत्र हैं। इनके चारों ओर रेगिस्तान ही रेगिस्तान है। प्रत्येक नख़लिस्तान बालू के निर्जन समुद्र में एक द्वीप की भांति लगता है।

किन्तु अख़ाल-तेक्के का नख़लिस्तान दूसरों से बिल्कुल भिन्न है। यहां ऐसी कोई चीज़ नहीं जिसे देखकर वह एक द्वीप-सा लगता हो। रेगिस्तान केवल उत्तर में ही दिखता है क्योंकि उसके दक्षिण में बड़े बड़े पहाड़ हैं जो बिल्कुल निर्जन नहीं कहे जा सकते। उनसे पानी मिलता है और इसलिए वे तलहटियों के मैदानों और फलोद्यानों के जीवनदाता हैं। कोपेत-दाग़ के उत्तरी ढालों पर पानी की प्रचुरता नहीं, वहां एक भी प्रमुख नदी नहीं यद्यपि पहाड़ों पर छोटी छोटी नदियों और नालों की संख्या लगभग ७० होगी। इनमें से कुछ नदी-नालों के नाम हैं – किज़ील-अरवात, केशा, अशकाबादका, चुलिनका, अरबज़, बाबा-दुग्माज़, फ़िरयुज़ीनका आदि। इन सबके अतिरिक्त इन पर्वत-श्रेणियों पर सौ से भी अधिक क्यारिज़ें हैं जो अशकाबाद क्षेत्र के सामूहिक फ़ार्मों के खेतों में पानी पहुंचाती हैं।

सामूहिक फ़ार्मों के घोड़ों के समूह यहां के पहाड़ी चरागाहों में चरते हैं। इनमें से कुछ फ़ार्मों में गेहूं तथा जौ पैदा होता है। कोपेत-दाग़ के ढालों पर क्वार्टज़, विविध प्रकार की मिट्टी, सिलखड़ी और चूने का पत्थर आदि इमारती सामान प्राप्त होते हैं। इनकी खानें किज़ील-अरवात के आस-पास से लेकर अशकाबाद तक के १२० मील से अधिक के क्षेत्र में पायी जाती हैं।

बस्तियों और खेतों में कहीं कहीं बालू अथवा तकूर के भूखंड पाये जाते हैं। नभयात्रा के समय ये बस्तियां तथा खेत रेलवे-रूपी डोरे में पिरोई हुई हरी हरी घुंडियों के समान प्रतीत होते हैं। इनका आकार प्रायः इस बात पर निर्भर है कि वहां की जनता ने सोतों और क्यारिज़ों के रूप में पहाड़ों से उतरते हुए पानी की सहायता से रेगिस्तान का कितना भाग उपजाऊ बना लिया है।

कोपेत-दाग़ की तलहटियों में विकास कार्यों के उपयुक्त लगभग ३७ लाख एकड़ भूमि उपलब्ध है। इस क्षेत्रफल के १० वें भाग—अर्थात् केवल ३,७०,००० एकड़ भूमि—में अरीकों का जाल-सा बिछा हुआ है। कोपेत-दाग़ पर्वत-श्रेणी पर उपलब्ध होनेवाली जल की मात्रा से केवल ८६,००० एकड़ अथवा कृषि योग्य भूमि की लगभग २.५ प्रतिशत भूमि की सिंचाई हो सकती है। पानी की कमी के कारण उन स्थानों में भी कपास उगाने के प्रयत्न नहीं किये गये जहां अरीकों से सिंचाई हो सकती थी। खेती से पैदा होनेवाली यहां की मुख्य फ़सलों में अंगूर, फल, खरबूज़े और अनाज (गेहूं और जौ) हैं, जिनके लिए कपास की अपेक्षा कम सिंचाई की ज़रूरत पड़ती है। गेहूं मुख्यतया उस ऊंची भूमि में होता है जहां काफ़ी वर्षा हो जाती है।

जिन फ़सलों के लिए कृत्रिम सिंचाई की ज़रूरत नहीं होती उनकी उपज के लिए वर्षा तथा कोहरे की थोड़ी-बहुत नमी से काम चल जाता है। उन्हें मध्य एशिया भर में बोगार कहते हैं। कोपेत-दाग़ पर्वत-श्रेणियों के निकट की ऊंची भूमि पर कोहरे तथा वर्षा की मात्रा घाटी की अपेक्षा अधिक है। साधारणतया कोपेत-दाग़ की तलहटियों में पश्चिमी तुर्कमनिस्तान की अपेक्षा लगभग दूनी वर्षा होती है। अशकाबाद में औसत वार्षिक वर्षा ८६.६ - ९०.६ इंच होती है जब कि क्रास्नोवोद्स्क में केवल ३९ - ४७ इंच।

जो खेत पहाड़ों में जितनी ही अधिक ऊंचाई पर होगा, वहां नमी भी उतनी ही अधिक होगी। १३ सौ से लेकर १९ सौ फ़ीट तक की ऊंचाई पर बोगार की अच्छी फ़सलें हो सकती हैं। किन्तु सबसे अच्छी फ़सल २६ सौ से लेकर ३२ सौ फ़ीट तक की उंचाई पर होती है क्योंकि यहां एक तो कुहरे और वर्षा की बहुतायत है और दूसरे तापमान इतना कम है कि अंकुरों के मुरझाने की नौबत ही नहीं आती।

प्रत्येक ६५० फ़ीट की उंचाई पर हवा का औसत तापमान एक अंश गिर जाता है। फलतः २६०० फ़ीट की उंचाई पर पर्वतों की तलहटियों की अपेक्षा तापमान चार या पांच डिगरी कम है।

कोपेत-दाग़ में बोगारों की खेती में ढालों की सिधाई के कारण कुछ बाधा पड़ती है। इसके लिए सर्वोत्तम स्थान वे उच्च भूमियां हैं जहां बड़ी और चौरस पहाड़ियां या पठार मैदान की ओर ढालू होते हैं। करा-कुम के समक्ष पड़नेवाली बहुत-सी पहाड़ियां सीधी हैं और इसीलिए बोगारों वाले खेत, सिंचित भूमि की भांति, पहाड़ के मध्यस्थ किसी एक बड़े भाग का निर्माण नहीं करते। वे उस ऊंची स्तेपी के इर्द-गिर्द छोटे छोटे टुकड़ों में बंटे हुए हैं जो कोपेत-दाग़ के ढालों का अधिकतर भाग घेरे हुए है।

फिर भी कोपेत-दाग़ क्षेत्र में जितनी भूमि पर खेती की जाती है उसके कम से कम आधे में बोगार की ही फ़सलें हैं। ऊंची भूमि तथा पठारों की स्तेपी घोड़ों के लिए प्राकृतिक चरागाहों के रूप में है।

अख़ाल बहुत प्राचीन काल से घोड़ों के लिए प्रसिद्ध रहा है। अख़ाल-तेक्के नस्ल के घोड़ों के जानकारों का कहना है कि दुनिया में अन्य किसी भी जगह प्राकृतिक दशाओं और मनुष्य की देख-रेख में इतने सुन्दर, अथक, तेज़ तथा सभ्य घोड़े नहीं होते। अख़ाल-तेक्के की नस्ल के घोड़ों का यह वर्णन कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण है, क्योंकि 'ओरेल', 'दोनचाक' और 'बुद्योनी' नस्लें न केवल तुर्कमान घोड़ों के समान ही हैं अपितु कई अर्थों में उनसे श्रेष्ठ भी हैं। किन्तु अख़ाल-तेक्के के जानकारों का उत्साह समझ में आनेवाली चीज़ है। प्रसिद्ध तुर्कमान घोड़े के जौहर तो तब खुलते हैं जब कोई अनुभवी अश्वारोही उसे एड़ लगाता है।

स्थानीय योमूद घोड़ा अख़ाल-तेक्के नस्ल के घोड़े का निकट का प्रतिद्वन्द्वी है।

अख़ाल-तेक्के और योमूद घोड़ों की क़िस्मों और तुर्कमनिया के सामूहिक फ़ार्मों के घोड़ा-पालकों की निपुणता की आज़माइश १९३५ की ग्रीष्म-ऋतु में प्रसिद्ध अशकाबाद—मास्को घुड़दौड़ के समय हुई थी।

इस आज़माइश में उक्त घोड़े पूर्णतः सफल रहे। अख़ाल-तेक्के और योमूद घोड़े उस लम्बे और मुश्किल मार्ग पर पड़नेवाली समस्त कठिनाइयां पार करते गये, और जब वे रेत या दलदलों से होकर गुज़र रहे थे तो उनके सवार सकसौल के वृक्ष गिरा गिराकर उनके लिए रास्ता साफ़ करते हुए बराबर उनकी मदद कर रहे थे। घुड़दौड़ में तुर्कमान सामूहिक फ़ार्मों के घोड़ा-पालकों को विजय मिली।

८४ दिनों में तुर्कमान घुड़सवारों ने २,६७१ मील की यात्रा की। उनके लिए लम्बी दूरी ही एकमात्र कठिनाई न थी। अक्त्यूबिंस्क, कूइबिशेव और र्याज़ां के रास्ते अरल समुद्र के पश्चिमी किनारे से मास्को तक उन्हें जलवायु की कई प्रकार की पेटियों में से होकर गुज़रना पड़ा था—रेगिस्तानी क्षेत्र, उस्त्यूर्त की विशाल स्तेपी, पर्वत, वन तथा दलदल। मध्य एशिया में उस वर्ष असाधारण गर्मी थी किन्तु अरल समुद्र के तटों और मुगोजरी पर्वतों के दर्रों में अत्यधिक सर्द हवाएं चल रही थीं। बादलों की गरज और भारी वर्षा के कारण अश्वारोहियों को वोल्गा-क्षेत्र में किसी प्रकार की शान्ति न मिली और मास्को में उन्हें सर्दी का सामना करना पड़ा। घोड़े वर्षा में चलने के आदी न थे इसलिए इस क्षेत्र में उनके लिए दौड़ना कठिन रहा। २३ अगस्त १९३५ को मास्को के लोग तुर्कमान सवारों का स्वागत करने के लिए उमड़ पड़े।

तुर्कमनिया के सबसे अच्छे घोड़ा-पालन फ़ार्म किज़ील-अरवात, गेओक-तेपे और अशकाबाद ज़िलों में हैं। प्रत्येक वर्ष शरद्-ऋतु में वे अपने घोड़ों को किज़ील-अरवात की घुड़दौड़ में भेजते हैं और इन घुड़दौड़ों को देखने के लिए तुर्कमनिया भर के विशेषज्ञ आते हैं। अख़ाल-तेक्के नख़लिस्तान के लोग न केवल पहाड़ों के न्यूनाधिक ऊंचे ढालों का इस्तेमाल कर रहे हैं, बल्कि वे करा-कुम के रेतीले क्षेत्र को भी उपयोगी बना रहे हैं। वे उत्तर में पड़नेवाले रेगिस्तान को अपने पशुओं के लिए एक चरागाह समझते हैं। जाड़े तथा वसन्तकालीन वर्षा के बाद कुछ समय के लिए रेगिस्तान में आर्द्र घास उग आती है। यह काल 'मेमनों का मौसम' भी है। जब तक मेमने बड़े होते हैं तब तक यह सारी वनस्पति सूखने लगती है, किन्तु फिर भी इलक (सूखी, छोटी किन्तु छितरी छितरी उगनेवाली एक प्रकार की घास) बनी रहती है जो सूरत से ख़राब होते हुए भी चारे के रूप में प्रयोग में आने के लिए बड़ी उपयुक्त है।

अख़ाल-तेक्के के भेड़ पालन-केन्द्र वर्ष भर अपनी भेड़ों को रेगिस्तान में ही चराते हैं और प्रत्यक्षतः बंजर या वीरान दिखाई पड़नेवाले स्थानों में भेड़ों के लिए उपयोगी घासों का पता लगाने में बड़े सिद्धहस्त हैं।

इस प्रकार तुर्कमान नख़लिस्तानों में कृषि के साथ साथ रेगिस्तान में पशुओं के चराये जाने की भी व्यवस्था है।

५

अशकाबाद जानेवाली रेलवे पर किज़ील-अरवात के बाद पहली थोड़ी-बहुत घनी बस्ती बामी ही है।

तुर्कमनिया के इतिहास में इस छोटी-सी बस्ती को पहले-पहल कास्पियन-पार क्षेत्र के मुख्य नगर के रूप में चुना गया था। जिस समय वहां कुछ थोड़े-से मकान बनाये जा चुके थे और क़िले की नींव पड़ चुकी थी, उस समय रूसी सेनापति को मालूम हुआ कि वहां पर्वतों से काफ़ी पानी उपलब्ध नहीं हो रहा है। अतएव जल-खोजकों को किसी दूसरी उपयुक्त जगह की तलाश में कोपेत-दाग़ पर्वत-श्रेणियों के किनारे किनारे भेजा गया। एतदर्थ उन्होंने बामी के दक्षिण-पूर्व स्थित अशकाबाद का औल चुना। अब अशकाबाद का विकास होने लगा परन्तु बामी रेलवे पर एक छोटी-सी बस्ती के ही रूप में बनी रही। सम्प्रति बामी अंगूर के बाग़ों के लिए प्रसिद्ध है जो ख़ास बस्ती में न होकर उससे आठ मील दूर बेऊरमा के औल में हैं।

बामी के बाद लगभग एक घंटे से कुछ ही अधिक तक यात्रा कर चुकने के पश्चात् ट्रेन एक स्टेशन पर आकर रुकती है जिसका नाम 'अर्चमन' है। यह नाम यहां तुर्कमान तथा रूसी दोनों ही भाषाओं में लिखा हुआ है। यद्यपि देखने में इस छोटे-से स्टेशन की बस्ती कोई विशेष आकर्षक नहीं है फिर भी यात्री को चाहिए कि वह यहां उतर पड़े। यहां उसे लगभग आधे घंटे तक कार पर यात्रा करनी होगी और तब वह अर्चमन के प्रसिद्ध औषधियुक्त झरने तक पहुंच जायेगा। इस झरने ने बहते बहते एक छोटी-सी झील का रूप ले लिया है जिसमें गन्धक, सल्फ़ेट तथा चूने का विचित्र मिश्रण है और जिसके पास से सड़े हुए अंडों की बू आती है। यहां के पानी में हाइड्रोजन सल्फ़ाइड का प्रतिशत प्यातीगोर्स्क (काकेशिया) में प्रसिद्ध सबानेयेव झरने से भी अधिक है। सच पूछा जाये तो इस बात का कोई कारण नहीं मालूम पड़ता कि अर्चमन प्यातीगोर्स्क से क्यों कम प्रसिद्ध है—अर्चमन के झरने में नाइट्रोजन की मात्रा क़रीब क़रीब उतनी ही है जितनी कि त्स्हलतुबो (काकेशिया) के पानी में है। यहां की जनता शताब्दियों से अर्चमन के गुनगुने पानी को चर्म, स्नायु, अस्थि, वायुविकार तथा अन्य रोगों के उपचारार्थ प्रयोग में लाती रही है।

अर्चमन ने सन् १९२३ में एक स्वास्थ्य-केन्द्र का रूप ले लिया था। यह तुर्कमनिया के लोगों में बहुत प्रसिद्ध स्थान है। लड़ाई के बाद से तो वह अन्य प्रजातन्त्रों के लोगों को भी आकृष्ट करता रहा है।

चिकित्सकों का कहना है कि यहां के पानी में ही नहीं अपितु हवा में भी रोग-निवारण की अद्भुत शक्ति है क्योंकि यहां का वातावरण बड़ा स्वास्थ्यप्रद है।

इस बस्ती में स्रोत है, उसके जल में रोग-निवारक गुण हैं, उसकी जलवायु स्वास्थ्यवर्द्धक है और वह स्वयं रेलवे के निकट है। अतः उसका भविष्य अति उज्जवल है। यहां प्रति वर्ष प्रायः ५००—७०० व्यक्ति आया करते हैं। और यदि हम इस बात पर ध्यान दें कि इस बस्ती के बिल्कुल ही निकट नुख़ूर की वह सौन्दर्यपूर्ण बस्ती है जिसे स्वयं प्रकृति ने एक विश्राम-केन्द्र का रूप दे रखा है तो अर्चमन बस्ती का महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

नुख़ूर कोपेत-दाग़ पर्वत-माला की पहली पहाड़ी से होकर जानेवाले दर्रों से लगभग आठ मील दूर एक रमणीक स्थल पर बसा हुआ है। इस बस्ती के चारों ओर की पहाड़ियां इतनी ऊंची हैं (समुद्री धरातल से २७ सौ फ़ीट) कि यहां कृत्रिम सिंचाई की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। नुख़ूर में हरियाली, फल-फूल तथा पानी की बहुतायत है। यहां के झरनों का जल शीतल होता है और उद्यानों में अच्छी क़िस्म के अंगूरों का बाहुल्य है।

इस बस्ती का इतिहास बड़ा रोचक है। प्राचीन काल में अपनी प्राकृतिक सम्पदा और पहाड़ी दर्रों से निकटता के कारण वह एक गुप्त क़िले के समान थी, क्योंकि यहां भागे हुए क़ैदियों और गुलामों, शरीअत के सिद्धान्तों को तोड़कर आनेवाले लोगों और अधीनस्थ योद्धाओं को शरण मिल जाती थी। संक्षेप में कहा जा सकता है कि जो लोग भी मुखियों अथवा औल के अधिकारियों, ख़ानों के जल्लादों या गिरजों के निर्मम पादरियों आदि के अत्याचारों से निकल भागते थे, वे यहां आकर छिप रहते थे।

कहा जाता है कि नुख़ूर की स्थापना सिकंदर महान् ने की थी। उसने वहां मध्य एशिया की अपनी लड़ाइयों के समय उपद्रवी योद्धाओं का एक दस्ता छोड़ रखा था। बाद की शताब्दियों में अन्य लोगों के अलावा वहां तेक्के और गोकलेन के जिगित (घड़सवार), जिन्होंने जन-जातियों की अथवा वंशानुगत परंपराओं का उल्लंघन किया था, और उज़बेक और कोपेत-दाग़ के दक्षिणी ढालों के बंजारे भागकर आया करते थे।

६

कोपेत-दाग़ की तलहटियों से होकर जानेवाली रेलवे पर एक हरियाली-आच्छादित रमणीक स्थल बहारदेन है जो अशकाबाद क्षेत्र का एक ज़िला-केन्द्र है। बहारदेन कोपेत-दाग़ के झरनों में से अरबाज़ नामक सबसे शक्तिशाली झरने पर स्थित है।

कोपेत-दाग़ की इसी पट्टी के बहारदेन सामूहिक फ़ार्मों में पहले-पहल महीन रेशे वाली कपास की खेती की गयी थी जिससे सिद्ध होता था कि अरबाज़ से इतना पानी मिल जाता है जिससे कपास के खेतों की सिंचाई की जा सकती है। स्थानीय सामूहिक कृषकों के अनुभवों का पास-पड़ोस के समस्त स्थानों में बड़ा व्यापक उपयोग किया गया और इसी कारण अशकाबाद क्षेत्र के सामूहिक फ़ार्मों की अर्थ-व्यवस्था में भी काफ़ी परिवर्तन हो गया।

प्रकृति के दुर्लभ दृश्यों में से बहारदेन ज़िले की भूमिगत झील भी एक है जो रेलवे से तेरह मील की दूरी पर पहाड़ों के निकट स्थित है। इस झील का नाम दुरुन या बहारदेन है। यह झील सोवियत संघ में अपनी क़िस्म की सबसे बड़ी झीलों में से एक है।

बहारदेन स्टेशन से झील को जानेवाली सड़क बिल्कुल सुनसान है। गर्मी में चारों ओर गर्म सफ़ेद धूल ही धूल नज़र आती है जिसके कारण कोपेत-दाग़ के भी मनोरम दृश्य छिप जाते हैं। तुर्कमनिया में गर्मी के महीनों में प्रायः हवा चलने तथा वातावरण में धूल छा जाने के कारण सामने के दृश्य साफ़ नहीं दिखाई देते। कभी कभी तो दूरस्थ वस्तुएं तक धूमिल नज़र जाती हैं। इन स्थानों पर मृग-मरीचिका अर्थात् बालू में बहते हुए जल का भ्रम होना अधिकांशतया वायु में धल-कणों की मात्रा पर ही निर्भर है।

उपर्युक्त झील तक पहुंचने में यात्री को एक कन्दरा से होकर पहाड़ी मार्ग के नीचे जाना पड़ता है। एक ३३ फ़ुट लम्बा संकरा मार्ग उस चौरस प्लेटफ़ार्म तक जाता है जिसकी दीवारें खड़िया और चूने के पत्थर की हैं। एक दीवाल में बरामदे जैसा रास्ता है जो लगभग ४२५ से लेकर ५०० फ़ुट तक की गहराई तक उतरता चला जाता है। जैसे ही जैसे आप झील की ओर बढ़ते जायेंगे वहां की हवा

अधिकाधिक गर्म होती जायेगी, और आपको डरे हुए चमगादड़ों की चें-चें भी सुनाई पड़ेगी। यहां इन चमगादड़ों की संख्या बहुत अधिक है। यहां अंधकार इतना गहन है कि आपको बिना लालटेन या टार्च के झील का पानी तक न दिखाई देगा। इस पानी में कोई भी गति नहीं। यह सीसे जैसा भारी लगता है। झील का क्षेत्रफल लगभग ३२ हज़ार वर्ग-फ़ीट है और गहराई ३५ फ़ीट से कुछ अधिक। यदि आप अंधकार में इस झील पर नाव से यात्रा करें तो आपको लगेगा कि खड़िया की दीवालों के मध्य पतवार से छूकर जो पानी की आवाज़ सुनाई पड़ती है वह ऐसी नहीं है जैसी कि आप किसी नदी में सुनते हैं। जब पानी में किसी प्रकार की उथल-पुथल होती है तो उससे से हाइड्रोजन-सल्फ़ाइड के वाष्प-कण वातावरण में फैल जाते हैं। लहरों की छपाक, पतवार से निकलती हुई आवाज़ तथा टार्चों की रोशनी से वे जंगली कबूतर भी जग पड़ते हैं जिन्होंने दुरुन गुफा को ही अपना अड्डा बना लिया है। फिर सहसा मोटी मोटी बूंदें पड़ती हैं, जिनमें वर्षा का भ्रम होने लगता है। यदि दुर्भाग्यवश टार्च या लालटेन बुझ जाय तो एक क्षण के लिए आपको ऐसा लगेगा कि आप उस दुनिया से छूट चुके हैं जो आपने गुफा के पास देखी थी—सूर्य की रोशनी, पर्वतों की लहराती हुई श्रेणियां, लम्बी-चौड़ी स्तेपी, धूल तथा नगदौना के पौधों की सुगंधि।

यद्यपि युगों युगों से यह झील औषधि के गुणों वाले पानी का स्रोत समझी जाती रही है, फिर भी यहां के लोग हमेशा यही समझते रहे हैं कि झील अभिशप्त है। जब मख़्तूमकुली, ज़ेलिली, केमीने अथवा अन्य पुराने तुर्कमान कवियों ने नर्क के बारे में अपने विचार व्यक्त किये थे तो शायद उनके काल्पनिक चक्षुओं के समक्ष इसी झील का वह चिकना सुनहरा वाष्प-आच्छादित जल रहा होगा जिसके इर्द-गिर्द अंधेरे में असंख्यों चमगादड़ उड़ा करते हैं।

दुरुन की खोह का पूरा पूरा अनुसंधान अभी तक नहीं हुआ है फिर भी यह तथ्य बड़ा रोचक है कि जहां कोपेत-दाग़ पर्वत-श्रेणी की तलहटियों के खेतों पर अग्नि जैसी ज्वाला है वहीं—इन्हीं पर्वत-श्रेणियों के गर्भ में—एक इतनी विशालकाय झील भी है।

अध्याय ३

१

बहारदेन में क़ालीन बिननेवालियों की ख्याति बड़ी दूर दूर तक फैली हुई है। यह ख्याति वस्तुत: अकेली बहारदेन की ही नहीं अपितु सारी तुर्कमान जनता की है। तेक्के के क़ालीन राष्ट्रीय कला की वस्तुएं हैं।

बहारदेन के क़ालीनों के साथ ही साथ योमूद क़ालीन, जो गसन-कुली और चिकिशलार में बनते हैं, कज़ांजीक, किज़ील-अरवात और अशकाबाद के क़ालीन तथा तख़्ता-बाज़ार की महिलाओं द्वारा अच्छे सुन्दर नमूनों के पेनदिन क़ालीन भी बहुत प्रसिद्ध हैं।

यहां क़ालीनों की आवश्यकता का मूल कारण है यहां के लोगों की घुमक्कड़ ज़िन्दगी, जिसके लिए उन्हें किबितकों* में ही गुज़र करनी पड़ती है। किबितकों में क़ालीनों को चादरों और बिछौनों की जगह, सर्दी से बचने के साधन के रूप में और दरवाज़ों का काम देने के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा है। रेगिस्तानों की अपनी यात्राओं के समय जब कभी यहां के घुमक्कड़ बंजारों को रात में ठहरने की ज़रूरत पड़ती थी तो वे क़ालीनों पर ही सोया करते थे। वोल्गा या द्नेपर के किनारे किनारे तो लोग घास-फूस पर सो भी सकते हैं परन्तु रेगिस्तान में रहनेवालों को तो लेटने या सोने के लिए किसी चादर या बिछौने की आवश्यकता होती थी। इसी आवश्यकता के कारण उनमें दरियां बिनने की कला का विकास हुआ।

तुर्कमान दरियां या क़ालीन केवल लाभ की दृष्टि से ही नहीं अपितु कला की दृष्टि से भी उत्तम हैं। ज़मीन या सूपे (तुर्कमान मिट्टी के चबूतरे) पर बिछाने के लिए क़ालीन में तेक्के के मख़मलों के बीच बीच सुन्दर लाल रंग भरने की आवश्यकता नहीं पड़ती और न ही देहक़ान या चबान के मिट्टी या फ़ेल्ट के घरों में दरवाज़ों के रूप में काम आने के लिए उसके बीच बीच कोणाकार या प्राय: अंडाकार नमूनों की (जिन्हें गूल कहते हैं) आवश्यकता पड़ती है, फिर भी यहां के सर्वोत्तम तुर्कमान

* तंबूघर। — सम्पा०

क़ालीनों में गहरे लाल या चमकीले पीले रंग का इतना ग्रानुपातिक मिश्रण होता है कि वे कला के ग्रद्भुत नमूने लगते हैं।

मुस्लिम धर्म में मानव-ग्राकृतियों को रेखाचित्रों ग्रथवा संगराशी से चित्रित करना वर्जित है। यही कारण है कि मुस्लिम देशों में मूर्ति-कला कभी एक विकसित कला का रूप न ले सकी।

क़ालीन बनाना तुर्कमान महिलाग्रों की प्रिय दस्तकारी है। वहां कुछ ऐसी प्रथा थी कि शादी योग्य हर लड़की एक क़ालीन बिनती थी ग्रौर यदि उसके हृदय में कोई ऐसी बात होती थी जिसे वह दूसरों के सामने खुलकर नहीं कह सकती थी तो वह ग्रपने क़ालीन के विभिन्न रंगों ग्रौर डिज़ाइनों में ही ग्रपनी ग्रनुभूतियां व्यक्त करती थी। ग्रौर शायद यही कारण है कि युगों युगों से लोग दरी की बिनाई ग्रौर संगीत को एक ही तुला पर रखकर उनकी परस्पर तुलना करते हैं।

क़ालीन के गुण-ग्रवगुणों का निश्चय चित्रों या रंगों को ही देखकर नहीं किया जा सकता। ग्रन्य कलात्मक वस्तुग्रों की भांति इसका मूल्य भी डिज़ाइनों की क़िस्म ग्रौर उसपर किये गये श्रम को देखकर ही ग्रांका जाता है। क़ालीन का ऊपरी भाग समतल होना चाहिए ग्रौर बुनकर को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि बड़ी कैंचियों से इसे किस प्रकार काटकर बराबर किया जाय।

क़ालीन का सामना गंठा हुग्रा होना चाहिए ग्रर्थात् उसमें प्रयुक्त होनेवाले धागे एक दूसरे के इतने पास पास हों कि बीच में ज़रा भी जगह छूटी हुई न लगे ग्रौर बाह्यत: ऐसा मालूम हो कि उसपर की गयी चित्रकारी में यथार्थता है, मौलिकता है। क़ालीन के घनत्व की क़िस्म का पता लगाने के लिए यह देखना ज़रूरी है कि प्रत्येक वर्ग-इंच में कितनी गांठें हैं। बुनकर ग्रापस में न केवल सुन्दर सुन्दर डिज़ाइनें बनाने में ही ग्रपितु रंगे हुए ऊनी धागे से गांठें लगाने के चातुर्य में भी एक दूसरे से प्रतिद्वंद्विता करते हैं।

विशेष कंघों द्वारा क़ालीन बनानेवाली महिलाएं गांठों को एक दूसरे के निकट लाती हैं ग्रौर इस प्रकार क़ालीन पर चित्र बनता है।

यह कहना मुश्किल है कि पहला तुर्कमान क़ालीन कब बना था। इब्न-सईद नामक एक भौगोलिक ने, जो १२ वीं शताब्दी में जीवित था, तुर्कमान क़ालीन-बुनकरों के बारे में कुछ प्रशस्तियां लिखी हैं।

स्वयं मार्को पोलो ने भी, जिसने १३वीं शताब्दी में तुर्कमनिया की यात्रा की थी, तुर्कमान क़ालीन को एक कला की वस्तु बताया है।

तुर्कमनिया में क़ालीन-बुनाई के विकास का मुख्य कारण यह था कि वहां के विभिन्न भागों तथा उसके पास-पड़ोस के उन अनेक देशों में सुन्दर, प्राकृतिक तथा स्थायी रंग मिलते थे जो तुर्कमान जन-जातियों के साथ स्थायी आधार पर व्यापार किया करते थे।

इनमें से एक प्राकृतिक रंग मजीठ पौधे से बनाया जाता है। यह रंग लाल होता है। प्राचीन काल में यह रंग तुर्कमनिया का राष्ट्रीय रंग माना जाता था। तुर्कमान स्त्रियों के वस्त्रों को मजीठ से रंगा जाता था। वे केतेनी नामक एक लम्बी लाल पोशाक पहनती थीं। इस पोशाक के बारे में अनेक तुर्कमान कवियों ने बहुत कुछ लिखा है। वस्तुत: केतेनी एक क़िस्म का कपड़ा होता है जिसे लाल रंग से रंगा जाता है। इससे बननेवाली पोशाकों को भी केतेनी का नाम दिया जाने लगा है।

एक समय था जब पुरुष अधिकांशत: लाल पोशाकें भी पहनते थे, किन्तु स्त्रियों की केतेनी की तुलना में इनका रंग अधिक गहरा होता था। यह रंग प्राकृतिक रंगों को मजीठ में मिलाकर बनाया जाता था।

कोपेत-दाग़ के पीले रंग भी बड़े सुन्दर होते हैं। यद्यपि इनका प्रयोग अपेक्षाकृत कम किया जाता है फिर भी वे साज-सज्जा में लाल रंग की भांति ही प्रयोग में आते हैं। कपड़ों और क़ालीनों में लाल के बाद इसका दूसरा नम्बर है।

प्रजातंत्र में २०,००० से भी अधिक स्त्रियां क़ालीन बनाने के काम में लगी हुई हैं। क़ालीन तुर्कमनिया से निर्यात की जानेवाली वस्तुओं में से एक है।

तुर्कमनिस्तान में सोवियत शासन की स्थापना के बाद से क़ालीन की बुनाई को विशेष प्रश्रय मिला और फलत: उसकी अधिक उन्नति हुई। क़ालीन-बुनाई की सहकारी संस्थाओं का संघटन किया गया और बुनकरों के लिए विशेष स्कूल खोले गये। सन् १९२६ में एक क़ालीन-संघ की स्थापना हुई जिसने प्रजातन्त्र के समस्त बुनकरों को संघटित किया और अपने प्रयोगात्मक कला-केन्द्र खोले। अब तुर्कमान जनता के इतिहास में प्रथम बार बुनकरों ने अपनी डिज़ाइनों में प्रकृति और मानव का चित्रण आरम्भ किया। इस सम्बन्ध में उनके सामने अनेक कठिनाइयां पेश आयीं, और आरम्भ में उनके क़ालीनों

में उच्च कोटि की कला का प्रस्फुटन न हुआ। किन्तु अन्त में बुनकरों और डिज़ाइनरों के सम्मिलित प्रयासों के फलस्वरूप सफलता मिल ही गयी।

इस तुर्कमान राष्ट्रीय कला के कुछ उत्तम नमूने अशकाबाद के ललित कला-संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

यहां ऐसे ऐसे क़ालीन हैं जिन्हें दर्शक चित्रशाला के चित्रों की भांति निर्निमेष देखता रह जाता है।

संग्रहालय में रखे हुए दो क़ालीन विशेष रूप से दर्शनीय हैं, केवल इसीलिए नहीं कि वे सुन्दर हैं परन्तु इसलिए भी कि वे मनुष्य की भावनाओं से सम्बद्ध हैं और उनमें यह दिखाया गया है कि क्रांति ने तुर्कमान महिलाओं के जीवन और उनकी चेतना में कितना परिवर्तन कर दिया है।

इनमें से एक क़ालीन मारी में एक अज्ञात बुनकर द्वारा सन् १९२७ में बुना गया था। इसकी डिज़ाइन सामान्य तेक्के तरीक़े की है किन्तु इसमें बुनकर ने उस अतीत काल से चली आती हुई परंपरा का अनुक्रमण किया था जिसके अनुसार मानव चेहरे का चित्रण वर्जित था — क़ालीन के निचले बार्डर में उसने महान् लेनिन का एक चित्र बुना था।

तुर्कमान जनता की इस अज्ञात पुत्री के हृदय में कितनी क्रान्ति भरी थी, इसका पता हमें इसी एक बात से चल जाता है कि उसने अपनी कला के माध्यम से प्राचीन औल की पुरानी जीवन-चर्या को ललकारा था और तुर्कमनिया की महिलाओं का अप्रत्यक्षः आह्वान किया था कि वे सोवियत सरकार की कार्यवाहियों का सक्रिय रूप से समर्थन करें।

दूसरा क़ालीन अ० पल्वांनकुलीएवा नामक एक बुनकर द्वारा सन् १९२९ में बुना गया था। क़ालीन के बीच में लेनिन का एक चित्र है। यही पहला क़ालीन था जिसमें मनुष्य के चेहरे की डिज़ाइन बनायी गयी थी।

उन लोक-गायकों और कथावाचकों की भांति, जिन्होंने समाजवादी निर्माण के वर्षों में क्रान्ति के वीरतापूर्ण कार्यों को अधिकाधिक मुखर किया था, बुनकरों ने भी डिज़ाइनों में ऐसे ऐसे चित्र बनाये जो मानव की भावनाओं को उद्वेलित कर देते थे।

सन् १९५३ में जब राष्ट्र भर में उक्रइन और रूस के पुनःएकीकरण की ३०० वीं वर्षगांठ मनाने का निश्चय किया गया था, उस समय माया मुरादोवा, नबत मेरेदोवा

और गेरेक चरीयेवा ने क़ालीन पर बोगदान ख्मेलनित्स्की का चित्र बुनने का कार्य आरम्भ किया जो इस बात का परिचायक है कि सोवियत शासन-काल में भी क़ालीन-बुनाई की कला में यथार्थता का कितना अधिक प्रवेश हो चुका था।

अशकाबाद के अलावा कुछ अन्य जगहें भी हैं जहां सचित्र तुर्कमान क़ालीन देखे जा सकते हैं। एक क़ालीन पर मक्सीम गोर्की का चित्र है। यह क़ालीन तुर्कमान राष्ट्रीय कला का उत्कृष्ट नमूना है तथा मास्को में सोवियत लेखक-संघ के भवन की शोभा बढ़ा रहा है।

बुनकरों द्वारा आजकल जिन औज़ारों का प्रयोग किया जा रहा है वे प्रायः वही हैं जिन्हें वे शताब्दियों से इस्तेमाल करते आये हैं। किन्तु रंगों की विविधता में काफ़ी वृद्धि हो गयी है। पहले बुनकर को केवल सात रंगों में ही चुनाव करना होता था, किन्तु अब अशकाबाद के प्रयोगात्मक क़ालीन-कारख़ानों में रंगों की संख्या तीन सौ तक पहुंच गयी है। फलतः बुनकर मन-माफ़िक रंगों का चुनाव कर सकते हैं।

मास्को में युद्ध-पूर्व की तुर्कमान कला के दस दिवसीय उत्सव की तैयारी के लिए बुनकरों ने बोल्शोई थियेटर के निमित्त एक क़ालीनी पर्दा बनाया था जो दुनिया भर में सबसे बड़ा था। इसका वज़न एक टन से, और क्षेत्रफल २,०८३ वर्ग-फ़ीट से, भी अधिक था। इसकी डिज़ाइन तथा रंग-नियोजन में वे सारी विशेषताएं थीं जो किसी क़ालीन के लिए परम्परानुगत कही जा सकती हैं।

सोवियत संघ पर फ़ासिस्टवादियों के आक्रमण के फलस्वरूप उपर्युक्त कला का दस दिवसीय उत्सव नहीं हुआ और वह क़ालीन अशकाबाद के ललित कला-संग्रहालय में रख दिया गया। यह संग्रहालय सन् १९४८ के भूकम्प में नष्ट हो गया।

सन् १९५२ के ग्रीष्म-काल में अशकाबाद के प्रयोगात्मक कारख़ाने के ऊर्ध्वांग तथा अन्य चित्रों वाले क़ालीनों की एक सचल प्रदर्शनी आयोजित की गयी, जो करा-कल्पकिया के एक नगर में भी गयी थी। इस प्रदर्शनी को हज़ारों दर्शकों ने देखा था। प्रदर्शनी की दर्शक-पुस्तिका सैकड़ों प्रशस्ति-लेखों से भर गयी थी। इसमें करा-कल्पक के एक सिंचाई-विशेषज्ञ ने लिखा था कि "मैंने लोक-कला के अद्भुत एवं अभूतपूर्व नमूने देखे हैं परन्तु जो कुछ मैंने क़ालीन प्रदर्शनी में देखा है उसने क़ालीन-बुनाई की कलात्मक सम्भावनाओं के संबंध में मेरे विचारों तक का अतिक्रमण कर दिया है।"

२

अशकाबाद क्षेत्र के एक अन्य ज़िले का गेअोक-तेपे नामक एक मुख्य नगर बहारदेन और अशकाबाद के प्रायः बीचोंबीच स्थित है। बहारदेन के साथ ही साथ यह नगर भी कोपेत-दाग़ पहाड़ियों में महीन रेशे की कपास की खेती को समुन्नत बनाने में अग्रणी रहा है। इस ज़िले में दूसरी मुख्य फ़सल अंगूर है (गेअोक-तेपे की शराब तुर्कमनिया भर में सबसे अच्छी मानी जाती है), किन्तु पिछले कुछ वर्षों से इस ज़िले के सामूहिक फ़ार्मों की अर्थ-व्यवस्था में रेशम के कीड़े पालने का उद्यम ज़ोर पकड़ता जा रहा है और अब वह एक महत्त्वपूर्ण व्यवसाय हो गया है।

क़ालीनों की भांति ही रेशम भी मध्य एशिया के लिए शताब्दियों से एक प्रसिद्ध चीज़ रही है।

हमारे प्रथम स्वर्ण-युग के अरब भौगोलिक मारी रेशम के बड़े प्रशंसक रहे हैं। ख़ीवा और मारगेलन के रेशम ने भी बड़ी ख्याति प्राप्त की थी। किन्तु कोपेत-दाग़ की तलहटियों के औलों में रेशम के कीड़े पालने का उद्योग बहुत पुराना नहीं है, शायद उतना पुराना भी नहीं जितना सोवियत शासन है।

रेशम के कीड़े पालने के क्षेत्र में दो वस्तुएं बड़े महत्त्व की हैं—बम्बूसिड कीड़े का लार्वा तथा शहतूत की पत्तियां जो रेशम के कीड़ों के खाने के काम आती हैं।

कोपेत-दाग़ की तलहटियों में शहतूत का वृक्ष बहुतायत से पाया जाता है किन्तु बम्बूसिड कीड़े को मुर्ग़ाब या चार्दज़्हू से लाना पड़ा था। सोवियत शासन-काल में अशकाबाद के निकट फ़िरुज़ा की बस्ती में एक लार्वा फ़ैक्ट्री का निर्माण किया गया था और तब से रेशम के कीड़े पालने के उद्योग में बराबर द्रुतगति से उन्नति होती गयी। युद्ध के तत्कालपूर्व कोपेत-दाग़ के सामूहिक फ़ार्मों द्वारा राज्य को जितनी मात्रा में रेशम के कोये (ककून) दिये गये थे वह उस सम्पूर्ण मात्रा की ड्योढ़ी थी जो पहले प्रजातन्त्र भर में पैदा की जाती थी।

रेशम के कीड़ा-पालन-क्षेत्र में जो विकास हुआ उससे उपर्युक्त क्षेत्र की अर्थ-व्यवस्था में ही परिवर्तन नहीं हुआ अपितु उसके प्राकृतिक दृश्यों में भी नूतनता आयी। कीड़ों के लिए शहतूत की अधिक पत्तियां उपलब्ध हो सकें इसके लिए शहतूत के

वृक्षों की पार्श्व-शाखाएं तनों में से काट दी जाती हैं जिसके परिणामस्वरूप शहतूत के पत्ते पेड़ के ऊपरी सिरों पर घने होकर जमते हैं और अधिक होते हैं। इस प्रकार अरीकों के किनारे पैदा होनेवाले वृक्षों के तने छोटे और नग्न होते हैं और उनके सिरे गोल। इस प्रकार वे घरेलू वृक्ष-से प्रतीत होते हैं। वन्य शहतूत के वृक्षों की संख्या इतनी नहीं है जिससे सारी मांग की पूर्ति हो सके। यही कारण है कि शहतूत के वृक्ष लगाने के विशेष प्रयास किये जा रहे हैं।

अभी तक ये वृक्ष वैसी पंक्तियों में नहीं दिखाई पड़ते जैसे कि सेब या ख़ूबानी के बाग़ों में दिखाई पड़ते हैं। यदि रूस में बर्च वृक्ष क़तारों में लगाये गये होते तो उन्हें देखकर वहां की ग्राम-जनता को जितना आश्चर्य हुआ होता वैसा ही आश्चर्य शहतूत के वृक्षों को देखकर बहारदेन और गेओक-तेपे ज़िलों के कुछ पुराने लोगों को होता है।

गेओक-तेपे कभी तेक्कों का एक मज़बूत गढ़ रहा था। आज हरियाली से आच्छादित यह शान्त नगर कपास, अंगूर, रेशम के कीड़ों के कोयों, फल और अंगूरों के लिए प्रसिद्ध है। अब यह कोपेत-दाग़ तलहटियों का एक रमणीक नगर है।

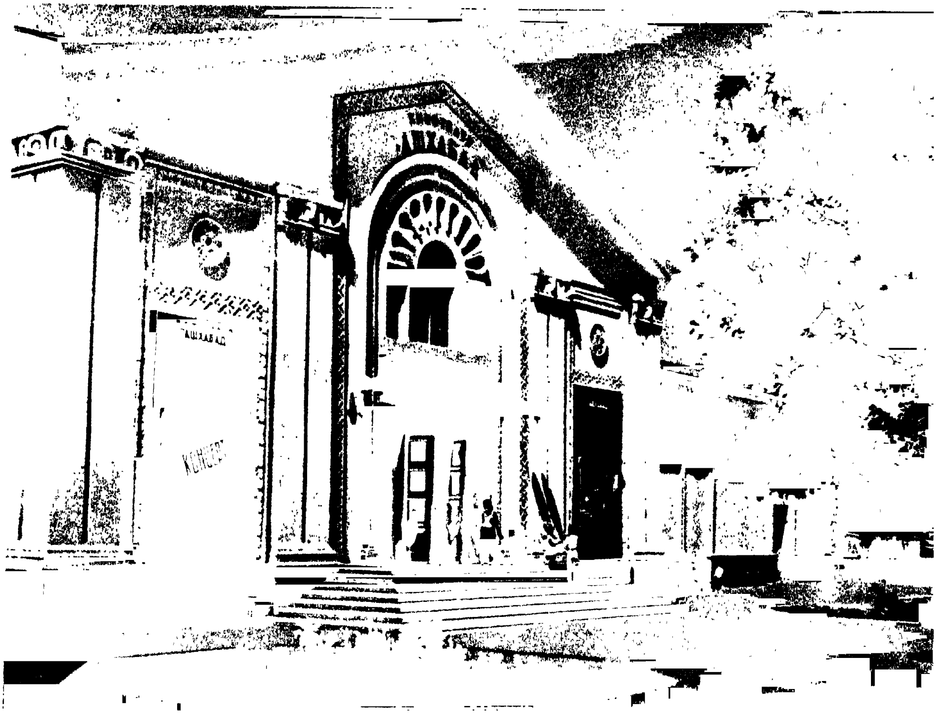
सन् १९४८ की शरद्-ऋतु में जो भूकम्प आया था उससे गेओक-तेपे से लेकर अशकाबाद के पूर्व में स्थित ग्यऊर्स तक के इलाक़े को बहुत अधिक नुक़सान पहुंचा था। भूकम्प से गेओक-तेपे को तो विशेष रूप से गहरी क्षति उठानी पड़ी थी।

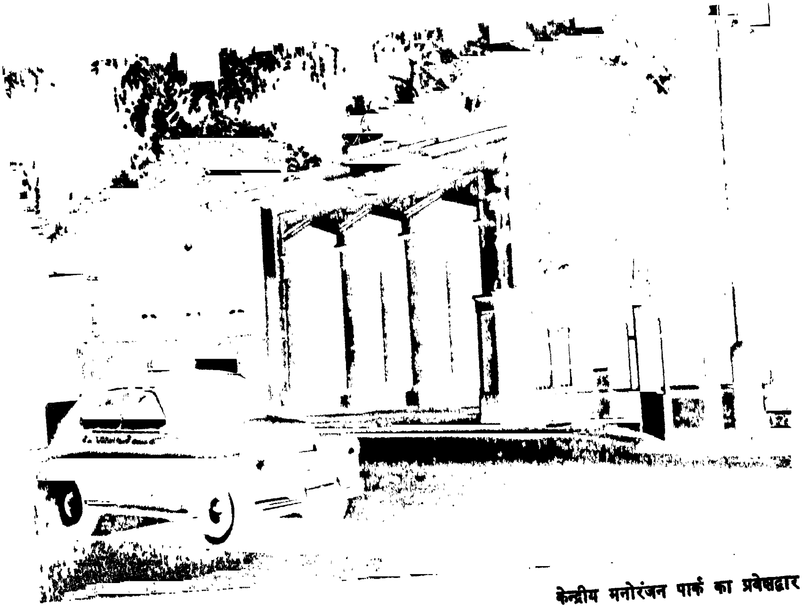
किन्तु अब इस नगर के अधिकांश ध्वस्त भाग का पुनर्निर्माण कर लिया गया है।



सेन्ट्रल डिपार्टमेन्ट स्टोर, अशक़ाबाद

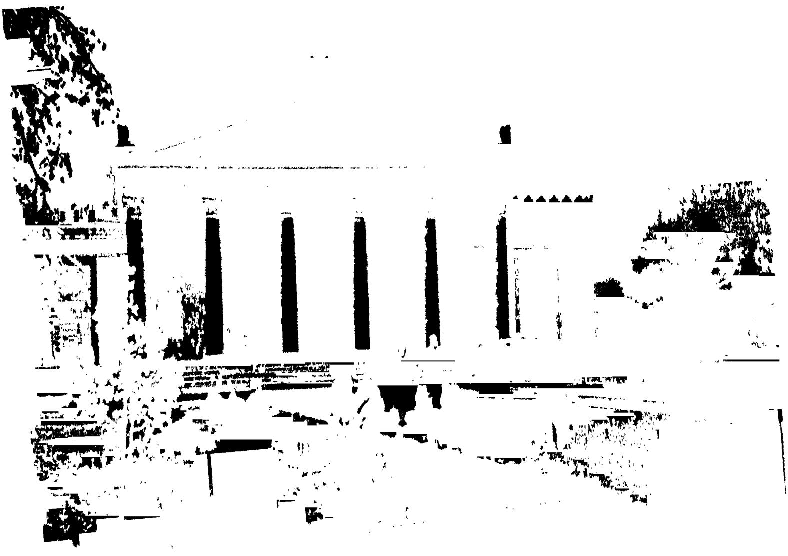
'अशक़ाबाद' सिनेमा थियेटर





केन्द्रीय मनोरंजन पार्क का प्रवेशद्वार

अशक़ाबाद ड्रामा थियेटर



अक्रियावाद

अध्याय १

१

अशकाबाद तुर्कमनिया की राजधानी है। वहां क्या नहीं है – धूप में जगमगाते हुए सफ़ेद सफ़ेद मकान, चौड़ी, सीधी, व्यस्त किन्तु शान्त सड़कें, उनके किनारे बबूल, थुजा, हनी लोकस्ट, करागाच और प्लेन के वृक्ष, यदा-कदा बहते हुए जल से परिपूर्ण संकरी किन्तु ईंटों से ढकी हुई अरीकें, जुलाई के सूर्य की जलन न सह सकने के कारण नर्म पड़ती हुई अस्फ़ाल्ट की पगडंडियां, बहुसंख्यक स्कूल, टेकनिकल कालेज, उच्च शिक्षा-संस्थाएं और जून १९५१ में स्थापित तुर्कमान सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र की विज्ञान-अकादमी के निर्देशन में काम करनेवाले गवेषणा-केन्द्र।

एक योजना के अनुसार अशकाबाद का दक्षिण-पूर्व में तथा उत्तर में काफ़ी प्रसार किया जायगा। यह प्रसार मरुभूमि की दिशा में होगा जिसे उद्यानों की एक चौड़ी पट्टी द्वारा नगर से अलग किया जायेगा।

अशकाबाद सोवियत प्रजातंत्रों की राजधानियों के सबसे दक्षिणी सिरे पर ३८ अंश अक्षांश पर बसा है। यह अक्षांश दक्षिणी स्पेन और भूमध्यसागर के अफ़्रीकी तट से होकर गुज़रता और सुदूर-पूर्व में कोरिया प्रायद्वीप को दो भागों में विभाजित करता है।

पहाड़ों की तलहटियों अथवा समुद्रों के किनारे बसे हुए नगरों का एक अपना आकर्षण है। वसन्त-काल में जब बादाम के वृक्ष अपने पूर्ण वैभव को लादे हुए मस्ती में झूमते हैं, जब ताज़ी ताज़ी हरी घास नगर की दक्षिणी सीमाओं की अर्द्ध-वृत्ताकार पहाड़ियों पर सिर उठाती हुई डोलती है तो अशकाबाद की सुन्दरता में

चार चांद लग जाते हैं। और यदि आप किसी दिन प्रातःकाल के समय नगर के मुख्य स्थल, कार्ल मार्क्स स्क्वायर, से दक्षिण में गर्व से अपना मस्तक उठाये हुए पर्वतों को देखें तो आपको जो नैसर्गिक दृश्य दिखाई देगा उसे आप निर्निमेष देखते ही रह जायेंगे।

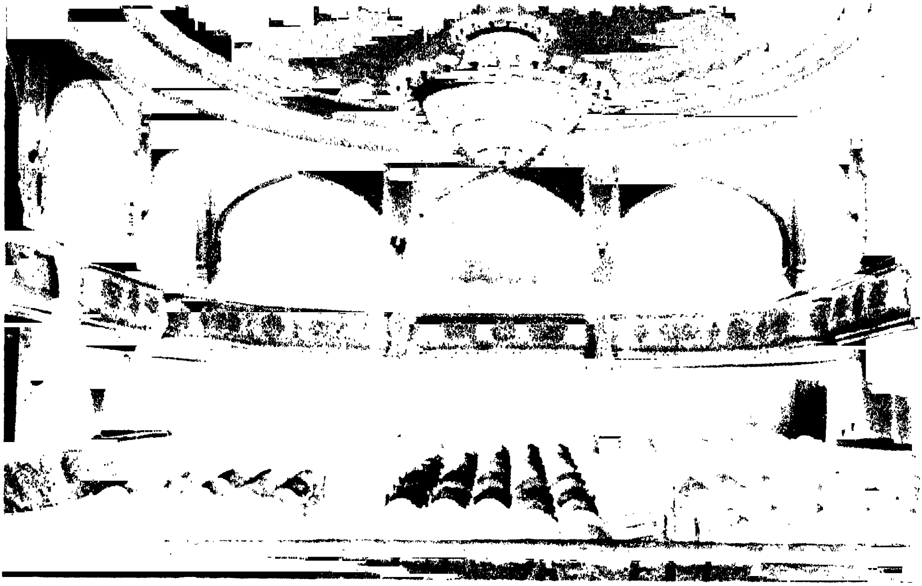
कार्ल मार्क्स स्क्वायर कोपेत-दाग़ की चोटियों से बीसियों मील दूर है। इन पर्वतों की पहली श्रेणी नगर के निकट है, जबकि पहाड़ियां, जिनमें से कुछ बहुत ऊंची ऊंची भी हैं, उसकी सीमाओं पर स्थित हैं।

आप किसी भी सड़क पर से दक्षिण की ओर स्थित पर्वतों को देख सकते हैं। वर्ष के उन प्रायः ८० दिनों को छोड़कर, जब जाड़े और वसन्त का कुहरा या वर्षा की बूंदें कोपेत-दाग़ों के चारों ओर एक भूरे रंग का आवरण-सा फैला देती हैं, बाक़ी साल भर आसमान साफ़ रहता है और नगर में तथा पहाड़ों पर विशेष रौनक़ रहती है। अशकाबाद में धूप की कमी नहीं। यहां सारे साल कई कई दिनों तक आकाश में बादल नज़र नहीं आते। यहां ऐसे दिनों की संख्या सोवियत संघ के अन्य किसी भी नगर से अधिक है।

नगर के मकानों के विविध रंगों ने सदा ही उसकी शोभा में वृद्धि की है। बुख़ारा और मारी की भांति यहां भी मकान तथा बाड़े भूरी ईंटों के बने हुए हैं, किन्तु कोपेत-दाग़ों में चूने के पत्थर की बहुतायत होने के कारण यहां के लोग मकानों पर चूने की पुताई करते रहे हैं। वायुयान पर से अथवा किसी निकटवर्ती पहाड़ी की चोटी से उद्यानों और सड़कों की हरियाली के बीचोंबीच बने हुए मकान ऐसे लगते हैं मानों किसीने घास पर शक्कर के चमकदार कण बिखेर दिये हों।

भूकम्प ने यहां की बहुत-सी इमारतें नष्ट-भ्रष्ट कर दी थीं किन्तु अब उन ध्वस्त भवनों के स्थान पर नये नये मकान बनाये जा रहे हैं जो पूर्वापेक्षा अधिक मज़बूत हैं। इन मकानों पर भूकम्प का असर पहले से कम होगा। ये मकान सफ़ेद रंगों से रंगे जायेंगे। इनकी बनावट उत्कृष्ट कोटि की होगी तथा प्रत्येक भवन के सामने और प्रत्येक सड़क पर पहले से अधिक वृक्ष लगाये जायेंगे।

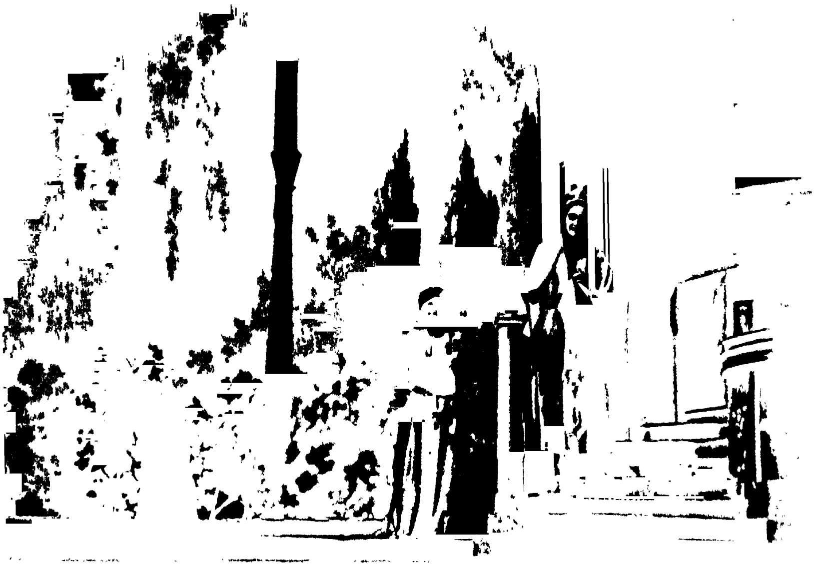
मकानों के रंगों में भी कुछ फेरफार हुए हैं। पहले सभी मकान सफ़ेद होते थे और नगर में मुख्यतः तीन ही रंग देखने में आते थे—नीला आकाश, हरे हरे वृक्ष



ड्रामा थियेटर का दर्शक-मंडप, अशक़ाबाद

तुर्कमनिया का ऑपेरा और बैले थियेटर, अशक़ाबाद





अ० शापोशनिकोव और द० ओवेज्ञोव कृत 'असेनेम और ग़रीब' ऑपेरा के दूसरे अंक का एक दृश्य

चैकोव्स्की के प्रसिद्ध बैले 'हंस सरोवर' के चौथे अंक का एक दृश्य



ग्रौर शकर की भांति सफ़ेद बाड़े ग्रौर दीवारें। परन्तु नये मकान हल्के गुलाबी, हल्के पिस्तई, बादामी, पीले ग्रौर नीले रंगों से रंगे हैं। कभी जिस नगर की सफ़ेदी ग्रांखों को प्रायः खटकती रहती थी ग्राज उसी नगर में रंगों की विविधता है।

२

पर्वतों की निकटता, नीलाकाश, स्वच्छ सीधी सड़कें, उनके दोनों ग्रोर घने पत्तियोंदार वृक्ष तुर्कमनिस्तान की राजधानी को ग्रसाधारण रूप से ग्राकर्षक बनाते हैं। हां, कभी कभी कास्पियन पार की प्रायः सीधी किरणों के बीच देर तक रह सकना यहां की जनता के लिए टेढ़ी खीर हो जाता है।

विशेष रूप से गर्मी के दिनों में पास-पड़ोस की पहाड़ियों पर कुछ संतोष की सांस लेने को मिलती है। यद्यपि इन पहाड़ियों पर चारों ग्रोर से धूप ही धूप पड़ा करती है, फिर भी उनका एक लाभ यह है कि गर्मी में वहां हमेशा बयार चलती है जो वातावरण को शीतलता प्रदान करती है।

सारा नगर पहाड़ियों पर से दिखाई पड़ता है।

भूकम्प ग्राने से पूर्व ग्रशकाबाद में प्रायः एक भी ऊंची इमारत न थी। ग्रतएव पहाड़ी पर से प्रत्येक दुमंज़िली इमारत उसी प्रकार साफ़ साफ़ दिखाई पड़ती थी जैसे ग्राज मास्को में २० मंज़िली या ३० मंज़िली इमारतें दिखती हैं। सन् १९४८ की शरद्-ऋतु में ग्रशकाबाद में सबसे ऊंची इमारतें थीं—रेलवे-स्टेशन के निकट रेलवे के उत्तर में बना हुग्रा एलीवेटर, फ़० ए० द्ज़ेरजीन्स्की कपड़ा-मिल की वर्गाकार भूरी मीनार, सिल्क वाइंडिंग मिल की चौड़ी चिमनी, स्वोवोदा सड़क पर भूतपूर्व मसजिद के गुम्बद पर बनी हुई दो छोटी छोटी मीनारें, कार्ल मार्क्स स्क्वायर के निकट प्रमुख नगर ग्रतिथिशाला की लम्बी इमारत पर बनी हुई दो सुन्दर लाटें तथा द्वितीय विश्व-युद्ध के समय बनी रेलवे-स्टेशन की खूबसूरत इमारत।

ग्रब नगर की रूप-रेखा बिल्कुल बदल गयी है। ग्राज जब यात्री इस नगर में खड़ा होकर ग्रपने चारों ग्रौर देखता है तो उसे सोवियत जनता की नगर-निर्माण सम्बन्धी

कुशलता देखकर आश्चर्य होता है। सम्प्रति नगर के सभी क्षेत्रों और मुहल्लों में बड़े बड़े मकान बने हुए हैं।

पहाड़ियों पर से उस रेगिस्तान का भी दृश्य दिखता है जो रेलवे के एक या दो मील उस पार तुर्कमान राजधानी के उत्तर से आरम्भ होता है।

३

सन् १९१७ तक तुर्कमनिस्तान की अधिकांश जनसंख्या औलों में रहती थी। आप अशकाबाद के किसी भी पुराने बाशिन्दे, रेलवे-कर्मचारी, बुनकर, लेखक, विद्वान अथवा पार्टी या सरकार में काम करनेवाले व्यक्ति से पूछें तो आपको पता चलेगा कि इनमें से प्राय: सभी औलों के रहनेवाले थे और किसी न किसी किबितका में ही पैदा हुए थे। वे बचपन में अरीकों तथा रेगिस्तान के निकटवर्ती किसी ऐसे कुएं के पास खेले-कूदे थे जहां नज़दीक ही भेड़े अथवा ऊंट चरा करते थे। परन्तु नवयुवकों के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता क्योंकि अशकाबाद की बहुत-से युवा नर-नारियां सोवियत तुर्कमनिया के नगरों में पैदा हुई थीं।

बस्तियां प्राय: पहाड़ों से बहते हुए किसी झरने, क्यारिज़, नहर, अथवा, यदि वे बन्जारों के पशु-पालन से सम्बद्ध औल रहे हों, तो निर्जन बालू, तकूरों में खोदे गये किसी कुएं के पास बसी हुई हैं। इन बस्तियों के समीप पानी के स्रोतों का होना प्राय: अनिवार्य है क्योंकि वह देहक़ानों के जीवन का आधार है। फिर भी यहां के अच्छे से अच्छे झरने देहक़ानों के परिवार कल्याण के लिए इस कारण पर्याप्त न होते थे कि उनके स्वामियों—मुखियों, शासकों और उनके कारिन्दों, मिराबों—ने इस बहुमूल्य पदार्थ का राशन कर रखा था। जल का अधिकांश इन्हीं शासकों के खेतों अथवा पशु-समूहों के काम आता था और इस बात की किसीको भी चिन्ता न रहती थी कि देहक़ानों पर क्या बीत रही है।

अक्तूबर क्रान्ति के पूर्व की अनेक शताब्दियों तक किसी फ़ार्म का मूल्य यह देखकर न आंका जाता था कि वह कितना बड़ा है अपितु यह देखकर लगाया जाता था कि उसे सिंचाई के लिए कितना पानी उपलब्ध हो रहा है। नख़लिस्तानों में पानी का मूल्य सोने और मानव-जीवन तक से ऊंचा माना जाता था।

पानी के कोटे का दावा किसी परिवार के पुरुष-प्रतिनिधि द्वारा यह कहकर ही किया जा सकता था कि वह विवाहित है। इसी कारण बच्चों के भी विवाह कर दिये जाते थे, परन्तु अपने बेटे के लिए एक नन्ही-सी बहू लाने पर भी बेचारे किसान को उसके लिए कालिम (वधूधन) देना पड़ता था, जो हमेशा उसकी औक़ात के बाहर की चीज़ होती थी। फलत: उसे प्राय: किसी धनी सम्बन्धी अथवा किसी क्षेत्रीय शासक अर्थात् किसी 'उपकारी' का मुंह जोहना पड़ता था। वह सम्बन्धी अथवा 'उपकारी' कालिम तो अदा कर देता था लेकिन उसके बदले में या तो उस पानी का एक अंश मांगता था जिसके लिए विवाह किया जाता था अथवा जिन्स के रूप में कुछ ले लेता था और कभी कभी ये दोनों ही चीज़ें मांगने का सवाल रखता था। इस प्रकार उन क्षेत्रों में भ्रष्टाचार फैलने लगा क्योंकि पानी के लिए ग़रीब किसान को अपने बेटे की बहू खरीदनी होती थी और उसके निमित्त कालिम अदा करने के लिए उसे या तो पानी के एक अंश से हाथ धोना पड़ता था या मजदूर के रूप में ज़िन्दगी बसर करनी होती थी। क़र्ज़ कम होने के बदले वर्ष प्रतिवर्ष बढ़ता ही जाता था, यहां तक कि जब किसान का बेटा कुछ बड़ा हो जाता तो उसे भी अपने बाप का क़र्ज़ अदा करने के लिए उस शासक की गुलामी करनी पड़ती। इस प्रकार उसके जीवन का अधिकांश या तो चरवाहे के रूप में या बरख़ानों के मध्य भेड़ियों से अपने मालिक की भेड़ों की रक्षा करने और प्रधान चबान की आज्ञा पालने में ही व्यतीत हो जाता था।

देहक़ानों की स्थिति बराबर बदतर होती गयी। वे हज़ारों प्रकार के पुराने अन्धविश्वासों में जकड़े हुए थे और अपने दुखों का वास्तविक कारण न समझ पाते थे। उनकी इस कूपमंडूकता का लाभ स्थानीय शासक और मुखिये उठाते थे और उन्हें चूसा करते थे।

देहक़ान अपने हर कष्ट का कारण अपने भाग्य को समझता और जब उसके खेतों को पानी न मिलता तो या तो वह आसमान को कोसता या फिर 'अल्लाह की मर्ज़ी' कहकर संतोष कर लेता। कभी कभी जब उसे पानी का कोई ऐसा कोटा दिया जाता जिसकी मात्रा उचित न होती तो वह मिराब को कोसता। जब कास्पियन-पार में ज़ारशाही शासन की स्थापना हो गई तो वह उस कर्मचारी को

कोसने लगा जिसने मिराब के साथ गठबंधन कर रखा था। उसके दिमाग़ में यह बात कभी न आती कि यह दोष नदी, आसमान, मिराब या ज़ारशाही अधिकारियों का नहीं अपितु उस सारी व्यवस्था का है जिसमें श्वेत ज़ार, उसके कर्मचारी, औल के शासक, मिराब तथा जातियों के मुखिये परस्पर एक सूत्र में बंधकर उसे चपट जाते थे और उसका ख़ून तक चूस लेते थे।

१८८१ में अशकाबाद के औल को कास्पियन-पार क्षेत्र के एक प्रशासनीय केन्द्र तथा एक सैनिक गढ़ के रूप में चुना गया। उस समय तक प्रत्येक औल की वही दशा थी जिसका वर्णन ऊपर किया गया है।

४

नये नगर की पहली इमारतों में धूप में सुखायी गयी ईंटों का बना एक क़िला तथा उन अधिकारियों और कर्मचारियों के कुछ मकान थे, जिन्होंने बन्जारों के पड़ावों तथा औलों से दूर क़िले के निकट बसना पसन्द किया था।

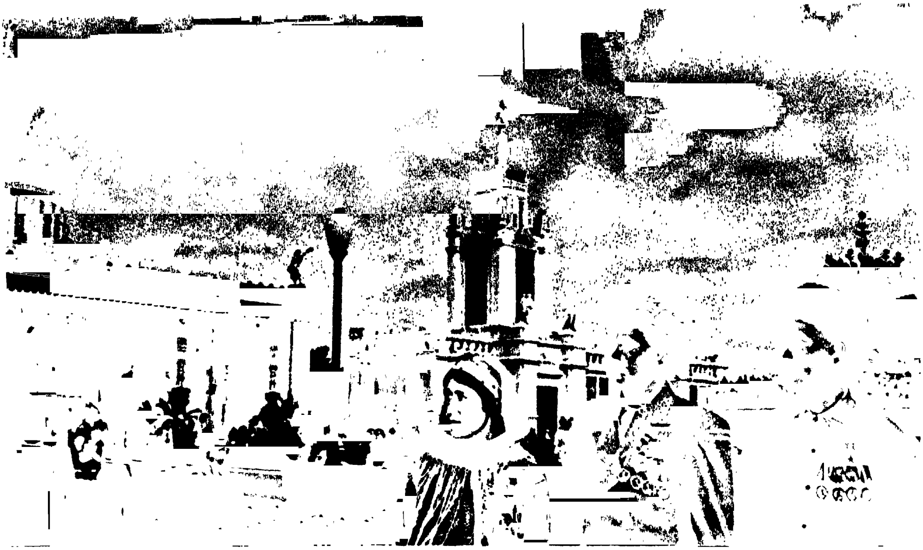
क़िले के अवशेष आज भी पाये जाते हैं। ये अवशेष 'पहाड़ी' के नाम से प्रसिद्ध एक मिट्टी के टीले की शक्ल में मिलते हैं और पेरवोमाइस्काया और गोगोल की सड़कों के सिरे पर स्थित एक मकान के अंदरूनी आंगन का एक भाग हैं।

आरम्भ से ही अशकाबाद में दो प्रधान केन्द्र रहे हैं—क़िला और रेलवे-स्टेशन। क़िले के नज़दीक ही एक आलीशान ज़िले की स्थापना की गयी थी, जहां के मकानों की दीवारें मोटी और खिड़कियां सीकचेदार होती थीं। मकानों के इस प्रकार की बनावट का एकमात्र उद्देश्य यह होता था कि वहां के लोग किसी आकस्मिक संकट के आ पड़ने पर अपनी रक्षा कर सकें। मोटी दीवालों से एक फ़ायदा यह भी था कि सबसे गर्म महीनों में मकानों में कुछ ठंढक भी रहा करती थी। प्रत्येक मकान से लगे लगे एक बाग़ होता था जिसे सुव्यवस्थित रखने के लिए काफ़ी धन और पानी का इस्तेमाल किया जाता था। और एतदर्थ सभी प्रयास प्रायः दूसरे लोगों द्वारा ही किये जाते थे।

रेलवे-स्टेशन एक अन्य ज़िले का केन्द्र बना, जहां मध्य रूस अथवा काकेशिया से आनेवाले रेलवे-कर्मचारी और दस्तकार बस गये थे। यहां के मकान नीचे और एक दूसरे के पास पास थे। बाग़ छोटे छोटे थे और सड़कों पर धूल उड़ा करती थी।



अशक़ाबाद क़ालीन बुनाई अर्टेल का एक विभाग



तशौज क्षेत्र के प्रमुख सामूहिक कृषक अगुलजन पतानोवा, ईसा ओराजकुलीएव और हमदीक ओराजोव, जिन्होंने कृषि प्रदर्शिनी में भाग लिया

मास्को स्थित सोवियत कृषि प्रदर्शिनी में तुर्कमान सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र का पैवीलियन





फ़िरुज़ा के निकट स्थित एक अवकाश-गृह

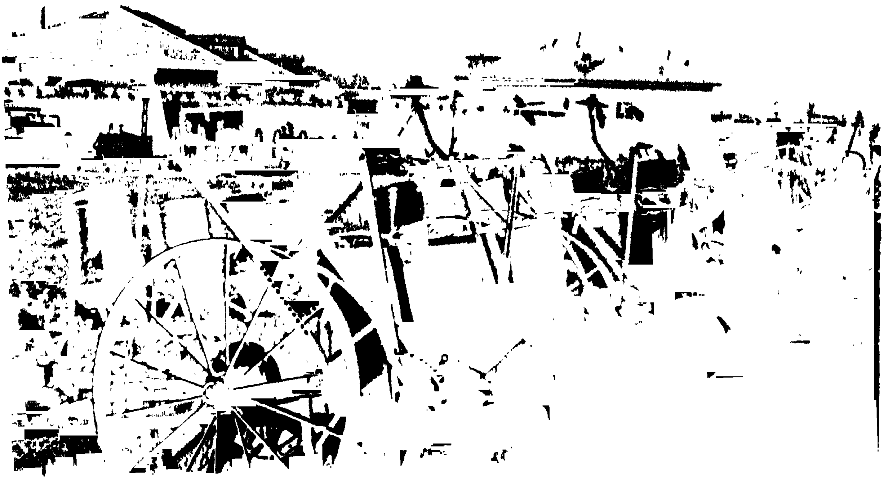
सामूहिक फ़ार्म के एक फलोद्यान में





जाडे की ऋतु मे एक चरागाह मे चरता हुआ सामूहिक फार्म का पशु-समूह

अशकाबाद क्षेत्र के एक मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन की कृषि मशीनें। अग्रभाग में : आलू बोनेवाली मशीनें



इस ज़िले में औलों के निवासियों की बेक़द्री न थी। यहां के छोटे छोटे मकानों के किरायेदार उन ग़रीब देहक़ानों के प्रति विशेष स्नेह दिखाते, जो प्याज़ का एक बोरा अथवा कुछ दर्जन सरदे किसी गधे पर लादकर लाया करते थे। इस ज़िले के लोग उन लोगों के प्रति अधिक आकृष्ट नहीं होते थे जो सफ़ेद वर्दी अथवा रेशमी पोशाकें पहने हुए शामों के वक़्त नगर के बाग़ों में चहल-क़दमी के लिए आया करते थे।

नगर-उद्यान अशकाबाद के उपर्युक्त दोनों केन्द्रों की सीमाओं पर और पूर्व से पश्चिम की ओर जानेवाली सड़क के किनारे था। यह सड़क कभी क़ाफ़िलों के रास्ते पर पड़ती थी। परन्तु जब रेलवे बनने लगी तो इस क़ाफ़िले वाले मार्ग ने एक अच्छे-ख़ासे राजमार्ग का रूप ले लिया।

इनके अलावा एक तीसरा ज़िला भी था जो व्यापार का केन्द्र था। यहां व्यापारियों की दूकानें, स्टाल और मकान थे जो एक अंधेरी सराय के इर्द-गिर्द बने थे। यह सराय क़िले से लगभग आधे मील दूर थी। कुछ धनी व्यापारियों ने इस धूल भरी बाज़ार से यथासम्भव अधिक से अधिक दूरी पर अपने मकान बनवा लिये थे।

केन्द्रीय बाज़ार के पश्चिम में तेक्के बाज़ार थी। यहां देहक़ान लोग आटा, कपड़े और किरासिन ख़रीदने और तरकारियां, सरदे, अंगूर और ऊन बेचने जाया करते थे। यह बाज़ार नगर की सीमा पर स्थित थी और इसके बाद क़ाफ़िलों के रास्ते शुरू हो जाते थे और काफ़ी दूर तक चले जाते थे।

अशकाबाद में तीव्र गति से विकास होने लगा। क्रान्ति के आरम्भ में यह एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र था जहां दो स्कूल, अफ़सरों का एक क्लब, थियेटर, क्षेत्रीय अध्ययन का एक अच्छा संग्रहालय, एक पुस्तकालय और दो अस्पताल थे। किन्तु इन सारी संस्थाओं की सेवाएं नगर के केवल धनी वर्गों के लिए ही उपलब्ध रहती थीं। श्रमिक जनता के लिए तो अशकाबाद एक ऐसा नगर था जो गर्मियों में गर्म और धूल-धूसरित तथा जाड़ों में दलदला रहता था और जहां उन्हें सारे वर्ष कोई भी सुविधाएं न मिलती थीं।

नगर में अधिकारियों और ईसाई व्यापारियों के चन्दों से एक गिरजाघर भी बनवाया गया था जिसके क्रास तथा गुम्बद मीलों दूर से दिखाई पड़ते थे।

मुस्लिम व्यापारियों ने नगर के एक दूसरे भाग में एक मस्जिद बनवा ली थी। इसका बड़ा-सा गुम्बद और ऊंची ऊंची मीनारें भी काफ़ी दूरी से देखी जा सकती थीं।

मस्जिद के चारों ओर बने हुए बरामदों में अथवा बाहरी सलाखों के आस-पास सुन्दर आकर्षक पूंछों वाले मोर मंडराया करते थे।

ईसाइयों के उक्त गिरजे के पास मोरों के तो दर्शन न होते, हां राहगीरों के कानों में वहां से निकलती हुई पादरियों की प्रार्थनाएं ज़रूर पड़ जातीं और लोग तो यहां तक कहते कि वे महान बलख़ान में भी सुनी जा सकती थीं।

गिरजे और मस्जिद दोनों के फाटकों पर भिखारियों, परित्यक्तों, आवारों तथा लूलों-लंगड़ों की भीड़ की भीड़ खड़ी मिलती थी। मध्य एशिया में इन अभागों की संख्या इतनी अधिक थी कि यदि इन सभी को एक स्थान पर जमाकर लिया जाता तो सिर्फ़ उन्हीं से दो अशकाबाद बसाये जा सकते थे।

मध्य एशिया के अन्य नगरों—ताशक़न्द, समरक़न्द, अन्दीजन, बुख़ारा, चार्दज्हू—के विपरीत, अशकाबाद में रूस से आकर बसनेवालों की बस्ती तथा वहां के प्राचीन निवासियों की बस्ती जैसी दो-दो बस्तियां न थीं। अशकाबाद का प्रत्येक ब्लाक नया था जहां कास्पियन-पार के मूल निवासी अर्थात् तुर्कमान के दर्शन प्रायः नहीं होते थे।

ज़ारशाही सरकार ने वहां एक ऐसा कृत्रिम अवरोध खड़ा कर रखा था जिसने तुर्कमानों का सारा जीवन अधबन्जारों जैसा बना दिया था। किन्तु औलों ने शीघ्र ही अपने को रूसी अर्थ-व्यवस्था के ढांचे में ढाल लिया।

औलों में वहां के लोगों का वर्ग-भेद तथा देहक़ानों की ग़रीबी एक समस्या बनी हुई थी जो वर्ष प्रतिवर्ष प्रखर होती जा रही थी। इन वर्ग-भेदों को कमज़ोर करने के लिए मुखिये तथा स्थानीय शासक ग़रीब किसानों के असंतोष को या तो धर्मान्धता की ओर मोड़ देते या फिर ग़ैर-तुर्कमानों के ख़िलाफ़ दंगे-फ़सादों की ओर।

किन्तु वे काल-चक्र को न रोक सके।

देहक़ानों के दिन ब दिन बढ़ते हुए असन्तोष ने सन् १९१६ में एक उपद्रव का रूप ले लिया। इसका प्रत्यक्ष कारण यह था कि ज़ार ने मध्य एशिया के मूल निवासियों को मोर्चे के पीछे काम करने के आदेश दिये थे।

सन् १६१६ का विद्रोह तो दबा दिया गया परन्तु औलों का असन्तोष न ठंढा पड़ा। देहक़ानों ने फ़रवरी क्रान्ति के बाद से और भी अधिक साहस और शक्ति का संचय किया और अपने तथा अपने देश के लाभार्थ शस्त्र उठाया। उन्होंने अक्तूबर की महान क्रान्ति के समय सर्वहारा समाजवादी क्रान्ति के झंडे के नीचे रूसी श्रमिकों और किसानों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर बुर्जुआ वर्ग और साम्राज्यवाद से मोर्चा लिया।

कम्यूनिस्टों ने ज़ार के पिट्ठुओं, हस्तक्षेप करनेवालों और स्थानीय शासकों से मोर्चा लिया था। यही कारण था कि ग़रीब जनता उनपर विश्वास करती थी और उनका समर्थन एवं अनुसरण करती थी।

सन् १६२४ तक अशकाबाद तुर्किस्तान स्वायत्त प्रजातन्त्र के कास्पियन-पार प्रदेश का, जो रूसी संघ का एक भाग था, प्रधान नगर था। मध्य एशिया का राष्ट्रीय क्षेत्रों में परिसीमन हो जाने के बाद से यह नगर तुर्कमान सोवियत समाजवादी प्रजातन्त्र की राजधानी हो गया।

५

सोवियत शासन-काल में अशकाबाद का तो नक़्शा ही बदल गया। हां, क्रान्ति के बाद के आरम्भिक काल में उसमें बाह्यतः कोई भी परिवर्तन देखने में न आया। इस काल में छोटे छोटे सफ़ेद मकान धूप में वैसे ही अपनी छटा दिखाते रहे, अरीकों में जल वैसे ही छलछलाता रहा और ऊंट तथा फ़िटिन गाड़ियां सड़कों पर वैसे ही धूल उड़ाती रहीं। फिर भी नगर भिन्न लग रहा था क्योंकि वहां के निवासियों में तब्दीली आ चुकी थी। अब सीमावर्ती क्षेत्रों और पास-पड़ोस के औलों के निवासी नगर के स्वामियों के रूप में वहां की मुख्य सड़कों पर आ गये थे।

अशकाबाद कभी अधिकारियों और व्यापारियों का नगर था, किन्तु अब वह श्रमिकों और विद्यार्थियों का नगर हो गया। यहां स्कूल खोले गये और अधिकाधिक औद्योगिक उद्यम चालू किये गये। अब वह विदेशियों का नगर नहीं अपितु तुर्कमनिया की वास्तविक राजधानी, तुर्कमान विज्ञान एवं संस्कृति का केन्द्र तथा तुर्कमनिया के उद्योगों की जन्मभूमि हो रही थी।

नगर की वास्तु-कला में भी परिवर्तन हुआ। छोटे, नीचे और भोंड़े मकानों के स्थान पर बड़ी बड़ी और ख़ूबसूरत इमारतें बनायी गयीं, सड़कों और पगडंडियों पर अस्फ़ाल्ट बिछायी गयी और गाड़ियों की चर्र-मर्र तथा जानवरों की टापों की जगह कानों में मोटरों की सरसर की आवाज़ पड़ने लगी, अधिकाधिक वृक्ष आरोपित किये गये, नये नये बाग़ लगाये गये और एक केन्द्रीय मैदान को एक लम्बे-चौड़े पार्क का रूप दिया गया। पार्क के बीचोंबीच एक रंगीन स्तम्भ पर पूर्व तथा सारी दुनिया की श्रमिक जनता के उद्धारक व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की कांसे की एक मूर्ति स्थापित की गयी। अब सीमाक्षेत्रों पर फ़ैक्ट्रियों की चिमनियों से धुआं उठने लगा और नगर के केन्द्रीय भागों तथा उसके सीमावर्ती क्षेत्रों का अन्तर धीरे धीरे दूर होने लगा।

६

क्रान्ति के पूर्व तक तुर्कमनिया में वास्तव में कोई मज़दूर-वर्ग न था। सोवियत शासन-काल में बनायी गयी द्ज़ेरजीन्स्की कपड़ा-मिल ही प्रजातन्त्र का पहला बड़ा औद्योगिक उद्यम था। यह मिल प्रथम पंचवर्षीय योजना-काल में उस समय चालू की गयी थी जब औलों में वर्ग-संघर्ष अपनी चरम सीमा पर था। राष्ट्रवादियों ने सामूहीकरण का घोर विरोध किया और स्थानीय शासकों तथा उनके पिट्ठुओं ने औल की अर्थ-व्यवस्था और उसके जीवन में आनेवाली क्रान्ति में बाधा डालने की प्राणपण से चेष्टा की। ये लोग सोवियत सरकार द्वारा किये जानेवाले प्रत्येक कार्य का विरोध करते थे जो धीरे धीरे इतना उग्र हो गया कि अन्त में उसने खुली लड़ाई का ही रूप ले लिया। फलतः सड़कों पर बसमाची घुड़सवारों के दल के दल घूमने तथा शान्तिप्रिय जनता को डराने-धमकाने लगे। इन लोगों ने ग्राम-क्षेत्रों में काम करनेवालों को भी लूटा-खसोटा। दिन दहाड़े लोगों की हत्याएं हुईं और हत्यारों तथा तोड़-फोड़ करनेवालों ने ग़रीब जनता और सोवियत शक्ति के बीच फूट डालने तथा उन्हें सामूहिक फ़ार्मों से अलग कर देने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा दिया।

ऐसी स्थिति में, जब जीवन का पुराना तरीक़ा द्रुतगति से बदल रहा था, अशकाबाद में एक ऐसे बड़े उद्यम की स्थापना करना आसान काम न था जिसमें काम करने के लिए स्थानीय जनता को ही लगाने की योजना थी। यह उत्पादन-क्षेत्र में एक



ग्रलदार-कोसे' नामक बैले के पहले ग्रंक का एक दृश्य। यह बैले तुर्कमान कला ग्रौर साहित्य के दस दिवसीय महोत्सव के ग्रवसर पर मास्को स्थित स्टेट बोल्शोई थियेटर की एक शाखा द्वारा प्रदर्शित किया गया



चैकोव्स्की के 'येवगेनी ग्रोनेगिन' ग्रॉपेरा के तीसरे ग्रंक का एक दृश्य। यह ग्रॉपेरा तुर्कमान कला ग्रौर साहित्य के दस दिवसीय महोत्सव के ग्रवसर पर मास्को स्थित स्टेट बोल्शोई थियेटर की एक शाखा में तुर्कमान अभिनेताओं द्वारा प्रदर्शित किया गया।

'सामूहिक फ़ार्म युवक नृत्य' जो तुर्कमान कला ग्रौर साहित्य के दस दिवसीय महोत्सव के ग्रवसर पर मास्को स्थित स्टेट बोल्शोई थियेटर में तुर्कमान शौक़िया नर्तकों द्वारा प्रदर्शित किया गया



अभूतपूर्व कार्य और तुर्कमान जनता के इतिहास में एक नये अध्याय का आरम्भ था। जो जनता अभी तक मुख्यतया बन्जारों, चरवाहों या काश्तकारों के रूप में औलों के इर्द-गिर्द पड़ी हुई अपने दिन काट रही थी, अब उसने अपने राष्ट्रीय एवं सामाजिक उद्योगों की अभिवृद्धि की ओर ध्यान दिया।

अब कपड़ा-मिल में पहली बार स्त्रियों को पुरुषों के साथ मिल-जुलकर काम करने का अवसर मिला। इस प्रकार कल तक जो स्त्री औलों में एकान्तवासिनी थी, घरेलू दासी थी, आज उसने मुक्ति की सांस ली, निर्माण-कार्यों में हाथ बंटाकर जन-जीवन को सुखद बनाने में पूरा सहयोग दिया और संकट पड़ने पर भी पीठ नहीं दिखलायी।

उन वर्षों में जिस सड़क पर फ़० ए० द्ज़ेरजीन्स्की कपड़ा-मिल थी उसे सारी तुर्कमनिया की मुख्य सड़क कहा जा सकता था।

मिलों में महिलाओं ने अपने ज्ञान-क्षेत्र का प्रसार किया। उन्हें महिला-श्रमिकों के रूप में देखकर तुर्कमान और रूसी जनता के बीच भ्रातृत्व की भावना सुदृढ़ हुई। इवानोवो, ओरेहोवो-ज़ूएवो, मास्को के क्रास्नाया प्रेस्न्या तथा ज़ामोस्क्वोरेच्ये से तुर्कमनिस्तान में आये हुए रूसी श्रमिकों तथा महिला-श्रमिकों ने युवा तुर्कमान महिलाओं को मशीनें चलाना सिखाया और इस प्रकार उनके बीच गहरी दोस्ती की नींव पड़ी।

अशकाबाद की कपड़ा-मिल की कुछ प्रमुख महिला-श्रमिकों के नाम सोवियत संघ भर में मशहूर हैं। इनमें से एक का नाम है अमंगूल मम्मेदोवा जिसने सोवियत संघ की कम्यूनिस्ट पार्टी के १६ वें अधिवेशन की कार्यवाहियों में सक्रिय भाग लिया था। यह औल में रहनेवाली एक सीधी-सादी लड़की थी जिसने अपने परिश्रम के बल पर इतनी अधिक उन्नति की जिसकी तुर्कमान महिलाएं क्रान्ति के पूर्व कल्पना भी न कर सकती थीं। अन्नोगोज़ेल ओवेज़ोवा, जो अशकाबाद की कपड़ा-मिल की एक बुनकर है, सन् १९५४ में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के लिए सदस्या निर्वाचित हुई थी। एक अन्य महिला-बुनकर–अन्नागुल चरीयेवा–का जीवन-वृत्तांत एक तुर्कमान पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

कल तक जो गुलाम थे आज वे ही श्रमिक हैं और जन-जीवन में लब्धप्रतिष्ठ

व्यक्ति जो अपने और अपनी जनता के लिए एक सुखद जीवन का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। इन व्यक्तियों की कहानी निराली है, अनूठी है।

जिस समय अशकाबाद की कपड़ा-मिल बन रही थी उस समय ओगुलक़ुर्बान आवदीमोवा एक छोटी-सी बच्ची थी। सन् १९२८ में उसकी उम्र केवल १० वर्ष की थी। वह कॉख़का ज़िले के अरप-काला औल में रहती थी। वह रूसी का एक शब्द भी न जानती थी और जब उसकी बड़ी बहनों ओराज़जमाल और क्यूरबनजमाल ने उसके सामने रूसी में 'मिल' शब्द का उल्लेख किया था तो उसने तुरन्त पूछा था कि इस शब्द का क्या अर्थ है। उस वर्ष अन्य बहुत-सी तुर्कमान लड़कियों और महिलाओं के साथ ओगुलक़ुर्बान की बहनें भी रेऊतोवो मिल के बुनकरों के अधीन अध्ययन करने के निमित्त मास्को गयी थीं।

लौटने पर वे अशकाबाद की मिल में काम करने लगीं। ओगुलक़ुर्बान ने अपनी बहनों से मास्को का अद्भुत वर्णन सुना था और तभी से उसने निश्चय कर लिया था कि जब वह बड़ी होगी तो वह भी कोई न कोई मशीन चलाना सीखेगी और बुनकर बनेगी।

जिस समय ओगुलक़ुर्बान १८ वर्ष की हुई उस समय उसने स्कूल की पढ़ाई समाप्त करने के पश्चात् अशकाबाद की कपड़ा-मिल के अहाते में पहली बार प्रवेश किया। उस समय उसे ऐसा लग रहा था मानो वह अपनी कल्पना के संसार में प्रवेश कर रही है और उसे पहली बार अपने चर्मचक्षुओं से देख रही है। निश्चय ही वह मिल के बारे में बहुत कुछ जानती थी क्योंकि उसने अपने स्कूली जीवन में ही इस दिशा में काम करने का संकल्प कर लिया था।

वह होशियार थी और समझदार भी। इसीलिए अनुभवी बुनकरों ने उसे मशीनें चलाना और उससे सम्बद्ध अन्य बातें शीघ्र ही सिखा दीं। उसकी पहली शिक्षिकाएं रूस की बुनकर-महिलाएं थीं, जिन्होंने उसे यह सिखाया था कि टूटा धागा कैसे जोड़ा जाता है और मशीनों पर कैसे अभ्यास किया जाता है। जिस दिन ओगुलक़ुर्बान मिल में काम करने आयी थी उस दिन से आज कई वर्ष बीत चुके हैं किन्तु उसे अब भी उन बड़ी रूसी बहनों की याद है जिनकी मदद ने उसका स्वतंत्र जीवन-यापन सरल कर दिया था।

श्रोगुलक़ुर्बान के साथ काम करनेवाले अन्य श्रमिकों के बीच २० मशीनों पर काम कर सकने की उसकी कार्यकुशलता की बहुत अधिक ख्याति हो गयी। उसने अशकाबाद की मिल में काम करने के अपने इन १७ वर्षों में लगभग २१,८७, ००० गज़ कपड़ा तैयार किया। अरप-काला के औल में, जहां वह पैदा हुई थी, अधिकांश महिलाएं शताब्दियों से बुनकरों के रूप में कार्य करती रही हैं। किन्तु यह संदेहास्पद है कि पिछले सौ वर्षों में औल की समस्त नारियों ने मिलकर भी अपने घरेलू करघों पर उस माल का आधा भी तैयार किया होगा जितना उनकी इस छोटी बहन ने आधुनिक मशीनों पर किया है।

जब ओगुलक़ुर्बान ने पढ़ाई समाप्त करके मिल में काम करना आरम्भ किया था तब से लेकर अब तक अशकाबाद में बहुत-से परिवर्तन हो चुके हैं। औद्योगिक विकास-कार्यों को एक बड़े पैमाने पर सम्पन्न किया गया और नये नये उद्यम आरम्भ किये गये जिनमें कांच के दो कारख़ाने, चमड़ा सिझाने का एक कारख़ाना, जूते की एक फ़ैक्ट्री, बुने हुए वस्त्रों की एक फ़ैक्ट्री, मशीनों की मरम्मत का एक कारख़ाना, शराब का एक कारख़ाना, गोश्त पेक करने का एक कारख़ाना, एक आटा-चक्की और इसी प्रकार के अन्य कारख़ाने भी शामिल थे।

लोगों की सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करनेवाली कुछ अन्य संस्थाओं की भी स्थापना की गयी – फ़िल्म-स्टूडियो, क्लब, पुस्तकालय, थियेटर, छपाई का एक बड़ा कारख़ाना, प्रकाशन-गृह तथा चिकित्सा-संस्थाएं।

प्रायः प्रत्येक औद्योगिक अथवा सांस्कृतिक संस्था में तुर्कमान महिलाओं को बड़े बड़े उत्तरदायित्वपूर्ण स्थानों पर काम करना पड़ रहा है, उदाहरणार्थ कुछ मन्त्राणियां हैं, कुछ उप-मन्त्राणियां और कुछ ज़िलों की प्रबन्धकारिणी समितियों और क्षेत्रीय सोवियतों की प्रमुख सदस्याएं। महिलाएं गवेषणा-संस्थाओं में प्रयोगशाला-सहायकों, स्कूलों में अध्यापिकाओं और सामूहिक फ़ार्मों में कृषिविशेषज्ञाओं के रूप में कार्य कर रही हैं।

अक्तूबर क्रान्ति के पहले उन महिलाओं की संख्या बहुत कम थी जिन्हें थोड़ा-बहुत लिखना-पढ़ना आता था और जो हस्ताक्षर भर कर लेती थीं। आज अशकाबाद

राष्ट्रीय विश्वविद्यालय तथा तुर्कमनिया की उच्च शिक्षा की अनेक संस्थाओं में महिला-विद्यार्थियों की संख्या बहुत अधिक है।

प्रथम युद्धोत्तर वर्ष में तुर्कमान राजकीय आपेरा एवं बैले थियेटर ने तुर्कमान भाषा में चैकोव्स्की का 'येव्गेनी ओनेगिन' नामक आपेरा प्रदर्शित किया था। इसमें तात्याना का अभिनय माइया कुलीयेवा ने किया था जो क्रान्ति-काल में एक औल में पैदा हुई थी।

अध्याय २

१

६ अक्तूबर १९४८ का भूकम्प तुर्कमान राजधानी तथा समस्त तुर्कमान जनता के लिए एक बहुत बड़ा आघात था।

सोवियत संघ के इतिहास में यह एक सबसे भयानक भूकम्प था। प्रातःकाल १ बजकर १७ मिनट (अशकाबाद समय से) पर, जब अधिकांश लोग सो रहे थे, पहाड़ों से आती हुई एक तेज़ गड़गड़ाहट सुनाई दी। उस समय जो जग रहे थे वे तो सजग हो गये किन्तु सोनेवालों के कान तक यह आवाज़ न पहुंची। पहले ही झटके ने सारे शहर को हिला डाला। यह झटका इतना तेज़ था कि लोग गिरने-पड़ने लगे। बाद में अशकाबाद-निवासियों ने बताया कि "ऐसा लगता था मानो ज़मीन के नीचे से किसीने तोप चला दी हो।" इसके बाद बार बार कई झटके लगे और कुछ ही क्षणों में अधिकांश नगर ध्वस्त हो गया।

७ अक्तूबर को सोवियत संघ के सभी अख़बारों ने तास की यह रिपोर्ट छापी –

"६ अक्तूबर को ... तुर्कमान सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र के अशकाबाद-क्षेत्र में ९ प्वाइंटों तक की शक्ति वाला एक भूकम्प आया जिससे नगर को गहरी क्षति पहुंची। बहुत से मकान नष्ट हो गये और हज़ारों लोग इसके शिकार हुए। सोवियत संघ की मंत्रि-परिषद ने तात्कालिक सहायता देने तथा भूकम्प के दुष्परिणामों को समाप्त करने के लिए आवश्यक उपाय करने के निमित्त एक असाधारण आयोग की स्थापना

की। इस आयोग ने पीड़ित क्षेत्र की जनता को खाना पहुंचाने और चिकित्सा सम्बन्धी सहायता देने तथा बेघर लोगों को बसाने के सम्बन्ध में काम करना आरम्भ कर दिया है...”

जनता ने नगर पर पड़ी इस दैवी आपदा का बड़े साहस से सामना किया। मलबे के नीचे से अपने को किसी प्रकार मुक्त कर लेने के पश्चात् ये बचे-खुचे लोग सबसे पहले उन लोगों की मदद को दौड़े जो अभी तक मलवे के नीचे दबे पड़े थे। शान्ति छा जाने तथा मंडराती हुई धूल बैठ जाने के बाद रक्षा-कार्य आरम्भ किये गये। लोगों ने अपने माल-असबाब की कोई चिन्ता न की। वे तो केवल यही सोच रहे थे कि अपने पड़ोसियों की जीवन-रक्षा कैसे की जाय।

६ अक्तूबर को प्रातःकाल क्रास्नोवोद्स्क, तशौज, बाकू, ताशक़न्द और मास्को के जहाज़ डाक्टरों और दवाओं सहित अशकाबाद के हवाई अड्डे पर उतरने लगे।

कम्यूनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार ने जनता को शीघ्र से शीघ्र सहायता पहुंचाने के लिए यथासम्भव सभी कुछ किया। नतीजा यह हुआ कि उसी दिन, ६ अक्तूबर को, मध्याह्न तक वे सभी व्यक्ति, जिन्हें गम्भीर चोटें लगी थीं, वायुयानों में आज़रबैजान या उज़बेकिस्तान की ओर उड़ रहे थे। उसी दिन अधिकारियों ने रोटी, मांस तथा दूसरे खाद्य-पदार्थ मुफ़्त बांटना आरम्भ कर दिया। उस समय आकाश वहां आने-जानेवाले हवाई जहाज़ों से आच्छादित हो रहा था और उन मैदानों में क्षेत्रीय चिकित्सालय खुल गये थे जहां गिरती हुई दीवारों का कोई भय न था।

दूसरे दिन रात के समय लोगों के आराम के लिए तम्बू लगा दिये गये। ये तम्बू हवाई जहाज़ों द्वारा लाये गये थे। इनके अलावा ताशक़न्द से रूई की हज़ारों रज़ाइयां भी भेजी गयी थीं क्योंकि उन दिनों रातों में काफ़ी ठंढक पड़ने लगी थी।

लोगों को सुरक्षित स्थानों तक ले जाने के कार्य के साथ ही साथ पुनर्निर्माण-कार्य भी आरम्भ किये गये। ८ अक्तूबर तक वहां बिजली आ गयी थी और ६ दिन बाद रोटी-कारखाना भी पूर्ण गति से कार्य करने लगा था। अतः जो जहाज़ अब तक रोटियां पहुंचाया करते थे अब वे अन्य कामों पर लगा दिये गये थे।

कुछ दिनों बाद सभी दफ़्तरों में काम और स्कूलों में पढ़ाई शुरू हो गयी। ये स्कूल बाग़ों तथा पार्कों के पेड़ों के नीचे लगा करते थे।

10—1488

अशकाबाद में ८ अक्तूबर को प्रातःकाल सात बजे से रेलवे-व्यवस्था पुनः चालू की गयी और वायुयानों और रेलों द्वारा माल भेजने के प्रबन्ध किये गये। देश ने अशकाबाद के लिए सभी आवश्यक वस्तुओं की पूर्ति की – मशीनें, भोजन, इमारती सामान, कपड़े और दवाएं। डाक्टर, इंजीनियर, शिल्पी, सरकारी प्रतिनिधि, श्रमिक आदि भिन्न भिन्न पेशों के लोग सभी प्रकार की सहायता देने के लिए वहां पहुंच गये थे।

अनेकानेक व्यक्तियों तथा कार्यालयों ने अशकाबाद के लोगों को हज़ारों तार भेजकर उन्हें सहायता देने का प्रस्ताव किया था। इन प्रस्तावकों में सहस्रों नर-नारियों के अलावा सामूहिक फ़ार्म और उद्यम भी थे। इस प्रकार इस विशाल देश के असंख्यों लोगों ने अपने पीड़ित तुर्कमान भाइयों की सहायता के लिए जो कुछ भी किया जा सकता था दिल खोलकर किया था।

किन्तु अशकाबाद के लोगों ने अपना नगर छोड़कर कहीं बाहर जाने का विचार तक न किया। स्वयं आहत व्यक्ति भी, जब तक उनके ज़ख़्म गम्भीर न होते, नगर के बाहर जाने से इनकार कर देते थे।

'हम अपने अशकाबाद का पुनर्निर्माण करेंगे!', 'अशकाबाद को पहले जैसा बनाने में हम सब भाग लेंगे!' जैसे नारे उन दिनों या तो अख़बारों में छपा करते थे या फिर कुछ बची-खुची दीवालों या बाड़ों पर कोयले से लिखे मिलते थे। इन शब्दों से अशकाबाद के प्रत्येक नागरिक के विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होती थी। नगर को पूर्वावस्था में लाने की अदम्य आकांक्षा ने उनमें वह शक्ति पैदा कर दी थी कि वे अपने निजी नुक़सानों को भूल गये और जन-हित-कार्यों में जुट पड़े।

प्रजातंत्र के एक प्रमुख अख़बार 'तुर्कमेन्स्काया इस्क्रा' के प्रत्येक अंक में उन वीरताओं की चर्चा रहा करती थी जिनका परिचय वहां के लोगों ने उस संकट-काल में दिया था।

यहां उस व्यक्ति का आंखों देखा वर्णन दिया जा रहा है जो उक्त दुर्घटना के समय अशकाबाद के हवाई अड्डे पर मौजूद था –

"मास्को, ताशक़न्द और तशौज़ जानेवाले जहाज़ छूट चुके थे। हम लोग अपनी रात की ड्यूटी देने के लिए वहीं रह गये थे। मौसम के सम्बन्ध में पूर्व सूचना देनेवाले

लोग मौसम के ग्राफ़ का अध्ययन कर रहे थे और बेतार के तार के कर्मचारी उन समस्त संकेतों की ओर ध्यान दे रहे थे जो उन्हें कग-कुम और कास्पियन के ऊपर उड़नेवाले जहाज़ों द्वारा मिल सकते थे। सहसा हमें झटके पर झटके लगने लगे ... और कुछ ही क्षणों में हवाई अड्डे की सुन्दर इमारत ज़मीन पर गिरकर मलबे का ढेर बन गयी।

"भूकम्प ... मलबे के नीचे दबे हुए वैमानिकों, मेकैनिकों और बेतार के तार के कर्मचारियों ने उसकी विभीषिका का अनुमान लगा लिया था। वे रेंगते हुए मलबे से बाहर निकलने की कोशिश करते और बाहर आते ही अपने दूसरे साथियों को भी उसमें से निकालने में जुट जाते। जिस व्यक्ति से भी हो सकता था वह जहाज़ों की ओर भागता था। यूरी द्रोज़दोव नामक मास्को का एक मेकैनिक, जो बुरी तरह घायल हो चुका था, किसी प्रकार एक 'इ० ल० – १२' यात्री-जहाज़ तक पहुंच गया और वहां से आपत्ति सम्बन्धी संकेत भेजने लगा। ओमस्क (साइबेरिया) के निकट के किसी सावधान वायरलेस कर्मचारी ने इन संकेतों को प्राप्त किया। द्रोज़दोव के संकेत बाकू तक पहुंचे। बाद में हमारी विशाल राजधानी मास्को में भी इस विपत्ति की ख़बर लगी।

"और हवाई जहाज़ के इंजन भनभनाने लगे ..."

२

अशकाबाद के कुछ ज़िलों का तो इतनी जल्दी पुनर्निर्माण हुआ कि जिन लोगों ने उस शहर की ध्वस्त दशा को न देखा था उन्हें इस बात का भी यक़ीन न हो पा रहा था कि इन ज़िलों में कभी इतनी बड़ी आपदा आयी थी।

पुनर्निर्माण की सामान्य योजना के अनुसार नगर के भूतपूर्व वास्तु-शिल्प को सामान्यतया पहले जैसा ही रखा जायेगा। अन्तर केवल इतना ही होगा कि भवनों को एक आकर्षक अन्तिम रूप दिया जायेगा। उनमें चमक-दमक अधिक होगी और वे पहले से ज़्यादा आरामदेह होंगे।

कार्ल मार्क्स चौक के आस-पास का ज़िला नगर का मुख्य केन्द्र होगा। निकट ही, जहां कार्ल मार्क्स सड़क अक्तूबर क्रान्ति सड़क को काटती है, एक दूसरा सुन्दर चौक होगा, जिसके चारों ओर अच्छे अच्छे सार्वजनिक भवन बनाये जायेंगे। इन

दोनों चौकों को मिलाने के लिए एक चौड़ी सड़क होगी जिसके उत्तर की ओर एक पार्क होगा जिसमें तालाब, झरने और वास्तु-कला सम्बन्धी कुछ संरचनाएं होंगी।

'अशकाबाद' शब्द का अर्थ है 'प्रेम-नगर' या यदि और भी ठीक कहा जाये तो इसका अर्थ होगा 'प्रेम में डूबा हुआ नगर' (आशिक़-आबाद)। जिन लोगों ने इस नगर को भूकम्प के पहले देखा था वह इस बात से सहमत होंगे कि निश्चय ही अशकाबाद अपने नाम को सार्थक करता है।

वसन्त और शरद्-ऋतुओं में इस नगर का सौन्दर्य निखर उठता है। इसके अनेकानेक पार्कों में फल-फूलों से लदे हुए घने घने वृक्ष हैं जो वहां की मन्द मन्द वायु में झूमा करते हैं। अशकाबाद के लोगों को अपने उस मनोरंजन पार्क पर गर्व है जो नगर के प्रायः बीचोंबीच—स्वोबोदा, अक्तूबर क्रान्ति और एंगेल्स सड़कों के बीच—कई ब्लाकों में फैला हुआ है। भूकम्प के बाद से इस पार्क का काफ़ी अधिक प्रसार किया गया है। यहां के पास-पड़ोस के कुछ भद्दे-से एक-मंज़िले छोटे छोटे मकानों को गिरा दिया गया है। उनके स्वामी अन्य ज़िलों में बने हुए नये मकानों में चले गये है। सन् १९५० और १९५१ के वसन्त के दिनों में अशकाबाद के हज़ारों नागरिकों ने अपनी शामें और रविवार वृक्ष लगाने में व्यतीत किये थे। अशकाबाद में सूर्य की गर्मी से बचने के लिए लोग किसी उद्यान में पेड़ों के नीचे आराम करते हैं क्योंकि वहां के वृक्षों की पत्तियां इतनी घनी होती हैं कि उनसे छनकर जुलाई के गर्म से गर्म दिनों में भी सूर्य की किरणें नीचे नहीं आ पातीं। यहां लेनिन उद्यान भी है जहां यद्यपि छाया इतनी घनी नहीं होती फिर भी सुन्दरता का अभाव नही दीख पड़ता। यह बाग़ तुर्कमान विज्ञान-अकादमी के सामने नगर के उस व्यस्त भाग में है जहां एंगेल्स और पुश्किन सड़कें एक दूसरे को काटती हैं।

अक्तूबर सन् १९४८ में यह विश्वास करना बड़ा कठिन प्रतीत हो रहा था कि टूटी हुई लाखों टन ईंटें कभी भी शहर के बाहर ले जायी जा सकेंगी और नये मकानों के लिए ज़मीनें ख़ाली की जा सकेंगी। फिर भी एक वर्ष के पश्चात् मिट्टी और लकड़ी के उन छोटे छोटे मकानों के बीच, जो अस्थायी रूप से बसने के लिए बनाये गये थे, बड़ी बड़ी इमारतें बन गयी हैं। इन्हें देखकर नगर के उज्ज्वल भविष्य

का अनुमान लगाया जा सकता है। सन् १९५३ के जाड़े के मौसम तक अशकाबाद न एक बड़ी-सी राजधानी का रूप ले लिया था। इस समय तक आधे से अधिक लोग नये और सुविधाजनक मकानों में जा चुके हैं।

किन्तु उपर्युक्त दैवी आपदा के चिन्ह् कहीं कहीं अब भी दिखाई पड़ते हैं। हां, वे धीरे धीरे कम अवश्य होते जा रहे हैं। वे सैकड़ों मकान, जो बन चुके हैं या बन रहे हैं, भूकम्प से नष्ट हुए मकानों की अपेक्षा अधिक आरामदेह हैं। उनमें बस एक ही त्रुटि है और वह यह कि वे बहुत कुछ एक जैसे ही लगते हैं। यह ठीक है कि इस त्रुटि पर कोई विशेष ध्यान नहीं जाता क्योंकि ऐसे मकान क़तारों में नहीं अपितु नगर भर में इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। इस कमी का पता नगर-निर्माताओं को समय से लग गया था और इसीलिए १९५३ के बाद बननेवाले मकानों में भिन्न भिन्न सड़कों के लिए भिन्न भिन्न प्रकार की विविधता की योजना की गयी।

जो नगर पूरा पूरा ध्वस्त हो चुका था आज वह फिर से जीवित है, उसकी एक अपनी शान है, एक अपना सौन्दर्य है। कुछ ही वर्षों में लोगों का यह विश्वास फलीभूत हो सकेगा कि उनका नगर मध्य एशिया का सबसे सुन्दर नगर है।

३

नये अशकाबाद के लिए योजना तैयार करने का कार्य कोई आसान कार्य न था, क्योंकि भूकम्प सम्बन्धी दशाओं के कारण यहां पर ऊंची ऊंची इमारतें बनाना असम्भव था। इसीलिए यहां के शिल्पियों को अपनी सारी शक्ति ऐसी इमारतों के निर्माण में लगानी पड़ी जो नीची होती हुई भी बड़ी शानदार दिखाई देती थीं। एतदर्थ उन्हें इमारतों का बाह्य आकार काफ़ी लम्बा बनाना पड़ा। गोगोल सड़क पर मंत्रि-परिषद-भवन दुमंज़िला होते हुए भी बड़ा शानदार है। इसी प्रकार कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की दुमंज़िली इमारत भी बड़ी आकर्षक है। इन दोनों भवनों की अद्भुत आन्तरिक सज्जा बहुत कुछ मास्को के मेत्रो जैसी है। नये अशकाबाद के बड़े बडे मकानों का शिल्प पौर्वात्य आकृतियों के अनुरूप नहीं है। सर्वोत्तम मकानों में प्रदेश की पुरानी परंपराओं और आधुनिक अपेक्षाओं का अद्भुत मिश्रण है। ऐसी

इमारतों में रेलवेमेन्स-क्लब, 'अशकाबाद' सिनेमा तथा नगर-अस्पताल हैं। ड्रामा-थियेटर, जो मनोरंजन पार्क के निकट बन रहा है, इस नगर की सबसे बड़ी इमारतों में से एक होगी।

नया रेलवे-स्टेशन भी शीघ्र ही बनकर पूरा हो जायेगा। यह स्टेशन मध्य एशिया का सबसे बड़ा स्टेशन है।

सारे मकान इस ढंग से बनाये जा रहे थे कि दूसरे भूकम्प आने की दशा में भी वे नष्ट न हों। इन मकानों की दीवालें तथा छतें हिल तो सकती हैं किन्तु उन्हें नुक़सान नहीं पहुंच सकता।

अशकाबाद में हमेशा ही बहुत-से उद्यान रहे हैं। यात्री चार्दज्हू या गेओक-तेपे की ओर से अथवा किसी भी दिशा से नगर में क्यों न प्रवेश करे उसे वृक्षों के बीच हरी या भूरी छतों वाले सफ़ेद मकानों के दिखाई पड़ने से पूर्व कोपेत-दाग़ की तलहटियों के घने घने वृक्ष नज़र आयेंगे।

प्रत्येक बाड़े या दीवाल के निकट बबूल, थुजा, ख़ूबानी और बादाम के वृक्ष हैं। इस नगर का प्रत्येक निवासी अपने मकान के निकट एक छोटा-सा बाग़ या खिड़की के सामने कम से कम एक पेड़ लगाने की इच्छा अवश्य रखता है।

कुछ सड़कों पर वृक्ष ऐसे कुंजों का निर्माण करते हैं जो एक से लेकर दूसरे मकान तक, दूर दूर तक, चले जाते हैं। भूकम्प के पहले वृक्ष ही इस नगर की मुख्य शोभा थे। आज अशकाबाद में पूर्वापेक्षा अधिक हरियाली है। नवम्बर से लेकर मार्च तक के ऐसे महीनों में भी जब पेड़ ठूंठ रहते हैं इन मकानों का सीधा-सादा सौन्दर्य बना ही रहता है और उसके साथ ही उनकी शान भी।

४

अशकाबाद में भूकम्प के पूर्वगामी वर्षों में ताज़े पानी की विशेष कमी थी। नगर को छोटी अशकाबादका और केशिंका नदियों तथा कुछ क्यारिज़ों और नालों से पानी प्राप्त होता है। जल की यह मात्रा अशकाबाद की उस काल की ज़रूरत पूरी करने के लिए पर्याप्त थी, जब वह एक सैनिक क़िला था, और उसके बाद भी जब बढ़ते बढ़ते वह कास्पियन-पार क्षेत्र का एक प्रमुख प्रशासनिक व्यापारी

केन्द्र बन गया। किन्तु जब वह समाजवादी प्रजातंत्र की राजधानी बना जिसकी जनसंख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है और जहां उद्योगों में द्रुतगति से प्रसार हो रहा है तो जल की यह मात्रा कम पड़ने लगी। पानी की इस कमी का प्रभाव सबसे पहले सड़कों के किनारे लगे हुए वृक्षों पर पड़ा। पहाड़ों से उतरनेवाला जल, जो कभी बबूल और प्लेन वृक्षों के नीचे नीचे निर्बाध रूप से अरीकों के किनारे किनारे बहा करता था, अब पाइपों द्वारा मकानों, स्कूलों और कल-कारखानों की ज़रूरतें पूरी करने के काम आने लगा। कभी कभी अरीकें हफ़्तों सूखी पड़ी रहतीं और बाग़ों और सड़कों के पेड़-पौधों और घासों को पानी की बराबर कमी बनी रहती।

पहले इस ओर नवागन्तुकों का कोई ध्यान न गया क्योंकि अब भी अशकाबाद पार्कों का नगर कहला सकता था। इसका एकमात्र कारण यह था कि यहां के तीस तीस चालीस चालीस वर्ष पुराने वृक्षों की जड़ें ज़मीन में इतनी गहराई तक चली गयी थीं कि उनपर पानी की इस कमी का कोई तात्कालिक प्रभाव न पड़ सकता था। कार्ल मार्क्स, अक्तूबर क्रान्ति, पोल्तोरात्स्की तथा अन्य कुछ सड़कों पर लगे हुए वृक्षों के तने इतने चौडे थे कि वे पगडंडी का काफ़ी अधिक भाग घेर लेते और परिणामत: पैदल चलनेवालों को कभी कभी उससे उतरकर सड़क पर होकर चलना पड़ता था।

किन्तु सावधानी से देखने पर यह बात स्पष्ट प्रतीत होने लगती कि पत्तियां पीली पड़ती जा रही हैं, बाग़ों में धूल जमती जा रही है और पार्कों की घास इतनी घनी नहीं रह गयी है जितनी कि वह पूर्वगामी वर्षों में थी।

अभी हाल ही तक अशकाबाद की जल-समस्या का समाधान करने के लिए कई योजनाएं चल रही थीं। इन योजनाओं में नगर के आस-पास के क्षेत्रों में पानी के सोतों की ढूंढ-तलाश अथवा दूरस्थ बड़े बड़े जलाशयों से बड़े बड़े पाइपों अथवा खुली नहरों द्वारा उसका पंप किया जाना भी शामिल था।

अशकाबाद के चारों ओर खोदे गये कुओं के जल की सतह तो कभी कभी इतनी उंचाई पर आ जाती थी कि ऐसा लगता मानो राजधानी की जल-समस्या का समाधान ही हो गया है। लेकिन इन समस्त प्रयासों में निराशा ही हाथ लगी क्योंकि जसे ही जैसे नये कुएं खुदते गये वैसे ही वैसे पुरानी क्यारिज़ों का पानी कम होता

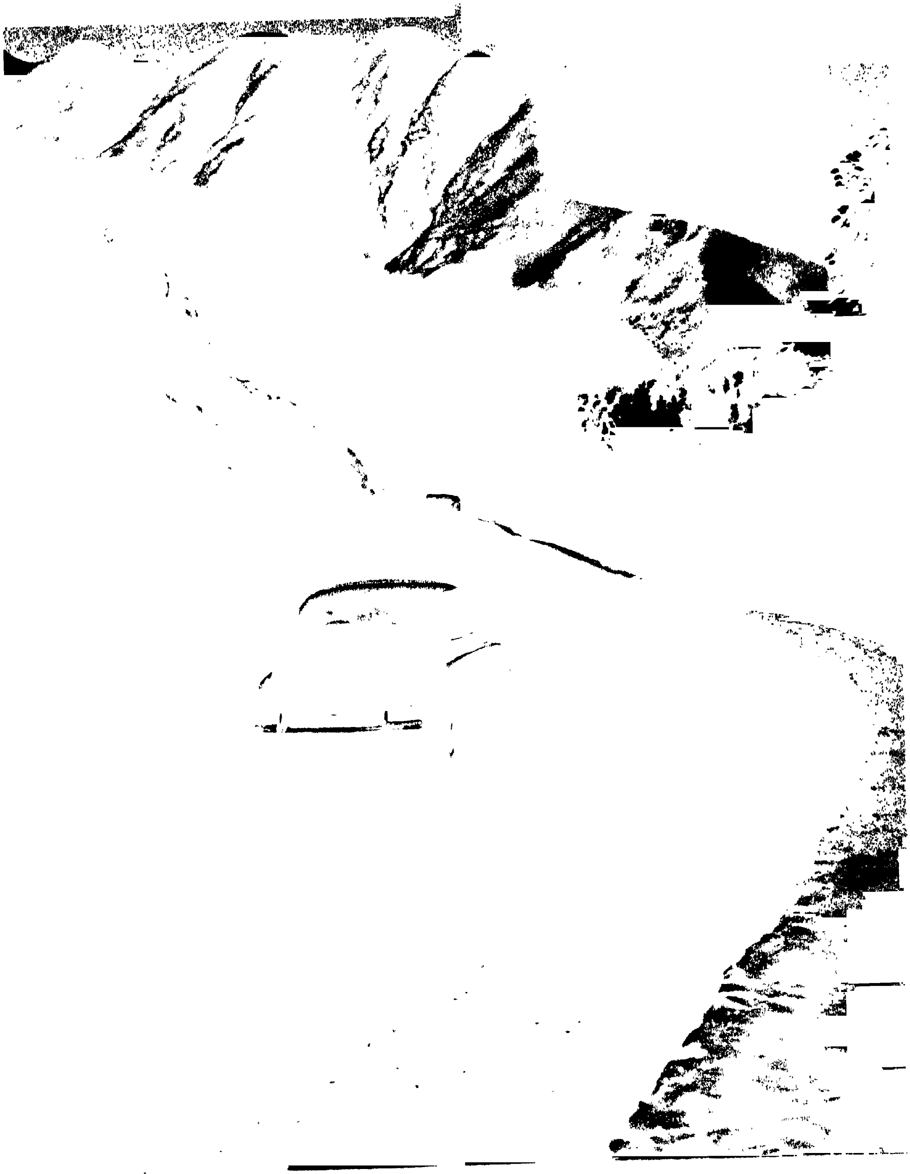
गया। यह कमी कुओं द्वारा लिये गये पानी के अनुपात में थी। फलतः कुएं जल के नये स्रोत नहीं कहे जा सकते थे। नगर में उन्हीं भिन्न भिन्न स्रोतों से पानी मिल रहा था जिनसे पहले मिला करता था।

किन्तु जल-विशेषज्ञ हताश न हुए। अभी पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने कोपेत-दाग़ की तलहटियों में जो अनुसंधान किये हैं, उनमें उन्हें सफलता मिली है। उनके परिणामस्वरूप नगर के निकट ही पानी के एक ऐसे समृद्ध स्रोत का पता लगा था जिसका सम्बन्ध उस किसी भी स्रोत से न था जिससे अशकाबाद को पानी मिलता था। पानी को पंप करने के प्रयास आरम्भ किये जा चुके हैं और यदि प्रारंभिक निरीक्षण ठीक उतरे तो तुर्कमान राजधानी को उसकी आवश्यकतानुसार पानी मिल जाया करेगा। गर्मियों में सूखी और गर्म हवा में ताज़गी और शीतलता पैदा करने के लिए नये-नये झरने बनाये जायेंगे और तैराकी तालाबों का निर्माण किया जायेगा। परिणामतः पुराने पेड़ों की पत्तियां और भी अधिक हरी और नये अशकाबाद में बने प्रत्येक मकान के चारों ओर लगे हुए वृक्षों की क़लमें वर्ष प्रति वर्ष और भी अधिक मज़बूत होती जायेंगी।

अशकाबाद के निकटवर्ती क्षेत्रों में जल के स्रोतों का पता चलाने के साथ ही साथ बड़ी बड़ी नदियों से भी पाइपों द्वारा शहर में पानी खींचने की योजनाएं बनायी गयीं।

अशकाबाद मे अपेक्षाकृत कुछ थोड़ी ही दूरी पर ३ नदियां हैं – तेजेन (पूर्व की ओर ६४ मील), मुर्ग़ाब (तेजेन के पूर्व में ८५ मील) और गहरी आमू-दरिया (मुर्ग़ाब के पूर्व में १५५ मील)।

सामान्य दशाओं में तेजेन नदी को चुनना ही पसन्द किया जाता क्योंकि वही नगर के सबसे निकट है। किन्तु स्वयं तेजेन नख़लिस्तान के खेतों पर प्रति वर्ष सूखे का दुष्प्रभाव पड़ा करता है। तेजेन जलाशय भी, जो प्रथम युद्धोत्तर पंचवर्षीय योजना-काल में बनाया गया था, केवल इतना ही बड़ा है कि उसमे अकेले तेजेन ज़िले की आवश्यकताओं की ही पूर्ति हो पाती है। और मुर्ग़ाब नदी? कठिनाई यह है कि मुर्ग़ाब का डेल्टा कपास-केन्द्र में पड़ता है और महीन रेशे की तुर्कमान कपास पैदा करने का मुख्य क्षेत्र है। मुर्ग़ाब के चारों ओर की भूमि बिना किसी अत्युक्ति के स्वर्ण भूमि कही जा सकती है, फिर भी इस भूमि का अधिकांश इसीलिए



फ़िरश्ता कन्दरा को आनेवाली सड़क



अशक़ाबाद संगीत-विद्यालय की छात्रायें



माल ढोनेवाले वायुयान रेगिस्तान में माल उतार रहे हैं

अनाउ में १५ वीं शताब्दी के मक़बरे और मस्जिद के ध्वंसावशेष





मशक़ाबाद के निकट कंक्रीट की सड़क

अविकसित है कि तेजेन के समान ही मुर्ग़ाब के पानी की आख़िरी बूंद तक वर्तमान खेतों की सिंचाई के लिए काम में लायी जाती है।

अब आमू-दरिया को लीजिए। यह एक बड़ी नदी है और इसमें एक ऐसी नहर के लिए इतना पर्याप्त जल है जो दक्षिणी करा-कुम को पार करके मुर्ग़ाब के निचले क्षेत्रों तक को पानी पहुंचा सकती है और साथ ही तेजेन के निचले इलाक़ों पर पड़नेवाली समृद्ध और बिना जुती भूमि को जीवन देकर भी अशकाबाद की ज़रूरतें पूरी कर सकती है।

अशकाबाद और आमू-दरिया के बीच की दूरी ३०० मील से भी अधिक है, जिसे देखकर अभी कल तक ही इतनी लम्बी नहर बनाने का विचार एक स्वप्न-सा लगता था। परन्तु समाजवादी युग में पनपनेवाले प्राविधिक विचारों की कभी कोई सीमाएं नहीं होतीं। इसीलिए मारी और तेजेन होकर आमू-दरिया से करा-कुम नामक नहर निकालने की एक योजना निकट भविष्य में पूरी होनेवाली है। सम्प्रति मुर्ग़ाब नदी तक जानेवाली नहर का पहला भाग पूरा हो रहा है।

अध्याय ३

१

प्रादेशिक दृष्टि से अशकाबाद प्रजातन्त्र की सीमा पर बसा हुआ है। किन्तु यह देखते हुए कि वहां कहां कहां और किस ढंग से बस्तियां बसायी गयी हैं तथा संवहन की लाइनों की किस प्रकार व्यवस्था की गयी है हम बिना किसी संकोच के कह सकते हैं कि वह तुर्कमनिया का हृदय है।

अशकाबाद तथा मध्य एशिया के 'पश्चिमी फाटक' क्रास्नोवोद्स्क के बीच की दूरी लगभग ३१० मील है। इसी प्रकार तुर्कमनिया के 'पूर्वी फाटक' चार्दज्हू और उत्तरी तुर्कमनिस्तान के मध्य में स्थित तशौज़ से भी अशकाबाद की अलग अलग दूरी प्रायः इतनी ही है। प्रजातन्त्र के सबसे दक्षिणवर्ती नगर कूश्का और केरकी अशकाबाद से लगभग ३०० मील की दूरी पर हैं।

वायुयान से यात्रा करने पर तुर्कमान राजधानी से किसी भी क्षेत्रीय केन्द्र तक के सफ़र में दो या तीन घंटों से अधिक नहीं लग सकते।

प्रजातन्त्र के जीवन में वायुयानों का विशेष महत्त्व है क्योंकि इनके द्वारा दूर से दूर स्थित नख़लिस्तानों में भी शीघ्रातिशीघ्र पहुंचा जा सकता है। अब उत्तरी नख़लिस्तानों के सामूहिक कृषक शाम को वायुयान द्वारा अशकाबाद का थियेटर देखकर दूसरे दिन सुबह घर वापस आ सकते हैं। क्रान्ति-पूर्व के दिनों की तुलना में यह एक बहुत बड़ी बात है क्योंकि उस समय अशकाबाद से करा-कुम होते हुए तशौज़ तक जाने में कम से कम दो सप्ताह लगते थे। इसी प्रकार अशकाबाद तथा अन्य दूरस्थ नख़लिस्तानों के बीच की यात्रा भी उतनी ही दुष्कर थी।

आज यात्रियों तथा सामानों को ले जाने के अलावा वायुयान पानी और पशु भी ले जाते हैं। वायुयान अशकाबाद तथा गन्धक के कारख़ानों के बीच के नियमित मार्ग पर करा-कुम के जलहीन स्थानों तक पानी ले जाते हैं।

अतएव प्रजातन्त्र का राजनैतिक, औद्योगिक, प्रशासनिक और सांस्कृतिक केन्द्र होने के साथ ही साथ अशकाबाद यातायात का भी एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। तुर्कमनिया में हवाई जहाज़ों की लाइनें प्रायः उतनी ही हैं जितनी कि वहां रेलवे-लाइनें हैं या राजमार्ग हैं या क़ाफ़िलों के मार्ग।

यहां की प्रकृति ने ऊंट के जीवन को रेगिस्तान के इतना अनुरूप बना दिया है कि तुर्कमनिया में उसकी यातायात सम्बन्धी सुविधाओं के विकास की योजनाओं के एक अंश के रूप में वहां नयी नयी क़िस्म के वायुयानों के प्रयोग के अलावा ऊंट-पालन को भी प्रोत्साहन मिल रहा है।

क़ाफ़िलों के रास्ते अशकाबाद को मुख्यतया रेगिस्तान के इलाक़ों से मिलाते हैं। तुर्कमान राजधानी के दक्षिण में आधुनिक क़िस्म की बड़ी बड़ी पक्की सड़कें हैं जिनमें से सबसे अधिक सौन्दर्यपूर्ण सड़क वह है जो फ़िरुज़ा के ग्रीष्म-आरोग्य-केन्द्र तक जाती है। पिछले कुछ वर्षों में इस सड़क के किनारे किनारे पेड़ लगाये गये।

२

फ़िरुज़ा कोपेत-दाग़ की एक संकरी कन्दरा में बसी एक छोटी-सी बस्ती है। वह समुद्र के धरातल से २,५५६ फ़ीट की ऊंचाई पर फ़िरुज़िन्का नदी पर बसा हुआ है। जुलाई के गर्मी के दिनों में जब गर्म हवाएं और धूल अशकाबाद के वृक्षों को

झुलसती तथा मकानों की दीवालों के तापमान को १२२ से १४० अंश फ़ारेनहाइट तक गर्म कर देती हैं उस समय फ़िरुज़ा के बाग़ों में शीतलता और छाया होती है।

फ़िरुज़ा कन्दरा के तल पर प्लेन वृक्ष, अखरोट तथा अन्य काष्ट-फलों के वृक्ष, हनी लोकस्ट, बबूल, एलन्थस, शहतूत, चेरी, सेब और बर्ड-चेरी के वृक्ष होते हैं।

फ़िरुज़िन्का के दाहिने तट पर स्थित बस्ती के प्रत्येक मकान के चारों ओर एक-एक बाग़ है। यहां शायद ही कोई स्थायी निवासी रहता हो क्योंकि यहां के प्रायः सभी मकान ग्रीष्म-आवास, अवकाश-गृह, सैनेटोरियम या पायोनियरों के कैंप हैं। गर्मी के दिनों में इस बस्ती में बड़ी रौनक़ और चहल-पहल रहती है किन्तु जाड़े में वहां रेशम के कीड़ों के अण्डा-पालन-केन्द्र में लगे हुए व्यक्तियों के अलावा अन्य किसी जगह प्रायः कोई निवासी नहीं रहता। इस केन्द्र के खुल जाने से सामूहिक फ़ार्मों में रेशम-कीड़ा-पालन-उद्योग का विकास हो जाने के फलस्वरूप फ़िरुज़ा का प्रजातंत्र की व्यवस्था में एक अपना महत्त्व है।

फ़िरुज़ा में कभी आंधियां नहीं आतीं। यहां नदी के दोनों ओर एक सुन्दर पार्क है। बहार के मौसम में यहां के पेड़ों में तरह तरह के फूल दिखाई पड़ते हैं—गुलाबी, सफ़ेद, पीले। ग्रीष्म-ऋतु में तो पेड़ों की डालें फलों से लद जाती हैं। इस बस्ती में एक प्राचीन प्लेन का वृक्ष है जिसकी शाखाएं इतनी घनी और बृहदाकार हैं कि उनसे सोवियत सेना अवकाश-गृह के पार्क के लगभग आधे एकड़ क्षेत्र को शीतल छाया प्राप्त होती है। अशकाबाद के निवासी हमेशा इसकी ओर इंगित किया करते हैं। इसका तना अत्यधिक मोटा और ज़मीन से थोड़ा ऊपर चलकर आठ छोटे छोटे तनों में बंट गया है। यह वृक्ष मध्य एशिया भर में सबसे बड़ा और 'सात भाई' के नाम से मशहूर है। स्पष्ट है कि छोटा होने के कारण आठवें तने का शुमार भाइयों में नहीं किया गया है।

मई के प्रारम्भ से लेकर शरद्-ऋतु के आखिर तक फ़िरुज़ा की सड़कों पर साइकिलों, मोटर-साइकिलों और बसों आदि की क़तारें ही क़तारें दिखाई पड़ती हैं। इन गाड़ियों पर अशकाबाद के निवासी बस्ती के ठंढे बाग़ों और पार्कों का आनन्द लेने आया करते हैं।

सन् १९४८ के भूकम्प से फ़िरुज़ा पर कोई विशेष प्रभाव न पड़ा था।

यदि अशकाबाद के लगभग साढ़े पांच मील दक्षिण-पूर्व में पाये जानेवाले अनाऊ के खंडहरों का उल्लेख न किया जाये तो वहां के आस-पास के क्षेत्रों का वर्णन अधूरा रह जायेगा।

अनाऊ जानेवाली सड़क फ़िरुज़ा मार्ग की भांति बहुत सुन्दर नहीं कही जा सकती। यह सड़क वस्तुतः स्वोबोदा सड़क के साथ लगी परती ज़मीनों से होती हुई आगे बढ़ती है और हमें इस बात की याद दिलाती है कि पास ही कोई रेगिस्तान होगा। सड़क के दोनों ओर 'केमिल-थार्न' नामक झाड़ियां दिखाई पड़ती हैं। सड़क से होकर गुज़रनेवाली कारें, गधे तथा ऊंट अपने पीछे धूल उड़ाते चलते हैं और पूरी सड़क भूरे रंग की दिखाई पड़ने लगती है।

शीघ्र ही पर्वतों और रेलवे-लाइन के बीच मिट्टी के खम्भों का एक समूह दिखाई पड़ता है जिसके बाईं ओर मेड़ जैसी कुछ संरचना है। इस संरचना के समीप मस्जिद की भांति के एक भवन के मेहराबदार द्वार के कुछ ध्वंसावशेष मिलेंगे। सन् १९४८ के भूकम्प के पूर्व इस द्वार की एक अपनी शान थी। यह इलाक़ा अनाऊ है। पहाड़ों के निकटस्थ खम्भे प्राचीन सामन्ती क़िलेबन्दियों की मेड़ों (पुश्तों) तथा नगर के ध्वंसावशेष हैं, जब कि मस्जिद-नुमा उक्त भवन के अवशेष वास्तव में उस प्रसिद्ध विशाल मक़बरे के ध्वंसावशेष हैं जो ख़ोरासान के शासक और महान् उज़बेक कवि अलीशेर नवाई के समकालीन खान अब्दुल कासिम-बाबर द्वारा सन् १४५५ में बनवाया गया था।

मक़बरा ईंटों की एक वर्गाकार इमारत थी जिसके ऊपरी भाग पर एक चौरस-सा गुम्बद था। भवन सम्बन्धी इसका शिल्प मध्य एशिया की बहुत-सी प्राचीन इमारतों के अनुरूप है किन्तु प्रवेश-द्वार की मेहराब की सजावट मौलिक है। प्राचीन मुस्लिम संरचनाओं में पानेवाले ज्यामिति-नमूनों के बजाय अनाऊ द्वार की सौन्दर्य-वृद्धि के लिए उसपर दो परदार सर्प बने हुए हैं जो जीभ लपलपाते हुए एक दूसरे की ओर ताक रहे हैं। यह शिल्प मुस्लिम-कला का अतिक्रमण करता था क्योंकि इस कला में जीवित प्राणियों का, जिनमें सर्प भी शामिल होते थे, चित्रण

वर्जित था। मध्य एशिया भर के ज्ञात स्मारकों में इस प्रकार की सजावट अन्यत्र नहीं पायी जाती।

अनाऊ के आस-पास जो खुदाई हुई है उससे पता चलता है कि मक़बरे के पास का एक पुश्ता ईसवी सन् से भी ३०० वर्ष पूर्व उस समय बनाया गया था जब सिकन्दर महान् द्वारा स्थापित सल्तनत का पतन हो चुका था।

तरुण तुर्कमान प्रजातन्त्र की राजधानी उस प्रदेश में है जो सर्वप्राचीन मानव-संस्कृति के क्षेत्रों में से है। कोपेत-दाग़ की तलहटियों की निकटवर्ती घाटी उस मार्ग का एक भाग थी जिससे होकर यात्री मध्य एशिया तथा चीन से पश्चिमी देशों को जाया करते थे। किज़ील-अरवात से अशकाबाद तथा उसके और आगे दुशाक तक जानेवाली रेलवे के किनारे किनारे पुरानी इमारतों, बस्तियों, दीवालों और मन्दिरों के ध्वंसावशेष दिखाई पड़ते हैं।

यहां के वातावरण को देखकर हम कल्पना कर सकते हैं कि प्राचीन काल में मनुष्य इस उर्वर आतपस्नात् वादी के सौन्दर्य और उसकी उदारता के प्रति तटस्थ न था। यहां पर्वतीय एवं स्तेपीय वनस्पति हमारे समक्ष प्रकृति की गूढ़ निधियां खोलकर रख देती है। पर्वतों के बीच की संकीर्ण घाटियों अथवा जलते हुए जलहीन रेगिस्तानों का रास्ता पार कर लेने के बाद प्राचीन काल का बंजारा यहां आकर ठहरता था, अपने तम्बू तानता था, झरनों का शीतल जल पीता था और चरने के लिए घोड़े पर्वतीय चरागाहों में छोड़ देता था। यहां के स्थायी जल-स्रोतों ने मनुष्य को शिविर-जीवन का परित्याग करके ठोस निवास बनाने के लिए मजबूर किया। इसीलिए उसने यहां मिट्टी या ईंटों के मकान बनाये, क़िलेबन्दियां कीं और नहरें निकालीं।

यह बात उस काल से भी बहुत पहले की है जब तेक्के जन-जाति यहां आकर बसी थी। लोगों का विश्वास है कि अशकाबाद से कोई नौ मील दूर, बागीर के औल के निकट स्थित नेसा नगर सिकन्दर महान् द्वारा लगभग २५०० वर्ष पूर्व बसाया गया है। पहले इसका नाम अलेक्सान्द्रोपोल था। यह नगर कुछ समय के लिए शक्तिशाली ग्रेको-पार्थियन साम्राज्य की राजधानी भी था। प्राचीन भौगोलिकों का कहना है कि नेसा में बागों का बाहुल्य था। नहरें पहाड़ों का पानी अधिकांश मकानों तक

लाती थीं। कहीं कहीं पानी पाइपों द्वारा भी लाया जाता था इसलिए कि भाप द्वारा उसका अधिकांश उड़ने न पाये। जिस समय अरबों ने तेरह सौ वर्ष पूर्व आक्रमण किया था उस समय नेसा एक शानदार और समृद्ध नगर था। अबू-ईस्हा-इब्राहीम इब्न मुहम्मद अल-फ़ारिसी अल-इस्तहारी नामक प्रख्यात भूगोलवेत्ता ने, जो लगभग एक हज़ार वर्ष पहले जीवित था, नेसा के बारे में लिखा है कि "नगर समृद्ध है। यहां पानी और फलोद्यानों का बाहुल्य है। यह सेराख़्स की भांति विशाल है। यहां के घरों तथा सड़कों में पानी है। यह एक सुन्दर नगर है। इसका शासन बड़ी बड़ी और उर्वर बस्तियों पर है।"

अबू-अब्दुल्लाह-मुहम्मद इब्न अहमद इब्न अबू-बकर अल-मुकदम नामक एक दूसरा अरबी विद्वान, जो उसी शताब्दी में जीवित था, लिखता है–"नेसा एक बड़ा स्वास्थ्यकर और सुन्दर नगर है जहां पानी तथा दूसरी नियामतों की अधिकता है। यहां के पेड़ एक दूसरे से गुंथे हुए, फल स्वादिष्ट, मस्जिदें शानदार और रोटी खरी होती है। यहां की बाज़ार में दूकानों की कई क़तारें हैं, जहां मूल्यवान एवं दुर्लभ पदार्थ तक बिकते हैं। यहां के ऐसे मकान कम हैं जहां न तो उद्यान ही हैं और न बहता हुआ जल ही। यहां ७० सड़कें हैं और सभी के दोनों ओर सायादार वृक्ष . . ."

म० मैसन मध्य एशिया के सबसे अधिक लब्धप्रतिष्ठ पुरातत्ववेत्ताओं में से एक हैं। उनके नेतृत्व में पुरातत्ववेत्ताओं के एक दल ने पार्थियन संस्कृति पर प्रकाश डालने के सम्बन्ध में बहुत कुछ किया था।

यहां यह उल्लेखनीय है कि उक्त दल ने यह सिद्ध कर दिया था कि पार्थियन राजधानी किसी आक्रमण के फलस्वरूप अन्तिम रूप से नहीं नष्ट हुई। उसके नष्ट होने का कारण एक भूकम्प था जो बहुत कुछ वैसा ही था जैसा कि अभी हाल ही में अशकाबाद में आया था।

नेसा की अपेक्षा अनाऊ के बारे में लोगों की जानकारी कम है। प्राय: एक यही बात मानी जाती है कि इस नगर की स्थापना तैमूरलंग के वंशजों–तिमुरीदों–ने की थी। किन्तु ऐसा समझ लेना चाहिए कि यह एक भ्रामक धारणा है। अनाऊ शायद इसके पहले भी विद्यमान था किन्तु तब इसका दूसरा नाम था। यही कारण

है कि १५ वीं शताब्दी के पहले के किसी भी भूगोलवेत्ता ने इसका अनाऊ कहकर उल्लेख नहीं किया।

दूर दूर तक फैले हुए रेगिस्तान, जहां यत्र-तत्र ऊंटों के क़ाफ़िले नज़र आते हैं, फ़ेल्ट के किबित्का तथा प्राचीन काल में ही नष्ट हो गये नगरों और बस्तियों की ज़मीन में आधी आधी धंसी हुई दीवारें पहली बार तुर्कमनिया आनेवाले किसी भी व्यक्ति में इस भ्रामक धारणा का विकास करती हैं कि यह भूमि बड़ी प्राचीन है, बड़ी जीर्ण है।

जब कभी कोई यात्री तुर्कमनिया के विभिन्न भागों के ध्वंसावशेषों में अति प्राचीनता के कोई लक्षण देखता है तो कभी कभी उसे ऐसी बहुत-सी वस्तुओं के सम्बन्ध में भ्रामक धारणा होने लगती है, और वह दूरस्थ अतीत काल के कुछ चिन्हों को देखता ही रह जाता है, यहां तक कि गुज़रती हुई कार से उड़ती हुई धूल को भी वह प्राचीनता के अवशेष समझता है।

उदाहरणार्थ, अनाऊ के मक़बरे के ध्वंसावशेषों के समीप फ़ेल्ट का एक किबित्का है जो बहुत कुछ उन किबित्कों के समान है जिन्हें चंगेज़-ख़ां अथवा तैमूरलंग के दलों ने और स्वयं अलीशेर नवाई ने भी देखा था, जब कि सुल्तान बैकारा ने उसे निष्कासित कर दिया था। किबित्का के निकट आग जल रही है और लाल पोशाक पहने हुए एक महिला उसके समीप बैठी हुई खाना बना रही है। उसकी छाती पर एक आभूषण दिखाई पड़ रहा है जो चमकती हुई तश्तरी के आकार का है। पास ही एक गधा खड़ा है। उसकी पीठ पर दरी का एक थैला लटक रहा है। कुछ दूर बालू पर एक ऊंट लोट रहा है।

पाठक को ये विवरण उन बहुत पुरानी शताब्दियों के सम्बन्ध में चली आती हुई कहानी के समान लगेंगे जब अनाऊ का मक़बरा तथा अन्य प्राचीन उपासना-गृह और वे प्रासाद बने थे जिनका अब पुरातत्ववेत्ता बड़े उत्साह के साथ अध्ययन करते हैं। कितने रूढ़ हैं प्राचीन काल के ये तरीक़े! कितने धीरे-धीरे नूतनता प्राचीनता का स्थान ले रही है। और सबसे अद्भुत बात यह है कि यह किबित्का प्रजातंत्र की राजधानी से मानो दो ही क़दम पर है।

आइये हम प्राचीनता की रूढ़िवादिता के प्रति अपने रोष पर नियंत्रण करते हुए लाल पोशाक वाली उक्त महिला से उसके किबित्का में, जो रेगिस्तान के लोगों का एक पुराना आवास है, प्रवेश करने की अनुमति लें और उसके तथा उसकी स्वामिनी के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त करें।

४

किबित्का अथवा यूरता (तुर्कमान इसे 'ऊई' बोलते हैं, जिसका अर्थ होता है–मकान) फ़ेल्ट के टुकड़ों से चारों ओर से ढंका हुआ लकड़ी का एक चौखटा है। ऊपर का भाग आसानी से उठाकर पीछे खिसकाया जा सकता है और इस प्रकार हवा और रोशनी अन्दर आ सकती है। यही खुला हुआ भाग उस समय एक चिमनी का काम देता है जब किबित्का में आग जलायी जाती है। किबित्कों में रहनेवाले लोग खुले स्थान पर तिपाई जैसी अंगीठियों अथवा तगारों पर खाना बनाना अधिक पसन्द करते हैं। रोटी हमेशा किबित्कों के बाहर तंदूर नामक मिट्टी की अंगीठियों में सेंकी जाती है।

रूसी झोंपड़ों की तरह किबित्का के कोने कोने तक का एक परम्परागत प्रयोग है। चूंकि किबित्का गोल होता है और वस्तुतः उसमें कोई कोने नहीं होते इसलिए 'इज़्ज़त की जगह' वह क़ालीन या फ़ेल्ट समझा जाता था जो मुख्य द्वार के ठीक दूसरी ओर बिछा होता था और स्वामी के लिए अथवा किसी अतिथि के लिए सुरक्षित रहता था। किबित्का का बामार्द्ध स्त्रियों के लिए और दहिनार्द्ध पुरुषों के लिए होता था। मकान की सज्जा में दरियां और फ़ेल्ट के बिछौने, रज़ाइयां, तकिये और विभिन्न आकार-प्रकार के चुवाल (थैले) होते थे जो बन्जारों के लिए अल्मारियों और दराज़ों के काम आते थे।

यह किबित्का और इसकी सारी साज-सज्जा कुछ ही घंटों में बांधी और ऊंटों या घोड़ों की पीठों पर लादी जा सकती थी। इस प्रकार की आवास-व्यवस्था उस चरवाहे के लिए अत्यधिक उपयोगी हुआ करती थी जिसे अपने पशु-समूहों के साथ साथ एक चरागाह से दूसरे चरागाह तक जाना पड़ता था।

पशु-पालन तुर्कमान जन-जातियों का, जिनमें से सभी बन्जारे या अधबन्जारे

होते थे, मुख्य उद्यम था। कुछ जातियां नदी की घाटियों में भी बस गयी थीं और खेती-बारी करने लगी थीं। किन्तु देहक़ानों की सम्पदा उनकी भेड़ों या ऊंटों से आंकी जाती थी। इस सम्पदा से तुर्कमान जन-जीवन और लोगों की भौतिक एवं आध्यात्मिक संस्कृति का भी ज्ञान होता था।

चरवाहे होने के कारण तुर्कमान लोगों को लिखित भाषा का विकास करने का कोई अवसर नहीं मिला। यही कारण था कि लिखित मुस्लिम मज़हबी क़ानून शरीअत इस ज़मीन पर अपनी जड़ न जमा सकी। उदाहरणार्थ पास-पड़ोस के मुसलमानी प्रदेशों—ख़ीवा तथा बुख़ारा—में शरीअत के अनुसार व्यवहार किया जाता था जब कि तुर्कमनिया में उसके स्थान पर प्रायः सभी जगह आदत—मौखिक रीतिक क़ानून—का बोलबाला था। जिन मामलों में आदत का प्रयोग संभव न होता था उनमें लोग तुर्कमानचिलिक का आश्रय लेते थे, जो वस्तुतः नैतिक पथ-प्रदर्शन के अतिरिक्त और कुछ न था। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि औलों में स्थानीय शासक और मुखिया ग़रीब जनता को ग़ुलामी में बनाये रखने के लिए तुर्कमानचिलिक और आदत दोनों का ही इस्तेमाल करते थे।

सोवियत शासन की स्थापना के बाद से सारी तुर्कमान जनता को लिखना सिखाया गया। क्रान्ति के पूर्व तक साक्षर व्यक्तियों की संख्या इतनी थोड़ी थी कि जो देहक़ान लिख-पढ़ सकते थे उनके नामों के साथ 'मुल्ला' शब्द जुड़ा रहता था जैसे मुल्ला-नेपेस, मुल्ला-केमिने। मुल्ला वस्तुतः मुसलमानों में मौलवी को कहते हैं। किन्तु इसका यह मतलब नहीं कि १६ वीं शताब्दी के कवि मुल्ला-नेपेस अथवा कवि और व्यंग-लेखक मुल्ला-केमिने मौलवी थे। वे विद्वान व्यक्ति थे और इसीलिए उनके नामों के आगे 'मुल्ला' शब्द का प्रयोग होता था।

उपर्युक्त सभी बातों के होते हुए भी निरक्षर एवं बन्जारों का जीवन बितानेवाले तुर्कमान लोगों का एक अपना राष्ट्रीय साहित्य था और एक अपना काव्य। उसकी लोक-कथाएं और राष्ट्रीय कविता दूर दूर तक विख्यात थी और प्रदेश भर के लोग उससे परिचित थे।

तुर्कमान लोक-साहित्य का उल्लेख करते हुए कवि केमिने के साहसपूर्ण कार्यों से सम्बद्ध कहानियों का भी वर्णन कर देना असंगत न होगा क्योंकि वह एक जनप्रिय कवि

था और स्थानीय शासकों, मुल्लों, अधिकारियों तथा देहक़ानों को पीड़ित करनेवाले अन्य अत्याचारियों का विरोध करने के निमित्त सारी जनता का गले का हार था। उसका नाम स्वयं उसी के जीवन-काल में जन जन की ज़बान पर नाचने लगा था। लोग उसकी उन विद्वत्तापूर्ण बातों का प्रयोग करने लगे थे जो कभी उसने श्रौल के शासकों की निरंकुशता, भ्रष्टाचार और लोभ का पर्दाफ़ाश करने के निमित्त कही थीं। इसीलिए इस कवि का नाम (यद्यपि उसका असली नाम मुल्ला-वेली था) केमिने पड़ा जिसका अर्थ होता है 'आपका ही'—अथवा और अधिक शाब्दिक अर्थ है 'आपका विनीत सेवक'। यह महाकवि उन अनेकानेक कहानियों का नायक था जो अब तुर्कमान लोक-कथाओं की मुख्य अंश हैं।

केमिने की निर्धनता का उल्लेख छोटी से छोटी कहानी में मिलता है। वह कंगाल ज़रूर था लेकिन ख़ुशदिल था, और उसने जो कुछ भी लिखा या किया था उसमें उसने निर्धनता को ललकारा था, उसे चुनौती दी थी। निम्नलिखित कुछ कथाएं इस बात का ज्वलंत प्रमाण हैं।

केमिने के पुत्रों को खाने के लिए कभी भी पर्याप्त भोजन न मिलता था। वे इस अभाव से तंग आ चुके थे। अतएव एक पुत्र केमिने के पास जाकर कहने लगा—

"पिता जी, यह ग़रीबी आख़िर कब हमारा पिंड छोड़ेगी?"

उत्तर में केमिने मुस्करा दिया।

"बेटे, अभी तुम बहुत-सी बातें नहीं समझते। हम लोग एक शान्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं। हम किसीको दुःख नहीं पहुंचाते क्योंकि न तो हम ख़ान ही हैं और न स्थानीय शासक ही। तो फिर ग़रीबी एकाएक हमें कैसे छोड़े? क्या हमने उसे कोई कष्ट पहुंचाया है?"

एक रात कुछ चोर केमिने के किबित्का में घुस गये और सामान उठा ले जाने के लिए इधर-उधर टटोलने लगे। केमिने उस समय सोने तक का बहाना न कर सका। आख़िरकार उसे ज़ब्त न हुआ और वह कह उठा—

"अरे, बेवक़ूफ़ो, यहां दिन की रोशनी में तो कुछ मिलने को नहीं और तुम आये हो रात के अंधेरे में ढूंढने के लिए।"

तुर्कमान जनता की काव्य-सम्पदा केवल लोक-कथाओं तक ही सीमित न थी। तुर्कमनिया में कुछ उच्च कोटि के कवि भी थे जिनके कुछ संग्रह आज भी बड़े लोकप्रिय हैं। इन कवियों के नाम थे मख़्तूमकुली, ज़ेलिली, केमिने और मुल्ला-नेपेस।

उपर्युक्त चारों कवियों ने अपने अन्य समकालीन कवियों को इतना अधिक प्रभावित किया था कि उन्हें पूर्व के उत्कृष्ट कोटि के कवियों – हाफ़िज़, उमर ख़ैयाम और फ़िज़ूली – के समकक्ष रखा जा सकता है।

प्रश्न हो सकता है कि जब तुर्कमनिया की अधिकांश जनता निरक्षर थी तो वहां कविता का प्रसार कैसे हुआ और जो कविताएं सैकड़ों वर्ष पूर्व रची गयी थीं और जो अधिकांशतः लिखित रूप में नहीं थीं वे बिना किन्हीं उल्लेखनीय परिवर्तनों के आज तक सुरक्षित कैसे रहीं?

५

काव्यों की सुरक्षा का श्रेय बख़्शी नामक पुरुषों को हैं जिन्होंने तुर्कमानी कविता को ज़िन्दा ही नहीं रखा अपितु उसका प्रसार भी किया।

बख़्शी एक गायक, कथावाचक, संगीतज्ञ और कभी कभी कवि और प्रायः, जैसा कि उसके नाम से ही स्पष्ट है, इन सबसे भी कुछ अधिक होता था। तुर्कमनिया में गायक अइदीमची और संगीतज्ञ वाद्य के प्रकारों के आधार पर – दो तारों वाला दुतार, बांसरी वाला तुइदुक अथवा खोखले कुष्मांड (कद्दू) से बना हुआ चिकारे जैसा एक आदिकालीन बाजा गिजाक आदि – दुतारची, तुइदुक्ची या गिजाक्ची होता था। कवि को शायर कहते हैं किन्तु बख़्शी को उपर्युक्त सारे गुणों से ओत-प्रोत समझा जाता था।

बख़्शी के गानों और कहानियों को सुनकर औलों के निवासियों को अपने बुज़ुर्गों के महान कार्यों तथा अपने पड़ोसियों की वीरताओं का ज्ञान होता था।

अतीत काल से ही लोक-कथाओं का निर्माता और संग्राहक तथा उन प्राचीन कविताओं का प्रमुख प्रचारकर्त्ता बख़्शी ही होता था। ये कविताएं दो प्रकार की होती थीं – एक वे जिन्हें उनके लेखक लिख लिया करते थे और दूसरे वे जो काग़ज़ पर कभी नहीं लिखी जाती थीं।

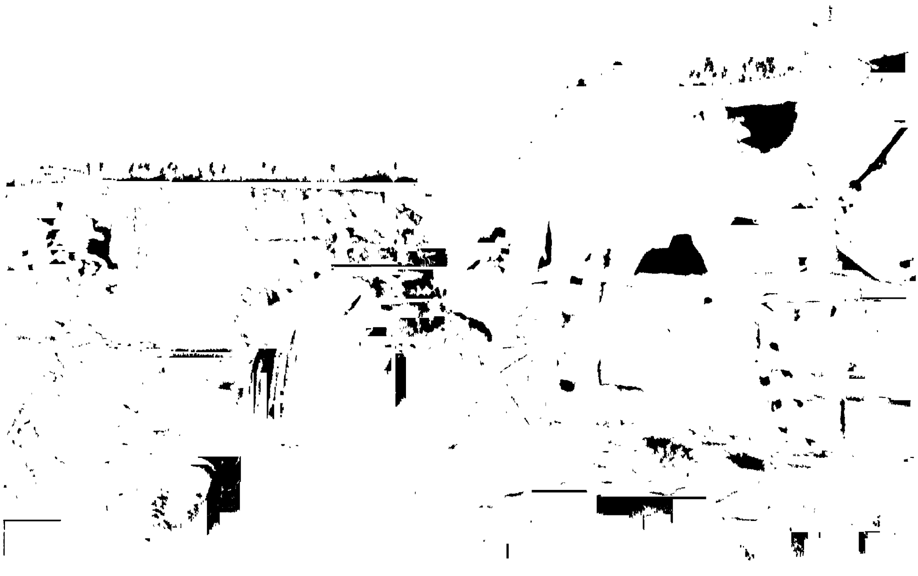
बख़्शी के माध्यम से तुर्कमान जनता ने अपने प्राचीन श्रेष्ठ साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया और इसी कारण जनता पर प्राचीन काव्य का निरंतर और गहरा प्रभाव पड़ता रहा। जहां कहीं बख़्शी जाता उसकी इज़्ज़त होती और लोग उसका स्वागत करते। जब कभी औल में कोई महत्त्वपूर्ण बात होती तो बख़्शी प्रायः सदैव उपस्थित रहता। पैदल या घोड़े पर, वस्त्रों के साथ दुतार या तुइदुक बांधे वह प्रायः दिखाई पड़ जाता और इस रूप में प्रत्येक औल वाले उससे भली भांति परिचित रहते। उसके लिए खान-पान की कोई भी कमी न रहती। सुननेवाले उसे हमेशा घेरे रहते। बख़्शी बातचीत में भाग लेता और उसके बाद लोग उससे गाने का अनुरोध करने लगते। और वह अपने वाद्य को ट्यून करते करते वहां एकत्र लोगों को कोई न कोई ऐसी कहानी सुनाने लग जाता जिसमें कुछ सच्चाई होती और कुछ कल्पना। बीच बीच में वह कोई ऐसी मज़ेदार बात भी छेड़ देता जिसे सुनकर लोग हंस पड़ते। ट्यूनिंग पूरी कर लेने के पश्चात् वह गाना आरम्भ कर देता और लोग चुपचाप सांस रोके सुना करते। यह गाना या तो जनता के कल्याण के लिए लड़नेवाले प्रसिद्ध नायक गेर-ओगली के बारे में किसी पौराणिक कथा का अंश होता या मख़्तूमकुली, मुल्ला-नेपेस या केमिने की कोई कविता। उसके इर्द-गिर्द खड़े लोग बड़े ध्यान से उसे सुनते, उसके छंदों की सराहना करते और प्रत्येक शब्द याद करने का पूरा पूरा प्रयत्न करते। यदि बख़्शी कभी कुछ भूल जाता या किसी पंक्ति पर अटक जाता तो श्रोताओं में से कोई न कोई ऐसा ज़रूर निकल आता जो या तो उसकी ग़लती ठीक कर देता या आगे के शब्द धीरे से बोल देता जिससे बख़्शी का गाना निर्बाध चला करता।

प्रसिद्ध बख़्शियों के नाम जनता की ज़बानों पर बहुत काल तक बसे रहे। तुर्कमानों ने अपने इतिहास के किसी काल-विशेष को शासकों—शाहों अथवा अमीरों—के नामों से संबद्ध नहीं किया जैसा कि ख़ोरेज़्म या बुख़ारा में हुआ था। इसका कारण यह था कि तुर्कमनिया कभी भी एक ऐसी संघटित सल्तनत नहीं रही जिसपर सभी जन-जातियों के लिए एक शासक रहा हो। 'शहनशाहों के कालक्रम' के स्थान पर 'गायकों और कवियों का कालक्रम' निर्दिष्ट होने लगा।



इयोलातान बध

चिगीर—खेतो की सिचाई का एक पुराना तरीका





कपास की बुआई

उन अस्थायी नहरो की खुदाई जिनका प्रयोग एक नयी सिंचन-प्रणाली में किया जा रहा है



क्रान्तिपूर्व के तुर्कमनिया में काव्य-कला और सामाजिक चेतना का विकास करने में बख़्शियों ने कितना महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। उच्च कोटि की कविताओं के इन जानकारों तथा लोक-कथाओं के निर्माताओं ने जन-समूह की आदर्शवादी और शृंगारिक भावनाओं को वाणी दी थी।

औल के शासकों ने बख़्शियों का महत्त्व समझा और उनकी लोकप्रियता से अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न किया। उन्होंने घूस, वादों, चाटुकारिता, भेंटों और कभी कभी धमकियों जैसे अनेक साधनों को अपनाकर उनके गानों तथा उनकी कथाओं के चुनावों पर प्रभाव डालने का भी प्रयत्न किया। प्रायः वे अपने इन प्रयत्नों में सफल हो जाते और जिन बख़्शियों को अपने पक्ष में कर लेते वे फिर ख़ानों, सरदारों और शासकों के ही गुणों का गान करने लगते। जहां तक तुर्कमान लोक-कथाओं के आदर्शवादी तथा कलात्मक तत्वों का संबंध है वे किसी भी अन्य देश की कथाओं के समान एकरूप नहीं हैं। कुछ लोक-कथाएं जनता के हितों के विपरीत ही नहीं अपितु इस प्रकार की भी हैं जिनमें शत्रु-पक्ष का चित्रण किया गया है। ऐसी कथाएं स्थानीय शासकों तथा अन्य सामन्ती नरेशों द्वारा बख़्शियों को विविध प्रकार से प्रभावित करने के फलस्वरूप पनपी हैं।

लोकप्रिय गानों में अपने स्वार्थों के लिए इच्छानुसार परिवर्तन करा लेने के जनता के शत्रुओं के प्रयासों का एक सुन्दर उदाहरण स्वयं हमारे ही ज़माने में मिलता है। घटना का नायक एक गायक था जो बाद में सोवियत तुर्कमनिया का जन-गायक बना। इस गायक का नाम था दुर्दी क्लिच जो यद्यपि अन्धा था (उसकी आंखें बचपन में ही जाती रही थीं) फिर भी तशौज़ क्षेत्र में गायक, संगीतज्ञ और कथावाचक के रूप में बहुत प्रसिद्ध था।

जिस समय बसमाची नेता जुनैद-ख़ां ने सोवियत शक्ति के विरुद्ध विप्लव किया उस समय उसने इस लोकप्रिय गायक की सेवाएं प्राप्त करने का निश्चय किया। वह चाहता था कि दुर्दी क्लिच कम्यूनिस्टों का बखान करना बन्द करके बसमाचियों की प्रशंसा में गीत बनाये और गाये। इसके बदले में बसमाची नेता ने उसे मालामाल कर देने का वचन दिया। किन्तु गायक ने एक ग़रीब देहक़ान का पुत्र होते हुए भी उस समय

से जब से क्रान्ति भड़की थी दृढ़तापूर्वक जनता का पक्ष लिया था और साहस के साथ सोवियत शक्ति का समर्थन किया था।

जब उसपर शब्दों का कोई असर न हुआ तो बसमाची नेता ने शक्ति का दामन पकड़ा। उसने दुर्दी को पकड़ लाने के लिए अपने आदमी भेजे।

"तुम कम्यूनिस्टों के ख़िलाफ़ गानों की रचना करोगे या नहीं ?" उन दुष्टों ने उससे पूछा।

दुर्दी क्लिच ने उत्तर दिया कि उसके दुतार ने जनता के हितों के प्रतिकूल कभी एक भी झंकार न तो पैदा ही की और न करेगा ही।

इस जन-गायक को उपहारों के वादे किये गये। फिर उसे मारा-पीटा गया और आख़िर में एक काल-कोठरी में फेंक दिया गया। गायक ५२ दिन तक वहां पड़ा सड़ता रहा और यह सोचता रहा कि न जाने कब उसे फांसी पर लटका दिया जाय। आख़िर किसी प्रकार वह भाग निकला। उसकी मदद उन सीधे-सादे लोगों ने की थी जिन्हें उसके गाने ज़बानी याद थे। उसके गानों में से सबसे अधिक प्रख्यात थे 'झोंपड़ा', 'चिगीर', 'कोट' और 'सवार'। इन गानों में ग़रीब जनता की दुर्दशा के प्रति सहानुभूति प्रकट की गयी थी।

दुर्दी क्लिच सबसे निकटस्थ सोवियत सैनिक कमान के कमान्डर के पास गया और बोला कि "मेरी आवाज़ सोवियतों की सेना की आवाज है और मैं हर उस जगह जाने को तैयार हूं जहां क्रान्ति के संचालक मुझे जाने की आज्ञा देंगे"। सोवियत सेना के दस्तों के साथ यह अन्धा गवैया ताशक़न्द, पिशपेक (फ़्रून्ज़े) और समरक़न्द गया और हर जगह उसने बसमाचियों के ख़िलाफ़ गाने गाये और सोवियत सेना, कम्यूनिस्ट पार्टी तथा तुर्कमान जनता के नवीन सुखद जीवन के गुण बखाने।

किन्तु ऐसे ऐसे बख़्शी और शायर भी थे जो औल के शासकों के वादों के आगे घुटने टेक देते थे। ऐसे लोगों ने अच्छे पुलाव और अच्छे कपड़ों के लिए अपनी प्रतिभा बेच दी थी। तुर्कमान लोक-कथाओं में ऐसी ऐसी कहानियां भी हैं जिनमें इन भाड़े के गवैयों और संगीतज्ञों को फटकारा गया है और उनकी भर्त्सना की गयी है।

यदि हमने औलों के प्राचीन इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए स्थानीय शासकों के इन टट्टुओं के गानों का प्रयोग किया होता तो स्थिति ही दूसरी होती और हमारे प्रदेश का न जाने क्या हाल हुआ होता।

प्रसन्नता की बात है कि जो चीज़ें जनता के हितों के प्रतिकूल होती हैं वे अधिक दिन तक लोगों को याद नहीं रहतीं। और वह समय आता है जब लोग उन बातों को, उन कुशिक्षाओं को भूल जाते हैं जिन्हें औलों में पिछड़ेपन के कारण वे मुस्लिम कट्टरपंथी, मुल्ले तथा उनके मालिक—स्थानीय शासक—उनके गले तले उतारने को कोशिश करते रहे जिनका मुख्य उद्देश्य औल के ग़रीबों को हमेशा के लिए दासता, भाग्य और बेगार के बन्धनों में जकड़ रखनेवाली पद्धति की रक्षा करना होता था।

६

प्राचीन तुर्कमनिया में शिक्षा के भी कुछ केन्द्र थे। कुछ औलों में मकतब थे जिनमें मुल्ले पढ़ाया करते थे और विद्यार्थियों से इतनी अधिक फ़ीस लेते थे कि वह उनके माता-पिता की सामर्थ्य के बाहर होती थी। चारी अशीरोव ने, जो आजकल का एक तुर्कमान लेखक, कवि तथा अनुवादक है तथा जो कभी ऐसे ही एक मकतब में पढ़ता था, इन स्कूलों तथा उनकी पढ़ाई के बारे में बहुत कुछ लिखा है।

वह लिखता है—"अरबी भाषा हमारे लिए एक विदेशी भाषा थी। मुल्ला उस भाषा की कोई पुस्तक उठा लेता और उसे ज़ोर ज़ोर से पढ़ना आरम्भ कर देता। और उसके शिष्य बिना कुछ समझे-बूझे उसे शब्दशः दुहराने लगते। मेरी समझ में भी कुछ न आता, इसलिए मैं तो रोने लगता। यह पुस्तक 'हफ़्तियक' थी, जो मुस्लिम सम्प्रदाय की आरम्भिक पाठ्यपुस्तक थी। इस पुस्तक में एकमात्र क़ुरान के उद्धरण थे। जब हमने 'हफ़्तियक' ज़बानी याद कर ली, यद्यपि हम उसका एक शब्द भी न समझ सके थे, तो हमें क़ुरान दी गयी। जैसा कि 'हफ़्तियक' के मामले में होता था वैसा ही क़ुरान के संबंध में भी हुआ। मुल्ला हमारे सामने क़ुरान पढ़ता और हम सब दुहराते और बिना एक शब्द समझे हुए उसके प्रत्येक शब्द को हिफ़्ज़ करते। उसके बाद हमने स्वयं वह पुस्तक उठायी और अपनी स्मृति के भरोसे उस पाठ में से, जिसे हम पहले पढ़ चुके थे, भिन्न भिन्न शब्दों को समझने लगे। ऐसा हमने बहुत

समय तक किया। इस प्रकार लगातार कई कई दिनों तक अरबी के वर्णों पर निगाह गड़ा चुकने के बाद मैंने अरबी वर्ण के तत्वों का अनुमान लगाना आरम्भ कर दिया। लेकिन बस मैं अरबी की एक ही पुस्तक पढ़ सकता था और वह पुस्तक वह थी जो मुझे ज़बानी याद थी। स्कूल का पाठ्यक्रम नवाई और एक अन्य प्राचीन कवि बेदिल की कविताओं के पढ़ने के साथ साथ समाप्त हो गया। मैंने उन्हें पढ़ने में कई वर्ष लगा दिये। मैंने बहुत-सी अच्छी अच्छी कविताएं भी सीखीं, किन्तु मुझे भूगोल, गणित या स्वयं अपनी तुर्कमान भाषा का रत्ती भर भी ज्ञान न कराया गया। मुझे रूसी भाषा का एक शब्द भी न मालूम था ..."

मकतब की पढ़ाई पूरी कर चुकने के बाद धनी लोगों के बच्चे 'उच्च' शिक्षा प्राप्त करने के लिए बुख़ारा या ख़ीवा के मदरसों में जाया करते थे। वहां उन्हें भूगोल, गणित तथा इतिहास की प्रारम्भिक बातें पढ़ायी जातीं और इन सारे ही विषयों का प्रतिपादन इस्लाम के उसूलों के ही अनुरूप किया जाता।

प्रसिद्ध ताजिक लेखक सदरिद्दीन आइनी बीसवीं शताब्दी के आरंभ में बुख़ारा के एक मदरसे का विद्यार्थी था। अपने संस्मरणों में उसने उन विषयों की एक सूची दी है जो उच्चतर मुस्लिम स्कूलों में पढ़ाये जाते थे। वह लिखता है—

"बुख़ारा के मदरसे में हम लोगों को अरबी भाषा (ध्वनि-विज्ञान एवं पद-विन्यास), तर्कशास्त्र, अलंकार-शास्त्र, अध्यात्मवाद के दृष्टिकोण से प्राकृतिक विज्ञान तथा पूजन के पूर्व हाथ धोने, व्रत रखने, मुर्दे दफ़नाने और हज करने से संबद्ध नियम, ख़रीद-फ़रोख़्त का क्रम, ग़ुलाम रखने और उन्हें आज़ाद करने के नियम, विवाह तलाक़ और शरीअत के वे दूसरे नियम पढ़ाये जाते थे जिनकी जानकारी धार्मिक अथवा राजनैतिक क्रियाशीलताओं के लिए आवश्यक होती थी...

"...प्रारंभिक स्कूल की पढ़ाई पूरी कर लेने के बाद भी बच्चा निरक्षर रह सकता था।"

ज़ारशाही सरकारी आंकड़ी के अनुसार, २०वीं शताब्दी के आरम्भ में कास्पियन-पार क्षेत्र की वह 'अर्द्धनिरक्षर साक्षर' जनसंख्या, जो लिख-पढ़ सकती थी, कुल तुर्कमान जनसंख्या की ०.७ प्रतिशत थी।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति ने तो काया ही पलट दी। उस काल में जो थोड़े बहुत मदरसे थे भी उनके स्थान पर अनेकानेक नये नये स्कूल खुल गये। क्रान्ति ने एक राष्ट्रीय मुद्रणालय को जन्म दिया। पुराने ज़माने में तुर्कमान भाषा में एक भी अख़बार न छपता था। इसीलिए यह नहीं कहा जा सकता था कि तुर्कमान साहित्यिक भाषा को एक सम्यक् स्वरूप देने की प्रक्रिया पूर्ण हो चुकी है।

१५ नवम्बर १६१७ को 'रूस की जनता के अधिकारों की घोषणा' को एक सार्वजनिक रूप दिया गया। भूतपूर्व रूसी साम्राज्य की जिस जनता के सामने क्रान्ति ने स्वतंत्रता, समृद्धि और संस्कृति के द्वार उन्मुक्त कर दिये थे उनके पारस्परिक संबंधों को सुदृढ़ बनाने के लिए समाज में समानता, पारस्परिक विश्वास और सौहार्द जैसे मानव-गुणों का विकास हुआ।

सन् १६२० में अशकाबाद में तुर्कमान भाषा का एक समाचारपत्र निकलना शुरू हुआ जिसका नाम था—'तुर्कमनिस्तान'। इसकी ग्राहक-संख्या ८०० थी। जब तुर्कमनिया एक संघीय प्रजातन्त्र बन गया उस समय कुछ अन्य समाचारपत्र और 'तोकमक' ('थप्पड़') नामक एक पत्रिका प्रकाशित की गयी। शीघ्र ही इस पत्रिका के काफ़ी अधिक ग्राहक बन गये। पत्रिका साहित्यिक थी और कलात्मक व्यंग्यों से परिपूर्ण।

उन वर्षों में औलों की अधिकांश जनता निरक्षर थी। किन्तु उन व्यक्तियों, विशेषकर युवक नर-नारियों, की संख्या में बराबर वृद्धि होती जा रही थी जो निरक्षरता दूर करने के लिए खोले गये स्कूलों की पढ़ाई समाप्त कर रहे थे। ऐसे व्यक्ति औलों में प्रथम सोवियत सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। उन्होंने नयी सोवियत व्यवस्था और जीवनचर्या में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने की दिशा में प्रचार किया। जब कभी नगर से नयी डाक आती तो वे देहक़ानों को जमा कर लेते और उन्हें अख़बारों और पत्रिकाओं के लेख सुनाने लग जाते।

श्रोता-लोग समाचारपत्रों की राजनैतिक ख़बरों और 'तोकमक' की व्यंग्यात्मक कविताओं को ज़बानी याद कर लेते और, जैसा कि उन दिनों की लोक-कथाओं के संबंध में होता था, ये ख़बरें और कविताएं तुर्कमान स्तेपी के दूर से दूर तक के कोनों में पहुंच जातीं।

सन् १९२३ और १९२५ के बीच 'तोकमक' और 'तुर्कमनिस्तान' में सोवियत विषयों पर पहली कविताएं प्रकाशित की गयीं। ये कविताएं कराजा बुरूनोव, बेर्दी केर्बबायेव, मुल्ला-मुर्ता और यकूब नसीरली द्वारा रची गयी थीं। इसीलिए इन कवियों को तुर्कमनिया के लिखित सोवियत साहित्य का स्रष्टा मानना चाहिए। 'लिखित' शब्द पर ज़ोर देने का कारण यह है कि लोक-कथावाचकों और गायकों— दुर्दी क्लिच, केर-मुल्ला आदि—द्वारा रचित सोवियत; कविता उस समय भी मौखिक रूप में चली आ रही थी जब तुर्कमान भाषा में प्रथम प्रकाशन देखने में आये थे।

रूसी श्रमिक वर्ग और रूस के समुन्नत विज्ञान एवं उसकी कला द्वारा प्रस्तुत आदर्शों ने तुर्कमान जनता की एक निजी राष्ट्रीय समाजवादी संस्कृति का निर्माण करने में उसकी सहायता की।

रूस के वैज्ञानिकों, लेखकों और नाट्य-कलाकारों ने तुर्कमनिया के युवक बुद्धिजीवियों को विज्ञान, कला और साहित्य के क्षेत्र में पूरी पूरी सहायता पहुंचायी और उनका निर्देशन किया।

मक्सीम गोर्की की प्रेरणा से सन् १९३० में निकोलाई तीखोनोव और प्योत्र पवलेंको के नेतृत्व में रूसी लेखकों का एक दल तुर्कमनिया पहुंचा था जिसने सर्वप्रथम सोवियत पाठकों का परिचय सोवियत तुर्कमान संस्कृति की सफलताओं से कराया था।

सन् १९३० तक औलों में ८०० स्कूल हो गये थे जिनमें विद्यार्थियों की संख्या २५ हज़ार थी। उन वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में एक अत्यधिक आवश्यक सुधार किया गया था। अरबी के स्थान पर लेटिन की वर्णमाला चलायी गयी क्योंकि लिखित अरबी में पटुता प्राप्त करने के लिए दीर्घकाल तक माथा-पच्ची करनी पड़ती थी। कुछ वर्षों बाद रूसी वर्णाक्षरों पर आधारित राष्ट्रीय तुर्कमान वर्णाक्षर चलाये गये।

तुर्कमनिया में उच्च शिक्षा की प्रथम संस्था पहली पंचवर्षीय योजना-काल में खोली गयी थी। सन् १९३१ में अशकाबाद में एक अध्यापक-संस्था की नींव पड़ी और इस प्रकार औलों के लड़के-लड़कियों ने, जो पहले कभी या तो किसी खेत में

मेहनत-मजूरी करते थे या जानवर चराते थे, ज्ञान के उस संसार में प्रवेश किया जिसकी उनके बाप-दादों ने कल्पना भी न की थी।

कवयित्री और नाटककार तौशान एसेनोवा ने, जिसका 'शेमशात' ('करोड़पति की पुत्री') नामक एक नाटक तुर्कमनिया तथा अन्य संघीय प्रजातंत्रों के थियेटरों में कई बार खेला जा चुका है, बताया है कि सामूहीकरण के प्रथम वर्षों में औलों के नवयुवकों को ज्ञान प्राप्त करने की कितनी उत्कट अभिलाषा थी—

"यह सांस्कृतिक क्रान्ति के आरम्भ का युग था और प्रत्येक वह व्यक्ति ज्ञान के मार्ग में क़दम रखने के लिए लालायित दिखाई पड़ रहा था जो यह समझने लगा था कि वह प्राचीन आदत और तुर्कमानचिलिक जीवन की समस्त समस्याओं का अन्तिम और पूरा पूरा समाधान प्रस्तुत कर सकने में असमर्थ हैं।

"जिस वर्ष मध्य एशिया का परिसीमन हुआ था उस समय मैं एक छोटी-सी लड़की थी और मेरे इर्द-गिर्द जो कुछ हो रहा था उसे समझने में असमर्थ। जब हमें सामूहिक फ़ार्मों के संबंध में पहली खबर मिली उस समय हमारे एक दूर के रिश्तेदार हमसे मिलने आये। ये सज्जन मास्को हो आये थे और स्वयं लेनिन से भी मिल चुके थे। उन्होंने एक सभा में लेनिन का भाषण सुना था और हमें बताया था कि सांस्कृतिक क्रान्ति के बारे में लेनिन ने कहा था कि 'स्वातंत्र्य-सूर्य के उदय के साथ ही साथ ज्ञान का भी प्रकाश फैलता है'। स्वातंत्र्य-सूर्य से ज्ञान की किरणें फटने की बात ने मुझपर गहरा प्रभाव डाला। मैंने अपने मित्रों से कहा—'यदि आप लोग कॉखका में (हम लोग अशकाबाद क्षेत्र में कॉखका स्टेशन के समीप रहते थे) रहना और शादी-विवाह करना चाहें तो आप जानें, लेकिन व्यक्तिगत रूप से मैं तो आसमान के सूर्य से भी बड़े सूर्य को देखना चाहती हूं। मैं उस सूर्य को पाना चाहती हूं जिसे लेनिन ने पुस्तकों में बताया था।'"

तौशान अशकाबाद चली गयी। उसने चौदह वर्ष की उम्र में माध्यमिक स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर ली। ज्ञान के सूर्य की प्रथम किरण ने इस बच्ची के हृदय में प्रवेश किया। उसकी इच्छा थी कि अन्य तुर्कमान बालिकाएं भी इस प्रकाश को प्राप्त करें। उसकी पहली कविता एक समाचारपत्र में सन् १९३० में प्रकाशित हुई थी।

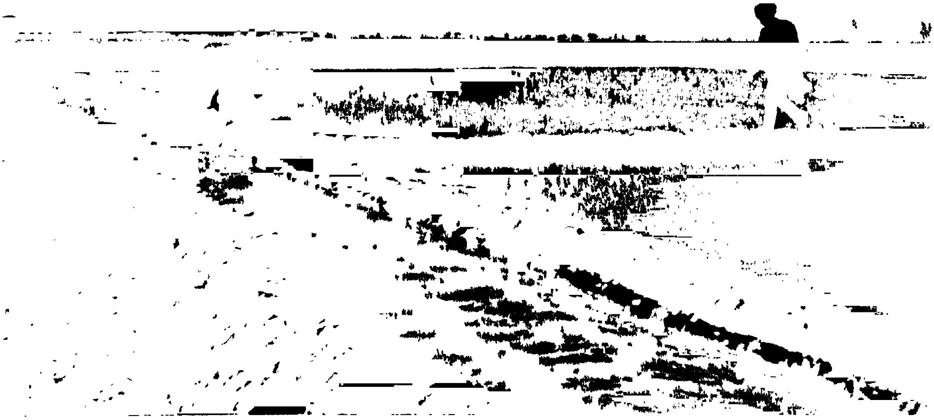
साक्षरता अब तुर्कमान सोवियत समाजवादी प्रजातंत्र में अपवाद नहीं अपितु निश्चित नियम है। अब अशकाबाद में उपर्युक्त एकमात्र अध्यापक-संस्था के स्थान पर उच्च शिक्षा की छः संस्थाएं हैं और वे हैं अशकाबाद, चार्दज्हू और तशौज़ में। सन् १९५० में अशकाबाद में तुर्कमान गोर्की राजकीय विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी थी, और सन् १९५१ में, जब तुर्कमान विज्ञान-अकादमी ने कार्य करना आरम्भ किया था, तुर्कमनिया में ५५ डाक्टर तथा विज्ञान के कैन्डीडेट थे। २० वीं शताब्दी के आरम्भ में तुर्कमनिया में प्रत्येक १३० व्यक्तियों पर एक साक्षर व्यक्ति था, किन्तु किसी को भी उच्च शिक्षा प्राप्त न थी। आज राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था, विज्ञान और कला की प्रायः प्रत्येक शाखा में अनेक तुर्कमान विशेषज्ञ हैं – पुरुष भी और स्त्रियां भी।

७

तुर्कमनिया का एक स्वर-रचयिता वेली मुख़ातोव बागीर के एक औल में पैदा हुआ था जो उस स्थल के निकट है जहां पुरातत्ववेत्ता नेसा नगर के ध्वंसावशेषों के अध्ययन के निमित्त खुदाई कर रहे हैं। वेली के पिता की उसके अपने औल तथा पास-पड़ोस के अन्य बहुत से औलों के लोगों में बड़ी इज़्ज़त थी। वृद्ध मुख़ात-आग़ा दुतार और गिजाक का उस्ताद था तथा संगीत के आलोचक और लोक-संगीतज्ञों के अध्यापक के रूप में उसकी बड़ी प्रतिष्ठा थी।

प्रसिद्ध बख़्शी लोग भी मुख़ात-आग़ा जैसे व्यक्ति की सलाह की बड़ी क़द्र करते थे। मुख़ात-आग़ा ने संगीत में सौन्दर्य का अर्थ ढूंढने में बहुत अधिक समय लगाया था।

मुख़ातोव के सम्पूर्ण परिवार को संगीत में रुचि थी। बड़ा पुत्र अन्नाममेद एक प्रख्यात संगीतज्ञ हुआ किन्तु युवावस्था में ही उसकी मृत्यु हो गयी। अन्नाममेद की मृत्यु के पश्चात् मुख़ात-आग़ा ने छोटे वेली से कहा था – "तुम अपने भाई की जगह लो!" वेली की बहन और उसका दूसरा भाई आका दुतार तथा दूसरे वाद्य बजाने में बड़े कुशल थे। यदि अक्तूबर की क्रान्ति न हुई होती तो स्वयं वेली भी शायद औल का एक बख़्शी ही बनकर रह गया होता।



बसन्त काल में कपास के जल-मग्न खेत

मुर्ग़ाब की जल-वितरण व्यवस्था जिससे खेतों को पानी मिल रहा है





मारी क्षेत्र के 'जर्पची' सामहिक फ़ार्म का बिजलाघ

बागीर ग्रौल ग्रशकाबाद से लगभग ग्राठ मील दूर है। इस बात के होते हुए भी कि वेली को ग्रपने सामूहिक फ़ार्म से फ़ुरसत न मिलती थी वह ग्रशकाबाद जाने का सदैव इच्छुक रहता ग्रौर वहां जाता भी था। एक दिन, जब वह पुश्किन मार्ग पर स्थित किसी संगीत-स्कूल से होकर गुज़र रहा था, उसे प्यानो की कुछ संगीत-लहरियां सुनाई दीं। वह साश्चर्य रुक गया। "यह कैसा संगीत है?" उसने मन ही मन प्रश्न किया। "यह ग्रा कहां से रहा है ग्रौर किस वाद्य से निकल रहा है?" उसने स्कूल के फाटक में प्रवेश किया। किन्तु वहां के प्रधान ग्रध्यापक ने उसे रोककर पूछा कि ग्राखिर वह चाहता क्या है। "मैं वह संगीत सुनना चाहता हूं," वेली ने उत्तर दिया।

उसी क्षण से उसके जीवन में एक नया मोड़ ग्रारम्भ हुग्रा, ऐसा मोड़ जिसकी उसने ग्राशा भी न की थी। सोवियत संगीत-स्कूल ने ग्रपने दरवाज़े उसके लिए खोल दिये। इस प्रकार वेली की प्रथम संगीत-शिक्षा ग्रशकाबाद में ग्रौर बाद की मास्को के संगीत-विद्यालय में ग्रारम्भ हुई।

संगीत-विद्यालय में वेली ने ग्रपने हृदय की ग्रनुभूतियों को स्वर-लहरियों की भाषा में ग्रनूदित करने का प्रथम प्रयास किया। द्वितीय विश्व-युद्ध (१९४१-१९४५) में वेली मुख़ातोव ने सैनिक के रूप में सक्रिय भाग लिया था। दोनबास की घमसान लड़ाइयों के बाद उसे ग्रशकाबाद बुला लिया गया। ग्रपने साथी सिपाहियों से बिछुड़ते समय उसने संकल्प किया था कि वह ऐसे ऐसे गानों ग्रौर संगीत की रचना करेगा जो मातृभूमि के लिए लड़े गये युद्धों के उनके ग्रविस्मरणीय ग्रनुभवों को दुनिया तक पहुंचायेंगे। ग्रौर इस प्रकार 'विजय' कंताता का जन्म हुग्रा।

जब युद्ध समाप्त हो गया तो वेली मुख़ातोव ग्रपनी शिक्षा पूरी करने के लिए मास्को संगीत-विद्यालय में लौट ग्राया। स्वरसाम्य संबंधी उसकी पहली रचना 'तुर्कमान स्युईता' ने उसे ग्रभूतपूर्व ख्याति प्रदान की। 'मेरा देश' नामक स्वर-साम्य संबंधी ग्रपनी एक कविता में उसने राष्ट्रीय तुर्कमान विचारों को रूसी पौराणिक एवं सोवियत संगीत के साथ सुस्वर-समन्वित करने की ग्रपनी योग्यता का परिचय दिया था। इस तुर्कमान संगीतकार की रचनाग्रों को देश के प्रमुख संगीत-निर्देशकों द्वारा मास्को, लेनिनग्राद तथा किएव में कार्यान्वित किया जा रहा है। बुख़ारेस्त के

युवक-समारोह के अवसर पर दुनिया के समस्त राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने उसकी भूरि भूरि प्रशंसा की थी।

वेली मुख़ातोव तुर्कमान राष्ट्रीय ध्वनि का रचयिता है। उसने संगीतकार अ० शापोशनिकोव के साथ मिलकर 'केमिने और जज' नामक एक आपेरा की रचना की थी।

पांचवीं पंचवर्षीय योजना के आरम्भ में तुर्कमान प्रजातंत्र में ४० से अधिक गवेषणा-संस्थाएं थीं। वहां आज भी औलों के नर-नारी अपने रूसी शिक्षकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपने देश के कल्याण की दिशा में निरंतर कार्य करते जा रहे हैं।

सन् १९५१ में तुर्कमान विज्ञान-अकादमी की स्थापना सोवियत तुर्कमनिस्तान में सांस्कृतिक महत्त्व की एक बड़ी घटना थी। इसके उपलक्ष्य में प्रजातंत्र की सारी जनता ने खुशियां मनायी थीं। इस अवसर पर तेल-क्षेत्र के श्रमिकों, कास्पियन के मछुओं, कपास-उत्पादकों, विद्यार्थियों, स्कूली बच्चों तथा तुर्कमान बुद्धिजीवियों की बढ़ती हुई जनसंख्या के बहुसंख्यक प्रतिनिधियों ने वैज्ञानिक विचारधारा के इस नये केन्द्र को अपनी शुभकामनाएं भेजी थीं।

मारी क्षेत्र के वोरोशीलोव कपास-उत्पादक सामूहिक फ़ार्म के एक दल-नायक ख़लमुराद करामुरादोव ने जो शुभकामनाएं भेजी थीं उनका एक अंश इस प्रकार है—

"जब मैं बालक ही था तो मैंने एक ऐसे आदमी का अपने गांव में इलाज होते देखा था जिसे पागल कुत्ते ने काट लिया था। एक तबीब (इन्द्रजालिक) ज़मीन में गड़े हुए दो खम्भों पर खड़ा होकर मंत्र पढ़ता जा रहा था जब कि रोगी प्रार्थना की मुद्रा में खम्भों के बीच से होकर बार बार गुज़र रहा था। बेशक इससे कुछ हुआ नहीं और रोगी मर गया। हमारे गांव में दो या तीन आदमी ऐसे थे जो पढ़-लिख सकते थे। हममें से अधिकांश लोगों को आंखों में रोहें पड़ने का रोग था। सायं-काल के समय हमारे धुएं से काले पड़े किबित्कों में जो थोड़ा-सा प्रकाश होता भी था वह उस दीपक की बत्ती से मिलता-जुलता था जिसमें भेड़ की चर्बी जलायी जाती थी। अब सात या आठ वर्षों से ऊपर का ऐसा कोई भी बालक नहीं जो लिख-पढ़ न सकता हो। अब दुरदीक्लिच नूरमुहम्मदोव जैसा बूढ़ा भी पढ़ना सीख

गया है और प्रायः वाचनालय में दिखाई पड़ता है। हमारे सामूहिक फ़ार्म में एक अच्छा-सा अस्पताल और एक चिकित्सा-केन्द्र है जहां का डाक्टर हमारा ही एक ग्रामीण भाई मुरुक गवाकोव है। सामूहिक फ़ार्म के दफ़्तर के सामने एक माध्यमिक स्कूल. है। हम सबके यहां बिजली और रेडियो के सेट हैं।

"हाल ही में मैंने एक समयानुकूल चीज़ देखी थी। कपास साफ़ करनेवाली पहली मशीन ने कपास-उत्पादन के कार्यों की अनेक सर्व-कठिन प्रक्रियाओं में से एक को पूर्णतः यंत्रीकृत कर दिया था। जब यह मशीन हमारे फ़ार्म में पहुंची, उस समय सामूहिक कृषकों को बहुत आश्चर्य नहीं हुआ था। उन्हें पूरा विश्वास था कि सोवियत इन्जीनियर ऐसी कोई न कोई मशीन अवश्य ही बना लेंगे। सामूहिक कृषक सोवियत विज्ञान पर अपनी सारी आशाएं लगाए हुए हैं, उसमें विश्वास करते हैं और उससे अधिक से अधिक लाभ उठाने की बात सोच रहे हैं। वे कृषि-विज्ञान संबंधी अपना ज्ञान बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रमों का अध्ययन करते हैं। इस विज्ञान के संबंध में उनकी जानकारी २० या ३० वर्ष पहले के कृषिविशेषज्ञों से कहीं अधिक है। हम विज्ञान-अकादमी की स्थापना का स्वागत करते हैं। हमारी जनता की उन्नति का यह एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। आज हमारी जनता कुदाल से लेकर कम्बाइन और हवाई जहाज़ों तक तथा उन दयनीय मदरसों से लेकर, जहां कभी थोड़े-से चुने चुनाए लोग ही शिक्षा प्राप्त करते थे, कालेजों, विश्वविद्यालयों और अपनी निजी अकादमी तक पहुंच गयी है।"

जिस समय करामुरादोव ने यह कहा था कि तुर्कमान सामूहिक कृषकों को कृषि-विज्ञान का उतना ही ज्ञान है जितना कि २० या ३० वर्ष पहले के बहुत-से कृषिविशेषज्ञों को हुआ करता था तो न तो वह आत्मप्रशंसा ही कर रहा था और न किसी बात पर घमंड ही।

कुछ बड़े बड़े सामूहिक फ़ार्मों में व्याख्यानशालाएं हैं जो राजधानी से विशेषज्ञों को निमंत्रित किया करती हैं। पहले खुलनेवाली ऐसी कुछ शालाओं में बागीर औल की भी एक शाला थी। वहां का एक प्रबंधक स्थानीय स्कूल का शिक्षक भी है। उसका कहना है—"हमारे यहां ६० से अधिक विद्यार्थी हैं और उनमें से कोई भी

किसी भी भाषण में अनुपस्थित नहीं रहता। सभी अपने अध्ययन में बड़े मनोयोग के साथ लगे हुए हैं।"

औल के बहुत-से युवक नर-नारियों ने सोवियत शासन-काल में शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने वैज्ञानिक बनना पसन्द किया है। सन् १९५२ में तुर्कमान उच्च शिक्षा-संस्थाओं में विद्यार्थियों की संख्या प्रजातंत्र में प्रति ६ हज़ार व्यक्तियों पर ६० आती थी। यह संख्या फ़्रांस से दुगुनी, तुर्की या मिस्र से पंचगुनी और पड़ोसी ईरान से दसगुनी अधिक है। तुर्कमनिस्तान में वैज्ञानिक कार्यकर्त्ताओं की संख्या लगभग १३०० है, जिनमें ३० डाक्टर तथा ३०० से अधिक कैन्डीडेट ऑफ़ साइन्स हैं।

लगभग ३० वर्ष पूर्व वहां केवल एक ही समाचारपत्र निकलता था जिसकी ग्राहक-संख्या ८०० थी। सन् १९५५ में प्रजातंत्र में प्रकाशित समाचारपत्रों की संख्या ६६ हो गयी और इनकी दैनिक संस्करण-संख्या २,६२,००० तक बढ़ गयी। प्रथम पंचवर्षीय योजना के पहले वर्ष में तुर्कमान भाषा में केवल १२ पुस्तकें ही प्रकाशित हुई थीं, किन्तु सन् १९४६ तक इनकी संख्या ३,८७३ हो गयी थी और सारे संस्करणों को मिलाकर उनकी २ करोड़ ६० लाख प्रतियां निकल चुकी थीं। इनमें लेनिनवाद-मार्क्सवाद के संस्थापकों, पुश्किन, क्रिलोव, तोल्स्तोय, चेख़ोव, गोर्की तथा रूस के सर्वोत्तम आधुनिक लेखकों के अनुवाद और नूरमुराद सरीख़ानोव, अता कौशुतोव, बेर्दी केर्बबायेव, ख़्वाजा इस्माइलोव जैसे तुर्कमान लेखकों तथा करा सेइतलीएव, द० खलदुरदी, तौशान एसेनोवा, पोम्मा नुरबेरदीयेव, रहमत सेइदोव, अता सालिख़ इत्यादि कवियों के मूल संग्रह भी शामिल थे। तुर्कमान साहित्य का स्थान अब उतना ही प्रतिष्ठित होता जा रहा है जितना कि अन्य बहुराष्ट्रीय सोवियत साहित्य की दूसरी शाखाओं का है। निम्नलिखित आंकड़ों से प्रजातंत्र में पुस्तकों की लोकप्रियता का पता चलता है। वहां लगभग १२०० पुस्तकालय हैं, ५० सांस्कृतिक केन्द्र, १०२ नगर-क्लब और ५२० किबित्का-वाचनालय हैं। पुस्तकालयों में ४२ लाख ७० हज़ार पुस्तकें हैं।

हम लोगों ने अनाऊ के ध्वंसावशेषों के समीप जिस किबित्का में प्रवेश किया था वह एक ऐसा वाचनालय है जो एक सामूहिक पशु-पालन फ़ार्म से दूसरे तक



बैराम-अली का सेनेटोरियम



'बोल्शेविक' सामूहिक फ़ार्म का अवकाश-गृह

बराबर यात्रा करता रहता है, और यही कारण है कि इसे एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचाने के लिए एक ऊंट की ज़रूरत पड़ती है। लाल राष्ट्रीय पोशाक वाली महिला पुस्तकाध्यक्षा है। वह अशकाबाद विश्वविद्यालय की स्नातकोत्तर कक्षा की छात्रा और पेशे की भाषाविद् है।

पुस्तकालय के कार्य में उसे रुचि है क्योंकि इस प्रकार उसे दूरस्थ करा-कुम की एक बोली का अध्ययन करने का अवसर मिलता है। अब हमारे लिए केवल यही कार्य रह जाता है कि हम पुस्तकाध्यक्षा से उसके इस विश्राम के घंटे में विघ्न डालने के लिए क्षमा मांगें और फिर उस ट्रेन को पकड़ने के लिए अशकाबाद लौट चलें जो रेगिस्तानों और नख़लिस्तानों से होती हुई पूर्व की ओर तेजेन और मुर्ग़ाब तक और फिर करा-कुम के दक्षिण-पूर्वी भाग के उस पार आमू-दरिया के तटों पर और कुछ दूर आगे तशौज़ तक जाती है।

तेजेन और मुर्गाब की घाटी में

अध्याय १

१

अशकाबाद से दक्षिण-पूर्व में ट्रेन निर्बाध रूप से कोपेत-दाग़ की तलहटियों के किनारे किनारे आगे बढ़ती है। अख़ाल-तेक्के का नख़लिस्तान शहर के बाहर कुछेक दस मीलों पर समाप्त होता है और उसके बाद से रेगिस्तानी इलाक़ा शुरू हो जाता है जहां रेलवे के दोनों ओर मुरझाई हुई झाड़ियां दिखाई पड़ने लगती हैं। "आख़िर हम करा-कुम के उस रेगिस्तान में पहुंच गये जिसके बारे में हमने बहुत कुछ सुन रखा था," यात्री विचार करने लगता है। किन्तु रेत के टीले फिर छोटे होने लगते हैं और पहाड़ों की दिशा में जीवन के चिह्न एक बार फिर दिखाई पड़ने लगते हैं।

ग्यऊर्स का रेलवे-स्टेशन निकल जाने के बाद यात्री को एक जगह हरियाली दिखाई पड़ती है जो एक दूरस्थ कन्दरा से रेलवे-लाइन की ओर बढ़ती-सी प्रतीत होती है। यहां के वृक्ष पर्वतों की पृष्ठभूमि में काले दिखाई पड़ते हैं।

यही तथाकथित अतेक नख़लिस्तान है। इसे सीधे सीधे अतेक भी कहते हैं। वह अख़ाल से मिला होता है।

एक समय था जब कॉख़का की बस्ती इस नख़लिस्तान का केन्द्र थी। कॉख़का इसी नाम के एक रेलवे-स्टेशन के समीप है और अपने अंगूर के बाग़ों और फलोद्यानों के लिए प्रसिद्ध है।

इस नाम की उत्पत्ति भी बड़ी मज़ेदार है।

वस्तुत: कॉख़का का अर्थ है पिता, किन्तु इसका उस तुर्कमान शब्द से कुछ भिन्न उच्चारण किया जाता है जिसका अर्थ होता है पिता। इसकी ध्वनि कुछ विस्मयादिबोधक अव्यय जैसी लगती है जिसका अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता है – 'हा-हा-हा!'

जनश्रुति है कि कुछ हज़ार वर्ष पहले यह एक ऐसे नगर का स्थल था जिसके चारों ओर मिट्टी की नीची दीवाल बनी हुई थी। जिस समय सिकन्दर महान् ने मध्य एशिया पर आक्रमण किया उस समय उसकी सेना ने इसी नगर के चारों ओर घेरा डाला था। यहां के निवासियों के पास न तो अच्छे हथियार ही थे और न अधिक योद्धा ही। उनके पास दो ही मार्ग थे या तो लड़ते लड़ते मर जाना या फिर चतुराई से काम लेना। उन्होंने चतुराई की शरण ली। अपने एक चतुर साथी की सलाह से उन्होंने अपने नगर की बाहरी दीवाल पर कुछ बेढंगे-से शीशे लगवा दिये जिनमें लोगों को अपनी शक्लें बड़ी विकृत एवं उपहासास्पद दिखाई पड़ती थीं।

दीवाल के निकट पहुंचने पर जब यूनानियों ने शीशों में अपनी अपनी विचित्र शक्लें देखीं तो वे क़हक़हे लगाते हुए आगे बढ़ गये और उन्होंने नगर को कोई क्षति नहीं पहुंचायी। नगर का नाम 'हा-हा-हा' अर्थात् कॉख़का पड़ गया। यह ठीक है कि उपरोक्त कथा गाथा मात्र ही है लेकिन गाथाओं में भी कहीं न कहीं सत्य का तो अंश होता ही है। इस हास्यात्मक जनश्रुति में सत्य का अंश संभवत: शीशों में छिपा हुआ है। उनका यहां उल्लेख क्यों किया गया? इसलिए कि अशकाबाद अपने कांच के कारख़ानों के लिए मशहूर है। किन्तु कोपेत-दाग़ में क्वार्ट्स बालू की सम्पदा का उपयोग इन कारख़ानों के अस्तित्व से भी पहले किया गया था। बहुत मुमकिन है कि पुराने ज़माने में कॉख़का के लोगों ने दर्पण बनाने आरम्भ कर दिये हों, लेकिन उनके उद्योग को सफलता न मिली हो। यह बात सिकंदर महान् के हमले के बहुत बाद हुई होगी क्योंकि मध्य एशिया की बहुत-सी जनश्रुतियों ने सिकन्दर महान् को ऐसी अनेक घटनाओं से संबद्ध कर रखा था जो या तो उसके पहले घटी थीं या उसके बाद। चूंकि तुर्कमनिया की लोक-कथाएं व्यंग्यात्मक होती हैं इसलिए सम्भव है यह गाथा दर्पण बनानेवालों का मज़ाक उडाने के लिए ही ईजाद की गयी हो।

अख़ाल की भांति ही अतेक भी दूरस्थ प्राचीन काल में बसा होगा। यहां ग्यऊर्स

से लेकर दुशाक तक के सारे क्षेत्र में पुरानी इमारतों के चिह्न हैं। रेलवे के उत्तर में किसी जगह मिट्टी की दीवाल के कुछ भाग अभी भी बचे हुए हैं जो कौशूत स्टेशन और दुशाक दोनों ही जगहों से दिखाई पड़ते हैं। यह पता चलाना एक कठिन कार्य है कि यह दीवाल कब और किस उद्देश्य से बनायी गयी थी। इस विषय पर पुरातत्ववेत्ता एकमत नहीं हैं। शायद यह अतेक की कृष्य-भूमि की खानाबदोशों के आक्रमणों से रक्षा करने के लिए बनायी गयी थी। दूसरी सम्भावना इस बात की है कि यह बांध का काम देती थी। अतेक में बड़ी बड़ी नदियां नहीं हैं। यहां की फ़सलों को झरनों, क्यारिज़ों और सोतों से पानी मिलता है। वसन्त-ऋतु में इन झरनों में वर्षा का जल तथा पिघली हुई बर्फ़ का पानी फलोद्यानों और खेतों से होता हुआ रेगिस्तान में चला जाता है। शायद अतेक के निवासियों ने दीवालों को वसन्तकालीन पानी के बहाव को नियमित करने के लिए ही बनाया हो। ऐसा तुर्कमनिया के कुछ भागों में किया ही जाता था।

इस कल्पना का आधार यह है कि अत्रेक के डेल्टा में इसी प्रकार की दीवालों के अवशेष पाये जाते हैं। कॉख़का के समीप पुरातत्ववेत्ताओं को मिट्टी की कुछ ऐसी पाइप-लाइनें मिली हैं जो पुराने ज़माने में पानी को हवेरान नामक एक बड़े नगर में ले जाती थीं। यह नगर अब लुप्त हो गया है।

अतेक के उत्तरी भाग में दीवाल का उद्देश्य चाहे जो भी क्यों न रहा हो इसे देखकर यह पता ज़रूर चलता है कि कभी इस नख़लिस्तान में भी जीवन था, क्रियाशीलता थी।

२

तेजेन नदी का डेल्टा अतेक की पूर्वी सीमाओं के समीप है।

तेजेन नदी ७०० मील लम्बी है तथा अफ़ग़ानिस्तान में हिन्दूकुश की श्रेणियों से निकलकर तीन देशों को पार करती हुई अपने मार्ग पर निर्बाध आगे बढ़ी चली जाती है। इसके निचले भाग सोवियत प्रदेश में पड़ते हैं।

जब यात्री, अपनी आशा के विपरीत, यह देखता है कि जिस नदी को वह एक विशाल नदी समझता था वह मिट्टी के नीचे नीचे किनारों के बीच बहनेवाली एक संकरी दलदली चौरस-सी नदी है और उसमें अन्य कोई विशेषता

नहीं, तो उसे निराशा होती है। इस नदी का केवल एक-तिहाई पानी ही सोवियत संघ में पहुंचता है, शेष दो तिहाई से ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के खेतों की सिंचाई होती है। फलतः जल की इस एक-तिहाई मात्रा से तेजेन नखलिस्तान के सामूहिक फ़ार्मों की सिंचाई की जाती है जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में जीवन का संचार होता है।

तेजेन की घाटी में कृषि-योग्य भूमि के केवल थोड़े-से भाग पर ही कपास की खेती की जाती है। किन्तु पहले यहां कपास की आवश्यकता भर को भी पानी न मिलता था। युद्ध-पूर्व वर्षों में तेजेन डेल्टा में बोयी गयी कपास का लगभग एक-चौथाई सूखे से नष्ट हो जाया करता था।

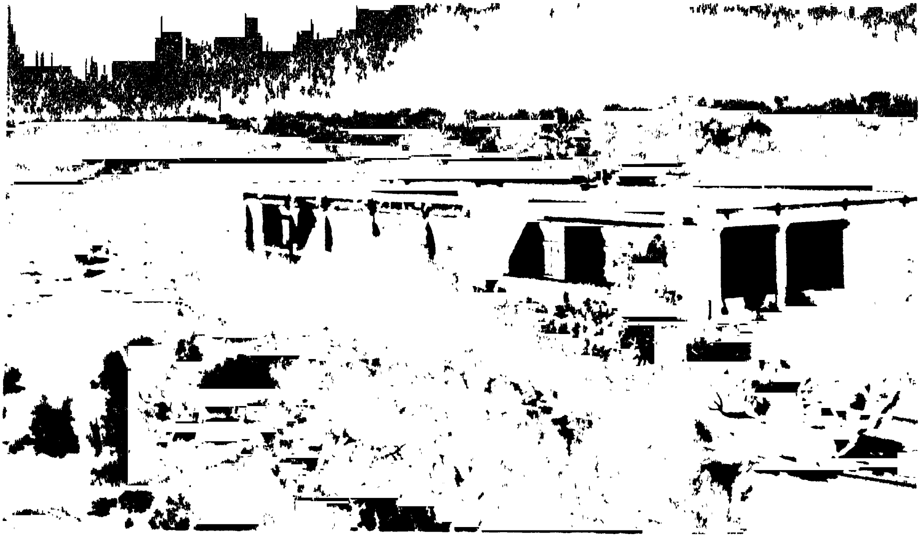
यदि नदी सूखी होती तो सूखा पड़ने की शिकायत करने के भी कोई माने न होते। किन्तु वास्तविकता यह है कि तेजेन में सिंचाई के लिए अपेक्षित जल है अथवा, यदि और ठीक ठीक कहें, तो प्रायः मिल जाता है।

किन्तु पानी का समुचित रीति से उपयोग नहीं किया जा सकता क्योंकि वसन्त-काल में उसका प्रवाह अत्यधिक तेज़ होता है। हां, इस प्रकार इसमें जो बाढ़ें आती हैं वे अल्पकालीन ज़रूर होती हैं।

मार्च और अप्रैल में इस नदी में इतना अधिक जल बहता है कि यदि वह गर्मियों में मिल सकता होता तो उससे एक बहुत बड़े भूखंड की सिंचाई सम्भव हो सकती। हमें उन वर्षों की भी याद है जब तेजेन का जल अपने किनारों को तोड़कर बह निकला था और उससे बहुत-से घर नष्ट हो गये थे तथा फ़सलें बह गयी थीं।

अप्रैल १९३९ में बाढ़ों ने नगर के एक बड़े भाग को और कुछ मीलों तक रेल की लाइन को नष्ट कर दिया था। इन बाढ़ों को देखकर आप अनुमान लगा सकते हैं कि घाटी से होकर कितना अधिक जल बहकर बेकार हो गया होगा या रेतों के गर्भ में समा गया होगा।

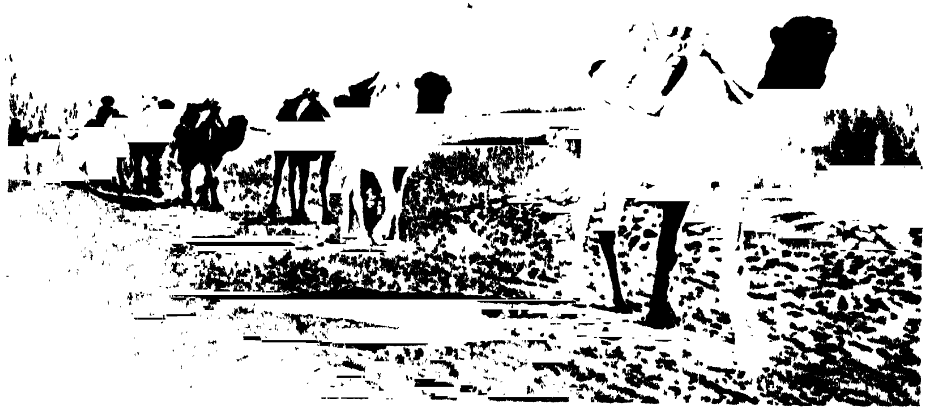
तेजेन जलाशय का निर्माण-कार्य १९४० में आरम्भ किया गया। जलाशय के लिए जो स्थल चुना गया है वह करी-कला क़िले के ध्वंसावशेषों के निकट रेलवे के दक्षिण में स्थित घाटी के उस स्थान में है जहां नदी एक गहरी और संकरी जलदरी में होकर बहती है।



तुर्कमान विज्ञान अकादमी का मरुभूमि गवेषणा-केन्द्र

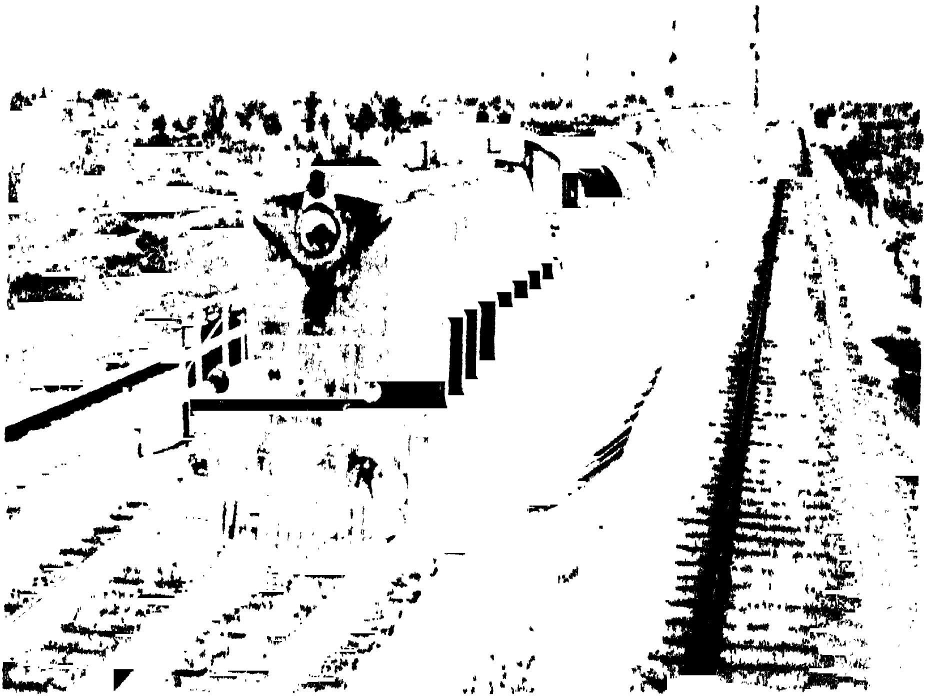
चार्दज्हू कराकुला-फैक्ट्री





करा-कुम रेगिस्तान में गुज़रता हुआ क़ाफ़िला

चार्दज़ू – कुनग्राद लाइन की ट्रेन



उक्त योजना का एक भाग दूसरा विश्व-युद्ध छिड़ने से पूर्व ही पूरा हो गया था। जलाशय पर चलनेवाला निर्माण-कार्य युद्ध-काल भर के लिए बन्द कर दिया गया था। यह कार्य मई सन् १९४५ में फिर ग्रारम्भ किया गया और ग्रन्ततः सन् १९५० में पूरा हो गया। फलतः इस सूखे वाले क्षेत्र में कपास की खेती का क्षेत्रफल काफ़ी बढ़ गया है।

फिर भी यहां इतना पर्याप्त पानी नहीं है कि डेल्टा की समस्त कृषि-योग्य भूमि की सिंचाई की जा सके। इसका ग्रर्थ यह है कि जलाशय के ग्रलावा कोई ऐसी ग्रन्य प्रभावकर योजना भी ग्रपेक्षित है जो यहां की जल-समस्या का समाधान करने के लिए क्रियान्वित की जा सके।

उपर्युक्त समस्या का समाधान भी निकल ग्राया है। करा-कुम नहर का पहला भाग थोड़े ही समय बाद मुर्ग़ाब के नख़लिस्तान को पानी देगा और दूसरा तेजेन नख़लिस्तान के खेतों को।

तेजेन पर एक दूसरा बांध बनाने की भी योजना है जिससे भयंकर बाढ़ों का ग्राना रुक सकेगा और पानी को पुराने डेल्टा के नव-विकसित सिंचित क्षेत्रों का विकास करने के निमित्त काम में लाया जा सकेगा।

३

मुर्ग़ाब की घाटी तेजेन के लगभग ७५ मील पूर्व में है।

इन दोनों नदियों के बीच का मैदान सोवियत संघ का वह भाग है जहां भ्रमणार्थ शायद सबसे कम व्यक्ति जाते हैं और इसके बारे में लोगों की जानकारी कम है।

उत्तर में रेलवे-लाइन के किनारे किनारे यह मैदान एक ग्रर्द्ध-रेगिस्तान के रूप में पाया जाता है, जहां रेत के टीले, तकूर, वर्षा-जल के द्रुतगामी झरनों के सूखे हुए तल, इन झरनों द्वारा पहाड़ों पर से बहाकर लाये गये पत्थर, इधर-उधर बिखरी हुई झाड़ियां और कछुए दिखाई पड़ जाते हैं। वसन्त-ऋतु में ऐसे ग्रसंख्यों कछुए बालू में रेंगते हुए दिखाई देंगे जिन्हें देखकर ग्राप को उनमें गोल चौरस सिरे वाले पत्थरों का भ्रम होगा।

वसन्तकालीन तेज़ वर्षा के बाद मैदान में वनस्पति ही वनस्पति दिखाई देती है। मार्च, ग्रप्रैल और कभी कभी मई में, यदि वसन्त की ऋतु कुछ लम्बी रही, यह ग्रद्ध-रेगिस्तान, जो कोपेत-दाग़ तलहटी के लहलहाते हुए खेतों के प्रहरी के समान

प्रतीत होता है, पुष्पाच्छादित चरागाह की भांति लगता है जहां त्युलिप, खसखस तथा अन्य सुन्दर सुन्दर फूलों के पौधे देखने को मिल सकते हैं। और शीतल वायु में लवा पक्षियों का कलरव वातावरण में माधुर्य बिखेरता है।

जैसे ही जैसे गर्मी बढ़ती जाती है वैसे ही वैसे वातावरण में भी परिवर्तन आता जाता है। मई के उत्तरार्द्ध से लेकर आनेवाले वसन्त तक के लिए अर्द्ध-रेगिस्तान रंगहीन, निर्जन और वीरान-सा लगता है।

रेलवे के लगभग २५ मील दक्षिण अफ़ग़ानिस्तानी सीमा की ओर दृश्यावली में कुछ परिवर्तन नज़र आता है। अब नीरस तकूरों के स्थान पर पहाड़ियों का विस्तार आरम्भ हो जाता है।

ये पहाड़ियां बाइर कहलाती हैं। तेजेन और मुर्ग़ाब नदियों के बीच का मैदान बदखुज़ कहलाता है जिसका अर्थ है 'वह भूमि जहां से हवा चलनी शुरू होती है'।

अफ़ग़ानी सीमा के निकट बाइर की ऊंचाई अधिक है। उत्तर में यह ऊंचाई ६५ से लेकर १०० फ़ीट तक है किन्तु सीमा के किनारे किनारे लगभग १ हज़ार फ़ीट तक हो जाती है। उनके बीच बीच में तकूर और खारी झीलों के अवशेषों के रूप में चमकदार श्वेत खारे दलदल हैं।

यहां कोई भी स्थायी आबादी नहीं है। वसन्तकालीन वर्षा के बाद जो घास लहलहाती है उसके कारण बदखुज़ मुर्ग़ाब और तेजेन सामूहिक फ़ार्मों के पशु-समूहों के लिए एक अच्छा चरागाह बन जाता है। किन्तु यहां कुएं बहुत गहरे तथा कम हैं और उनका पानी इतना खारी कि लोग वहां स्थायी बस्तियां नहीं बसा सकते।

शायद यही कारण है कि तुर्कमनिया भर में अकेले बदखुज़ में ही जंगली कुलान निर्बाध रूप से घूमते-फिरते नज़र आते हैं। कुलान तेज़ चलनेवाले जंगली गधों की एक क़िस्म है और तुर्कमनिया में उतना ही अधिक पाया जाता था जितना कि चमोइस (एक प्रकार का हिरण), गैज़ेल (एक प्रकार का छोटा बारहसिंगा) या ऊंट। पिछली शताब्दी में मंगिश्लक, महान् एवं लघु बलखानों की तलहटी और आमू-दरिया के किनारों पर कुलानों के बड़े बड़े झुंड घूमा फिरा करते थे। आज इनमें से कुछ जानवर बदखुज़ के अलावा चार्दज्हू के समीप आमू-दरिया के किनारे किनारे

के कुछ स्थानों में भी पाये जाते हैं। सोवियत शासन की स्थापना के बाद से बदख़ुज़ को कुलानों के लिए संरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया गया था। इन जानवरों के लिए देश भर में एक अकेला यही संरक्षित क्षेत्र है।

आसफ़ेतिदा नामक एक प्रकार के छतरी जैसे बड़े बड़े पौधे बदख़ुज़ के बाइरों पर उगा करते हैं। इसके तने की मुटाई कलाई की तरह होती है और इसकी बड़ी बड़ी एवं सख़्त पत्तियां तने के ऊपरी सिरे पर काफ़ी घनी निकलती हैं। आसफ़ेतिदा से चरवाहे बालकों को एक प्रकार का मीठा रस प्राप्त होता रहता है जिसे वे लोग शहद कहते हैं। परन्तु यदि सुगन्ध और स्वाद की दृष्टि से देखा जाय तो उसे तारकोल कहना अधिक उपयुक्त होगा। पुराने ज़माने में मारी और तेजेन के स्थानीय शासकों की भेड़ों और ऊंटों को इस क्षेत्र के चरागाहों में चरानेवाले स्वादिष्ट पदार्थों में अकेले इसी लसलसे रस से परिचित थे।

बदख़ुज़ की मुख्य सम्पदा पिश्तों के पौधे हैं जो पहाड़ियों की तलहटियों भर में फैले हुए हैं। भूगोल की पाठ्यपुस्तकों में इस क्षेत्र को 'तुर्कमनिस्तान के पिश्तों का जंगल' कहा गया है। ये जंगल वस्तुतः झाड़ियों के समान होते हैं।

बदख़ुज़ में पिश्तों की झाड़ियां लगभग ६० हज़ार एकड़ क्षेत्र में फैली हुई हैं। यह क्षेत्रफल सिसिली में पिश्तों के प्रसिद्ध बग़ीचों के क्षेत्रफल से अधिक है यद्यपि सिसिली के बारे में यह समझा जाता है कि पिश्तों की पूर्ति करनेवाले देशों में उसका दुनिया भर में पहला स्थान है।

अध्याय २

१

मुर्ग़ाब की घाटी में पैदा होनेवाली महीन रेशों की कपास देश भर में प्रसिद्ध है। जिन स्कूली बच्चों ने प्राकृतिक वातावरण के बीच उगी हुई कपास देखी तक नहीं है वे भी जानते हैं कि देश भर की सूती मिलों को कपास का रेशा मुख्यतया उज़बेकिस्तान में फ़र्ग़ाना की घाटी से, ताजिकिस्तान में वख़्श की घाटी से, तुर्कमनिया में आमू-दरिया के निचले क्षेत्रों से और मुर्ग़ाब नख़लिस्तान से प्राप्त होता है।

मध्य एशिया के सामूहिक फ़ार्मों की अधिकांश सम्पदा कपास से ही प्राप्त होती है। कपास पकने के लिए पौधों को लम्बे अर्से तक पाले से बचना और गर्मी में काफ़ी अधिक धूप मिलना चाहिए। उज़बेक, ताजिक और तुर्कमान प्रजातंत्रों की जलवायु की यही विशेषताएं हैं।

कपास समस्त मध्य एशिया में, जहां जहां भूमि की सिंचाई होती है, उगायी जा सकती है। पिछले कुछ वर्षों में सोवियत निर्वाचकों और कृषिविशेषज्ञों ने उत्तर की ओर और भी अधिक दूरी तक कपास के पौधे लगाना आरम्भ कर दिया है। किन्तु महीन रेशे की कपास के लिए विशेष दशाओं की आवश्यकता है। हम ऊपर कह चुके हैं कि कपास को लम्बे अर्से तक पाले से बचाये रखना और गर्मियों का औसत तापमान अधिक होना बहुत ज़रूरी है। तुर्कमनिया में ये दशाएं मारी तथा चार्दज्हू के क्षेत्रों के दक्षिणी ज़िलों में पायी जाती हैं।

मिस्र और कैलीफ़ोर्निया दुनिया के सबसे सूखे और धुपहले स्थानों के रूप में प्रसिद्ध हैं। मुर्ग़ाब का नख़लिस्तान भी इस सम्मान का अधिकारी है। मुर्ग़ाब के डेल्टा का गर्मी का तापमान नील नदी के डेल्टा से अधिक (बैराम-अली में गर्मी का औसत तापमान ८५ अंश फ़ारेनहाइट है), बादलहीन दिनों की संख्या ज्यादा (प्रतिवर्ष २ सौ दिन) और हवा ख़ुश्क है।

जलवायु की इन्हीं विशेषताओं ने लोगों को युगों युगों से यह समझने के लिए बाध्य किया है कि मुर्ग़ाब नदी का नख़लिस्तान कपास के पौधों के लिए एक प्राकृतिक स्थल है। यही कारण है कि मुर्ग़ाब के जल का अधिक से अधिक उपयोग करने के प्रयास किये जा रहे हैं।

२

मुर्ग़ाब नदी प्राय: तेजेन नदी जितनी लम्बी और बहुत कुछ उतनी ही गहरी है। अफ़ग़ानिस्तान में मुर्ग़ाब नदी के उद्गम अर्थात् सफ़ेदकोह पहाड़ियों और मारी क्षेत्र के उत्तरी ज़िलों में स्थित सामूहिक फ़ार्म के बीच नदी की लम्बाई लगभग ७ सौ मील है। मुर्ग़ाब का डेल्टा इसी सामूहिक फ़ार्म पर समाप्त होता है।

प्रतिवर्ष इन दोनों नदियों द्वारा बहाकर लाये जानेवाले पानी की मात्रा प्राय:

समान होती है। तुर्कमनिया में मुर्ग़ाब और तेजेन की घाटियों की मिट्टी तथा जलवायु भी एक जैसी ही होती है।

किन्तु आर्थिक दृष्टि से मुर्ग़ाब तेजेन की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है, उससे भी अधिक जितनी तेजेन पिछले कुछ वर्षों तक थी।

सोवियत तुर्कमनिया में प्रवेश करने के पहले तेजेन अपने पानी का काफ़ी बड़ा भाग अफ़ग़ानिस्तान की हिरात की घाटी में ही छोड़ देती है।

दूसरी ओर, मुर्ग़ाब नदी अफ़ग़ानिस्तान में अपने उद्गम से निकलकर निर्बाध रूप से पहाड़ों के दर्रों के नीचे उतरती चली आती है जहां उसकी छोटी छोटी सहायक-नदियां उसमें गिर गिरकर उसकी समन्वित शक्ति में वृद्धि करती हैं। अफ़ग़ानिस्तान में मुर्ग़ाब द्वारा जिन खेतों की सिंचाई होती है वे उस स्थल पर हैं जहां से नदी सोवियत संघ में प्रवेश करती है।

सोवियत संघ में मुर्ग़ाब की कई सहायक-नदियां पड़ती हैं जिनमें से कूश्क सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसी सहायक नदी के नाम पर कूश्का की सीमावर्ती बस्ती का नाम पड़ा था। सोवियत संघ में तेजेन की अपनी कोई भी सहायक-नदियां नहीं हैं और यही कारण है कि इसके पानी की प्रतिपूर्ति नहीं हो पाती।

अन्त में एक बात यह उल्लेखनीय है कि तेजेन की अपेक्षा मानव-संस्कृति के चिन्ह मुर्ग़ाब पर अधिक मिले हैं। मुर्ग़ाब की घाटी के निवासी छोटी छोटी बंधियों द्वारा नदी का जल निकटवर्ती खेतों तक तो ले ही गये थे। साथ ही उन्होंने कुछेक शताब्दियों में बड़े बड़े बांध भी बना लिये थे, जिनमें से कुछ — उदाहरणार्थ सुलतान-बेंत बांध — इंजीनियरिंग शिल्प के उत्कृष्ट नमूने समझे जाते थे।

निचली मुर्ग़ाब को हम एक ऐसी आदर्श-नदी कह सकते हैं जिसका मनुष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए हर तरह से उपयोग किया गया है। नदियों पर वांछित नियंत्रण करने के लिए लोगों को काफ़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। और यह कोई पुराने ज़माने की ही बात नहीं है। आजकल भी हमारे सामने अनेकानेक मुश्किलें आती हैं।

मुर्ग़ाब की एक विशेषता यह है कि उसका जल बड़ा गंदला है। नदी अपने सबसे ऊपरी क्षेत्रों में ही पारदर्शक है जहां उसे पानी बर्फ़ की पिघलती हुई चट्टानों से मिलता

है किन्तु जैसे ही यह कन्दराओं या दर्रों से उतरकर नीचे आती है वैसे ही इसमें इतनी अधिक मिट्टी घुलने लगती है कि वह दलदली हो जाती है। लोएस मिट्टी तथा उन घाटियों की बालू, जिनसे होकर नदी बहती है, आसानी से आगे बह जाती है।

नदी में पानी के प्रत्येक लीटर में २.४ ग्राम मिट्टी होती है। यह मिट्टी तल में बैठ जाती है। सबसे अधिक मिट्टी बैठती है जलाशयों में।

मुर्ग़ाब द्वारा अपने डेल्टा तक बहाकर लायी गयी मिट्टी उपयोगी भी होती है और हानिकर भी। उपयोगी इसलिए कि जब वह मैदानों में पहुंचती है तो इससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ जाती है और वह एक अच्छी प्राकृतिक खाद का काम देती है। साथ ही इससे भूमि के संरचनात्मक गुणों में भी विकास होता है। इसी कारण मुर्ग़ाब की घाटी के निवासी बरखानों के बीच की भूमि पर पानी लाने और अपनी फ़सलों के क्षेत्र का विस्तार करने के लिए नदी के पानी को चैनेलों में से बहाकर रेगिस्तान तक लाये हैं। और पानी बह जाने के पश्चात् उन स्थानों पर, जहां बहाव आया था, चिकनी मिट्टी की तह इतनी मोटी हो जाती है कि पौधों की जड़ें उसके भीतर दूर दूर तक जा सकती हैं।

अतएव इस दृष्टि से मुर्ग़ाब की कीचड़ उपयोगी कही जा सकती है यद्यपि उसके रासायनिक गुणों को देखते हुए वह आमू-दरिया की मिट्टी से कम महत्त्वपूर्ण है। इसमें लवण-अंश अधिक होने के कारण इसका महत्त्व भी कम हो जाता है। लवण-अंश के अधिक होने का कारण यह है कि कशान और कूश्क नामक मुर्ग़ाब की दो सबसे बड़ी सहायक-नदियां सोवियत संघ भर में सबसे खारी नदियां हैं। फिर भी मुर्ग़ाब की मिट्टी अच्छी खाद समझी जाती है।

इससे हानि यह है कि जलाशयों में अत्यधिक मिट्टी जमा हो जाती है और चूंकि उसमें दसियों करोड़ घन फ़ुट पानी जमा रहता है इसलिए जलाशय मिट्टी से भरने लगते हैं और मनुष्य के रचनात्मक परिश्रमों पर पानी फिर जाता है।

सन् १६१० में मुर्ग़ाब पर बने हुए एक प्राचीन बांध के स्थल को एक नये बांध और सुलतान-बेन्त जलाशय के लिए चुना गया था। २२ वर्षों के भीतर जलाशय मिट्टी से भर गया और बेकार हो गया। सन् १६१० में इयोलोतान नाम का एक

बांध (सुलतान-बेन्त के ११ मील नीचे) और बनाया गया था जिसकी क्षमता २५० करोड़ घन फ़ुट थी। सम्प्रति यह क्षमता प्रायः आधी रह गयी है।

जलाशयों को भर देने के अलावा यह मिट्टी अरीकों और नहरों के तलों पर भी जमा हो जाती है और इस प्रकार पानी के बहाव में बाधा पड़ती है। एक एकड़ भूमि की सामान्य सिंचाई को सुनिश्चित करने के लिए अरीकों में से प्रतिवर्ष १४० घन फ़ुट मिट्टी निकाली जानी चाहिए।

मुर्ग़ाब की घाटी के खेतों में सिंचाई के कार्य निर्बाध रूप से होते रहें इस के लिए अरीकों, जलाशयों आदि में से मिट्टी निकालने का कार्य सबसे अधिक आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है। इस कार्य को स्थानीय भाषा में होशर कहते हैं। होशर किसानों के लिए एक अभिशाप और मेहनती देहक़ानों की गर्दनों के लिए एक पट्टे के समान था।

धनी लोग तथा स्थानीय शासक होशर के कामों में कभी भाग न लेते थे। वे सदा दूसरों की मेहनतों पर गुलछर्रे उड़ाया करते थे और उनके खेतों को भी सबसे पहले उन अरीकों में से पानी मिला करता था जिनमें से मिट्टी निकाल ली जाती थी।

अरीकों में से निकाली गयी मिट्टी का कुछ भाग तो खेतों में खाद देने के काम आ जाता था लेकिन शेषांश उनके किनारों पर ही पड़ा रहता था। धीरे धीरे उस पर इतनी अधिक मिट्टी जमा हो जाती थी कि उसकी उंचाई के कारण खुदाई का काम असम्भव हो जाता। नतीजा यह होता था कि पुरानी अरीकों का परित्याग कर दिया ज़ाता और नयी अरीकें खोद ली जातीं। अभी हाल ही तक मुर्ग़ाब के नख़लिस्तान में इन परित्यक्त अरीकों के ऊंचे ऊंचे किनारे नज़र आते थे।

दोनों किनारों के बीच बहते हुए पंकिल भूरे जल के कारण अरीकों के आसपास का क्षेत्र विशेष दर्शनीय हो उठता था। वहां सेज घास तथा दूसरी लम्बी लम्बी और सूखी घासें उग आती थीं। अरीकों के जल में करागाच, पापलर, शहतूत, अलेस्टर तथा उन अन्य वृक्षों की छाया पड़ा करती है जो मध्य एशिया के उन स्थानों में उगा करते हैं जहां की भूमि की सिंचाई आसानी से की जा सकती है। चील नामक मिट्टी के नीचे ढेर बुए हुए खेतों को चौरस टुकड़ों में विभाजित करते हैं।

इन टुकड़ों में पानी भर जाता था और उन्हें बराबर चौरस बनाया जाता था। पुराने ज़माने में तुर्कमान काश्तकार के लिए यह एक दूसरा कठिन कार्य था जिसके लिए उसे एड़ी-चोटी का पसीना एक करना होता था। यदि ये भूखंड चौरस और बराबर न होते, तो अरीकों से आनेवाला जल नीची जगहों पर इकट्ठा हो जाता जिसके फलस्वरूप वे पेड़-पौधे सूख जाया करते, जो या तो ढालों पर होते अथवा ऊंची ज़मीन पर। कपास वैसे ढालों या पहाड़ियों पर नहीं उगायी जा सकती जैसे कि केन्द्रीय रूसी पट्टी में बहुतायत से पायी जाती है। तेजेन, आमू-दरिया, सेराख़्स और तशौज़ के नख़लिस्तानों की भांति ही मुर्ग़ाब का नख़लिस्तान दूर तक फैली हुई चौरस भूमि का एक खंड है जिसके बीच बीच में चील तथा अरीकों के ऊंचे ऊंचे किनारे नज़र आते हैं।

हज़ारों वर्षों तक होशर मध्य एशिया भर में कृषकों के लिए एक सबसे अधिक दुष्कर कार्य रहा है। अरीक-प्रणाली प्रकृति पर मानव की विजय का प्रतीक थी किन्तु होशर उसे हमेशा इस बात की याद दिलाया करते थे कि प्रकृति अपनी हार नहीं मानती और हार जाने पर मनुष्य से उसके बदले में अथक श्रम की अपेक्षा करती है।

३

मुर्ग़ाब की भूमि एशिया भर में उन भागों में से एक है जो सबसे प्राचीन काल में बसाये गये थे। यहां के निवासी कृषि की फ़सलों के अलावा यहां अतीत काल से ही कपास भी पैदा करते आये हैं।

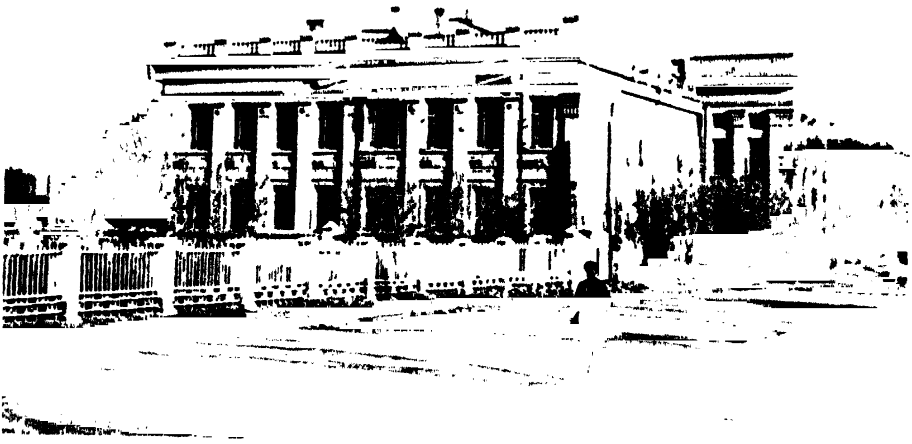
दो हज़ार वर्ष पहले चीनी भूगोलवेत्ताओं ने लिखा था कि तुर्किस्तान के खेतों में 'वनस्पति-ऊन' के पौधे लगाये जाते हैं। चीनी व्यापारी समरक़न्द और मर्व के सूती वस्त्रों की बड़ी क़द्र करते थे।

मर्व (तुर्कमान भाषा में मारी), जो मुर्ग़ाब की घाटी का मुख्य नगर है, अनेक शताब्दियों तक प्राचीन पूर्व का एक सबसे समृद्ध नगर समझा जाता था।

इस नगर की नींव किस काल में पड़ी इसका ठीक ठीक पता नहीं है। इसलाम-पूर्व खोरेज़्म के एक पवित्र धर्म-ग्रंथ 'ज़ेन्द-अवेस्ता' में मर्व को एक प्रमुख नगर बताया गया है।



सिनेमा थियेटर, चार्दज़्हू



डाक्टरों के सहायकों का स्कूल, चार्दज्हू

चार्दज्हू अध्यापन - शिक्षण - संस्था



प्राचीन चीनी लेखों में मर्व (चीनी में मू-लू) को चीन और ईरान के बीच के रास्ते पर पड़नेवाला एक प्रमुख नगर बताया गया है।

मर्व का उल्लेख नेस्टोरियनों के वृत्तान्त-अभिलेखों में भी मिलता है। इन अभिलेखों से पता चलता है कि चौथी शताब्दी के आरम्भ में मुर्ग़ाब नदी के एक नगर में एक ईसाई पादरी (धर्माध्यक्ष) रहा करता था।

सातवीं शताब्दी में मर्व पर अरबों का अधिकार हो गया। अरबों के वृत्तान्त-अभिलेखों में मर्व के आस-पास की अनेकानेक बस्तियों का उल्लेख मिलता है जहां की "आबादी अप्रैल की वर्षा की बूंदों की भांति घनी थी"।

उदाहरणार्थ, मुर्ग़ाब की सिंचाई-पद्धति, जिससे नगर और उसके उपनगर-क्षेत्रों को पानी मिलता था, एक आदर्श-पद्धति समझी जाती थी। अभिलेखों में यह उल्लेख भी मिलता है कि कभी मक्का के अरबी टेक्नीशियन बांध और नहरें बनाना सीखने के लिए वहां गये थे।

मर्व एक प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र था। नगर में पानी का बाहुल्य और फलोद्यानों, मस्जिदों और मक़बरों की बहुतायत थी। बाज़ारों में हमेशा भिन्न भिन्न भाषाएं बोलनेवालों का आना-जाना रहता था। ये लोग दुनिया के अनेक भागों—रूस, चीन, भारत, मवेरानगर और फ़ारस—से आया करते थे। यहां की जनसंख्या कई लाख थी। यहां पुस्तकालय, स्नानगृह, स्कूल, बड़े बड़े प्रासाद और क़ाफ़िलों की सरायें थीं। यह एक ऐसा नगर था जहां लोग हर प्रकार की चीज़ें ख़रीद सकते थे, चाहे वे चीज़ें पूर्व में बनती रही हों या पश्चिम में, और उन्हें दुनिया के भिन्न भिन्न भागों का समाचार मिल जाया करता था।

किन्तु एक ऐसा दिन भी आया जब यह सब सिर्फ़ यादगार बनकर रह गया। ख़ूंरेज़ चंगेज़-ख़ां ने, जो दुनिया फ़तह करने के लिए निकला था, मर्व पर अधिकार कर लेने के लिए अपने पुत्र तुली-ख़ां को भेजा। १२२१ में विजेता के दल उस बांध को तोड़ते हुए नगर में घुस गये जिस से शहर को पानी मिला करता था। वहां की सारी आबादी को क़त्ल कर डाला गया (कुछ सूत्रों के अनुसार यह संख्या ३० लाख और कुछ के अनुसार ७ लाख थी) और सारी इमारतें नष्ट कर दी गयीं। एक अकेले सुलतान संजार की क़ब्र बच गयी शायद इसलिए कि

हमलावरों के पास इतनी बड़ी इमारत को धूल में मिला देने के लिए कोई साधन न थे।

अब मर्व प्राचीन दुनिया का एक बड़ा केन्द्र न रह गया था। १५वीं शताब्दी में तैमूरलंग के एक पुत्र शाहरुक ने मुर्ग़ाब के बांध की मरम्मत करवायी और मर्व नाम के एक नये नगर की फिर से स्थापना की। किन्तु यह नया नगर उन दिनों के मर्व की एक छाया मात्र था जब उसपर ख़लीफ़ा का राज्य था या जिस समय सुलतान संजार वहां का शासक था। सौ वर्ष बाद उज़बेक ख़ान अब्दुल्ला ने मर्व के प्राचीन यश का पुनःसंस्थापन करने का एक नया प्रयत्न किया लेकिन स्वयं उसीके शासन-काल में मर्व बुख़ारा का एक छोटा-सा नगर मात्र बनकर रह गया था। आकार-प्रकार में बुख़ारा, समरक़ंद या ख़ीवा से छोटा था और निर्धन भी।

सन् १८०७ में इस नगर में केवल ५०० परिवार थे, लेकिन उन्होंने भी शीघ्र नगर छोड़ दिया और वे अन्यत्र बस गये। १९वीं शताब्दी के मध्य में तेक्कों और बुख़ारियों ने मुर्ग़ाब क्षेत्र में दो छोटे छोटे क़िले बनवाये थे—एक मारी के वर्तमान नगर के स्थल पर और दूसरा उससे १४ मील दूर प्राचीन मर्व के ध्वंसावशेषों के समीप। दूसरा क़िला सन् १८४० में बना था और उसका नाम था बैराम-अली।

अध्याय ३

१

मध्य एशिया की कपास एक ऐसा आकर्षण था जिसकी ओर रूस की पूंजी स्वाभाविक रूप से आकृष्ट होने लगी। अनेकानेक शताब्दियों में रूस और मध्य एशिया के लोगों के बीच के पारस्परिक संबंध शान्तिपूर्वक बढ़ते और दृढ़ होते गये। रूसी व्यापारियों ने बुख़ारा, ख़ीवा और कोकन्द की ख़ानशाही के साथ व्यापारिक सम्बंध स्थापित करने के प्रयत्न किये जिसके परिणामस्वरूप ताशक़ंद और ओरेनबर्ग के बीच के क़ाफ़िले वाले मार्ग की गणना युरोप और मध्य एशिया को मिलानेवाले सबसे व्यस्त व्यापारिक मार्गों में की जाने लगी।

कास्पियन पार क्षेत्र के रूस में मिल जाने के पश्चात् वहां बड़े बड़े परिवर्तन होने आरम्भ हो गये। बहुत-से उद्यमी व्यापारियों ने भी, जिन्होंने इस क्षेत्र की उर्वरता की बातें सुन रखी थीं, ज़ारशाही प्रशासन तथा सेना का अनुसरण किया।

जैसा कि मध्य एशिया के अनेक अन्य क्षेत्रों में हो चुका था वैसा ही तुर्कमनिया में भी हुआ – अर्थात् यहां भी कपास-बुआई की हवा बह चली। हर व्यक्ति को कपास में दिलचस्पी थी और अधिकारी, सेना के अफ़सर और पादरी लोग भी, जिनके लिए खेती या सिंचाई काला अक्षर भैंस बराबर थी, इसमें अभिरुचि लेने लगे। कपास बोनेवाले बहुत-से नये नये व्यक्तियों को इस क्षेत्र में किसी प्रकार का भी अनुभव न था। उन्होंने सिर्फ़ सुगमता के साथ धनोपार्जन के लिए ही यह वृत्ति अपनायी थी। ऐसे अधिकांश लोगों की यह इच्छा भी न होती थी कि वे इस उद्यम को एक नये आधार पर चलायें क्योंकि इन उत्पादकों का केवल एक ही उद्देश्य था और वह यह कि जैसे भी हो शीघ्र से शीघ्र कोई बड़ी सम्पदा उनके हाथ लग जाये।

किन्तु धन तात्कालिक तरीक़े से नहीं मिलता और न हर व्यक्ति को ही मिलता है। यहां के नये नये उत्पादकों ने स्थानीय दशाओं से अनभिज्ञ होने के कारण बड़ी बड़ी ग़लतियां कीं और वे प्रायः पूरी पूरी तरह से तबाह और बरबाद हो गये।

इनमें से एक ग़लती यह थी कि उन्होंने यहां की खेती के लिए कपास की एक ग़लत क़िस्म चुनी थी। मारी क़िस्म की यहां की स्थानीय कपास अवनत दशा को पहुंच चुकी थी। इसका उत्पादन कम हो गया था और रेशा भी छोटा और खुरदरा हो चला था। फलतः एक नयी क़िस्म की कपास की ज़रूरत थी लेकिन किस क़िस्म की इसे कोई न जानता था। 'समुद्री द्वीप' नामक एक क़िस्म की कपास अमेरिका से मंगायी जाती थी और उन दिनों वह बड़ी अच्छी समझी जाती थी। यह कपास यहां के बड़े बड़े क्षेत्रों में बोयी गयी लेकिन सारी मेहनत बेकार हुई क्योंकि बाद में यह पता चला कि 'समुद्री द्वीप' की कपास पकने के लिए जलवायु की अन्य दशाओं की ज़रूरत है और वे दशाएं मुर्ग़ाब की घाटी में नहीं पायी जातीं।

बाद में बैराम-अली की बस्ती में एक अनुसन्धान-केन्द्र की स्थापना हुई जिसने अन्ततः कपास की उस क़िस्म का पता चलाया जिसे लाभप्रद तरीक़े पर कास्पियन पार क्षेत्र में बोया जा सकता था। वे वर्ष प्राचीन मर्व के अवशेषों के निकट मुर्ग़ाब के डेल्टा में मर्व (मारी) और उस बैराम-अली बस्ती की वृद्धि के लिए प्रख्यात थे जो उस समय तथाकथित 'मुर्ग़ाब ज़ार-जागीर' का केन्द्र था।

आज ये दोनों नगर मुर्ग़ाब के नख़लिस्तान में बसे हुए दो प्रमुख क्षेत्र हैं — मारी एक प्रादेशिक केन्द्र तथा तुर्कमनिया के सबसे बड़े नगरों में से एक है और बैराम-अली एक बड़ा औद्योगिक नगर तथा प्रख्यात अवकाश-केन्द्र। बैराम-अली में ही सोवियत संघ में जलवायु की दशाओं के अनुकूल वह अकेला सैनेटोरियम है जहां गुर्दे के रोगी इलाज के लिए जाया करते हैं।

२

ज़ारशाही रूस से जिस हालत में मारी (मर्व) नामक नगर तुर्कमान प्रजातंत्र को मिला था, वह बहुत अच्छी नहीं कही जा सकती थी।

उसकी सूरत-शक्ल और आम व्यवस्था उसके चारों ओर के समृद्ध भूखंडों तथा उसके ऐतिहासिक नाम की विश्वविख्यात प्रसिद्धि के अनुरूप न थीं।

मुर्ग़ाब की घाटी से पैसा निचोड़ने की अपनी जल्दबाज़ी में यहां के कपास-उद्योगपतियों ने उस नगर को स्थायी निवास की जगह न समझी। आमोद-प्रमोद के स्थलों की बात तो दूर, वहां की जनता की स्वच्छता-सफ़ाई सम्बन्धी सबसे ज़्यादा ज़रूरी आवश्यकताओं तक पर कोई ध्यान न दिया गया।

उत्पादकों और सट्टेबाज़ों के लिए मारी तथा उसके कार्यालय, क्रय-केन्द्र और गोदाम मानो उस अस्थायी सराय के समान थे जो उनकी समृद्धि के मार्ग में पड़ती थी। वहां कोई सुन्दर और बड़ी बड़ी इमारतें न थीं। सड़कों के किनारे किनारे चौरस छतों वाले ऐसे एकमंज़िले मकान थे जो धूल भरे वृक्षों के पीछे छिपकर विलीन-से होते दिखाई पड़ते थे। मारी मध्य एशिया का एक सबसे गंदा और सबसे गर्म नगर था। इसकी सड़कें पक्की न थीं। उनपर मज़बूत सूखी मिट्टी पड़ी रहती थी जो चलनेवालों के पैरों अथवा घोड़ों, ऊंटों और गधों के

खुरों के नीचे पड़कर धूल बन जाती और घंटों हवा में उड़ा करती थी। किसी क़ाफ़िले अथवा गाड़ी के कारण उठी हुई धूल इतनी घनी हो जाती थी कि सड़क का कोना तक न दिखाई पड़ता था।

अशकाबाद के सफ़ेद मकानों की तुलना में मारी के मकान उनमें प्रयुक्त ईंटों के रंगों के अनुसार या तो भूरे होते थे या कत्थई। यही रंग उन अरीकों तथा नदी के जल में भी होता था जो नगर के बीचोंबीच से होकर बहा करती थीं। नदी ७६३ मील की यात्रा के पश्चात मारी पहुंचती है और इस काल में इसका वह बहुत-सा पानी नष्ट हो जाता है जो इसे पगपमीज़ के हिमखंडों और अपनी सहायक नदियों से मिलता है।

कपास-उत्पादक और व्यापारी धीरे धीरे धनी होते गये लेकिन इससे नगर की शक्ल-सूरत में कोई ख़ास फ़र्क़ न आया। मारी एक ऐसा नगर बन गया जहां व्यापारिक संस्थाओं के प्रतिनिधि अनिच्छापूर्वक रहते थे और जहां ज़ारों के अधिकारी इसलिए बसने को मजबूर हो गये थे कि वह ज़िला-केन्द्र के रूप में काफ़ी महत्त्वपूर्ण बन चुका था। यहां के निवासियों ने सड़कों के किनारे पेड़ लगाये, अरीकें खोदीं और मकानों के पास अपने बाग़ों के चारों ओर मिट्टी की नीची नीची दीवारें बनायीं। नगर विकास के नाम पर बस इतना ही हो पाया था।

फिर भी नगर बढ़ता गया। सन् १८८७ में मुर्ग़ाब के निचले क्षेत्रों में 'ज़ार-जागीर' की स्थापना की गयी और नदी पर दो बड़े बड़े बांध बनाये गये। इसके अतिरिक्त कपास क्षेत्र में भी वृद्धि की गयी और नगर का व्यापार बहुत कुछ बढ़ गया।

मारी रूस और बुख़ारा तथा फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान के व्यापारिक मार्ग पर पड़ता था। कुछ उत्पादकों के पास अत्यधिक धन-सम्पत्ति इकट्ठा होने लगी।

स्थानीय मुखिया—तुर्कमान शासक और बुख़ारा के व्यापारी—उतने ही लोभी और अपनी जेबें भरने के उत्सुक थे जितने कि वे लोग जो वहां नये नये आये थे। इन सबने देहक़ानों को, जो उनकी अपनी जन-जातियों में से थे, अत्यधिक ऊंचे व्याज पर क़र्ज़े दे देकर बुरी तरह ऋणग्रस्त कर रखा था। कुछ ही वर्षों में कपास के दलाल मालदार हो गये। यहां के बूढ़े सामूहिक कृषक मीरकामिल मुमिशबायेव

नामक उस एक महाजन को अब भी गालियां दिया करते हैं जिसने वास्तविक कपासोत्पादकों का खून चूस चूसकर १ करोड़ ४० लाख रूबल की विशाल संपत्ति इकट्ठी की थी।

मारी के प्रसार का मुख्य कारण उस ब्रांच-लाइन का निर्माण था जो सन् १८९८ में मध्य एशियाई रेलवे को कास्पियन-पार के सबसे दक्षिणी भाग से और सामान्यतया रूस कुश्का की बस्ती और क़िले से मिलाती थी।

यह नगर रेलवे का एक बड़ा जंकशन बन गया जहां रेलवे के बहुत बड़े बड़े कारखाने थे। उन कारखानों का स्थान किज़ील-अरवात के बाद दूसरा था।

अक्तूबर क्रांति के समय तक मारी एक गर्म, धूल-धूसरित और मलेरियाग्रस्त ऐसा नगर था जहां अधिकारी, कपास बोनेवाले, व्यापारी और नये नये धनी लोग तथा तबाह और बरबाद रोज़गारी बसते थे। यह वह नगर था जहां रेलवे-श्रमिकों की एकता मज़बूत हुई थी। इन श्रमिकों में से अधिकतर वे लोग थे जो रूस से आये थे लेकिन उन देहक़ानों की भी संख्या धीरे धीरे बढ़ती जा रही थी जिनके लिए ग़रीबी की चक्की में पिसना अब सह्य न रह गया था और जो रेलवे-श्रमिक बन गए थे।

३

गृह-युद्ध के समय कुछ काल तक मारी पर श्वेत रक्षकों का क़ब्ज़ा रहा। मारी में उन्होंने प० पोल्तोरात्स्की नामक उस व्यक्ति को गोली से उड़ा दिया था जो मध्य एशिया का बहादुर क्रांतिकारी और तुर्किस्तान प्रजातंत्र का श्रम-कमीसर था।

प० पोल्तोरात्स्की का पिता मध्य एशियाई रेलवे पर कगान स्टेशन का एक रेलवे-कर्मचारी था। कगान अथवा नया बुख़ारा, जैसा कि क्रान्ति के पूर्व उसका नाम था, तुर्किस्तान का एक बड़ा औद्योगिक और व्यापारी केन्द्र था। यहां इंजनों की मरम्मत के कारख़ानों के अलावा कपास-सफ़ाई वाले कारख़ाने, यातायात और व्यापार के ढेरों अभिकरण और बैंक के शाखा-कार्यालय थे। कगान उस पुराने बुख़ारा के समीप था जो पूर्व के मध्य काल का गढ़ और बुख़ारा की ख़ानशाही की राजधानी था। जब पोल्तोरात्स्की बच्चा ही था तभी से उसने प्राचीन पूर्वीय निरंकुशता की क्रूरताओं को देखा और उस नये पूंजीवादी जुए का अर्थ समझा था जो उन

श्रमशील व्यक्तियों के गले में पड़ा हुआ था, जिन्हें थोड़े-से पैसों पर अपनी मेहनत बेचनी पड़ती थी।

पोल्तोरात्स्की ने ज़ार के सत्ताविहीन होने की ख़बर सुनकर यह समझा था कि इस घटना से पूंजी और पूर्वीय स्वेच्छाचारिता का निश्चय ही पतन होगा। उसने लेनिन की अप्रैल-थीसिसों को जीवन का एक कार्यक्रम बनाया। वह सोवियतों के प्रथम अखिल रूसी अधिवेशन का प्रतिनिधि होकर पेत्रोग्राद गया और वहां कम्यूनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया।

अक्तूबर सन् १९१७ के आरम्भ में मध्य एशिया लौट आने पर उसने जनरल कोरोविचेन्को और करनल चेरकेज़ की प्रतिक्रान्तिकारी सेनाओं से ताशक़ंद की सड़कों पर मोर्चा लिया। वह ताशक़ंद के पहले सोवियत अख़बार 'सोवियन तुर्किस्तान' का संस्थापक एवं संपादक था। तुर्किस्तान प्रजातंत्र की सोवियतों के तीसरे अधिवेशन में उसे श्रम-कमीसर और सोवियत तुर्किस्तान की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था-परिषद का अध्यक्ष चुना गया था।

अशकाबाद में सामाजिक क्रान्तिवादियों के विद्रोह की ख़बर ताशक़ंद में जून सन् १९१८ में मिली थी और तभी पोल्तोरात्स्की को एक विशेष आयोग का अध्यक्ष बनाकर उस नगर को भेजा गया था। उसने कगान में श्वेत रक्षकों के एक घेरे को तोड़ते हुए चार्दज्हू में प्रवेश किया। अशकाबाद में क्या क्या हो रहा था इसके बारे में चार्दज्हू के लोगों को ठीक ठीक सूचना न थी। पोल्तोरात्स्की ने कास्पियन-पार के सामाजिक क्रान्तिवादी नेता फ़ून्तीकोव से टेलीफ़ोन पर बातचीत की और उससे अशकाबाद की स्थिति बताने को कहा। देशद्रोही फ़ून्तीकोव ने उस समय इस प्रश्न को यह कहकर टाल दिया कि "सब कुछ ठीक है"। उसने पोल्तोरात्स्की को यह भी बताया कि वह उसकी बात का यक़ीन करने के लिए ख़ुद अशकाबाद आकर सब कुछ अपनी आंखों से देख सकता है। यह निमंत्रण उसकी एक चाल थी।

पोल्तोरात्स्की चार्दज्हू से अशकाबाद के लिए रवाना हो गया। इधर फ़ून्तीकोव ने उसे पकड़ने के लिए श्वेत रक्षकों का एक मज़बूत दस्ता मारी भेज दिया।

२१ जुलाई को सामाजिक क्रान्तिवादियों ने पोल्तोरात्स्की को मारी के एक

डाकख़ाने में धर लिया। वह वहां ताशक़ंद के लिए टेलीफ़ोन करने और "नगर की अव्यवस्थित दशा को देखते हुए" सैनिक टुकड़ियों की मांग करने गया था।

पोल्तोरात्स्की को उसी रात गोली से उड़ा दिया गया। अपनी मृत्यु से कुछ ही घंटे पहले उसने मारी और अशकाबाद के श्रमिकों को यह पत्र लिखा था—

"मुझे गोली से उड़ा देने का हुक्म हो चुका है। शीघ्र ही मैं इस संसार से विदा लूंगा। मेरा जीवन अब कुछ ही घंटों का बचा है किन्तु, मेरे प्यारे साथियो, इसके पहले कि मैं अपनी आंखें मूंदूं मैं आपको एक संदेश देकर अपने इन अंतिम क्षणों का उपयोग कर लेना चाहता हूं।

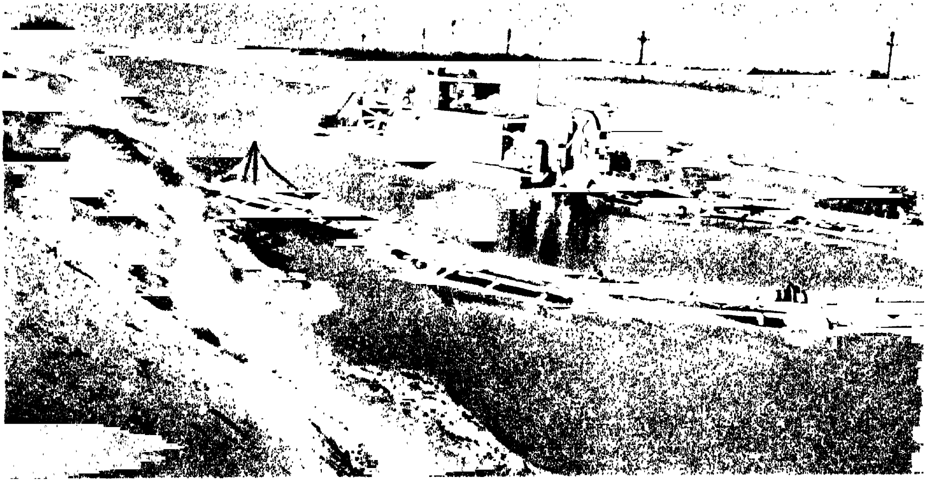
"साथी श्रमिको! मुझे पूरा विश्वास है कि श्वेत दल के हाथों मेरी मौत होने के बाद मेरी जगह वे दूसरे साथी लेंगे जो मुझसे ज्यादा साहसी और वीर होंगे और जो उस संघर्ष को आगे बढ़ायेंगे जिसे हमने पूंजीवादियों के चंगुल में पड़े हुए अपने श्रमिक-वर्ग के उद्धार के लिए आरम्भ किया था।

"किन्तु साथियो, तुम सब का साथ छोड़ते समय एक श्रमिक के नाते मुझे सिर्फ़ इतना ही डर है कि कहीं मेरी असमय मृत्यु से यह न समझ लिया जाय कि यह घटना अस्थायी पतन का लक्षण है अथवा अक्तूबर क्रान्ति द्वारा श्रमिक जनता को प्राप्त विजयों की क्षणिक हानि न। यदि ऐसा हुआ तो यह तुर्किस्तान के सर्वहारा-वर्ग के लिए ही नही अपितु विश्वक्रान्ति के हित में भी घातक होगा।

"मृत्यु न तो भयप्रद ही है और न पीड़ाजनक ही, किन्तु यह देखकर अवश्य दुख होता है कि लोकतंत्र का एक भाग—श्रमिक जनता का एक वर्ग—श्वेत रक्षकों से प्रभावित होकर अपनी क़ब्र अपने हाथों खोद रहा है, एक अपराध कर रहा है..."

इस शान्ति एवं साहसपूर्ण आरम्भ के बाद पोल्तोरात्स्की ने श्रमिकों से अपील की कि वे उन सामाजिक क्रान्तिवादी उपद्रवियों की बात न मानें जो क्रान्तिवादी नारों की आड़ में अपने कुकृत्यों को छिपा रहे हैं—

"आज से पहले श्रमिक जनता को इतनी होशियारी और इतनी बेशर्मी से कभी नहीं ठगा गया था। सर्वहारा-वर्ग को खुली एवं ईमानदारी के साथ लड़ी जानेवाली लड़ाइयों में परास्त करने के बजाय श्रमिक वर्ग के शत्रु श्रमिकों को



करा-कुम नहर से मिट्टी निकालता हुआ सकशनड्रेज

पार्दज़ू क्षेत्र के खेतों में जल-निकासी की व्यवस्था





चार्दज्हू क्षेत्र के मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन पर कपास चुननेवाली मशीनें

कपास चुननेवाली कार्यरत मशीनें



परस्पर लड़वाकर उन्हें नष्ट कर डालने का प्रयास कर रहे हैं। वे तुमसे कह रहे हैं कि वे अलग अलग व्यक्तियों से लड़ रहे हैं न कि सोवियत शक्ति से। यह सफ़ेद झूठ है। इसपर विश्वास मत करना। सच्ची बात तो यह है कि अब समाज की जोंकों – अफ़सर, लुटेरे, भिन्न भिन्न अज़ीज़-खां और बुख़ारा के अमीर – ने अपना सिर उठाया है।

"साथी श्रमिको! ..

"...प्रतिक्रान्ति के आगे घुटने न टेक देना वरना स्थिति बड़ी विषम हो जायेगी और उसके लिए और अधिक बलिदानों की ज़रूरत पड़ेगी। तुम सब ओरेनबर्ग के अपने श्रमिक भाइयों का अनुकरण करो। वे लोग दो महीनों से हड़ताल पर हैं। लेकिन प्रतिक्रान्ति के संचालकों में अभी इतनी शक्ति न आ सकी है कि वे उनसे एक भी मशीन ले सकें या उनका एक भी आदमी फोड़ सकें। तुम सब मिल-जुलकर आगे बढ़ो, अपने हितों की रक्षा में आगे बढ़ो।

"और उस प्रत्येक व्यक्ति को कलंकित कर दो जो क्रान्ति की जड़ खोद रहा है।

प० पोल्तोरात्स्की"

इस प्रकार मारी और अशकाबाद के श्रमिकों के समक्ष उसने वे बातें रखी जिन्हें व्यक्तिगत रूप से कहने का अवसर उसे जीवन भर न मिला था। उसने अपना पत्र हृदय को द्रवित कर देनेवाले इन शब्दों में समाप्त किया –

"तो प्यारे साथियो! मैं समझता हूं कि मैं जो कुछ कहना चाहता था उसे कह चुका हूं। मुझे विश्वास है कि आप मेरी प्रतिष्ठा नहीं गिरायेंगे।

"अब मैं शान्त मस्तिष्क से आपसे हमेशा के लिए विदा ले रहा हूं यद्यपि मैं यह अपने निश्चय के विरुद्ध कर रहा हूं।

प० पोल्तोरात्स्की, मृत्यु-दंडित बन्दी

अर्धरात्रि, २१ जुलाई सन् १९१८"

प्रातःकाल उस वीर बोल्शेविक को जेल के बाहर निकाला गया और नगर की बाहरी सीमा पर एक मिट्टी की दीवाल के सहारे खड़ा करके गोली से उड़ा दिया गया।

तुर्कमान जनता इस बहादुर रूसी श्रमिक को बड़े समादर के साथ याद करती है क्योंकि उसने मध्य एशिया के दलित वर्गों का उद्धार करने के लिए अपनी सारी शक्ति और सारा जीवन लगा दिया था।

पोल्तोरात्स्की के नाम पर आज प्रजातंत्र की अनेकानेक सांस्कृतिक और सार्वजनिक संस्थाओं – स्कूलों, क्लबों और अस्पतालों – के नाम रखे गये हैं।

४

मारी में सबसे प्रमुख सड़क का नाम है – पोल्तोरात्स्की मार्ग। वास्तु-कला की दृष्टि से यह सड़क अधिक दिलचस्प नहीं है। वस्तुतः इस नगर में शानदार इमारतें तक न मिलेंगी। यहां के सबसे ऊंचे सिरे मकानों के नहीं अपितु सड़कों और बागों में लगे हुए पुराने वृक्षों की फुनगियों के हैं।

मारी एक चौरस मैदान में स्थित है जिसे रेलवे तथा नदी चार भागों में विभाजित करती हैं – रेलवे पूर्व से पश्चिम को और नदी उत्तर से दक्षिण को। पोल्तोरात्स्की सड़क नगर के दक्षिणी भाग में, जहां वह रेलवे के समानान्तर चलती है, लगभग आध मील लम्बी है। इसका पूर्वी सिरा मुर्ग़ाब पर बने हुए पुल पर पड़ता है।

नदी के पूर्वी तट के किनारे की सड़कों के दोनों ओर काफ़ी घनी वनस्पति पायी जाती है – प्रत्येक आवास के चारों ओर या तो कोई फलों का बाग़ है या अंगूर का उद्यान। यहीं पर नगर का मनोरंजन-पार्क भी स्थित है। नगर के इसी भाग में तेक्के की वह पुरानी मंडी भी है जो क्रान्ति-पूर्व काल में मारी का मुख्य व्यापारिक केन्द्र थी। रविवारों को इस मंडी में भी चहल-पहल दिखाई पड़ती है क्योंकि उस दिन पास-पड़ोस के औलों के सामूहिक कृषक वहां अपने अंगूर, गोश्त, प्याज़, सरदे, काष्ठ-फल, शहद, मछली, ऊन तथा अन्य वस्तुएं लाते हैं।

सोवियत शासन-काल में इस नगर में काफ़ी विकास हुआ है और अनेकानेक सार्वजनिक इमारतें, खासकर स्कूल और अस्पताल बनाये गये हैं। इसके अतिरिक्त यहां बहुत-से औद्योगिक उद्यम भी पनपे हैं। यहां की मुख्य सड़कें अस्फ़ाल्ट बिछाकर पक्की की गयी हैं। यहां बसें भी चालू की गयी हैं।

मुर्ग़ाब पर कांक्रीट का एक पुल भी बनाया गया है। इस पुल के दोनों ओर लोहे की रेलिंग लगायी गयी है। पुल के निकट के एक छोटे-से बाग़ में पोल्तोरात्स्की का एक स्मारक निर्मित किया गया है। किन्तु बहुत-से आवासों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है।

नगर की पूर्वी सीमाओं पर विगत दो वर्षों में करा-कुम नहर-निर्माताओं की एक बस्ती बस गयी है। अब मुर्ग़ाब नख़लिस्तान में आमू-दरिया के जल के कारण फ़सलों का क्षेत्र दूना हो जायेगा और मारी नगर के लिए एक नये युग का उदय होगा।

५

मुर्ग़ाब नख़लिस्तान मुर्ग़ाब नदी के डेल्टा में एक बड़ा-सा त्रिकोण बनाता है जिसके तीनों कोण इस प्रकार हैं—पश्चिम में मारी, पूर्व में बैराम-अली और दक्षिण में हरियाली-आच्छादित एक छोटा-सा नगर इयोलोतान, जो अपने अनुसन्धान-केन्द्र के लिए विख्यात है।

तुर्कमनिया में तशौज़ ही वह बड़ा नगर है जो पास-पड़ोस की बस्तियों और गांवों की जनसंख्या को देखते हुए मारी की बराबरी कर सकता है। क्रास्नोवोद्स्क के चारों ओर पहाड़ियां, समुद्र और रेगिस्तान और अशकाबाद के तीन मील उत्तर की ओर मरुभूमि है। चार्दज्हू प्रादेशिक केन्द्र के एक तरफ़ आमू-दरिया और दूसरी तरफ़ दो सामूहिक फ़ार्मों के खेत हैं जो उसे करा-कुम से अलग करते हैं। किन्तु मारी के चारों ओर जहां तक निगाह जाती है बस्तियां, जुते-बुए खेत और फलोद्यान हैं। मकानों की रूप-रेखाएं अथवा सामूहिक फ़ार्मों के फलोद्यानों की धूमिल आकृतियां मुर्ग़ाब नख़लिस्तान के किसी भी स्थास से देखी जा सकती हैं।

मारी क्षेत्र में ६० प्रतिशत सामूहिक फ़ार्म डेल्टा के त्रिकोण में स्थित हैं।

नख़लिस्तान का भ्रमण करने और वहां के सारे सामूहिक फ़ार्मों को देखने के लिए एक दिन पर्याप्त नहीं। डेल्टा के प्रमुख मार्गों तथा सड़कों पर यात्री को लकड़ी की कुछ मेहराबें दिखाई पड़ेंगी जिनपर धूमिल पड़ते हुए लाल रंग की

पताकाएं होंगी और 'स्वागतम्' शब्द लिखा होगा। ये मेहराबें सामूहिक कृषकों द्वारा अपने अपने भूखंडों की चौहद्दी पर यात्रियों के स्वागतार्थ बनायी गयी थीं। यहां आने-जानेवालों का इतना अधिक तांता लगा रहता है कि प्रमुख सड़कें मारी की सड़कों से लगी हुई प्रतीत होती हैं।

एक पताका से उस सड़क के आरम्भ होने का पता चलता है जो अन्द्रेयेव सामूहिक फ़ार्म तक जाती है। दूसरी पताका पर बड़े बड़े अक्षरों में 'स्वागतम्' लिखा हुआ है। इस पताका से उस श्वेरनिक फ़ार्म की दिशा का बोध होता है जिसकी भूमि के बीचोंबीच सुलतान मन्जार का मक़बरा है। यह मक़बरा मीलों दूर से दिखाई पड़ जाता है। तीसरी पताका इसलिए नज़र नहीं आती कि उसके सामने मोटे मोटे लट्ठे लादे हुए ट्रकों की क़तारें आती-जाती दिखाई देती हैं। इस क्षेत्र में दिखाई पड़नेवाली प्रायः प्रत्येक ट्रक में इमारती सामान और ख़ासकर इमारती लकड़ी भरी रहती है। इस दृश्य को देखकर यात्री को मारी के नये मकानों के कम होने का कारण समझ में आ जायेगा। प्रायः समस्त उपलब्ध सामान सामूहिक फ़ार्मों की बस्तियों के निर्माण के काम आता है। अभी हाल ही तक इस इलाक़े के समस्त औलों में 'फ़ेल्ट' के किबित्का थे किन्तु अब प्रत्येक सामूहिक फ़ार्म में रहने के मकान, अस्पताल, स्कूल और क्लब हैं। इस निर्माण-कार्य में काफ़ी अधिक परिश्रम लगा था क्योंकि स्लेट, कीलों और कांच आदि इमारती सामानों को लाने के लिए यातायात की व्यवस्था करनी पड़ी थी। इसके अतिरिक्त यहां प्रयुक्त एक एक लकड़ी को साइबेरिया, उराल अथवा अरख़ांगेल्स्क क्षेत्र से लाना पड़ा था। मध्य एशिया में इमारती लकड़ी नहीं होती।

यहां एक ऐसा सामूहिक फ़ार्म भी है जिसे यात्री को अवश्य देखना चाहिए। इसका नाम है—'बोल्शेविक'। यह मारी क्षेत्र का एक समृद्ध सामूहिक फ़ार्म है। इसकी समृद्धि कोई आश्चर्यजनक घटना नहीं है क्योंकि सन् १९५३ तक इस क्षेत्र के ९७ प्रतिशत फ़ार्मों की वार्षिक आमदनी लाखों रूबल तक पहुंच चुकी थी। इसके बारे में अधिक दिलचस्प बात यह है कि यह तुर्कमान प्रजातंत्र का सबसे पुराना सामूहिक फ़ार्म है। इसकी स्थापना १९२९ में हुई थी।

अध्याय ४

१

प्रथम विश्वयुद्ध काल में रूस में बननेवाले समस्त सूती वस्त्रों का अर्द्धांश मध्य एशिया की कपास से तैयार किया जाता था।

गृह-युद्ध के समय कपास-उत्पादन बहुत गिर गया था। सन् १९२२ में मध्य एशिया में जितनी कपास उगायी जाती थी वह सन् १९१६ की अपेक्षा ३० गुनी कम थी। उस समय कपास साफ़ करनेवाले १७० कारख़ानों में से केवल १७ ही कार्य करते रहे। देहक़ानों ने कपास के बजाय गेहूं बोना आरम्भ किया क्योंकि रूस से अनाज मिलना बहुत मुश्किल हो रहा था। उन वर्षों में मुर्ग़ाब, फ़र्गाना या नाशक़ंद के आस-पास कपास की खेती केवल यत्र-तत्र ही दिखाई पड़ती थी। अब उसका स्थान गेहूं ने ले लिया है। दूसरी ओर दबी हुई कपास के गट्ठे भी, जो क्रान्ति से पूर्व रूस में नहीं भेजे जा सके थे, यहीं रह गये थे। बसमाचियों के विरुद्ध लिये गये मोर्चे के वर्षों में ये गट्ठे हर रेलवे-स्टेशन पर और हर बसे बसाये स्थान पर देखने को मिलते थे। यहां वे आक्रमणों के समय रक्षार्थ अवरोधों के रूप में काम में लाये जाते थे।

मध्य एशिया में मुठभेड़ के कोई निश्चित स्थान अवश्य नहीं थे किन्तु लुटेरों के आक्रमण की आशा तो प्रत्येक बस्ती में और किसी भी समय की जा सकती थी। इसीलिए अपने बचाव के निमित्त कपास के इन गट्ठों को ख़ास ख़ास स्थानों पर रख दिया जाता था। बचाव के निमित्त खाइयों के स्थान पर कपास के ये गट्ठे ही काम में लाये जाते थे। ये गट्ठे मालगाड़ियों तथा दूसरी गाड़ियों में किनारों पर लगा दिये जाते और जब कभी बसमाचियों का कोई हमला होता तो उसका जवाब देने के लिए उनकी आड़ से गोलियों की वर्षा आरम्भ कर दी जाती। इस प्रकार उस काल में ट्रेनें तक सशस्त्र मोर्चों के साधन बन रही थीं।

उस ज़माने में सोवियत सरकार को कपास विदेशों से ख़रीदनी पड़ती थी।

सोवियत सेना ने श्वेत रक्षकों के दलों का सफ़ाया कर दिया और आक्रमणकारियों को निकाल बाहर किया। सन् १९२० में व्लादीमिर इल्यीच लेनिन

ने एक आदेश निकालकर सोवियत कपास-उत्पादन के विकास का एक विस्तृत कार्यक्रम निर्दिष्ट किया था। अब सोवियत अनुसन्धानकर्त्ता कपास की देशी क़िस्मों का पता चलाने में जुट गये।

मध्य एशिया में राष्ट्रीय प्रजातंत्रों का निर्माण होते ही बसमाचियों के दल छिन्न-भिन्न हो गये। कृषि और खासकर कपास के उत्पादन को शीघ्रातिशीघ्र पूर्व स्तर तक लाने के लिए यथासम्भव सभी प्रयास किये गये।

प्रथम पंचवर्षीय योजना-काल के आरम्भ में मध्य एशियाई प्रजातंत्रों में १७,२६,००० एकड़ भूमि में कपास की खेती की जाती थी। यह क्षेत्रफल सन् १९१३ में कपास की खेतीवाले क्षेत्रफल से बड़ा था। किन्तु सोवियत कपास-उत्पादन के क्षेत्र में अधिक उन्नति केवल सामूहीकरण के वर्षों में ही सम्भव हो सकी।

२

'बोलशेविक' कोलखोज़, उसके बाग़-बग़ीचों और आरामदेह कुटीरों ने अब एर्सारी-याब के क्रान्तिपूर्व के उस औल का स्थान ले लिया है जहां सिवाय मैले-कुचैले किबित्काओं के और कुछ भी न था।

औल में कोई बाग़-बग़ीचे न थे। चालीस वर्ष पूर्व वहां कपास के बड़े बड़े खेतों के स्थान पर, परती ज़मीनों के बीच छोटे छोटे खेत थे जो नहर के पास थे तथा दूर से उस विस्तृत परती ज़मीन पर पैवंदों की तरह लगते थे।

एर्सारी-याब की ज़मीन पर ज़ार का क़ब्ज़ा था। यह क्षेत्र मुर्ग़ाब के निचले भागों में 'ज़ार-जागीर' के रूप में निर्दिष्ट २,८७,००० एकड़ भूमि का एक भाग था। जागीर द्वारा तो इस क्षेत्र के एक छोटे-से भाग पर ही खेतीबारी की जाती थी किन्तु इसका अधिकांश उन स्थानीय शासकों को पट्टे पर दे दिया जाता था जो उसे दासत्व की शर्तों पर ग़रीब किसानों को उठा देते थे। यद्यपि देहक़ान लोग ज़मीन गोड़ते थे, बोते थे, सींचते थे फिर भी उन्हें अपनी मामूली फ़सल का एक बहुत बड़ा भाग स्थानीय शासक को दे देना होता था और देहक़ान हमेशा उसके क़र्ज़ के नीचे दबे रहते थे।

औल में आग़ा यूसुफ़ अली नामक एक व्यक्ति रहता था जिसकी ग़रीब किसानों

में बड़ी इज़्ज़त थी। वह एक स्थानीय शासक के ग़ुलाम का पुत्र था और जब बालक था उस समय स्वयं भी ग़ुलाम था।

आग़ा यूसुफ़ रात-दिन उस ज़मीन पर पसीना बहाता, जो उसकी अपनी न थी। लेकिन फिर भी क्रान्ति के पहले के पूरे चालीस वर्षों तक निर्धनता उसे अपने पाश में जकड़े रही।

जिस समय देहक़ानों को ज़ार के सत्ताविहीन होने का समाचार मिला – यद्यपि यह समाचार उन्हें देर से मिला था – उस समय आग़ा यूसुफ़ ने समझ लिया था कि स्थानीय शासक और जनता की निर्धनता की भी वही गति होगी। किन्तु गृह-युद्ध छिड़ गया और फलतः औल के जीवन-क्रम में कोई भी परिवर्तन न आया।

जबरन क़ब्ज़ा करनेवालों को निष्कासित कर चुकने के पश्चात् सन् १९२५ में ज़मीन तथा पानी संबंधी एक सुधार हुआ जिसके अनुसार वह भूमि जनता में बांट दी गयी जो पहले स्थानीय शासकों के क़ब्ज़े में थी। आग़ा यूसुफ़ को भी अपना एक भाग मिल गया। यद्यपि स्थानीय शासक (बाई) की सत्ता का अन्त हो चुका था फिर भी भूमि वैसी ही सूखी और कठोर बनी रही। वह पानी और खाद के लिए तड़पती रही किन्तु किसानों ने उसकी पुकार न सुनी और वे अपने उन्हीं श्रम-उपकरणों का उपयोग करते रहे जो उन्हें उनके पूर्वजों से विरासत में मिले थे।

आग़ा यूसुफ़ निरक्षर था किन्तु वह उस हर बात को बड़े ध्यान से सुनता था जो तत्कालीन अख़बारों में निकला करती थी। साथ ही वह नगर से आये हुए लोगों से भी जानकारी प्राप्त किया करता था। अब उसे ज़िन्दगी भर ग़रीब किसान के रूप में बना रहना पसन्द न था। जिस समय उसने सामूहिक फ़ार्मों की स्थापना संबंधी पार्टी की घोषणा सुनी उसी समय वह उसे कार्यान्वित करने में जुट पड़ा और उसने एक सामूहिक फ़ार्म का निर्माण करने के लिए अपने जैसे बीस ग़रीब किसानों को तैयार कर लिया। यह बात सन् १९२९ की है। आग़ा के प्रयासों के फलस्वरूप तुर्कमनिया का पहला सामूहिक फ़ार्म एर्सारी-याब में स्थापित हुआ। इस फ़ार्म का क्षेत्रफल ८७ एकड़ था। इस सामूहिक फ़ार्म का नाम 'बोलशेविक' पड़ा और आग़ा यूसुफ़ को उसका अध्यक्ष चुना गया। उस समय आग़ा यसुफ़ की अवस्था पचास वर्ष की थी।

फ़ार्म की पहली फ़सल सन् १९२९ में काटी गयी। उस वर्ष फ़ार्म में प्रति एकड़ ७०० पौंड कपास हुई। आरम्भ के लिए यह कोई कम सफलता का लक्षण न था क्योंकि उन वर्षों बड़ी फ़सल काटनेवाला किसान यदा-कदा ही होता था किन्तु आग़ा यूसुफ़ अदम्य उत्साही एवं परिश्रमशील होते हुए भी दूरदर्शी था, दीर्घसूत्री था। उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि यदि अपने श्रम को सम्मिलित रूप देनेवाले लोग सोवियत सरकार की सहायता से काम करने लगें तो निश्चय ही वे चमत्कारों को जन्म दे सकेंगे। आग़ा यूसुफ़ ने विचार किया कि यदि निजी फ़ार्मों की अपेक्षा सामूहिक फ़ार्मों की उपज में वृद्धि न हुई तो ऐसे फ़ार्मों का लाभ ही क्या? उसने फ़सलों का उत्पादन बढ़ाने के निमित्त प्राणपण से प्रयास करने आरम्भ कर दिये।

वह प्रायः नगर में आने लगा जहां उसने कृषिविदों और उन व्यक्तियों से परामर्श लेना शुरू किया जो कपास-उत्पादन के क्षेत्र में अधिकारी समझे जाते थे। इन परामर्शों के फलस्वरूप उसने अपने फ़ार्मों में कृषि की उन्नत प्रणाली का प्रयोग आरम्भ किया। शीघ्र ही उसके प्रयासों को सफलता मिली। सन् १९३० में 'बोलशेविक' कोलखोज़ में प्रति एकड़ १०७० पौंड कपास पैदा हुई तथा अगले वर्ष शरद-काल में यह उपज सन् १९२९ की दुगुनी हो गयी।

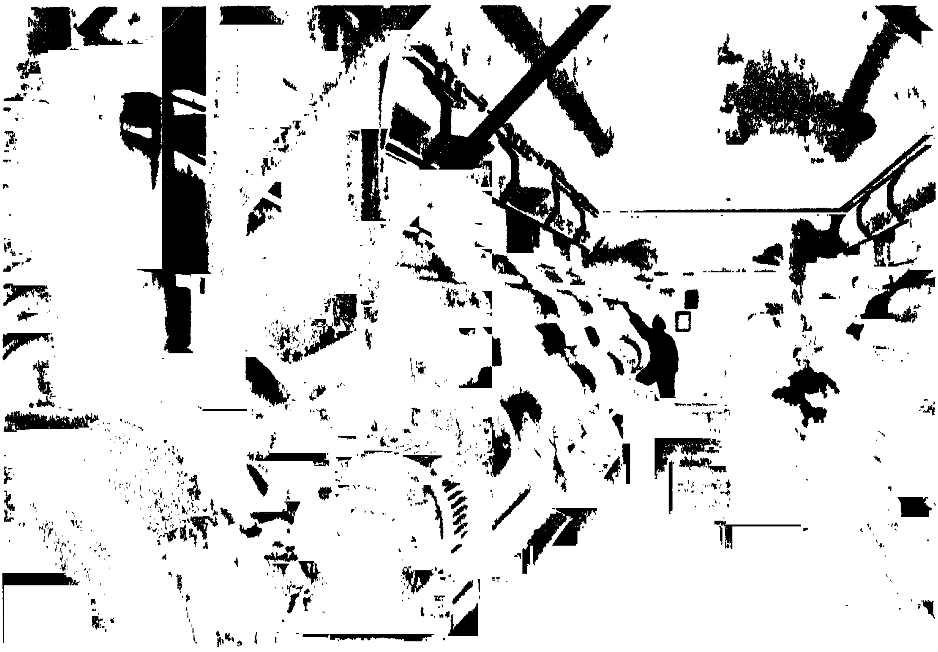
अपनी इस सफलता से फ़ार्म-अध्यक्ष और सामूहिक कृषकों का उत्साह अधिक बढ़ा। फलतः दूसरे देहक़ानों ने भी फ़ार्म में सम्मिलित होने की अनुमति मांगी और इस प्रकार फ़ार्म की सदस्य-संख्या में निरंतर वृद्धि होती गयी। सरकार ने भी इस वृद्धिप्राय फ़ार्म की सहायता की और उसे कल्टीवेटर, हेंगे तथा हल दिये। ये सारे उपकरण एर्सारी-याब के लिए नये थे।

सन् १९३३ में इस फ़ार्म में कपास की प्रति एकड़ फ़सल २४०० पौंड हुई। फलतः 'बोलशेविक' कोलखोज़ का स्थान तुर्कमनिया के समस्त सामूहिक फ़ार्मों में प्रथम रहा। सरकारी सहायता ने तो इन सफलताओं में चार चांद ही लगा दिये। फ़ार्म के खेतों पर जब पहला ट्रैक्टर दिखाई दिया तो औल के सभी नर-नारियां शोर मचाते हुए उसे देखने को दौड़ पड़ें। ट्रैक्टर देहक़ानों के जीवन में एक नवयुग का सन्देशवाहक बनकर आया था।



कपास का गोदाम

चार्दज़ू में कपास साफ़ करने की मिल का एक विभाग





रुई को दबाकर उसके गट्ठर बनाने का एक विभाग

सामूहिक फ़ार्म बराबर उन्नति करता गया और शीघ्र ही पुराने औल की काया पलट गयी। यद्यपि वहां के लोग पहले की तरह रहते औलों में ही थे किन्तु अब वहां बिजली की रोशनी थी और था अधिक आराम।

जैसे ही जैसे सामूहिक फ़ार्म उन्नति करता गया वैसे ही वैसे उसके अध्यक्ष का अनुभव भी परिपक्व होता गया। वह फ़सलों की वृद्धि के लिए अथक परिश्रम कर रहा था और अपने अनुसन्धान-कार्यों में लगा हुआ था। उसने फ़ार्म के अनेक कार्यों को सदस्यों में बांट दिया और इस बात का विशेष ध्यान रखा कि कार्य उपयुक्त व्यक्तियों को ही दिये जायें। वह फ़ार्म के प्रत्येक सदस्य द्वारा किये गये कार्यों का ठीक ठीक लेखा-जोखा रखता था। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वयं किसान भी अपने कार्यों में दिलचस्पी लेने लगे। उसने सुन रखा था कि अमेरिका में कहीं कहीं कपास की उपज प्रति एकड़ २६७० पौंड होती है। फिर क्या था? वह इससे भी अधिक फ़सल पैदा करने की ओर जुट पड़ा।

सन् १९३४ के शरद-काल में जब फ़सल का लेखा-जोखा किया गया तो मालूम हुआ कि अमेरिका से अधिक कपास पैदा करने के संबंध में कहे गये आग़ा यूसुफ़ के शब्द कोरी कल्पना मात्र न थे। उस वर्ष फ़ार्म में प्रति एकड़ २८९५ पौंड कपास हुई थी। इस प्रकार उन्हें अमेरिका में कपास-उत्पादन की उच्चतम सीमा से भी २२५ पौंड अधिक कपास मिली।

वर्ष प्रतिवर्ष फ़ार्म की उन्नति होती गयी यहां तक कि सन् १९३५ में उसकी आमदनी १० लाख रूबल हो गयी। वहां एक शिशु-गृह तथा एक स्कूल की स्थापना हुई और एक किबित्का-वाचनालय खोला गया। अब लोगों के घरों में रेडियो-सेट भी आने लगे। फिर एक प्रयोगशाला की स्थापना की गयी और मारी, बैराम-अली तथा इयोलोतान के कृषिविदों को सामूहिक फ़ार्म की नव-निर्मित प्रयोगशाला में आमंत्रित किया गया। उस वर्ष अपने लिए मकान बनाने के साथ ही साथ सामूहिक कृषकों ने एक आरामगृह भी बनाया। यह सायेदार पार्क में बनी एक सुन्दर इमारत है जिसके एक चौक में लेनिन का स्मारक रखा हुआ है।

पहले तो पास-पड़ोस के और फिर दूर दूर के सामूहिक फ़ार्मों के अधिकाधिक लोग यह देखने आने लगे कि मुर्ग़ाब के देहक़ानों ने अमेरिका का रिकार्ड कैसे तोड़ा।

तुर्कमनिस्तान की कम्यूनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के निर्णयानुसार 'बोलशेविक' कोलखोज़ को अखिल संघीय प्रतिष्ठा-पद पर एक सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ।

फ़रवरी सन् १९३५ में आग़ा यूसुफ़ पहली बार मास्को गया। यह वह अवसर था जब कि सामूहिक फ़ार्मों के प्रमुख कृषकों का द्वितीय अखिल संघीय अधिवेशन हुआ था। उसने क्रेमलिन तथा लेनिन का मसोलियम देखा और अन्य प्रमुख सोवियत सामूहिक कृषकों के साथ कृषि-आर्टेल के नियमों का आलेख तैयार करने में हाथ बंटाया।

इस सामूहिक फ़ार्म के जीवन में सन् १९४० का वर्ष एक महत्त्वपूर्ण वर्ष था। उस समय पहली बार महीन रेशे की कपास एक बड़े पैमाने पर बोयी गयी। सोवियत संघ की कृषि-प्रदर्शनी में इस फ़ार्म को देश का एक सर्वोत्तम फ़ार्म घोषित किया गया और उसके अध्यक्ष को लघु स्वर्ण-पदक प्रदान किया गया।

इस समय तक फ़ार्म का अपना एक ईंटों का कारख़ाना, मशीनों के लिए एक गैरेज, एक पुस्तकालय, स्नानगृह, मुर्ग़ी-पालन-केन्द्र और ओसारे तथा पशुओं को नहलाने के लिए एक ख़ास तालाब बन चुका था।

जिस समय युद्ध छिड़ा उस समय ५८ सामूहिक कृषकों ने भी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सेना में भाग लिया।

जो लोग घर पर रह गये थे उन्होंने विजय की कामना से प्रेरित होकर दूने जोश के साथ खेतों पर काम करके योजना में निश्चित उत्पादन-लक्ष्यों से अधिक उत्पादन किया। उन्होंने नभ-सेना के लिए दो लड़ाकू जहाज़ भी ख़रीदे।

युद्धोत्तर वर्षों में दूसरे फ़ार्मों के साथ सम्मिलित हो जाने के बाद से 'बोलशेविक' कोलख़ोज़ का भूक्षेत्र १० गुना बढ़ गया है। १९५० में इसकी आय ९० लाख रूबल थी जो १९५३ में १ करोड़ १० लाख रूबल हो गयी।

फ़ार्म की सफलताएं उसके सदस्यों के उत्तरोत्तर बढ़ते हुए ज्ञान तथा अनुभवों के ही परिणाम हैं। जिस समय से सामूहिक फ़ार्म की स्थापना हुई थी उसी समय से आग़ा यूसुफ़ उसके साधारण से साधारण सदस्यों में कृषि के प्रति अभिरुचि

उत्पन्न करने में जुट गया था। फ़ार्म की प्रगति की कहानी वस्तुतः विज्ञान और सामूहिक खेती के सहयोग की कहानी है।

फ़सल का उत्पादन बढ़ाने के साथ ही साथ फ़ार्म ने पानी की खपत को भी ३० प्रतिशत कम कर दिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि राज्य से पानी के अतिरिक्त राशन की मांग किये बिना ही उसने फ़सलों का अपना क्षेत्र बढ़ा लिया। इयोलोतान की अनुसंधानशाला ने इस उदाहरण का अनुकरण करके कपास के खेतों के लिए अपेक्षित जल की मात्रा आधी कर दी।

'बोलशेविक' कोलख़ोज़ को जो अनुभव हुए हैं उनका तुर्कमनिया तथा अन्य प्रजातंत्रों के कपास-विशेषज्ञों द्वारा ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जा रहा है।

इस कोलख़ोज के दर्शकों में ताजिकिस्तान और उज़बेकिस्तान के कपास-उत्पादक तथा आज़रबाइजान, येरेवान और ख़ारकोव की कृषि-संस्थाओं के विद्यार्थी भी होते हैं। आग़ा यूसुफ़ ने भी एक समाजवादी प्रतिस्पर्द्धी जांच-टीम के एक सदस्य के रूप में उज़बेकिस्तान, ताजिकिस्तान और आज़रबाइजान का दौरा किया था।

सन् १९५३ में सामूहिक कृषकों ने अपनी कृषि योग्य ४,२९८ एकड़ भूमि में से १,३९५ एकड़ भूमि पर कपास की बुआई की। कार्य-दिवस की प्रत्येक इकाई के लिए २८ रूबल नगद और नौ पौंड अनाज दिया जाता था। इस प्रकार कुछ परिवारों ने तो ६०,०००–७०,००० रूबल तक कमाया। उस वर्ष प्रति परिवार औसत नगद आमदनी १५,०००-१८,००० रूबल थी। बाद के कुछ वर्षों में कोलख़ोज़ की आमदनी और बढ़ गयी।

अध्याय ५

१

तुर्कमनिया के प्रायः अन्य समस्त स्थानों की तरह मुर्ग़ाब की घाटी में भी कपास का वहां के जन-जीवन में एक अपना महत्त्व है।

बुआई का मौसम मार्च में आरम्भ होता है। उस समय तक सभी नहरों और अरीकों की फ़ालतू मिट्टी निकाल ली जाती है और नदी तथा मुख्य नहरों को

सुव्यवस्थित कर लिया जाता है। बुग्राई को ग्रधिक समय तक नहीं टाला जा सकता क्योंकि कपास पकने के लिए कभी कभी तो वसंत में एक एक हफ़्ते तक का विलम्ब बड़ा घातक सिद्ध होता है।

बुग्राई के बाद खेतों में दूसरे काम शुरू होते हैं—सिंचाई, निराई, खाद देना, फूलों को ग्रलग करना, फुनगियों को बराबर करना। गर्मी में खेतों को पांच-छः बार तक पानी दिया जाता है। खेतों में चलनेवाला कार्य कृषकों को शरद-काल के ग्रारम्भ तक, जब तक फ़सलें कट नहीं जातीं, व्यस्त रखता है।

बिनौले सब के सब एक साथ नहीं खुलते जिससे कुछ कठिनाइयां पैदा होती हैं क्योंकि ऐसे समय केवल पक्की कपास ही चुनी जा सकती है। फलतः कपास चुननेवालों को तेज़ी से ग्रौर सावधानी के साथ ग्रपना कार्य करना पड़ता है ग्रौर इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि कहीं हाथ में ग्रधपक्की कपास न ग्रा जाये। यह कार्य ग्रोस सूख जाने के तत्काल पश्चात् ही, सूर्योदय होने के साथ ही साथ, ग्रारम्भ हो जाता है। परन्तु चुननेवाले इसके पहले ही खेतों की देख-भाल करके एक जगह ग्रपना ग्रड्डा जमा लेते हैं ग्रौर ग्रपने बोरे रख देते हैं। होशियार श्रमिक प्रतिदिन लगभग २२० पौंड तक कपास चुनते हैं। तुर्कमनिया के बहुत-से चुननेवालों ने तो प्रति फ़सल बीस बीस हज़ार पौंड तक का लक्ष्य पूरा किया है।

कपास-उत्पादन को ग्रौर भी ग्रधिक बढ़ाने की दृष्टि से वैज्ञानिकों ने एतद्-संबंधी भारी से भारी कामों—जैसे नहरों से मिट्टी निकालने ग्रौर कपास चुनने—को यंत्रीकृत करने की दिशा में बहुत कुछ कार्य किया है। ग्रब यह समझना चाहिए कि ये कार्य भी पूरे हो गये हैं। ग्रब केवल महीन रेशेवाली कपास ही हाथ से चुनी जाती है। इस समय मुर्ग़ाब की घाटी ग्रौर मध्य एशिया के सभी प्राचीन नख़लिस्तानों में छोटी छोटी नहरों की खुदाई करने की मशीनें तथा सक्शन-ड्रेज* कार्य कर रहे हैं। एक बड़ा सक्शन-ड्रेज १५ हज़ार व्यक्तियों का काम करता है।

मशीनों द्वारा नहरों से मिट्टी निकालने का काम सन् १९२९ से ही ग्रारम्भ हो गया था। यह पहला प्रयास था। उस वर्ष कुल कार्य का ग्राधा प्रतिशत मशीनों द्वारा किया गया था। उस वर्ष मुख्य 'यंत्र' फावड़े तथा हाथ ही थे।

* नहरों से मिट्टी निकालकर उनकी सफ़ाई करनेवाली मशीनें।—संपा०

सन् १९५४ में नहरों और अरीकों को साफ़ करने का ७५ प्रतिशत काम मशीनों द्वारा किया गया था।

मशीनों द्वारा नहरों से मिट्टी निकालने का कार्य करके प्रजातंत्र के सामूहिक फ़ार्मों ने अकेले सन् १९५२ में ही प्रायः २० लाख व्यक्ति-दिवसों की बचत की थी। सामूहिक फ़ार्मों के लिए यह एक बहुत बड़ी चीज़ है ख़ासकर इसलिए और भी कि कपास-उत्पादन-क्षेत्रों में मानव-शक्ति की बड़ी कमी है।

यद्यपि हाथों द्वारा कपास चुनना मिट्टी निकालने जैसा मुश्किल काम नहीं है फिर भी इस कार्य में किसान बहुत बड़ी संख्या में लगे हुए हैं। अब धीरे धीरे यह एक विगत काल की चीज़ होती जा रही है।

कपास चुनने की पहली मशीनें युद्ध के पहले बनायी गयी थीं। जरमन फ़ासिस्टवादियों के हमले ने कपास के खेतों की उन्नति में थोड़ी बाधा ज़रूर पहुंचायी किन्तु वह उसे रोक न सका था। इधर नाज़ी-सेना सोवियत प्रदेश में घुसकर आगज़नी में लगी हुई थी उधर 'सी. एक्स. एम. – ४८' नामक कपास चुननेवाली मशीन उज़बेकिस्तान और तुर्कमनिया के खेतों में काम कर रही थी। ऐसी प्रत्येक मशीन ५० से लेकर ७० व्यक्तियों (कपास चुननेवालों) का काम करती है।

इस समय सोवियत प्रारूपक ऐसी मशीन के निर्माण में लगे हुए हैं जो महीन रेशेवाली कपास भी चुन सकेगी।

तुर्कमनिया में कृषि-यंत्रीकरण ने, ख़ास तौर से युद्ध के बाद, द्रुतगति से तरक़्क़ी की है।

यंत्रीकरण की प्रगति ने सिंचाई की एक नयी प्रणाली को जन्म दिया। अस्थायी नहरों ने अरीकों का स्थान लिया जो सिंचाई के क्षेत्र में एक वास्तविक क्रान्ति थी। नयी प्रणाली में पानी कम लगता है और समतल की हुई अरीकों और किनारों के कारण फ़सल के क्षेत्रफल में वृद्धि हो जाती है।

यह प्रणाली सोवियत विशेषज्ञों द्वारा, अनेकानेक कपास-उत्पादक सामूहिक फ़ार्मों में प्राप्त अनुभवों के आधार पर, चालू की गयी है। जब कभी इन फ़ार्मों को कोई ख़ास ज़रूरत होती थी, तभी वे अस्थायी सिंचन-खाइयों का उपयोग कर लिया करते थे। उन्हें

यह गुमान भी न था कि शीघ्र ही वे ऐसी किसी चीज़ का आविष्कार कर लेंगे जिसका ज़िक्र जन जन की ज़बान पर होगा। मारी क्षेत्र का 'बोलशेविक' कोलख़ोज़ इस प्रणाली का सर्वप्रथम उपयोग करनेवाले कोलख़ोज़ों में से एक है।

२

जिस समय तुर्कमनिया रूस का एक भाग बना था उस समय मुर्ग़ाब की घाटी में 'गुज़ा' नाम की केवल एक ही प्रकार की कपास उगायी जाती थी। इसके बिनौले छोटे होते थे और, सामान्यतया, पक जाने पर फूटते न थे। उन्हें हाथों से खोलना पड़ता था। क्रान्ति-पूर्व के रूसी अनुसन्धानकर्त्ताओं ने कपास की नयी नयी क़िस्मों का पता चलाया था जिनमें सर्वोत्तम क़िस्म 'नवरोत्स्की की क़िस्म' थी। उसके बिनौले 'गुज़ा' की अपेक्षा बहुत बड़े थे और उनकी ख़ासियत यह थी कि वे ख़ुद ही खुल जाते थे। निर्वाचन द्वारा वास्तविक प्रगति केवल सोवियत शासन-काल में ही सम्भव हो सकी थी। लेनिन के अनुदेशों से बैराम-अली और बाद में इयोलोतान में अनुसन्धान-केन्द्र खोले गये। इस समय इयोलोतान का अनुसन्धान-केन्द्र तुर्कमनिया के सर्वप्रमुख कपास-अनुसंधान-केन्द्रों में से एक है।

इयोलोतान नामक छोटा-सा नगर मारी के लगभग ३७ मील दक्षिण मुर्ग़ाब नदी के तट पर बसा हुआ है। इसके प्रयोगात्मक खेतों में पिछले बीस वर्षों में १०० से अधिक नयी नयी क़िस्मों की खोज की गयी। महीन रेशे वाली कपास की पहली देशी क़िस्म का नाम था '२ ई ३'। इस क़िस्म ने सामूहिक फ़ार्मों के खेतों में से विदेशी क़िस्मों को निकाल भगाया था। यह मिस्री 'पीमा' या प्रसिद्ध 'मारद' की अपेक्षा सात-आठ दिन पहले पकती है और इससे प्राय: ३० प्रतिशत अधिक फ़सल होती है।

'२ ई ३' क़िस्म की कपास पहले-पहल सन् १९३६ में बोयी गयी थी। इसी क़िस्म के कारण मुर्ग़ाब सामूहिक फ़ार्मों की समृद्धि एवं प्रसिद्धि हुई है। इन फ़ार्मों में बैराम-अली का 'बोलशेविक' कोलख़ोज़ भी है किन्तु इयोलोतान के प्रयोगकर्त्ता अपनी प्रसिद्धि से ही नहीं फूल उठे। जब फ़ासिस्टवादी आक्रामकों के ख़िलाफ़ चलनेवाला युद्ध समाप्त हो गया तो तुर्कमनिया के सामूहिक फ़ार्मों में एक नयी क़िस्म की कपास पैदा की जाने लगी। इसका नाम था '५४७६–ई'। इस क़िस्म का जन्म-स्थान भी इयोलोतान ही है।

इसकी फ़सल से जो उत्पादन होता है वह '२ ई ३' क़िस्म की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। इसके पौधे की आकृति भी कुछ भिन्न होती है। यह छोटा और भरा-पूरा होता है, जिससे चुननेवाले को बड़ी सुविधा होती है।

इयोलोतान केन्द्र में यंत्रीकृत कपास-चुनाई को और भी आसान बनाने के अपने प्रयासों के फलस्वरूप कपास की एक अन्य क़िस्म का भी पता लगाया गया जिसका पौधा स्तम्भ की तरह होता है। इसमें बिनौले अन्य क़िस्मों की तरह शाखाओं पर नहीं अपितु सीधे तने पर उगते हैं। इससे कपास-चुनाई की मशीनों का काम सुगम हो जायेगा। इसके अतिरिक्त, उन पौधों की तुलना में, जिनकी शाखाएं फैली फैली होती हैं, इन पौधों के लिए कम स्थान की ज़रूरत होती है। फलतः इसकी खेती से सामूहिक फ़ार्मों को अपने खेतों का क्षेत्रफल बढ़ाये बिना भी पूर्वापेक्षा अधिक कपास प्राप्त हो सकेगी।

सम्प्रति कपास की एक ऐसी क़िस्म का पता लगाने के प्रयोग किये जा रहे हैं जिसकी पत्तियां पतझड़ में बर्च या मेपल की भांति झड़ती हैं। यह क़िस्म उन फ़ार्मों के लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी जहां कपास की चुनाई मशीनों द्वारा की जाती है। कपास के पौधे की पत्तियां मशीन की मुख्य बाधाओं में से एक हैं। पौधे से पत्तियां झड़ने लगें इसके लिए यह आवश्यक है कि उस पर विशेष प्रकार के रासायनिक द्रव छिड़के जायें। नयी क़िस्म '८७०४–ई'– जो इयोलोतान केन्द्र में अभी शैशवावस्था में ही कही जा सकती है–की पत्तियां अगस्त के उत्तरार्द्ध में झड़नी आरम्भ होती हैं और फ़सल-कटाई का समय आते आते सब की सब झड़ जाती हैं। इस समय खुले हुए बिनौले ही पौधों की शोभा बढ़ाते हैं।

जिन लोगों ने कपास की नयी नयी क़िस्मों का पता लगाने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है उनमें तुर्कमान विज्ञान-अकादमी के एक संबद्ध सदस्य ईवान मक्सीमेनको भी हैं। मुर्ग़ाब घाटी के सामूहिक फ़ार्मों के खेतों में '५४७६–ई' क़िस्म की कपास की खेती का श्रेय मक्सीमेनको तथा उनके साथियों को ही है। इसके परिणामस्वरूप फ़ार्मों में अब अच्छे रेशे की कपास ४४५० पौंड प्रति एकड़ पैदा होती है जब कि '२ ई ३' क़िस्म की प्रति एकड़ १७८०–२०५० पौंड ही होती थी। मक्सीमेनको ने ही '८७०४–ई' क़िस्म की वह कपास पैदा की जिसके पौधे की पत्तियां अगस्त में झड़ जाती हैं। सोवियत

निर्वाचकों ने उस क़िस्म पर उस समय प्रयोग आरम्भ किये जब कि कपास-चुनाई की मशीनों की रूप-रेखा ही बन रही थी। उस समय किसी को यह आशंका भी न थी कि कपास के पौधे की पत्तियां एक बाधा सिद्ध होंगी।

अब खेतों में अधिकाधिक संख्या में नयी नयी मशीनें कार्य कर रही हैं और इसीलिए यह कहा जा सकता है कि सात वर्षों से जो परीक्षण और प्रयोग होते चले आये हैं अब वे पूरे हो गये हैं। केन्द्र में सन् १९५१ में नयी क़िस्म के बीजों का उत्पादन आरम्भ कर दिया गया है।

३

तुर्कमनिया के सामूहिक फ़ार्मों की समृद्धि और प्रसिद्धि का स्रोत होने के साथ ही साथ कपास ने प्रजातंत्र की दर्शनीयता में भी एक खास विशेषता पैदा कर दी है।

कपास की चुनाई दिसम्बर में समाप्त हो जाती है। शरद-काल में कपास से लदी हुई लारियों की क़तारें और ऊंट के क़ाफ़िले प्रजातंत्र भर में दिखाई पड़ने लगते हैं। साथ ही सामूहिक फ़ार्मों, कपास साफ़ करनेवाली मिलों और रेलवे-स्टेशनों पर भी कपास की सफ़ेद बादलों जैसी पहाड़ियां नज़र आने लगती हैं।

कपास ओटने के कारखानों में शरद-काल से ही कार्य आरम्भ हो जाता है और जाड़े भर चलता रहता है। यहां रेशे को बिनौलों से साफ़ किया जाता है और फिर उसे कपड़ा-मिलों में भेज दिया जाता है। कपास बहुत जगह घेरती है और रेल के डब्बों या ट्रकों पर बड़े बड़े गट्ठरों के रूप में अथवा ऊंट की पीठों पर लम्बे लम्बे बोरों या 'चुवालों' में बंधी हुई दिखाई पड़ती है। तुर्कमनिया के नीले आसमान और तुर्कमान लाल-पोशाकों अथवा क्षितिज पर पहाड़ों की बैंगनी रूप-रेखाओं की भांति ही श्वेत कपास भी शरद्-ऋतु में तेजेन से मारी की अथवा और दूर चार्दज्हू के उस पार तशौज़ जानेवाली सड़क पर यात्री की एकमात्र साथिन है।

प्रजातंत्र के कपास-उत्पादकों को समाजवादी निर्माण-काल में अनेकानेक सफलताएं प्राप्त हुई हैं। १९१३ में तुर्कमनिया में १,७२,००० एकड़ भूमि पर कपास की खेती होती थी। दूसरे विश्वयुद्ध के अन्त तक प्रजातंत्र में फ़सलों के कुल क्षेत्रफल के एक तिहाई भाग में केवल कपास की ही खेती की जाती थी। सन् १९३३ में कपास



पुश्किन मार्ग, तशीच

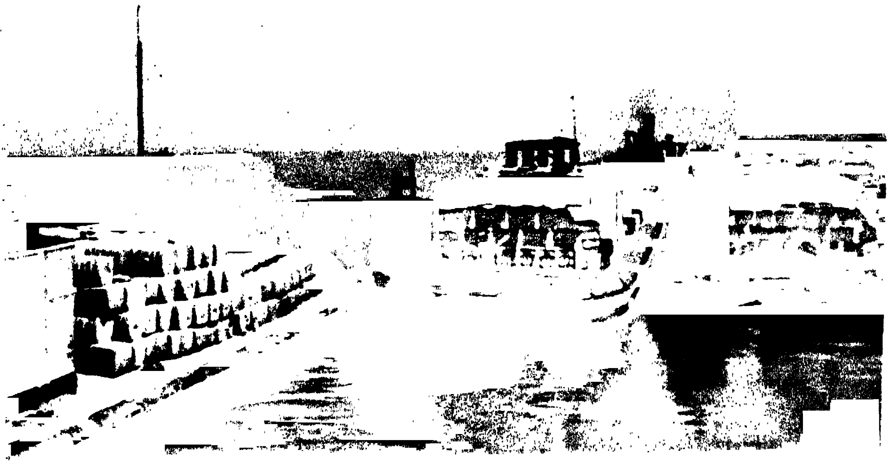
माध्यमिक स्कूल नं.५, तशीच





कपास संग्रह-केन्द्र को ले जायी जा रही है

आमू-दरिया पर कपास की ढुलाई करते हुए कुछ बजरे



का औसत उत्पादन प्रति एकड़ ६२३ पौंड था जो अब प्रति एकड़ १७८० पौंड है। सोवियत वर्षों में तुर्कमनिया की कपास की कुल फ़सल ६ गुनी से भी अधिक बढ़ गयी है।

इस समय जनतन्त्र में कपास बोने की सबसे प्रगतिशील प्रणाली का प्रयोग किया जा रहा है जिसे चौकोर क्यारी प्रणाली * कहते हैं। इसके प्रयोग से श्रम में बचत होती है, पौधों के बढ़ते समय मशीनी निराई सुविधाजनक होती है और पैदावार बढ़ती है।

जिस समय करा-कुम नहर का पहला भाग पूर्ण हो जायेगा उस समय मुर्ग़ाब नख़लिस्तान में फ़सलों के क्षेत्रफल में २,८०,००० एकड़ की वृद्धि होगी। मारी से लेकर तेजेन तक के नहर के दूसरे भाग में भी निर्माण-कार्य शुरू होगा और वह समय दूर नहीं जब कि प्रजातंत्र में कपास का क्षेत्रफल इस समय के क्षेत्रफल से कम से कम दूना हो जायेगा।

अध्याय ६

१

मारी और बैराम-अली के बीच के एक छोटे-से क्षेत्र पर रेलवे की उत्तरी दिशा में ऐसे बहुत-से चिह्न हैं जिनसे पता चलता है कि लाइन प्राचीन सभ्यता के अवशेषों के उस पार बिछायी गयी थी। नगर के ध्वंसावशेष, दीवालें तथा खाइयां लगभग ४० वर्ग मील क्षेत्र में फैली हैं। दुनिया में इतने बड़े क्षेत्रफल में मिलनेवाला कोई दूसरा ध्वस्त नगर भी होगा यह संदिग्ध है।

बेशक, इसका अर्थ यह नहीं कि सुलतान संजार की राजधानी का क्षेत्रफल वास्तव में ४० वर्ग मील ही था। प्राचीन काल में मध्य एशिया के लोगों ने पुरानी

* चौकोर क्यारी प्रणाली – बुआई तथा पौधे लगाने की प्रगतिशील प्रणाली है, जिसका मतलब है वर्गाकार क्यारियों के कोनों में एक एक या चंद पौधे लगाना। इसके फलस्वरूप क्यारियों की आड़ी और खड़ी क़तारों के बीच से मशीनी निराई की जा सकती है।

जगहों पर ध्वस्त नगरों का पुनर्निर्माण नहीं किया था। उन्होंने हमेशा पास-पड़ोस की ही कोई जगह चुनी और इस प्रकार वे ध्वंसावशेषों को साफ़ करने की कठिनाई से बच गये।

जिस समय यात्री अपनी कार पर प्राचीन मर्व के अवशेषों के बीच से होकर निकलता है उस समय वस्तुतः वह कई मर्वों से होकर गुज़रता है—ग्रीक ऐन्टीओकिया के अवशेष, ख़लिफ़ा की राजधानी के अवशेष और सुलतान संजार नगर के खंडहर के अवशेष। ये नगर विभिन्न युगों में निर्मित हुए थे किन्तु आज या तो उनकी ढहती हुई दीवालें रह गयी हैं या फिर थोड़ी-बहुत मीनारें। सामूहिक रूप से इन ध्वंसावशेषों को "प्राचीन मर्व के अवशेष" कहा जाता है। इस समय इन विभिन्न प्राचीन नगरों का परिसीमन करना आसान कार्य नहीं है। कौन नगर कहां से आरम्भ होकर कहां समाप्त होता है यह बता सकना बड़ा कठिन है क्योंकि प्रायः हर जगह टूटी हुई ईंटें, गड्ढे, खाइयां, गिरती हुई दीवारें, ध्वस्त मीनारें तथा हरापन या नीलापन लिये हुए मिट्टी के टूटे बर्तनों के अम्बार हैं।

प्राचीन मर्व के अवशेष, जिनमें संजार मक़बरा भी है, तशौज़ क्षेत्र के कुन्या-उर्गेंच अथवा प्राचीन समरक़न्द के अवशेषों की अपेक्षा कम प्रभावकर हैं। ख़ोरेज़्म की प्राचीन राजधानी तथा प्राचीन समरक़न्द में मोज़ेक डिज़ाइनों वाली कुछ इमारतें तथा दीवालें अब भी बच गयी हैं। वे अपने मूल सौंदर्य एवं कला का प्रदर्शन करती हैं। प्राचीन मर्व में ध्वंस इतना अधिक हुआ है कि यह अन्दाज़ लगाना मुश्किल है कि इमारतों का आकार-प्रकार क्या और कैसा रहा होगा।

प्राचीन मर्व, जिसमें सन्जार मक़बरा भी शामिल है, के मौत जैसे सन्नाटे तथा रेलवे-लाइन के उस पार के नये जीवन, नये नगर—बैराम-अली—की चहल-पहल में ज़मीन-आसमान का अन्तर है।

बैराम-अली में १६वीं शताब्दी के मध्य में एक गढ़ बनाया गया था जिसका उद्देश्य बुख़ारा के सरबाज़ों से तेक्कों की जन-जातियों की रक्षा करना था। ज़ारशाही शासन के दिनों में बैराम-अली कपास की खेती का एक प्रयोगात्मक केन्द्र हो गया था, जिसके लाभ सीधे ज़ार को चले जाया करते थे। कपास इस क्षेत्र के उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक समझी जाती थी। इसीलिए यहां स्थानीय जनता के हितों की अवहेलना करके एक विस्तृत-क्षेत्र को 'ज़ार-जागीर' निर्दिष्ट कर दिया गया था।

जागीर के बीचोंबीच एक बड़े पार्क में सुन्दर बड़े बड़े बरामदों और स्तम्भों वाली एक इमारत थी जो महल जैसी लगती थी। यह जागीर के व्यवस्थापक का निवास-स्थान था।

महान अक्तूबर क्रान्ति ने महलों के सारे भूतपूर्व स्वामियों और उनके पिट्ठुओं को निकाल बाहर किया। अब देश की हर वस्तु पर जनता का अधिकार है। ज़ार से छीनी गयी भूमि उन्हें दी गयी जो उसे जोतते थे, बोते थे। ज़ार के महल में अब एक गुरदा-उपचार सैनेटोरियम है और ज़िले का एक प्रमुख स्थल बैराम-अली की बस्ती मारी क्षेत्र का एक महत्त्वपूर्ण और औद्योगिक तथा सांस्कृतिक केन्द्र बन गयी है।

२

अपने दक्षिणी क्षेत्रों में मुर्ग़ाब नदी एक एकाकी संकरे जल-मार्ग के रूप में बहती है। इयोलोतान नगर में उसकी कई शाखाएं हो जाती हैं जो उत्तर-पूर्व, उत्तर और उत्तर-पश्चिम की ओर जाकर बालू में समाप्त हो जाती हैं।

मुर्ग़ाब दुनिया की उन थोड़ी-सी नदियों में से है जो किसी समुद्र या झील में नहीं गिरतीं। नहरों और अरीकों का रूप लेती हुई यह नदी रेलवे के उत्तर में लगभग १५ मील की दूरी पर रेगिस्तान में जाकर अदृश्य हो जाती है।

मुर्ग़ाब के डेल्टा में नहरों और अरीकों की कुल लम्बाई ३१०० मील है किन्तु इयोलोतान से लेकर उस स्थान तक की लम्बाई केवल ६० मील है जहां नदी अदृश्य होती है।

इयोलोतान, मारी और बैराम-अली को छूता हुआ जो त्रिकोण बनता है वही मुर्ग़ाब की घाटी का हृदय है। जब लोग मुर्ग़ाब की घाटी का ज़िक्र करते हैं तो उनका मतलब इसी त्रिकोण से होता है यद्यपि इयोलोतान के दक्षिण में पेन्दे नख़लिस्तान नाम का वह स्थल भी है जिसे मुर्ग़ाब का पानी मिलता है। पेन्दे नख़लिस्तान मारी क्षेत्र के दक्षिण में है। इसका केन्द्र है तख़्ता-बाज़ार जिसके दक्षिण में सोवियत संघ में सिर्फ़ एक ही बड़ी बस्ती है और वह है कूश्का बस्ती।

यह नख़लिस्तान ४० मील लम्बे एक संकरे-से क्षेत्र में बसा हुआ है। इस क्षेत्र में मुर्ग़ाब

के किनारे किनारे एक सुसिंचित पट्टी भी है। सन् १९४० में ताश-केपरी बस्ती के निकट ताश-केपरी बांध बन जाने के बाद से इस नख़लिस्तान की द्रुतगति से उन्नति होती रही। यह बांध सोवियत शासन-काल में मुर्ग़ाब नदी पर बननेवाली सबसे बड़ी जल-शिल्प-संरचना है जिसके फलस्वरूप पेन्दे नख़लिस्तान मारी क्षेत्र का एक प्रमुख ज़िला बन गया है। वहां भी मुर्ग़ाब डेल्टा की ही भांति कपास का विशेष महत्त्व है। वहां जो भूमि कपास के लिए अनुपयुक्त है उसमें अनाज उगाया जाता है। पेन्दे के नख़लिस्तान में बहुत-से बाग़ तथा अंगूरों के उद्यान हैं।

मुर्ग़ाब के इस भाग में सरियाज़ नामक एक बड़ा जलाशय निर्माणाधीन है।

पेन्दे नख़लिस्तान में पशु-पालन का व्यापक विकास किया जा रहा है। प्रायः वर्ष भर सामूहिक फ़ार्मों के पशु पूर्व और पश्चिम में जुते-बुए खेतों के सन्निकट स्थित रेगिस्तानी चरागाहों में चरा करते हैं।

पेन्दे नख़लिस्तान के बारे में दूसरी दिलचस्प बात यह है कि वह क़ालीनों की बुनाई के एक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है। पेन्दे का क़ालीन बहुत-कुछ तेक्के क़ालीन का मुक़ाबला कर सकता है।

दक्षिण-प
करा-कुम की यात्रा

अध्याय १

१

क्रास्नोवोद्स्क से ट्रेन दक्षिण-पूर्व की ओर लगभग ४५० मील की यात्रा कर चुकने के पश्चात् दुशाक में अपने सबसे दक्षिणी सिरे पर पहुंचती है। यहां से वह मारी तक पूर्व की ओर चलती है। बैराम-अली के उस पार वह उत्तर-पूर्व की ओर मुड़ती तथा करा-कुम के रेगिस्तान में पहुंचती है। इस रेगिस्तान को पार करने में ट्रेन को जो थोड़े-से घंटे लगते हैं उनमें यात्री क्रास्नोवोद्स्क से ६०० मील लम्बी पूर्वगामी यात्रा की अपेक्षा अधिक ऊब उठता है क्योंकि यह यात्रा बड़ी कठिन है।

कास्पियन से आगे की सारी यात्रा में यात्री को क्षितिज पार तक रेगिस्तान ही रेगिस्तान दिखाई पड़ता है किन्तु जब ट्रेन बैराम-अली से आगे निकल जाती है तो दृश्यावली में परिवर्तन होता है और ऐसा लगता है मानो रेगिस्तान कह रहा हो—"हां, देखो मैं अब यहां आ गया। मुझपर अपनी आंखें सेंक लो। आप गेओक-तेपे के अंगूरोद्यानों में अंगूरों के भारी भारी गुच्छे देखकर बाग़ बाग़ हो रहे थे। जब आपने मारी और बैराम-अली के सामूहिक फ़ार्मों के प्राप्ति-गोदामों में कपास के पहाड़ के पहाड़ देखे थे तो आपके हृदय की कली खिल उठी थी। किन्तु यह सब तुर्कमनिया का एक नगण्य भाग था। अब आप जो कुछ देख रहे हैं वह प्रदेश का एक बड़ा भाग है। इसलिए अपनी आंखें मुझपर ही रखना!"

नख़लिस्तान से रेगिस्तान तक की यात्रा एक देश से दूसरे देश तक की यात्रा के समान है। बैराम-अली के आगे करा-कुम दूर दूर तक फैला हुआ एक निर्जन पहाड़ी प्रदेश है।

रेगिस्तान तुर्कमनिया का लगभग ४/५ भाग घेरे है जो फ़िनलैंड के बराबर या ग्रेट-ब्रिटेन से ड्यौढ़ा है।

गत शताब्दी के अंत में मध्य एशियाई रेलवे के निर्माताओं को अपनी योजना की सफलता में सबसे पहले उस समय सन्देह हुआ था जब मुर्ग़ाब नख़लिस्तान पार करने के बाद उनका साक्षात्कार सर्वप्रथम करा-कुम की विशाल मरुभूमि से हुआ था। इसी भाग में कुछ इंजीनियरों ने सुरंग बनाने की बात सोची थी।

करा-कुम के प्रमुख दृश्य हैं — चारों ओर फैली हुई गतिवान बालू और बरख़ान तथा स्थायी रेत वाली वह ज़मीन जहां इधर-उधर थोड़ी-सी वनस्पति दिख जाती है। मुर्ग़ाब तथा आमू-दरिया के बीच के भाग में स्थिर एवं गतिवान दोनों ही प्रकार की बालू है।

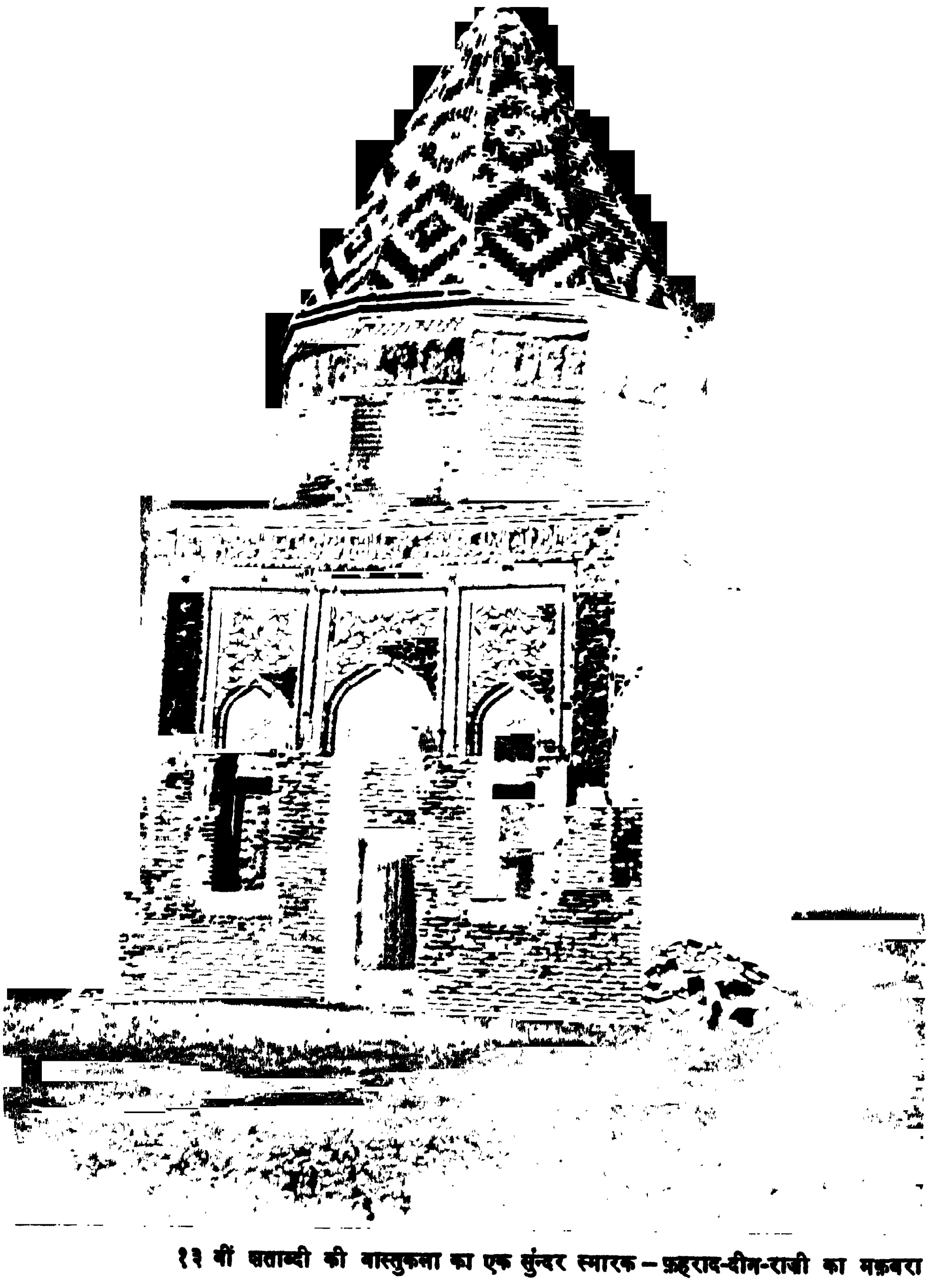
साधारण खुली हुई रेत और पेड़-पौधों की जड़ों के साथ जमी हुई रेत को पहचानना मुश्किल नहीं है। प्राय: ऐसा होता है कि लोग जड़ों के आस-पास की इस बालू को रेगिस्तान का भाग नहीं समझते। बरख़ान सूर्य की रोशनी में समुद्र की लहरों की भांति लगते हैं लेकिन स्थिर बालू किसी पहाड़ी प्रदेश में लगाये गये पार्क के समान प्रतीत होती है। शायद यही कारण है कि भूगोलवेत्ता तथा अर्थशास्त्री इस रेगिस्तान के कुछ भागों को 'तुर्कमान वन' कहकर पुकारते हैं।

ये वन सोवियत संघ के अन्य भागों के वनों से भिन्न हैं क्योंकि इनके वृक्ष न तो सायेदार हैं, न उनके तनों के निचले भागों में काई जैसी हरियाली है और न उनमें घनी पत्तियां ही पायी जाती हैं, किन्तु यहां वृक्षों की बहुतायत है। ये वृक्ष हैं सकसौल, रेगिस्तानी बबूल, तमरिस्क, कन्दीम तथा वे दूसरे पेड़-पौधे जो रेगिस्तान के जलहीन जीवन के अभ्यस्त हो चुके हैं।

यहां की दृश्यावली की सामान्य रंग-योजना के अनुरूप ही इन पेड़ों की पत्तियां भी रुपहले भूरे-श्वेत रंग की होती हैं। वे छोटी किन्तु लम्बी होती हैं



सरीकामिश घाटी की निकटवर्ती कन्दराएं जो प्राचीन समय में लोगों का निवास स्थल थीं। वहां के निवासियों को शत्रुओं का भय न था।



१३ वीं शताब्दी की वास्तुकला का एक सुंदर स्मारक—फ़ख्रद्दीन-राजी का मक़बरा

जिससे कम से कम पानी भाप बनकर उड़ सके। इन वनों में सबसे क़ीमती वृक्ष सकसौल है जो कभी कभी २० फ़ुट से भी ऊंचा होता है। रेगिस्तान के बीचोंबीच सकसौल के वृक्षों को देखकर उत्तर के किसी भी निवासी को निश्चय ही बड़ा आश्चर्य होगा: "क्या यही रेगिस्तान है? कहीं, यह भयानक करा-कुम तो नहीं।"

ये वृक्षों एवं झाड़ियों से भरे-पूरे बालू के बड़े बड़े स्थल वस्तुत: करा-कुम रेगिस्तान के वे भाग हैं जिन्हें पुस्तकों और कहानियों में 'भयानक' कहा गया है। बहुत समय तक इनकी गिनती दुनिया के उन स्थानों में थी जिनकी खोज कम से कम हो पायी थी।

रेगिस्तान के बारे में पहले उल्लेख उन लोगों से मिलते हैं जिन्होंने इसका एक अल्पांश देखा था और जो यह सोचते थे कि जो कुछ उन्होंने देखा है वह पूरे करा-कुम प्रदेश का प्रतिनिधि-भूभाग है। बहुत-से उल्लेख तो उन लोगों के हैं जो रेगिस्तान के निकट तक न गये थे।

१९वीं शताब्दी में रूसी अन्वेषकों और भूगोलवेत्ताओं ने मध्य एशिया के रेगिस्तानों का पता लगाने की दिशा में काफ़ी श्रम किया था, लेकिन सोवियत काल तक करा-कुम का नक़्शों पर कोई भी विवरण न मिल सका था। महान अक्तूबर क्रान्ति से कुछ ही वर्ष पूर्व रेगिस्तान के दक्षिण-पूर्वी भाग में रेपेतेक रेलवे-साइडिंग पर एक विशेष अनुसंधान-केन्द्र की स्थापना की गयी थी। इस केन्द्र की खोजों और रेगिस्तान के विभिन्न भागों के संबंध में उसके द्वारा किये गये कार्यों ने करा-कुम के संबंध में ऐसी अनेक भ्रामक धारणाओं को दूर किया, जो प्रत्यक्षत: सत्य प्रतीत हो रही थीं। इस प्रकार केन्द्र ने रेगिस्तान के संबंध में वास्तविक सूचनाएं देने का प्रयास किया।

पिछले कुछ वर्षों में करा-कुम का विशेष रूप से गहन एवं व्यापक अध्ययन किया गया है। तुर्कमनिया और करा-कलपकिया में काम करनेवाले अरल-कास्पियन के सम्मिलित अभियान में ही सोवियत संघ विज्ञान-अकादमी के १५ स्थापनों और सोवियत संघ कृषि-विज्ञान की लेनिन अकादमी की तीन संस्थाओं के प्रतिनिधि हैं,

जिनमें भौगोलिक, भूतत्ववेत्ता, भूमान-वैज्ञानिक, भू-वैज्ञानिक, वृक्षारोपक, जीवविज्ञान-शास्त्री, कृषिविद, पशु-पालक, डाक्टर, भूकम्प-वैज्ञानिक, भूभौतिकविद, पुरातत्ववेत्ता तथा विज्ञान और इंजीनियरिंग की विविध शाखाओं में काम करनेवाले विशेषज्ञ हैं।

२

वास्तव में ऐसे रेगिस्तान हैं ही नहीं जिन्हें निष्प्राण कहा जा सकता हो। जिस प्रदेश को हम परंपरा से रेगिस्तान कहते चले आये हैं वह सबका सब न तो वीरान ही है और न अनुर्वर ही। वह तो एक ऐसा स्थान है जहां जीवन का एक विशेष रूप मिलता है जो करा-कुम में भी सर्वत्र एक-सा नहीं है।

कुछ क्षेत्र – उदाहरणार्थ बरख़ान-युक्त प्रदेश – दूसरों की अपेक्षा अधिक वीरान हैं, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वे बंजर भी हैं। यद्यपि बरख़ानों में लहलहाती हुई घास या पेड़ नहीं होते फिर भी शायद ही कोई ऐसा विशाल बरख़ान होता हो जिसमें जीवन-दायिनी अरिस्टिडा घास की जड़ें दूर दूर तक न चली गयी हों अथवा जहां सुडौल एवं बाह्यतः कोमल रेगिस्तानी बबूल न उगता हो। इन पौधों ने यहां अपने को जीवित रखने के लिए ज़बरदस्त संघर्ष किया है। इसीलिए इनमें वे गुण आ गये हैं जिनके सहारे वे जलहीन गर्म रेगिस्तानों में तो रह सकते हैं लेकिन अन्यत्र जीवित नहीं रह सकते। अरिस्टिडा घास का समुचित विकास करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी पत्तियां और टहनियां बालू से ढकी रहें। इस प्रकार ढके रहने से वे सूर्य की जलती हुई किरणों से बची रहती हैं। अतएव घास ज़मीन के सहारे सहारे लता की भांति बढ़ती है कभी कभी तो उसकी जड़ें सौ सौ फ़ुट तक लम्बी हो जाती हैं। जड़ों की इस विशेष बनावट से सूखी बालू के संपर्क में आने पर भी उनकी नमी में कमी नहीं आती।

जिन स्थानों में न तो अरिस्टिडा घास ही उगती है और न बबूल ही तथा जहां बरख़ानों की सतह नग्न दिखाई पड़ती है वहां भी यदि आप ध्यान से देखें तो आपको बहुत-से जीवित प्राणियों – कछुओं, छिपकलियों और सर्पों – द्वारा छोड़े गये चिह्न दिखाई पड़ेंगे। वस्तुतः इन प्राणियों ने भी यहां के पेड़-पौधों की तरह ऐसे

स्थानों पर रहना और जीवित रहने के लिए उपयुक्त साधन प्राप्त करना सीख लिया है जहां बाह्यतः जीवन-यापन सम्भव ही नहीं है।

बेशक, आंधियां चलने पर—अर्थात् जब बरख़ान वीरान और निर्जन लगते हैं—ये चिह्न लुप्त हो जाते हैं।

किन्तु वे बरख़ान अथवा बालू के ढेर, जहां कम से कम जीवन हो, करा-कुम में बहुत अधिक नहीं पाये जाते और बड़े बड़े क्षेत्रों में तो शायद ही कभी मिलते हों। बरख़ानों की न्यूनाधिक चौड़ी चौड़ी पेटियां रेलवे के कुछ दक्षिण में आमू-दरिया के बायें किनारे पर और फिर नदी के दाहिने तट पर, फ़रब स्टेशन और नगर के दक्षिण में, तुर्कमान के सबसे उत्तरी तशौज़ नख़लिस्तान की दक्षिणी सीमा पर तथा किज़ील-अरवात के उत्तरी ज़िले में पायी जाती हैं। इन स्थानों पर बरख़ानों का प्रदेश ३५ से लेकर ५० मील तक चौड़ा है।

आश्चर्य की बात यह है कि नख़लिस्तानों के चारों ओर और कुओं के आस-पास, जहां प्रकृति पर मनुष्य का सब से अधिक प्रभाव पड़ा है, बरख़ानों के संकरे क्षेत्र हैं।

रेगिस्तान के एक बड़े भाग पर वनस्पति का बाहुल्य है। इसी कारण यहां की अधिकांश बालू स्थिर है। जिस समय बरख़ानों पर पेड़ अथवा झाड़ियां उगती हैं उस समय वे स्थिर हो जाते हैं। जिस समय मनुष्य रेगिस्तान में रहने के लिए आया तो सबसे पहले उसने अपने ईंधन के लिए पेड़-पौधों को ही काटना शुरू कर दिया जिसके फलस्वरूप बालू ढीली पड़ गयी और हवा के साथ इधर-उधर उड़ने लगी। इधर मनुष्यों द्वारा लाये गये पशुओं ने उन घासों की जड़ों को भी साफ़ कर डाला जो बालू को मज़बूत बनाये थीं। जहां जहां मनुष्य और उसके पशु गये वहां वहां चिकनी और स्थिर बालू ने बरख़ानों के समुद्र का रूप ले लिया। अपना स्थान बदलते हुए इन बरख़ानों में मनुष्य के किये-धरे पर पानी फेर देने की क्षमता थी।

नख़लिस्तानों के सीमावर्ती भागों में आपको बालू की नोक जैसे बरख़ान दिखाई पड़ेंगे और ऐसा लगेगा मानो उनका लक्ष्य मनुष्य के आवासों तथा उसके खेतों की ओर हो। हवा इन बरख़ानों को उन स्थानों से उड़ाकर नख़लिस्तानों में ले जाती है जहां मनुष्य ने वृक्षों को काटकर भूमि को नग्न कर दिया था।

अब इन स्थानों पर अधिकाधिक संख्या में वृक्ष लगाये जा रहे हैं जिनसे रेगिस्तान को और अधिक बढ़ने से रोका जा सकेगा।

यह उल्लेखनीय है कि नखलिस्तानों और मनुष्य की बस्तियों के ही निकट बंजर-बरख़ानों को देखकर लोगों का यह विश्वास जमने लगा था कि करा-कुम "बरख़ानों की एक बहुत बड़ी भूमि है"।

यह धारणा कितनी भ्रामक है इसका ज्ञान करने के लिए आप नखलिस्तान से निकलकर बरख़ानों के घेरे को पार कर करा-कुम चले आयें। यहां आपको एक नया नक़्शा दिखाई देगा।

बैराम-अली के पार्कों से चार्दज्हू के प्रथम अरीकों तक की ६ से ८ घंटे तक की यात्रा में यात्री रेगिस्तान के प्रायः समस्त दृश्य देख लेता है। बैराम-अली के चारों ओर ऊंचे ऊंचे रेतीले टीले हैं जो उच-अजी के स्टेशन के निकट और भी लम्बे हो गये हैं। आमू-दरिया के निकट ट्रेन बरख़ानों की अशान्त किन्तु एक विशेष दुनिया में प्रवेश करने लगती है।

३

करा-कुम में जल के स्रोत या तो वे गड्ढे हैं जिनमें वर्षा का पानी जमा होता है या फिर वे कुएं जो भूमिगत पानी के धरातल तक की गहराई में खोदे जाते हैं। वहां लगभग १०,००० कुएं हैं किन्तु रेगिस्तान का आकार-प्रकार देखते हुए यह संख्या नगण्य-सी है। इसके अलावा अधिकांश में पानी कम मिलता है। कुछ में तो प्रतिदिन सिर्फ़ ३० से ४० बाल्टी तक ही पानी रहता है। पानी की कमी निश्चित स्थायी जीवन के मार्ग में सदैव बाधक रही है फिर भी लोग हैं कि रेगिस्तानों में रहते हैं।

कुछ भागों में, मुख्यतया दक्षिण-पूर्व में तकूरों के बीच, जहां कुओं में पानी की मात्रा बहुत-कुछ काफ़ी है, चबानों के अस्थायी शिविर और सामूहिक फ़ार्मों की स्थायी बस्तियां हैं। वहां के लोगों ने रेगिस्तान में भी आराम के साथ रहना सीख लिया है। इन बस्तियों में स्कूल, चिकित्सा-केन्द्र, क्लब, डाकख़ाने और

दूकानें हैं। कुछ लोग यहां तरकारियां, खरबूज़े और गेहूं उगा लेते हैं। किन्तु ऐसे खेत या ऐसी बस्तियां यत्र-तत्र थोड़ी ही हैं।

वहां स्थायी बस्तियों की अपेक्षा चबानों की अस्थायी शिविरों की संख्या काफ़ी ज़्यादा है। शताब्दियों तक करा-कुम तुर्कमान जन-जातियों का चरागाह रहा है। तुर्कमान लोगों की सम्पदा उनके पशु हैं जिन्हें रेगिस्तान में उनकी आवश्यकतानुसार घास मिल जाती है।

पहले ज़माने में स्थायी रूप से रहनेवाले थोड़े-से लोग ही वहां कपास उगाते और फलोद्यान लगाते थे। किन्तु यहां की राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का प्रधान उद्यम पशु-पालन था और उनके चारे का मुख्य आधार था करा-कुम। विदेशी आक्रामक प्रायः तुर्कमान जन-जातियों पर हमला कर देते थे। ये जन-जातियां रेगिस्तान को अपनी फ़सलों के लिए हानिकर समझने के साथ साथ रक्षा का साधन समझती थीं। करा-कुम से उनके पशुओं को चारा और उनके बच्चों तथा महिलाओं को शरण मिलती थी।

क्रान्ति के पूर्व पशुओं की देख-रेख आदिकालीन ढंग पर की जाती थी। पशु वर्ष भर खुले आसमान के नीचे रहते, उनके लिए चारों की कभी कोई खत्ती न रखी जाती और जाड़ों के दिनों में जब कभी तेज़ बर्फ़ गिरने लगती या सहसा पाला पड़ने लगता तो उनकी संख्या बहुत कम हो जाती। उनमें रोग फैलने लगते और पशु-चिकित्सा की व्यवस्था न होने के कारण वे घातक सिद्ध होते।

सोवियत शासन-काल के पशु-पालक विगत काल के इन अभिशापों का सामना कर रहे हैं। सरकार ने इन लोगों को बहुत सहायता दी है जिसके परिणामस्वरूप सामूहिक कृषकों ने रेगिस्तान में न केवल नये नये चरागाहों का ही विकास किया है अपितु कुएं खोदने तथा जलाशयों का निर्माण करने की नयी नयी विधियां भी सीख ली हैं। लकड़ी और ईंटों के स्थान पर रीइन्फ़ोर्स्ड कांक्रीट का प्रयोग किया जा रहा है, जिसके फलस्वरूप काम जल्दी होता है, पानी आसानी से निकाला जा सकता है और कुओं में वह अधिक बना भी रहता है। कांक्रीट का पहला बन्द जलाशय (जिसे वहां के लोग सरदोबा कहते हैं) करा-कुम में सन १९५० में बनाया गया था। इसका नाम था 'किज़ीलचबूरून'।

सामान्यतया पुराने समय में जो कुएं खोदे गये थे वे छिछले होते थे। अब ३०० से लेकर ५०० फ़ुट तक की गहराई में कुएं खोदे जाते हैं। कुछ कुएं तो और भी अधिक गहरे होते हैं। रीइन्फ़ोर्स्ड कांक्रीट का एक कुआं 'कोश-किज़ील' ('लाल शिविर') ५८४ फ़ुट गहरा है। यह कुआं सन् १९५० में बनाया गया था।

जिस समय से करा-कुम नहर पर निर्माण-कार्य आरम्भ हुआ था उसी समय मे रेगिस्तान में रीइन्फ़ोर्स्ड कांक्रीट के कुएं बनाने के शिल्प में विकास होने लगा था। यदि गर्म बालू में अधिक संख्या में खुले हुए जलाशय बनाये जाते तो उनसे ज़्यादा लाभ होने की संभावना न थी क्योंकि इस प्रकार भाप बनकर जल का अधिकांश उड़ गया होता। अतएव वैज्ञानिकों ने अधिक संख्या में क्यारिज़ों के निर्माण पर बल दिया था क्योंकि इनमें करा-कुम के चरागाहों के लिए नहर द्वारा प्रवाहित बहुत-सा जल संगृहीत हो सकता था।

भूतकाल में देहक़ानों के पशु-समूहों को पाले तथा चारे की कमी से बहुत हानि उठानी पड़ी थी।

पिछले कुछ वर्षों में जाड़े के स्थायी चरागाहों में भूसा तथा कन्सेन्ट्रेटेड चारों की खत्तियां इकट्ठी की गयी हैं। अब यह देखकर आश्चर्य नहीं होता कि जब सामूहिक फ़ार्मों के चरवाहे अपने जाड़ों के क्वार्टरों में जाते हैं तो उन्हें गर्म कपड़े, अच्छे जूते और खाने का सामान दिया जाता है। फिर भी यहां के पुराने आदमियों को वह दिन याद है जब रेगिस्तानी चरागाहों को जानेवाले चबानों को सिर्फ़ अपने साधनों पर ही निर्भर रहना होता था। जाड़ों में वे औलों से अपना किसी भी प्रकार का संबंध न रख पाते थे और बालू की दुनिया में वैसे ही रहते थे मानों बालू के किसी द्वीप में रह रहे हों। उनके एकमात्र साथी दो एक चरवाहे बालक तथा मज़बूत तुर्कमान कुत्ते थे जो स्तेपी के भेड़ियों से उनके पशुओं की रक्षा किया करते थे। स्थानीय शासकों के लिए काम करनेवाले चबानों का एक प्रकार से दुनिया से संबंध ही टूट जाता था। उन्हें हफ़्तों आदमियों की आवाज़ न सुनाई देती और हमेशा अपने खाने के चक्कर में मारे मारे फिरना पड़ता। जिन भेड़ियों को वे मार लेते थे उनमें से प्रत्येक की खाल का मतलब होता था — उनके लिए गर्म कोट, बिछावन या जाड़े के सख़्त पाले से बचत।

आज यदि आप रेगिस्तान के इन दूरस्थ चरागाहों में जायें तो आपको सामूहिक फ़ार्म के कैम्पों में चलते-फिरते पुस्तकालय, रेडियो तथा प्राथमिक चिकित्सा-केन्द्र देखने को मिलेंगे। हवाई जहाज़ अथवा मोटर-गाड़ियां वहां भोजन, डाक तथा अखबार पहुंचाने का कार्य करती हैं।

रेगिस्तान में चराई का मौसम बहुत लम्बा होता है।

वसन्तकालीन वर्षा के साथ ही साथ घास भी पृथ्वी का आंचल हटाकर झांकने लगती है। दक्षिणी क्षेत्रों में वर्षा फ़रवरी के अन्त अथवा मार्च के आरम्भ से शुरू हो जाती है। पेड़ों तथा झाड़ियों में मार्च से पत्तियां आनी शुरू होती हैं और करा-कुम प्रायः मई के मध्य तक घास तथा फूलों से फला-फूला रहता है।

अप्रैल में वर्षा समाप्त हो जाने के पश्चात् बालू सूखनी आरम्भ होती है। पेड़ों की हरियाली भी पहले भूरी और फिर पीली पड़ने लगती है, ट्यूलिप और पोस्त के फूल मुरझाने लगते हैं, कैरेक्स नामक घास, जिसे भेड़ें बहुत अधिक पसन्द करती हैं, पीली पड़ जाती है। कुछ ही हफ़्तों बाद बालू की ऊपरी सतह का तापमान १२२ से लेकर १४० अंश फ़ारेनहाइट तक पहुंच जाता है और वसन्तकालीन क्षणिक घासों के सूखे हुए डंठल गर्मी के मारे राख हो जाते हैं। ऐसा तब होता है जब करा-कुम वस्तुतः वीरान रेगिस्तान का रूप धारण करता है। यह दृश्य शरद-काल के अन्त तक रहता है जब तक कि वर्षा के छींटे कुछ समय के लिए भूमि को घास से फिर से हरी-भरी नहीं कर देते।

मई के अन्त के बाद का काल भेड़ों के लिए एक कठिन काल है। लेकिन तब भी चबान अपने जानवरों को नख़लिस्तान नहीं लौटा ले जाते क्योंकि वहां की भूमि कपास तथा गेहूं के खेतों को छोड़कर रेगिस्तान की ही तरह बंजर होती है।

गर्मी के महीनों में चबानों को अपने पशु-समूहों के लिए कोई उपयुक्त स्थान ढूंढ़ने में, जहां भूमिगत जल धरातल के निकट हो और घास अधिक हो, अपने पूर्वजों से प्राप्त अनुभवों तथा विज्ञान-प्रदत्त ज्ञान पर निर्भर रहना पड़ना है।

शरद-काल तक जानवरों को छोटी कैरेक्स घास से ही अपना पेट भरना पड़ता है। इस घास का रंग सूखी बालू के साथ इतना एकाकार हो जाता है तथा वह वृक्षों के छोटे, टेढ़े-मेढ़े और रुपहले तनों में इतनी खप जाती है कि अनभ्यस्त आंख उसे पहचान तक नहीं सकती।

सचमुच यह घास करा-कुम के बालुका-सागर की मुक्ता है । इसमें अल्ब्यूमेन तथा चर्बी लुसेर्न से अधिक होती है। गर्मी में भेड़ें इस घास को बहुत अधिक पसन्द करती हैं। यह घास भूमि में बहुत अधिक जमी रहती है और यद्यपि इसकी हरियाली नष्ट हो जाती है फिर भी वह उस नमी में रह सकती है जो ज़मीन में ४–८ इंच की गहराई पर मिलती है। जब से गर्मी की ऋतु आरम्भ होती है तब से इस घास की जड़ें इतनी लम्बी हो जाती हैं कि नम भूगत बालू तक पहुंच जाती हैं । और यह बालू भी उन ओस-कणों से भीगी रहती है, जो रात्रि तथा दिन के तापमान में अधिक अन्तर होने के कारण बना करते हैं । दिन में वहां का तापमान १०४ अंश फ़ारेनहाइट से अधिक और रात में ५६–६४.५ अंश फ़ारेनहाइट रहता है।

रेगिस्तान में आर्द्रता के संबंध में किसी प्रकार का पूर्ण अध्ययन नहीं किया गया है। अभी हाल ही में सोवियत वैज्ञानिकों ने प्रमाणित कर दिया था कि यद्यपि बालू सूखी दिखाई पड़ती है फिर भी धरातल के नीचे ८–१० इंच तक की गहराई में नमी की एक स्थायी सतह है। यह नमी ही रेगिस्तान के समस्त प्राणियों का जीवन स्रोत है। वैज्ञानिक अपने अध्ययन में लगे हुए हैं परन्तु अभी तक इस बात का पता नहीं चल पाया है कि नमी की यह सतह क्यों बनती है और लम्बे लम्बे तुर्कमानी ग्रीष्म-काल में वह स्थायी क्यों रहती है।

करा-कुम में पशुओं के लिए इतना पर्याप्त चारा रहता है कि वह प्रायः वर्ष भर तक चल जाता है। बस इसकी यही विशेषता है कि यह यत्र-तत्र ही उगा मिलता है। रेगिस्तान में प्रचलित दशाओं में एक वर्ष में एक भेड़ का पेट भरने के लिए औसतन दो एकड़ भूमि का चारा अपेक्षित है। इस हिसाब से आप समझ सकते हैं कि सामूहिक फ़ार्म के पशुओं के लिए–प्रत्येक ऐसे फ़ार्म में औसतन १०,००० अथवा इससे भी अधिक पशु होते हैं–कितने बड़े क्षेत्रफल की ज़रूरत होगी। इसके अलावा इतनी बड़ी बड़ी दूरी तक पशुओं को ले जाना भी आसान कार्य नहीं है। और चूंकि चबान इस दुष्कर कार्य को सम्पन्न करता है अतएव वह शताब्दियों से रेगिस्तानी लोगों के बीच इज्ज़त की नज़रों से देखा जाता रहा है। लेकिन इसका अर्थ यह न था कि स्थानीय शासक अपने चबानों को गुलामों से कुछ अधिक समझते रहे हों। लोगों ने

चबानों के दुर्भाग्य को कविताओं का रूप दिया है क्योंकि उन्हें भेड़ों की रखवाली के काम आनेवाले कुत्ते से अधिक न समझा जाता था।

आज चरवाहे की सर्वत्र क़द्र है। उसे सामूहिक फ़ार्मों में आराम का एवं सुसंस्कृत जीवन बसर करने का अवसर उपलब्ध है। तुर्कमनिया में यात्री को प्राय: ऐसे ऐसे चरवाहे भी दिखाई देंगे जिनकी पोशाकों पर तमग़े और पदक लगे होंगे। प्रत्येक ज़िले में लब्धप्रतिष्ठ एवं उच्च कोटि के चरवाहे हैं। अतएव समस्त प्रजातंत्र को उन पर गर्व है।

पिछले कुछ वर्षों में प्रजातंत्र के कराकुल-फ़ार्मों में 'पोबेदा' सोवखोज़ को एक बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। समाचारपत्र 'पोबेदा' के सर्वोत्तम चरवाहों द्वारा प्रयुक्त विधियों की उतनी ही रुचि से चर्चा करते हैं जितनी कि साहित्य के आलोचक किसी प्रसिद्ध लेखक, किसी नयी कविता अथवा उपन्यास की आलोचना करने में दिखाते हैं।

चबान को अपनी मेहनतों का फल मिलने लगा है। पुराने गीतों में उसका चित्रण भिखमंगे एवं ग़रीब के रूप में हुआ है जो रोटी के एक टुकड़े को सबसे बड़ी नियामत और नयी कमीज़ या मामूली कम्बल को अप्राप्य विलासिता की वस्तु समझता था। क्रान्ति के पूर्व ज़िन्दगी भर अपने शासक के लिए काम करनेवाले सबसे अनुभवी चबान को भी जीवन भर की कमाई के रूप में उतनी भेड़ें न प्राप्त होती थीं जितनी कि आज के निपुण चरवाहे को उसके वार्षिक पारिश्रमिकों के रूप में प्राप्त हो जाती हैं। कुछ चरवाहे प्रतिवर्ष ३०,०००–४०,००० रूबल तक कमा लेते हैं। इसके अतिरिक्त मज़दूरी के रूप में भी उन्हें प्रतिवर्ष ५० से ६० भेड़ें तक मिल जाती हैं।

करा-कुम में पशु-पालन एक कठिन कार्य है। सोवियत सरकार ने चरवाहों की मेहनत हल्की करने की दिशा में कुछ कार्य किये थे। सम्प्रति यंत्रीकृत पशु-पालन-केन्द्र, जिनमें अव्वल दर्जे की मशीनें लगी हुई हैं, भेड़ों का ऊन उतारने तथा घास काटने में सामूहिक फ़ार्मों की मदद कर रहे हैं।

घास तथा कन्सेन्ट्रेटेड चारों की खत्तियों के कारण उन जानवरों की मृत्यु-संख्या में कमी आती जा रही है जो सख़्त पाले के कारण मर जाया करते थे क्योंकि कुछ

ही दिनों में पाला ज़मीन को जमी हुई बर्फ़ के कम्बल से ढक देता है और सैकड़ों भेड़ों को मौत के मुंह में डाल देता है। प्राचीन तुर्कमनिया में न तो लोगों के पास ऐसे स्टाक होते ही थे और न हो ही सकते थे।

यंत्रीकृत पशु-पालन-केन्द्रों ने पानी निकालने के भारी काम में भी मशीनों की व्यवस्था कर ली है। अब प्रजातंत्र को अपनी भेड़ों तथा पशुओं की संख्या में वृद्धि करने के सभी अवसर प्राप्त हैं और तुर्कमान पशु-पालकों का भविष्य उज्ज्वल है।

सम्प्रति समस्त करा-कुम के विशाल प्रदेश का तीन-चौथाई भाग चरागाह समझा जा सकता है। इसका अर्थ है कि तुर्कमनिया के सामूहिक फ़ार्मों के चरागाहों का क्षेत्रफल प्रायः ९६,००० वर्ग मील से भी अधिक है।

कराकुला भेड़ पालन का उद्योग प्रजातंत्र की अर्थ-व्यवस्था की एक प्रमुख शाखा है। कराकुला भेड़ की खाल तुर्कमनिया के लिए उतनी ही गर्व की वस्तु है जितनी कि महीन रेशे की कपास। प्रजातंत्र भर में—सेराख्स, तेजेन, आमू-दरिया के किनारे किनारे तथा चार्दज्हू और मुर्ग़ाब के पास-पड़ोस के क्षेत्रों में—विशेष कराकुला-पालक सोवखोज़ हैं जिनके माल की दुनिया भर के फ़र के बाज़ारों में बड़ी क़द्र है। बहुत से सामूहिक फ़ार्म कपास उगाने के अतिरिक्त कराकुला भेड़ें भी पालते हैं तथा उन्हें चरने के लिए करा-कुम भेज देते हैं। कराकुला की कच्ची खालें अन्तिम प्रक्रिया के लिए चार्दज्हू के कराकुला कारख़ाने को भेजी जाती हैं जो मध्य एशिया भर में अपनी क़िस्म का सबसे बड़ा उद्यम है।

तुर्कमान पशु-पालक का ध्यान एकमात्र कराकुला भेड़ पर ही केन्द्रित नहीं है। इस भेड़ से अधिक मांस नहीं मिल पाता क्योंकि खाल प्राप्त करने के लिए मेमनों को पैदा होते ही मार डाला जाता है। प्रजातंत्र की गोश्त संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरजा नामक एक अन्य क़िस्म की भेड़ पाली जाती है। सरजा भेड़ भी करा-कुम पर चरायी जाती है।

अध्याय ५

१

करा-कुम वस्तुतः उस समस्त रेगिस्तानी इलाक़े का नाम है जो तुर्कमनिया में फैला हुआ है। वस्तुतः इस नाम के अन्तर्गत दो विभिन्न प्रदेश आते हैं–दक्षिणी अथवा नीचा करा-कुम और उत्तरी अथवा ऊंचा करा-कुम, जिसे ज़ौंगुज़ करा-कुम भी कहा जाता है। आमू-दरिया के किनारों से लेकर उस्त-उर्त पठार तक के कई सौ मीलों में पूर्व से पश्चिम की ओर फैली हुई पर्वत-श्रेणियों की उंचाई १७० से लेकर २३० फ़ीट तक से भी अधिक है। ये पर्वत-श्रेणियां इन दो रेगिस्तानों के बीच की सीमा बनाती हैं।

इन पर्वत-श्रेणियों के समानान्तर प्रायः उनकी पूरी लम्बाई भर में खारी दलदलों तथा तकूरों वाले ऊंचे-नीचे भूखंड हैं। इन्हीं भूखंडों में से उंगूज़ भी है जो आमू-दरिया की एक शाखा का सम्भावित शुष्क तल है। कहा जाता है कि एक समय था जब यह शाखा चार्दज्हू से करा-बोगाज़-गोल की दिशा में बहती थी। इन भूखंडों के नाम पर ही उत्तरी करा-कुम का नाम ज़ौगुज़ पड़ा है।

ज़ौंगुज़ करा-कुम वस्तुतः पत्थर-रेत-मिट्टी का एक बड़ा पठार है जो उंगूज़ के किनारे से अलग होकर उत्तर की ओर ढालू हुआ चला जाता है। यहां के रेत के कुछ टीले निचले दक्षिणी करा-कुम के टीलों के समान बड़े एवं अद्वितीय नहीं हैं। प्रायः यहां की भूमि चौरस दिखती है जिसमें यत्र-तत्र भूरे रंग की गिटकौरियां पड़ी हुई हैं, किन्तु सामान्यतया रेगिस्तान निर्जन एवं मन को उबा डालनेवाला है। जहां मरुभूमि बढ़ने लगती है वहां वनस्पति–एक विशेष प्रकार के बौने मक्सौल तथा विभिन्न प्रकार के झाड़ीदार पौधे–पश्चिमी तुर्कमनिस्तान की भांति ही यत्र-तत्र छितरी हुई मिलती है।

ज़ौंगुज़ करा-कुम के दक्षिणी सिरे पर स्थित कुछ पहाड़ियो पर, मुख्यतया तशौज़ और अशकाबाद के प्रायः बीचोंबीच पड़नेवाली उंगूज़ के समीपस्थ दरवाज़ा पहाड़ियों पर, गन्धक की कुछ सख़्त और कठोर खानें हैं। स्थानीय जनता को इन खानों का पता था किन्तु क्रान्ति के पहले तक वह इनका कोई व्यावहारिक उपयोग न कर सकी। रूस को सारा गन्धक बाहर से मंगाना पड़ता था। करा-कुम के गन्धक

के कारखाने पहली कुछ पंचवर्षीय योजनाओं में खोले गये थे और इस प्रकार यह रेगिस्तान देश के औद्योगिक जीवन का एक अंग बन गया था।

सेरनिये बुगरी (गन्धक के टीले) का पता सोवियत वैज्ञानिक दलों ने लगाया था। ये दल उस विद्वान अ० फ़ेर्समन के नेतृत्व में काम कर रहे थे जो भूगर्भस्थ निधियों का पता चलाने के निमित्त प्राणपण से जुटा हुआ था।

ज़ौंगुज़ करा-कुम सम्पूर्ण रेगिस्तान के एक-तिहाई भाग में फैला हुआ है। शेषांश में निचला अथवा दक्षिणी करा-कुम है जिसके दक्षिणी-पूर्वी भाग से बैराम-अली और चार्दज्हू के बीच एक रेलवे गुज़रती है।

यदि कुल मिलाकर देखा जाये तो पता चलेगा कि दक्षिणी करा-कुम में मैदान जैसी विशेषताएं हैं किन्तु इस बात का पता सिर्फ़ विशेष उपकरणों की सहायता से ही चल सकता है क्योंकि मनुष्य के चर्म-चक्षुओं को औसतन ३० से ५० फ़ीट तक की उंचाई के बालू के टीलों के निचले ढाल अथवा शृंग ही दिखाई पड़ते हैं और कुछ नहीं। स्वाभाविक है कि ये पर्वतीय स्थल, जिनमें बराबर कोई न कोई उथल-पुथल होती ही रहती है, मैदानों की विशेषताओं के अनुरूप नहीं होते।

इन ऊंची पहाड़ियों के साथ साथ १५-२० फ़ुट उंचाई के बरखान भी देखने को मिल सकते हैं जिनके शृंगों पर से बालू के बादल के बादल उड़ा करते हैं। ये शृंग वायु की दिशा की ओर झुके-से लगते हैं तथा इनकी रूप-रेखा बड़ी प्रखर होती है। दूर से इन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो कोई थका हुआ अजीब ऊंट सुस्ताने के लिए लेट गया हो।

पिछले लाखों वर्षों में ऊंट ने मरुभूमि के जीवन की कठिनाइयों के बीच रहना सीख लिया है और उसे इसमें उल्लेखनीय सफलता भी मिली है। उसके शरीर की बनावट के कारण उसके लिए पानी की आवश्यकता कम से कम पड़ती है और वह कई कई दिन तक बिना पानी के रह सकता है। उसका कूबड़, जिसमें अधिकतर चर्बी ही चर्बी है, उसके सारे शरीर को आर्द्रता पहुंचाने के स्रोत के रूप में काम आता है। उसके गर्म हल्के ऊन में रेगिस्तान के प्रायः सभी रंगों का भान होता है। अपने थूथनों के कारण उसे सूखी कटीली 'केमिल थार्न' नामक घास

खाने में कोई तकलीफ़ नहीं होती। इस प्रकार वह मरुभूमि के जीवन का केवल अभ्यस्त ही नहीं हुआ वरन् उसकी बाह्य आकृति भी उसके प्राकृतिक निवास की दृश्यावली के रंगों से एकाकार हो उठी। रेगिस्तान में दिखनेवाले प्रकाश और साये ने उसके कूबड़ की रेखाओं पर ठीक अपनी ही जैसी छाप डाली और यदि उसके सिर, गर्दन और पीठ की शक्ल मेहराबदार न होती तो ऊंट नाम के इस इतने बड़े जानवर पर किसी की निगाह भी न जाती। और यदि उसका आकार-प्रकार वैसा न होता जैसा कि है तो वह शीघ्र ही रेगिस्तान में घूमनेवाले वन-पशुओं का कौर हो गया होता।

करा-कुम के पशु-संसार के साथ हमारा जो परिचय होता है वह इस बात का प्रमाण है कि जीवन कितने प्रकार से कितनी दशाओं में अपने को अनुकूलित करता है। यहां नदियां नहीं हैं, सोते नहीं हैं और जो थोड़ी बहुत नमी या वर्षा यहां हो भी जाती है उसे बालू निगल लेती है। फलतः सामान्य दशाओं में जानवर अपनी प्यास नहीं बुझा सकते अथवा बड़ी कठिनाई से बुझा सकते हैं। मरुभूमि में गोबरैलों, रेंगनेवाले जीव-जन्तुओं, चिड़ियों, यहां तक कि दूध पिलानेवाले जानवरों की भी कमी नहीं है और इन सभी ने बिना पानी के जीवन बसर करना सीख लिया है। उदाहरणार्थ, मध्य एशिया का ख़रगोश पौधों से मिलनेवाली नमी से ही सन्तुष्ट हो जाता है। स्वयं करा-कुम का बारहसिंगा भी—जिसे यहां के लोग जैरन कहते हैं—बहुत काल तक पानी के बिना रह सकता है क्योंकि उसे किसी नदी या तालाब में पानी पीते हुए बहुत कम देखा गया है। हां कभी कभी वह किसी सूखती हुई खारी झील के पास, जहां के पानी में इतना अधिक नमक होता है कि उसमें से सिलखड़ी तक निकलने लगती है, ज़रूर ओठों को तर करता दिखाई पड़ जाता है। इसके अतिरिक्त न तो यहां के बुस्टर्ड (सारस जैसा एक पक्षी) को और न रेगिस्तानी लवा को ही पेय जल की ज़रूरत पड़ती है। यहां कुछ प्रकार की ऐसी छिपकलियां और अन्य कीड़े-मकोड़े भी मिलते हैं जो अपने शरीर से फ़ालतू लवण शुष्क रूप में निकालते हैं। ऊंट, जेरबोआ धानीमूष (रेगिस्तानी चूहा) तथा एक प्रकार की गिलहरी को अधिक समय तक इसलिए पानी की ज़रूरत नहीं पड़ती क्योंकि वे उसका एक भाग स्वयं अपने शरीर की चर्बी से ही प्राप्त कर लेते हैं।

यत्र-तत्र थोड़े-से बसे हुए उत्तरी करा-कुम की तुलना में दक्षिणी करा-कुम को जीवन से परिपूर्ण कहा जा सकता है। विशेष रूप से यहां पर गोबरैलों तथा रेंगनेवाले जीव-जन्तुओं की अनेक क़िस्में पायी जाती हैं।

रेगिस्तान के दक्षिण-पूर्वी भाग में औल तकूरों के निकट स्थित हैं। यहां कुओं की संख्या प्रायः अधिक है। तकूर की मिट्टी मटीली होती है जिसपर पानी जमा होता है। सामान्यतया तकूरों का रेगिस्तान के जीवन में बड़ा महत्त्व है। बालू के समुद्र के बीच कठोर मिट्टी के ये स्थल छोटे छोटे द्वीपों की भांति लगते हैं।

शोरों या सूखी हुई खारी दलदलों के आकार बिल्कुल भिन्न होते हैं। वे बालू के टीलों के बीच बीच में मिलते हैं और कभी कभी इतने लम्बे होते हैं कि प्रागैतिहासिक नदियों के सूखे हुए तलों की भांति प्रतीत होते हैं। यदि शोर को किसी साफ़ दिन में दूर से देखा जाये तो उसमें एक नीली झील या चौड़ी शान्त नदी का भ्रम होगा। इसके धरातल के नमक पर सूर्य का प्रकाश वैसा ही प्रतिबिम्बित होता है जैसा कि वह पानी पर होता है, किन्तु यह भ्रम उस समय दूर हो जाता है जब आप उसके निकट जाते हैं। उसकी निष्प्राण श्वेत सतह उस भयानक नग्नता एवं निर्जनता का प्रतीक है जो मरुभूमि की एक खास विशेषता है। मगर सौभाग्य से शोर बहुत बड़े क्षेत्रों में नहीं हैं।

२

यदि आप, उदाहरणार्थ, बैराम-अली व चार्दज्हू के बीच रेलवे-लाइन से विभक्त होनेवाले क्षेत्र का अध्ययन करें तो आपकी यह धारणा निर्मूल हो जायेगी कि करा-कुम एक वीरान तथा बंजर प्रदेश है। रेलवे-स्टेशन के चारों ओर के मकानों के इर्द-गिर्द नग्न बरखान हैं जो ऐसे लगते हैं मानो चांदनी में प्रकृति के दर्शन हो रहे हों। किन्तु यह भी पहली ही धारणा है क्योंकि भूमि निष्प्राण नहीं है। वह मनुष्य के अथक परिश्रम और उसके अध्यवसाय के बदले उसे भोजन देती है और सिर छिपाने को जगह।

रेगिस्तान पूर्णतया निर्जन है इस बात को यह तथ्य असत्य सिद्ध कर देता है कि शरद-काल में यहां आस्त्राखान के जैसे रसदार तरबूज़ होते हैं जो करा-कुम प्रदेश के भीतरी भागों में स्थित रेलवे-स्टेशनों तथा साइडिंगों में बिका करते हैं। बालू में ६ से ८ इंच तक से भी अधिक गहराई पर मिलनेवाली नमी की सतह न केवल

छिपकलियों को ही अपितु साग-सब्ज़ियों तक को जीवित रखने में समर्थ है बशर्ते कि वे विशेष खाइयों में कौशल के साथ लगायी जायें।

रेपेतेक मरुभूमि-गवेषणा-केन्द्र में लड़ाई के पहले से ही ख़रबूज़ों की फ़सल के सम्बन्ध में परीक्षण किये जा रहे हैं, जिनमें यह सिद्ध कर दिया गया है कि तरकारियां न सिर्फ़ सिंचित ज़मीन में ही अपितु उन खाइयों में भी उग सकती हैं जहां से सूखी बालू की सबसे ऊपरी सतह हटा ली गयी हो। एतदर्थ सिंचाई की ज़रूरत नहीं है और पौधे उस नमी के सहारे रह सकते हैं जो बरख़ानों के गर्भ में संगृहीत है।

पिछले कुछ वर्षों में इस केन्द्र ने बालू में तरकारियों के पौधे लगाने तथा उन्हें कुओं के खारे पानी से सींचने के सम्बन्ध में परीक्षण किये, जिनमें उसे काफ़ी सफलता मिली। इन परीक्षणों के परिणामस्वरूप वहां खीरा, गाजर, प्याज़, मूली और आलू की बड़ी बड़ी फ़सलें हुईं यद्यपि इनमें से किसीको भी एक बूंद ताज़ा पानी न मिला था। उनकी बाह्य आकृति और स्वाद में ऐसी कोई भी बात नज़र न आती थी जिससे उन्हें सामान्य दशाओं में उगायी गयी साग-सब्ज़ियों से भिन्न समझा जाता।

केन्द्र अपने अनुसंधान-कार्यों को लगातार व्यापक बनाता जा रहा है।

जो लोग पहले कभी रेपेतेक गये हैं उन्हें बंजर-बरख़ानों और जलते हुए आसमान के नीचे छोटे-से एकाकी मकान की याद ज़रूर होगी। उसे देखकर ऐसा लगता था मानो बड़े समुद्र में एक छोटी-सी नौका थपेड़े खा रही हो और यह आशंका होती थी कि यदि हवा कुछ और तेज़ चली तो ये बड़े बड़े बरख़ान अपना स्थान बदलने लगेंगे और वह एकाकी मकान मय अपने निवासियों के टनों बालू के उदर में समा जायेगा। गर्मी के समय, जब बालू का तापमान १२२ अंश फ़ारेनहाइट से भी अधिक होता है, मरुभूमि पर कठिन अनुसंधान-कार्य करने के निमित्त वैज्ञानिकों में उत्साह और विज्ञान के प्रति निष्ठा की आवश्यकता होती है। केन्द्र के कर्मचारियों में ये दोनों ही गुण मिलते थे। उन दिनों रेपेतेक में रेडियो नहीं थे। इसलिए केन्द्र के अनुसन्धानकर्त्ताओं के लिए बाहरी दुनिया से सम्पर्क बनाये रखने का एक अकेला साधन वह ट्रेन थी जो उस स्टेशन पर प्रतिदिन दो बार दो-दो मिनट के लिए रुका करती थी। यह उल्लेखनीय है कि केन्द्र में काम करनेवाले लोग लेनिनग्राद, मास्को और ताशकंद की संस्थाओं के विद्यार्थी तथा स्नातकोत्तर छात्र थे।

सम्प्रति नग्न बरख़ानों के बीच बने हुए उस एकाकी मकान के स्थान पर ऐसे कई कई मकान दिखाई पड़ने लगे हैं जिनके इर्द-गिर्द मरुभूमि में उगनेवाले पेड़ लहलहाते हैं। अब आप वहां छतों के ऊपर एक आधुनिक विद्युत-इंजन का फलक, सकसौल वृक्षों के पत्तों से आच्छादित हरे हरे पुंज तथा उन बरख़ानों के ढाल देखेंगे जिन्हें रेपेतेक के 'रेगिस्तानियों' ने अचल बना दिया है। केन्द्र आधुनिक साज-सज्जा से सुसज्जित है और सोवियत संघ में मरुभूमि के अध्ययन की दिशा में काफ़ी बड़ा काम कर रहा है।

रेपेतेक के चारों ओर की लहलहाती हुई भूमि इस बात का प्रमाण है कि मरुभूमि हमेशा हमेशा के लिए बंजर नहीं रह सकती। यह ठीक है कि बालू से भिड़ना एक दुष्कर कार्य है लेकिन यह कार्य सोवियत जनता की शक्ति के बाहर नहीं है।



शेख-शरीफ़ का मक़बरा (१२वीं शताब्दी) और मीनार (१४वीं शताब्दी)



स्वत: व नेवाला सपत महर

आमू-दरिया पर

अध्याय १

१

कास्पियन तट के बाद जलहीन प्रदेश, रेगिस्तान और मटमैली भूमि में ६०० मील तक यात्रा कर लेने तथा तुर्कमान प्रजातन्त्र में बसे हुए प्रमुख स्थानों पर रुकने के पश्चात् ट्रेन अन्ततः चार्दज्हू स्टेशन पहुंचवी है।

इस यात्रा के समय यात्री को तुर्कमनिया के विभिन्न स्थानों, ऊंचे ऊंचे निर्जन पठारों, प्राचीन नदियों के तलों, खारे पानी की सूखी हुई झीलों, समतल तकूरों और बालू और मिट्टी वाले मैदानों को देखने के अवसर मिले थे। उसने पुष्पाच्छादित कोपेत-दाग़ की तलहटियां, हरे-भरे नख़लिस्तान, प्राचीन संस्कृतियों के प्रतीक क़ब्रिस्तान और बरख़ान भी देखे थे ... उसे रेगिस्तान के समस्त भागों और दिन की गर्मी से लेकर रात्रि की ठंढक तक यानी तापमानों के समस्त परिवर्तनों की याद भी अवश्य होगी।

साइडिंगों और स्टेशनों पर लोग उतरने लगे थे और उनके स्थान पर दूसरे यात्री चढ़ने लगे थे—कास्पियन के मछुए, चेलेकेन और नेबित-दाग़ के तैलिक अथवा विद्यार्थी। डिब्बे में भिन्न भिन्न प्रकार के लोग थे—पशु-पालन-विशेषज्ञ और चबान, अनेक वैज्ञानिक अभियानों के सदस्य, निर्माता, कपास-उत्पादक और अंगूर पैदा करनेवाले।

चार्दज्हू !

तुर्कमनिस्तान की पूर्वी सीमा यहां से छः मील से कुछ ही दूर होगी। सामने आमू-दरिया का पुल तथा फ़रब का छोटा-सा नगर है जिसके उस पार रेलवे उज़बेकिस्तान में प्रवेश करती है।

चार्दज्हू आमू-दरिया के बायें तट पर बसा है और तुर्कमनिया के सबसे बड़े नगरों में से एक है। वह जुती-बुई भूमि के बीचोंबीच पड़ता है जिसे कभी कभी चार्दज्हू नख़लिस्तान भी कहते हैं।

क्रान्ति से पूर्व चार्दज्हू बुख़ारा की ख़ानशाही का एक भाग था और दो हिस्सों में बंटा हुआ था – रूसी या नया चार्दज्हू और पुराना चार्दज्हू जिसे उज़बेकों ने बसाया था। रूसी भाग रेलवे-स्टेशन के निकट स्थित था और क्रान्ति पूर्व मध्य एशिया के नगरों जैसा था।

क्रान्तिपूर्व के चार्दज्हू की समृद्धि गोदामों में संगृहीत तथा विक्रीत कपास की मात्रा और चबानों द्वारा फ़रों के वार्षिक मेलों में लायी गई कराकुला की खालों की क़िस्म पर निर्भर थी।

चार्दज्हू तथा मध्य एशिया के अन्य नगरों में एक अन्तर यही था कि चार्दज्हू आमू-दरिया जैसी एक बड़ी नदी के किनारे बसा हुआ है। फलतः वह नदी का एक बन्दरगाह बन गया है। सन् १८८८ में आमू-दरिया पर एक शिपिंग लाइन की स्थापना की गयी थी। उस वर्ष रूस से लाये गये पुर्ज़ों को समवेत करके जो पहला जहाज़ बनाया गया था उसने इस दरिया में अपनी पहली यात्रा की थी।

पहले-पहल आमू-दरिया यातायात का महत्त्वपूर्ण साधन न थी। फिर भी पास में एक बड़ा जल-मार्ग होने के कारण मारी या किज़ील-अरवात को देखते हुए रूसी या नये चार्दज्हू का एक अपना महत्त्व था।

पुराना चार्दज्हू, जो रेलवे-स्टेशन से कोई दस मील हटकर बसा हुआ था, एक बिल्कुल भिन्न नगर था, जिसे एशिया के पुराने नगरों की तरह का एक नगर कहा जा सकता था। इस नगर में मध्ययुगीन मुस्लिम विशेषताएं २०वीं शताब्दी में भी बनी रहीं। गढ़ में बुख़ारा के शासक तथा अन्य उच्चाधिकारी रहा करते थे। नगर के चारों ओर एक ऊंची दीवार थी जिसमें मीनारें तथा अनेकानेक छिद्र थे। नगर के बीचोंबीच एक छतदार बाज़ार थी जिसकी अंधेरी संकरी गलियों में दूकानें, स्टाल, दस्तकारी

के कारखाने, हज्जामों की दूकानें, भोजनालय तथा चायखाने थे। बाज़ार के चारों ओर जन-साधारण के मिट्टी के बने मकान थे। उनमें सड़कों के सामने पड़नेवाली एक भी खिड़की न थी। मुख्य सड़क इतनी संकरी थी कि उससे होकर दो बैल-गाड़ियां एक दूसरे के पास से न गुज़र सकती थीं। वहां की गलियां तो सिर्फ़ दो या तीन फ़ुट चौड़ी थीं। पुराने चार्दज्हू में खास तौर से उज़बेक रहते थे क्योंकि बुख़ारा की ख़ानशाही में तुर्कमान मुख्यतया खेतिहर लोग थे।

अक्तूबर क्रान्ति का पुराने चार्दज्हू पर कोई भी तात्कालिक प्रभाव न पड़ा। नगर में बुख़ारा के अमीर का शासन था। क्रान्ति के बाद के कुछ वर्षों में उसने सोवियत शक्ति के विरुद्ध लड़ाई की अपनी तैयारियों का रहस्य न प्रकट करने के लिए रूस की नयी सोवियत सरकार को औपचारिक रूप से मान्यता प्रदान की थी। उसके अधिकारी तथा मुल्ले औलों और किश्लकों में गये और उन्होंने वहां के निवासियों को सोवियत सरकार के ख़िलाफ़ विद्रोह करने के लिए भड़काया।

बसमाचियों ने कुछ वर्षों तक सोवियत सेना को युद्ध में व्यस्त ज़रूर रखा परन्तु अमीरशाही के दिन गिने-चुने ही रह गये थे। तुर्कमान तथा उज़बेक ग़रीबों ने समझ लिया था कि अमीर तथा स्थानीय शासक उन्हें ठग रहे हैं और इसीलिए उन्होंने सख्ती के साथ उन बसमाचियों का सामना करना आरम्भ किया जो जनता को अपने दलों में शामिल करने के षड़यंत्र में लगे हुए थे। सोवियत सेना ने हस्तक्षेप करनेवालों के ख़िलाफ़ लड़कर जो आदर्श प्रस्तुत किया था उसने जनता में अमीर के स्वेच्छाचारी शासन के विरुद्ध आवाज़ उठाने और उससे संघर्ष करने की शक्ति और प्रेरणा पैदा की।

अगस्त सन् १६२० में पुराने चार्दज्हू की श्रमिक जनता ने अमीर के ख़िलाफ़ बग़ावत कर दी। उसने बुख़ारा के सरबाज़ों को परास्त करके स्थानीय वक को गिरफ़्तार किया और तत्पश्चात् सोवियत सेना से सहायता की अपील की। बुख़ारा की जनता के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सोवियत सेना आगे बढ़ी और अमीर की राजधानी तक पहुंचकर उसपर क़ब्ज़ा कर लिया।

अमीर भाग गया। बुखारा की अमीरशाही को जन-प्रजातन्त्र घोषित कर दिया गया। किन्तु पुरानी अमीरशाही के नगरों और औलों के जीवन में वास्तविक क्रान्तिकारी परिवर्तन तब हुआ जब जन-प्रजातंत्र की जनता ने बुख़ारा को एक सोवियत प्रजातंत्र

घोषित किया और सोवियत तुर्किस्तान से मिलने की अदम्य आकांक्षा प्रकट की। यह बात सन् १९२४ की है।

मध्य एशिया के राष्ट्रीय परिसीमन के परिणामस्वरूप बुख़ारा नगर उज़बेक सोवियत प्रजातंत्र की सीमाओं के अन्तर्गत आ गया जब कि चार्दज्हू और केरकी सोवियत तुर्कमनिस्तान के भाग बन गये। इसी तरह तुर्कमनिस्तान में आमू-दरिया के डेल्टा में स्थित ख़ीवा ख़ानशाही का वह पश्चिमी भाग भी मिल गया जिसे आजकल तशौज़ क्षेत्र कहा जाता है।

पुराना चार्दज्हू अब अलग स्थानीय शासक का गढ़ न रह गया था। नये चार्दज्हू में भी एक बड़े और नवीन सोवियत नगर की समस्त विशेषताएं दिखाई पड़ने लगी थीं।

चार्दज्हू आमू-दरिया का एक मुख्य नगर, तुर्कमनिया का क्षेत्रीय केन्द्र और प्रजातंत्र के जीवन का एक प्रमुख अंग है। अब यह एक बड़ा औद्योगिक नगर तथा रेलवे, नदी, मोटरों और नभ-मार्गों का एक बड़ा केन्द्र है। चार्दज्हू एक बड़े कराकुला-प्रक्रिया कारख़ाने का स्थल चुना गया है, क्योंकि वह करा-कुम के चरागाहों के निकट है तथा वहां करा-कल्पकिया पशु-पालन-केन्द्र तक जानेवाला जल-मार्ग है। नदी की निकटता होने के कारण चार्दज्हू में कपास साफ़ करने के कारख़ाने तथा सिल्क-वाइंडिंग और रूई निकालने की मिलें पनप सकी हैं। इन उद्योगों के लिए आमू-दरिया के ऊपरी इलाक़े तथा डेल्टा के उर्वर क्षेत्रों से कच्चा माल नावों, बजरों तथा जहाज़ों में भर भरकर यहां लाया गया था।

नदी-यातायात की आवश्यकताएं पूरी करने के लिए जहाज़ों की मरम्मत वाले कारख़ानों का भी प्रसार करना पड़ा। युद्धोत्तर वर्षों में सिंचाई-प्रणाली में प्रयुक्त मशीनों की बढ़ी हुई संख्या के कारण चार्दज्हू में एक एक्स्क्वेटर-मरम्मत-कारख़ाने का निर्माण किया गया।

दूसरे विश्वयुद्ध काल में इस नगर में एक पट्टा-फ़ैक्टरी बनायी गयी। इसके पश्चात् एक बानात-फ़ैक्टरी, एक आक्सीजन-कारख़ाना और एक कृत्रिम फ़र कारख़ाना खोला गया।

नगर निरंतर वृद्धि करता जा रहा है और वहां अधिकाधिक मकानों, मुहल्लों और सड़कों का निर्माण हो रहा है। वहां अध्यापक-संस्था का भव्य भवन नगर की उस पूर्व सीमा पर है जहां पहले कभी धूल और गर्मी का राज्य था। आज सड़कों के दोनों ओर बढ़िया ख़ूबसूरत मकान हैं जो युद्धोत्तर काल में बने थे। एक समय जहां बंजर-भमि थी वहीं अब छायादार वृक्षों की क़तारों वाले सुन्दर पार्क दिखाई देने लगे हैं।

क्रान्तिपूर्व के चार्दज्हू में एक भी माध्यमिक शिक्षा-संस्था न थी किन्तु आज मज़दूरों नाविकों, सामूहिक कृषकों तथा अन्य कर्मचारियों की सन्तति कृपि एवं नदी-यातायात के टेक्नीकल स्कूलों, मेडीकल और चिकित्सा-सहायक स्कूलों, अध्यापक-संस्था और बीसियों माध्यमिक स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। वहां क्लब, पुस्तकालय और सुन्दर सुन्दर इमारतें हैं जिनमें एक सबसे सुन्दर इमारत सिनेमाघर की है जो युद्ध के पश्चात् नगर के बीचोंबीच बनायी गयी थी।

आज आप चहलक़दमी करते हुए चार्दज्हू की चौड़ी चौड़ी एवं बिजली से प्रकाशित सड़कें देख सकते हैं और उन लाउड-स्पीकरों को सुन सकते हैं जिनपर मास्को या अशकाबाद का संगीत आता है। इन सबको देखकर आपको लगेगा कि उस नगर की वे सब बातें अतीत काल की बातें हो गयी हैं जो अभी काल तक दिखाई देती थीं।

२

हर नगर की अपनी अपनी विशेपताएं हैं। दो व्यक्तियों की भांति ही दो नगर भी हर माने में एक जैसे नहीं होते। चार्दज्हू प्राचीन काल की, और ख़ासकर बहुत-सी वर्तमान काल की, विशेषताओं के कारण मारी, अशकाबाद तथा किज़ील-अरवात के समान दिखाई पड़ता है। किन्तु इन नगरों की अपनी निजी विशेषताएं हैं जिनके कारण वे दिलचस्प और उपयोगी लगते हैं।

चार्दज्हू की तुलना में अशकाबाद बड़ा है, अधिक ख़ूबसूरत, अधिक घना बसा है और अधिक समृद्ध है। प्रजातन्त्र के जीवन में उसका राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महत्त्व कहीं अधिक है। किन्तु चार्दज्हू वृक्षदार, चौड़ी चौड़ी सड़कों वाला एवं मध्य एशिया की एक शक्तिशाली नदी के निकट बसा हुआ एक ऐसा नगर है, जिसका अपना सौन्दर्य है, अपना आकर्षण है।

आमू-दरिया की निकटता के कारण चार्दज्हू की वायु तक उन नगरों से भिन्न है जो रेगिस्तान से घिरे हैं। यहां की अधिकांश जनता का उद्यम, उसके बन्दरगाह होने के कारण, वहां होनेवाले क्रिया-कलापों के अनुरूप है। नगर का एक सबसे बड़ा औद्योगिक उद्यम जहाज़-मरम्मत-कारख़ाना है। नगर के निकट एक बांध-परिमित जल-संग्रह तथा जहाज़ी घाट हैं। चार्दज्हू मध्य एशिया में जहाज़-प्रशासन का एक केन्द्र है। यह प्रशासन न केवल आमू-दरिया में ही अपितु कज़ाख़स्तान में बालख़श झील पर, ईली नदी पर, किर्गीज़िया में इस्सीक-कूल झील पर तथा उज़बेकिस्तान और ताजिकिस्तान में अन्य नदियों पर भी जहाज़रानी की व्यवस्था करता है। नगर की एक विशेष शिक्षा-संस्था नदी-यातायात टेक्नीकल स्कूल है, जब कि नदी-यातायात-कर्मचारियों का क्लब उसकी एक प्रमुख सांस्कृतिक संस्था है। इसके अतिरिक्त गर्मी में चार्दज्हू के लोगों को जितनी सुविधाएं मिलती हैं उतनी अशकाबाद अथवा नेबित-दाग़ के लोगों को नहीं प्राप्त होतीं। बांध-परिमित जल-संग्रह मय अपने बलुए किनारों के यहां की जनता के मध्य बड़ा लोकप्रिय है क्योंकि अधिकांश लोग वहां नहाने का लुत्फ़ लेते हैं। कुछ पुराने लोग तो यह भी जानते हैं कि यहां मछली मारने के उत्तम स्थान कहां कहां हैं।

रेल तथा नदी-यातायात ने इस व्यस्त तथा द्रुतगति से बढ़नेवाले प्रादेशिक केन्द्र के जीवन के अनेक पहलुओं पर अपना प्रभाव डाला है।

बहुत काल से चार्दज्हू यातायात का एक बड़ा केन्द्र रहा है। प्राचीन काल में ख़ोरेज़्म तथा पूर्व के अन्य देशों से व्यापार या तो चार्दज्हू होकर चप्पुओं की या पाल की सहायता से चलनेवाली, लकड़ी की बड़ी बड़ी नावों द्वारा होता था या फिर ऊंट के क़ाफ़िलों के ज़रिये। ये क़ाफ़िले ख़ोजैली से ख़ीवा, उरगेन्च, ख़ज़ारस्प होते हुए तथा आमू-दरिया के बायें किनारे से चार्दज्हू तक आया जाया करते थे। ख़ोरेज़्म के व्यापारी चार्दज्हू की मंडियों में माल ख़रीदते तथा बेचते थे।

मध्य एशियाई रेलवे के बन जाने के बाद से व्यापार तथा यातायात-केन्द्र के रूप में इस नगर का महत्त्व काफ़ी बढ़ गया था। क्रान्ति के आरम्भ तक ख़ीवा और चार्दज्हू के बीच के नदी और क़ाफ़िलों के मार्ग मध्य एशिया के सबसे व्यस्त मार्गों में से थे।

किन्तु यह यात्रा बड़ी लम्बी होती थी और साथ ही बेहद थका डालनेवाली!

यात्रा में हफ़्तों लग जाते थे। व्लादिवोस्तोक से मास्को भेजा जानेवाला माल अपने गन्तव्य स्थान पर कभी कभी कपास के उस गट्ठे से जल्दी पहुंच जाता था जो काफ़िले के ज़रिये तशौज़ से अशकाबाद या ताशक़न्द भेजा जाता था।

प्रथम कुछ पंचवर्षीय योजना-कालों में वायुयान-मार्गों के चालू हो जाने के कारण ऊंटों के क़ाफ़िलों और जलयानों को बड़ी मदद मिली। लेकिन वायुयान द्वारा केवल ढाक या यात्री ही आते जाते थे। कुछ समय बाद तशौज़ को चार्दज्हू से मिलाती हुई एक सड़क और बन गयी किन्तु बालू के कारण यहां गाड़ियों का चलाना इतना दुष्कर हो जाता था कि अभी हाल ही तक अधिकांश माल या तो नावों द्वारा भेजा जाता था या ऊंटों द्वारा। कुछ हद तक तुर्कमनिया का तशौज़ क्षेत्र, उज़बेकिस्तान का ख़ोरेज़्म क्षेत्र और कुल का कुल करा-कल्पकिया सोवियत संघ से एक प्रकार से कटा रहा और इसीलिए उनकी उन्नति के मार्ग में काफ़ी बाधा पड़ी।

प्रथम युद्धोत्तर पंचवर्षीय योजना में उज़बेकिस्तान और तुर्कमनिया के लोगों ने अपना एक स्वप्न साकार होते देखा था, अर्थात् चार्दज्हू से उरगेन्च जानेवाली रेलवे पर कार्य आरम्भ हुआ था। सन् १९५२ के वसन्त-काल में पहली माल-गाड़ी चार्दज्हू से तशौज़ क्षेत्र और ख़ोरेज़्म की ओर रवाना हुई। इस गाड़ी ने आमू-दरिया के निचले क्षेत्रों को सोवियत संघ में फैली हुई रेलों से मिलाकर यातायात की एक बड़ी समस्या हल की थी।

स्वाभाविक है कि चार्दज्हू—कुनग्राद रेलवे-लाइन बन जाने के कारण माल-यातायात विषयक आमू-दरिया का महत्त्व कम हो जायेगा और यातायात-जंकशन के रूप में चार्दज्हू और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जायेगा। वस्तुतः इसका महत्त्व अब भी बहुत अधिक है क्योंकि तशौज़ से माल का यातायात न तो मौसमी होता है और न वह पहले की तरह मौसम अथवा नदी की सतह पर ही निर्भर है।

३

आमू-दरिया पर बना हुआ पुल सोवियत संघ के सबसे लम्बे पुलों में से एक है। यह पुल चार्दज्हू की एक दर्शनीय चीज़ थी और है। इसका निर्माण उन रूसी इंजीनियरों की प्रतिभा का द्योतक है जिन्होंने मध्य एशियाई रेलवे बनायी थी।

निर्माता नवम्बर सन् १८८६ में ग्रामू-दरिया पहुंचे थे। उस समय उसके निचले एवं मिट्टी से भरे हुए किनारों पर से नदी का चाकलेटी रंग का जल द्रुतगति से दक्षिण से उत्तर की ग्रोर बहता हुग्रा दिखाई देता था। इस जल में बड़े बड़े लट्ठों को बहा ले जाने की शक्ति थी। चपटे बलुए द्वीपों ने नदी को कई कई नालों में बांट रखा था ग्रौर पहली ही नज़र में बताया जा सकता था कि ये द्वीप स्थिर नहीं हैं। जल का रूप-रंग भी तट की ही भांति था ग्रौर उसका भी कोई स्थायी मार्ग न था।

नदी पर पुल का निर्माण कर देना भर काफ़ी न था। पुल को उस समस्त क्षेत्र पर बनाया जाना था जहां बाढ़ ग्राने की सम्भावना हो सकती थी, ताकि नदी की मनमानियों से ट्रेनों के ग्राने-जाने में कोई बाधा न पहुंचे।

उन वर्षों म यूरोपीय इंजीनियरों को इतना बड़ा पुल बनाने का ग्रनुभव न था।

ग्रामू-दरिया के तल में सितम्बर सन् १८८७ में पहला लट्ठा रखा गया ग्रौर इस प्रकार पुल-निर्माण की दिशा में पहला क़दम उठाया गया। उस दिन से कोई चार महीने पश्चात्—ग्रर्थात् जनवरी सन् १८८८ के मध्य तक—पुल पर से धड़धड़ाती हुई पहली ट्रेन निकली थी। पुल पूर्णतया लकड़ी का बना था तथा इसकी लम्बाई ६०१३ फ़ुट थी। सन् १६०२ में—ग्रर्थात् १४ वर्षों बाद-उसके स्थान पर एक लोहे का पुल बनाया गया जो दशाब्दियों तक रूस के सबसे लम्बे पुलों में से एक बना रहा।

४

दुनिया में ऐसी एक भी नदी नहीं जिसमें उतने परिवर्तन देखने को मिले हों जितने कि ग्रामू-दरिया में देखने को मिलते हैं ग्रौर न ऐसी ही कोई नदी जिसके इतने ग्रधिक नाम हों।

प्राचीन भूगोलवेत्ता इसे वहशु, ग्रोक्सूस या जैहून कहते थे। वहशु का मूल उद्गम सम्भवतः सगदियाना है, ग्रोक्सूस का यूनानी ग्रौर जैहून का ग्ररबी—वहशी। ग्रपने तूफ़ानीपन, धारा के प्रवाह ग्रौर सहसा मार्ग बदलने की प्रवृत्ति के कारण लोग उसे पगली नदी कहते थे। इसका एक नाम गारिब भी था जिसका ग्रर्थ होता है घुमक्कड़, क्योंकि तूफ़ानी तथा मुश्किल से वश में ग्राने योग्य होने के साथ ही साथ वह इच्छानुसार ग्रपने मार्ग में परिवर्तन भी कर लिया करती है। स्थानीय

नाविक कहा करते हैं कि "हम यह तो बता सकते है कि कल नदी कहां बह रही थी पर यह नहीं कि कल कहां बहेगी।"

छठी शताब्दी में इस नदी का नाम ग्रामूल नगर के नाम पर ग्रामू-दरिया रखा गया था। ग्रामूल नगर पहले उसी स्थान पर था जहां ग्राजकल चार्दज्हू नगर बसा हुग्रा है। दरिया का ग्रर्थ होता है नदी। फलतः ग्रामू-दरिया का ग्रनुवाद "ग्रामूल नगर से होकर बहनेवाली नदी" किया जा सकता है।

नदी का वर्तमान नाम सम्प्रति नदी के एक भाग पर ही लागू होता है। ग्रपने ऊपरी क्षेत्रों – पामीर ग्रौर हिन्दूकुश – में उसे वहजीर कहते हैं, कुछ ग्रौर नीचे उसका नाम वहन-दरिया है। पामीर नामक सहायक-नदी से मिल जाने के पश्चात् यही वहन पंज हो जाती है। पंज का ग्रर्थ है पांच, जिससे पता चलता है कि वहन के ग्रलावा ग्रामू-दरिया के स्रोतों में चार नदियां ग्रौर हैं – पामीर, गुन्त, वरतंग ग्रौर वांच।

हिन्दूकुश से उतरकर नदी सोवियत-ग्रफ़ग़ानी सीमा के किनारे किनारे पंज के रूप में ग्रौर फिर दाहिनी ग्रोर ग्रपनी सबसे बड़ी सहायक-नदी ग्रौर सोवियत ताजिकिस्तान की सबसे बड़ी नदी वहश के मिल जाने के पश्चात् शक्तिशाली ग्रामू-दरिया के रूप में बहती है।

तेर्मेज़ नगर के समीप नदी के दाहिने किनारे पर उज़बेक प्रजातंत्र की हद शुरू हो जाती है जब कि ग्रौर भी दूर केलिफ़ के किश्लक के उस पार तुर्कमनिया है। केलिफ़ के उत्तर में नदी सोवियत प्रदेश में होकर बहती है।

ग्रामू-दरिया तुर्कमनिया से होकर ६०० मील से भी ग्रधिक की दूरी में बहती है। वह चार्दज्हू क्षेत्र के ग्रधिकांश निवासियों के निमित्त जीवन का स्रोत है। इस क्षेत्र की जनता मुख्यतया नदी के उन स्थानों पर, जहां उसका जल पहुंच जाता है, ग्रथवा उन सहायक-नदियों के किनारे किनारे बसी है जो दाहिनी ग्रोर से ग्राकर उससे मिलती हैं। तुर्कमनिया प्रदेश में बायीं ग्रोर से ग्रामू-दरिया में एक भी सहायक-नदी नहीं गिरती।

नदी के निचले क्षेत्र उज़बेकिस्तान तथा करा-कल्पकिया में हैं। जिन नहरों तथा ग्ररीकों को ग्रामू-दरिया के निचले क्षेत्रों से पानी प्राप्त होता है,

वे उज़बेकिस्तान के ख़ोरेज़्म नख़लिस्तान में और तुर्कमनिया निकटवर्ती में तशौज़ नख़लिस्तान में जीवन का संचार करती हैं।

अन्त में अपने स्रोतों से लगभग १४२० मील की दूरी पार कर लेने और करा-कल्पकिया की राजधानी नुकुस से गुज़र जाने के बाद नदी की बहुत-सी शाखाएं हो जाती हैं जो उसके डेल्टा का निर्माण करती हैं और अरल-सागर के दक्षिणी भाग में गिर जाती हैं।

डेल्टा का निचला भाग करा-कल्पकिया में है।

तुर्कमनिया में आमू-दरिया अधिक ढालू प्रदेश से होकर बहती है और उस समय उसकी गति १३ से २६ फ़ुट प्रति सेकंड तक होती है। यह गति एक घाटी वाली नदी के लिए बहुत तेज़ कही जा सकती है। वोल्गा की अपेक्षा यह गति ढाई गुनी अधिक है।

नुकुस से गुज़र चुकने के पश्चात् आमू-दरिया की गति उसके निचले क्षेत्रों के आस-पास समाप्त हो जाती है और इसका कारण यह है कि उसके डेल्टा में दलदलें हैं जिनसे कृषि के विकास में बड़ी बाधा पड़ती है।

नदी के घुमक्कड़ होने की मुख्यत: दो वजहें हैं – उसकी तेज़ गति और उसके किनारों की मिट्टी में अवरोध-शक्ति की कमी। नदी से लगी हुई भूमि जल के दबाव को सहन नहीं कर पाती। फलत: रातों-रात नदी अपना रास्ता सैकड़ों गज़ तक बदल देती है अथवा मीलों एक नये मार्ग में बहने लगती है, और पुराने मार्ग पर गीली बालू के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह जाता।

जल-मार्ग पर नदी भूमि को बराबर काटती रहती है और उसकी धारा अपने साथ मिट्टी तथा बालू को बहा ले जाती है। तुर्कमनिया के रास्ते में आमू-दरिया में देश की अन्य किसी भी नदी की अपेक्षा मिट्टी के कठोर कण अधिक हैं।

यदि आप चार्दज़्हू से नुकुस की दिशा में नदी प्रवाहानुकूल यात्रा करें तो आपको उसके टूटे हुए किनारे और गिरती हुई मिट्टी दिखाई देगी, यहां तक कि कहीं कहीं तो बालू नाले के रूप में नदी में बहती हुई भी मिलेगी। ऐसी घटनाएं भी हुई हैं जिनमें ज़मीन चिटकी है और मकानों और बाग़ों सहित नदी

के पानी में समा गयी है। वृक्षों की जड़ें तक मिट्टी को मज़बूती से पकड़े रहने में समर्थ नहीं हैं।

चार्दज्हू और नुकुस के बीच विध्वंस के ऐसे चिह्न मिलते हैं जो टूटे हुए वृक्षों अथवा नदी द्वारा गिराये गये मकानों से भी अधिक आश्चर्यजनक हैं।

दाहिने किनारे पर उस स्थान से लगभग २५ मील नीचे, जहां आमू-दरिया तुर्कमनिया को छोड़कर आगे बढ़ती है, तुर्तकुल नामक नगर है जो अभी हाल ही तक करा-कल्पक स्वायत्तशासी जनतंत्र की राजधानी था।

यह काफ़ी बड़ा नगर था, जिसने उस नव-जीवन का विकास करने में काफ़ी योग दिया था, जो करा-कल्पकिया की स्तेपी में बसनेवाले अर्द्ध-विस्मृत लोगों को क्रांति के फलस्वरूप देखने को मिला था।

आज यह नगर प्रायः लुप्त हो चुका है। इसका अधिकांश आमू-दरिया द्वारा ही नष्ट किया गया था।

एक समय था जब कि तुर्तकुल, जिसे ज़ारकालीन दिनों में पेत्रो-अलेक्सान्द्रोव्स्क कहते थे, नदी से कई मील दूर हटकर बसा हुआ था। लेकिन सहसा आमू-दरिया ने, जैसा वह प्रायः किया करती है, अपना रास्ता बदल दिया और उसका पानी तुर्तकुल की कई सड़कें बहा ले गया। अतएव नगर कुछ और पूर्व की तरफ़ हट गया और कुछ समय के लिए नदी शान्त हो गयी। तत्पश्चात् आमू-दरिया ने एक दूसरी छलांग मारी और दूसरी सड़कें बहा ले गयी। नगर के समक्ष हमेशा उपस्थित रहनेवाले इस संकट के कारण, द्वितीय विश्व-युद्ध आरम्भ होने से कुछ ही पहले, करा-कल्पकिया की राजधानी और अधिक उत्तर में नुकुस निश्चित की गयी थी। यह है आमू-दरिया के विध्वंस की क्षमता। जो लोग इस नदी का पानी पीते हैं उनका कहना है कि पानी नर्म, स्वास्थ्यकर और स्वादिष्ट है।

यहां की मिट्टी भी अच्छी क़िस्म की है जो ख़ोरेज़्म नख़लिस्तान में जमकर भूमि की रासायनिक संरचना पर अनुकूल प्रभाव डालती है। स्थानीय किसानों का विचार है कि आमू-दरिया के सिंचित खेतों के लिए दूसरी किसी खाद की आवश्यकता नहीं है। तशौज़ क्षेत्र में होनेवाली समृद्ध फ़सलों को देखकर इन विचारों की पुष्टि होती है।

आमू-दरिया में जल का बाहुल्य है। इसकी औसत चौड़ाई प्राय: एक मील है (कहीं कहीं ढाई मील तक भी है)। इस दरिया से पचास लाख एकड़ क्षेत्र की सिंचाई हो सकती है। यह क्षेत्र उस प्रदेश का प्राय: पंचगुना है, जिसपर इस समय तुर्कमनिया भर में खेती होती है, अथवा उस क्षेत्र का पंद्रह गुना अधिक जो प्रजातंत्र में आमू-दरिया द्वारा सम्प्रति सींचा जाता है।

करा-कुम की बड़ी नहर बन जाने से मनुष्य आमू-दरिया का पूरा पूरा उपयोग कर सकेगा।

अध्याय २

१

आमू-दरिया के बिचले भागों द्वारा सिंचित भूमि की चौड़ाई बहुत अधिक नहीं है, मुश्किल से ५-७ मील होगी। औसत चौड़ाई केवल २-३ मील ही है। कहीं कहीं नदी के आस-पास रेगिस्तान भी है।

फिर भी इस अपेक्षाकृत संकरी पट्टी में हर जगह फ़सलें नहीं उग सकतीं। सबसे निचला भाग या तो जल-मग्न रहता है अथवा दलदला। इन क्षेत्रों में सरकंडों की झाड़ियां अथवा ऐसे पेड़-पौधे हैं जिनकी वृद्धि के लिए बहुत अधिक जल की अपेक्षा होती है। यहां आमू-दरिया के तुगाय नामक वन हैं जिनमें पापलर, अलेस्टर, बेंत और वैसे ही अन्य पेड़-पौधे भी उगते हैं।

तुगाय मध्य एशिया के वन हैं। वे इतने घने होते हैं कि कभी कभी उनमें से होकर चलना-फिरना बिल्कुल असम्भव हो जाता है। इसके अलावा वहां अकेले जाना तो संकट को ही निमंत्रण देना है क्योंकि किसी भी समय कोई शेर या जंगली सुअर आदमी पर हमला कर सकता है।

निश्चय ही तुगायों का जुती-बुई भूमि के रूप में विकास नहीं किया जा सका है। अतएव जब प्रजातन्त्र की जुती-बुई भूमि के कुल क्षेत्रफल की गणना की जाती है तो उसमें आमू-दरिया के निचले क्षेत्र का शुमार नहीं किया जाता। तुर्कमनिया में तुगाय वन ५ लाख एकड़ क्षेत्रफल में फैले हुए हैं। किन्तु वे बिल्कुल बेकार हैं ऐसा समझना भूल होगी।

वहां मनालों की बहुतायत है और लिकुओरिस, बुलरश, जंगली ईख और सरकंडे की भरमार। निश्चय ही विटामीन, सेलूलोज़ और काग़ज़, स्टार्च और खांड तथा अन्य उद्योगों के लिए कच्चे माल की सप्लाई करने के निमित्त तुगायों का बड़ा महत्त्व है और इस दृष्टि से उनका भविष्य उज्ज्वल है।

प्रजातन्त्र के उद्योगों में लिकुओरिस का एक ख़ास स्थान है। चार्दज्हू के उद्यमों में से एक लिकुओरिस-कारख़ाना भी है। लिकुओरिस का पौधा नदी के किनारे किनारे कई स्थानों पर उगता है। इसकी जड़ें जमाने के लिए विशेष हलों की सहायता से जुताई की जाती है फिर भी जड़ें पांच वर्ष में उगती हैं। इसकी जड़ों का गूदा मीठा होता है। इसीलिए उसे लैमजूस आदि में इस्तेमाल करने के सम्बन्ध में परीक्षण किये जा रहे हैं।

आमू-दरिया की घाटी में कपास, गेहूं, साग-सब्ज़ी और ख़रबूज़े केवल उन्हीं स्थानों में उगाये जाते हैं जहां भूमि तुगायों की सतह से ५-७ फ़ुट ऊंची हो। इतनी उंचाई की आवश्यकता इसलिए है कि फ़सलें नदी के प्रकोप अर्थात् बाढ़ तथा उनके द्वारा बहाये जाने से बच सकें। जब कभी लोग आमू-दरिया के पास वाले नख़लिस्तान की भूमि की बात करते हैं तो उनका मतलब इन्हीं ऊंचे गाटों से होता है जो नदी और रेगिस्तान के बीच की एक संकरी पट्टी में फैले हुए हैं।

मध्य एशिया की सबसे बड़ी नदी – आमू-दरिया – ने ही इस नख़लिस्तान को जन्म दिया है। अतएव समझा जा सकता है कि उसे सभी अपेक्षित वस्तुएं प्राप्त हैं लेकिन वस्तुतः यह बात नहीं है। नदी-किनारों के खेत नदी की सतह से कुछ गज़ों की ऊंचाई पर हैं, जिसके परिणामस्वरूप नदी का पानी पौधों की जड़ों तक नहीं पहुंच सकता। इसे जड़ों तक पहुंचाने के लिए विशेष संरचनाओं की ज़रूरत है।

ऐसी संरचनाएं आमू-दरिया के दोनों ओर दिखाई पड़ती हैं। बहुत-सी तो शताब्दियों के बाद भी अभी तक जीवित हैं और खेतीबारी की इस प्राचीन पेटी को पानी पहुंचाती हैं। किन्तु यहां बांध तथा सिंचाई की नहरों का निर्माण करना सदैव ही एक कठिन कार्य रहा है क्योंकि नदी यहां बहुत अधिक मात्रा में मिट्टी जमा

करती रही है, जल-मार्ग प्रायः बदलते रहे हैं और पानी की सतह मौसमों के अनुसार उठती-गिरती रही है।

परिणाम यह है कि नदी के बिचले क्षेत्रों के पास पास आमू-दरिया की घाटी का कृषि सम्बन्धी महत्त्व इतना अधिक नहीं है जितने की आशा किसी बहुत बड़े जल-मार्ग के समीप स्थित ज़मीनों से की जा सकती है।

चार्दज्हू और करा-कल्पकिया की सीमा के बीच सिर्फ़ थोड़ी-सी ही ज़मीन पर खेती की जाती है।

इस क्षेत्र में नदी के पूर्व और पश्चिम दोनों ही ओर रेगिस्तान है और अलग अलग स्थानों में बाढ़-प्रदेश की चौड़ाई एक से लेकर तीन मील तक है। लेकिन यह भूमि तुगाय वनों वाले क्षेत्रफल से कम है।

फिर भी मनुष्य ने आमू-दरिया के किनारों पर ही बसना पसंद किया क्योंकि युगों युगों से उसका पानी उसे अपनी ओर आकृष्ट करता रहा है। चार्दज्हू क्षेत्र के बहुत-से बसे हुए स्थान नदी के अति निकट हैं। जहां किसी न किसी कारणवश कपास अथवा अनाज कुछ न पैदा हो सकता था वहां लोगों ने फल के वृक्ष लगाये, ख़रबूज़ों की खेती की और रेशम के कीड़े पाले। पशु-पालन का उद्यम अर्थ-व्यवस्था का मुख्य उद्यम था। चार्दज्हू के सरदों तथा कराकुल के कच्चे चमड़े की, जिसके घुंघराले बाल नदी की भंवर की भांति होते हैं, मध्य एशिया की मंडियों में बड़ी क़द्र थी और वहां उनका अच्छा मूल्य भी मिल जाता था।

पुराने ज़माने में एक और चीज़ की क़द्र थी और वह था पल्वर्त का रेशम। पल्वर्त एक बस्ती है जो ठीक उस जगह बसी हुई है जहां केरकी के उत्तर में फैले हुए जुते-बुए खेत समाप्त हो जाते हैं और नदी खासकर बरखानयुक्त कराबेकौल ज़िले में प्रवेश करती है।

सोवियत शासन-काल में चार्दज्हू का क्षेत्र तुर्कमनिया का प्रमुख रेशम-उत्पादक क्षेत्र बन गया। सम्प्रति चार्दज्हू सिल्क-वाइंडिंग मिल में काम करनेवाले कुशल कर्मचारियों की संख्या वर्ष प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है और उनकी तुलना में उन बुनकरों की ख्याति कम हो गयी है जो किसी ज़माने में पल्वर्त में बड़े मशहूर थे।

यद्यपि मशीनों ने कोकून खोलने का कार्य हल्का कर दिया है फिर भी कुशल कारीगरों की फुर्ती से नाचती हुई उंगलियों का जादू कम नहीं हुआ है। यद्यपि यहां का रेशम दूर दूर तक प्रसिद्ध था फिर भी मध्ययुगीन बुखारा-निवासियों को गदगद कर देनेवाले इस रेशम का स्तर सोवियत ख़रीदारों द्वारा अपेक्षित स्तर से नीचे है। इससे पता चलता है कि कतुओं ने कितनी उन्नति की है क्योंकि रेशम की क़िस्म उसकी कताई पर निर्भर है।

इस क्षेत्र के सामूहिक फ़ार्मों द्वारा मुख्यतया शहतूत के वृक्ष लगाये जाते हैं जो वस्तुतः राज्य की सम्पत्ति हैं। चार्दज्हू क्षेत्र में प्रत्येक कृषि-आर्टेल में रेशम के कीड़े पालने के उनके निजी केन्द्र हैं। अधिकांश आर्टेलों का संचालन स्त्रियां करती हैं।

आमू-दरिया के किनारे किनारे के अधिकांश ज़िलों में सामूहिक फ़ार्मों की अर्थ-व्यवस्था का आधार कपास, रेशम, फलोत्पादन, भेड़-पालन और कुछ हद तक मछली मारना भी है, यद्यपि नदी के इन क्षेत्रों में मछलियां मारने का उद्यम पशु-पालन, रेशम के कीड़े-पालन अथवा खेतीबारी की भांति विकसित नहीं है। उत्तर आमू-दरिया के डेल्टा के जलडमरूमध्य और द्वीपों में मछली मारने का एक विशेष महत्त्व है।

देनाऊ के उत्तर में नदी का मार्ग संकरा तथा धारा तेज़ हो जाती है।

चार्दज्हू क्षेत्र के उत्तर की आख़िरी बड़ी बस्ती का नाम दरगानत है। बस्ती के कुछ मील आगे से उज़बेकिस्तान का ख़ोरेज़्म नख़लिस्तान आरम्भ हो जाता है।

२

आमू-दरिया की घाटी तुर्कमनिस्तान की पूर्वी सीमा कही जा सकती है। हम प्रायः कहते हैं कि तुर्कमनिया कास्पियन सागर और आमू-दरिया के बीच स्थित है जिसे सुनकर ऐसा लगता है मानो नदी के पूर्वी किनारे पर कोई और प्रजातन्त्र हो। यह बात ठीक नहीं, क्योंकि तुर्कमनिया का काफ़ी बड़ा भाग नदी के किनारे किनारे प्राचीन जैहून के पूर्व की ओर फैला हुआ है।

रेलवे के उत्तर में यह क्षेत्र संकरा है किन्तु दक्षिण की ओर चौड़ा होता गया है और जिस स्थान पर केरकी नगर है उसके पास तो यह चौड़ाई ४५ से ५० मील तक हो गयी है।

यदि इस दूरस्थ एवं कम बसे हुए भाग में सिवा बालू, चरागाह और कपास के पौधों के, जिन्हें यात्री ने तुर्कमनिया के दूसरे भागों में ही देख लिया था, और कुछ न होता तो और अधिक घने बसे तथा दिलचस्प स्थानों को जाने के पूर्व यहां रुककर समय नष्ट करने का क्या तुक था?

यद्यपि विगत काल में तुर्कमनिया की सामाजिक अर्थ-व्यवस्था की दृष्टि से इस नदी के उस पार के क्षेत्र का कभी कोई विशेष महत्त्व नहीं रहा है फिर भी प्रजातन्त्र के एक प्रमुख औद्योगिक केन्द्र के नाते पिछले कुछ वर्षों में इसका महत्त्व काफ़ी बढ़ गया है। इस क्षेत्र के दक्षिण में कुगितांग-ताउ के पहाड़ों के बीच का भाग पड़ता है जो खनिज पदार्थों की दृष्टि से बड़ा समृद्ध है।

बहुत काल तक यह मशहूर था कि इस भाग में प्राकृतिक गन्धक के भांडार तथा जस्ते और सीसे की खानें हैं। ये पदार्थ यहां के पहाड़ों के सीधे ढालों पर यत्र-तत्र दिखाई पड़ जाते हैं। लोग अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए उनका यथासंभव सर्वोत्तम प्रयोग किया करते थे। जब कभी देहक़ानों को शिकार के लिए गोलियों की कमी पड़ जाती अथवा उन्हें दुश्मन के किसी हमले का मुक़ाबला करने की जरूरत होती, तो वे वहां पाये जानेवाले सरकंडे बीन लाते, उनमें आग लगा देते और उन्हें चट्टानों पर छोड़ आते। नतीजा यह होता कि सीसा पिघलकर नीचे आ जाता और वे उनसे गोलियां बनाकर दुश्मनों के छक्के छुड़ा देते।

सोवियत शासन-काल में प्रथम पंचवर्षीय योजना-कालों में गौरदाक के गन्धक की खानें खोदी गयीं। युद्ध के वर्षों में भी यहां भूगर्भ परीक्षण एवं अनुसन्धान किये जाते रहे जिसके परिणामस्वरूप और भी अधिक मूल्यवान वस्तुओं का पता चला। कोयले की खानें खोदी गयीं और केरकिची स्टेशन के निकट शुद्ध सिलखड़ी का पता चलाया गया। नतीजा यह हुआ कि वहां सिलखड़ी के एक कारखाने का निर्माण हुआ जहां बोर्ड, स्लैब, बीम तथा अन्य इमारती सामान बनाये जाते हैं।

अध्याय ३

१

जहां तक तुर्कमान अर्थ-व्यवस्था का सम्बन्ध है आमू-दरिया की मुख्य उपयोगिता यह है कि इससे तशौज़ के बड़े नख़लिस्तान की सिंचाई होती है। यह नख़लिस्तान प्रजातन्त्र का एक सर्वप्रमुख कृषि-क्षेत्र है जहां लोगों ने बहुत पुराने ज़माने से ही बसना शुरू कर दिया था। आमू-दरिया तशौज़ नख़लिस्तान के खेतों तक पानी ले जानेवाली अनेकानेक नहरों और अरीकों को भर चुकने के पूर्व ही तुर्कमनिया से निकल जाती है।

जिस स्थान पर तुर्कमनिया, उज़बेकिस्तान और करा-कल्पकिया की सीमाएं मिलती हैं वहां नदी का चौड़ा जल-मार्ग पर्वतीय तुया - मुयुन (ऊंट की गरदन) की घाटी के कारण संकुचित हो जाता है। यह नदी, जिसमें घाटी तक पहुंचने के पूर्व तेज़ी थी, अब पथरीले किनारों के बीच पागलों की तरह चक्कर लगाती, कभी पश्चिम और कभी दक्षिण की ओर मुड़ती-मुड़ाती, सहसा दाहिनी ओर घूमती है और फिर ख़ोरेज़्म नख़लिस्तान (जिसका पश्चिमी आधा भाग तुर्कमनिया का है तथा तशौज़ नख़लिस्तान कहलाता है) के फलोद्यानों और खेतों को सींचती हुई उत्तर की ओर भागती है।

इस क्षेत्र का मुख्य नगर तशौज़ नख़लिस्तान की एक प्रमुख नहर शवत पर स्थित है। शवत नहर ६० मील से अधिक लम्बी है और हंका के निकट आमू-दरिया के पास से आरम्भ होती है। हंका उज़बेकिस्तान के ख़ोरेज़्म क्षेत्र का एक ज़िला-केन्द्र है। शवत नहर ख़ोरेज़्म के क्षेत्रीय केन्द्र उरगेन्च को पानी देती है तथा तुर्कमनिया में प्रवेश करने और वहां के चार ज़िलों (अन्द्रेयेव, तशौज़, इल्याली और लेनिन) को पानी पहुंचाने के पूर्व उज़बेकिस्तान के शवत ज़िले के खेतों की सिंचाई करती है। इससे पता चलता है कि इस नहर का आर्थिक महत्त्व तेजेन और मुर्ग़ाब नदियों से कम नहीं है। शवत तशौज़ को दो भागों में विभक्त करता है। अभी हाल ही तक यह एक मध्ययुगीन छोटा-सा नगर था जहां टेढ़ी-मेढ़ी सड़कें और छोटी छोटी गलियां थीं जिनमें से किसीकी भी चौड़ाई सात फ़ीट से अधिक न थी। गर्मी में वे गर्म

और धूल-धूसरित हो जातीं जब कि जाड़े में लोगों को कीचड़ में से हो होकर चलना पड़ता। यहां के मकान नीचे और चौरस छतों के और एक दूसरे से मिले मिले होते थे। मकानों में खिड़कियों का नामोनिशान भी न होता था।

सोवियत शासन-काल में पुल से लेकर रेलवे-स्टेशन तक जानेवाली मुख्य सड़क ईंटों से पक्की की गयी। ख़ीवा के व्यापारियों तथा महाजनों के पुराने स्टालों के स्थान पर दूकानें बन गयीं। उत्पादकों की सहकारी संस्थाओं की स्थापना हुई। और रेडियो तथा बिजली की रोशनी प्रत्येक मकान की शोभा बढ़ाने लगी।

किन्तु प्राचीन तशौज़ अपने शताब्दियों पुराने अस्तित्व के अन्तिम दिन गिन रहा है। नहर की दूसरी ओर एक नया नगर जन्म ले चुका है। इसका नाम है नया तशौज़। यह नगर एक बड़ा क्षेत्रीय केन्द्र है। यहां फलोद्यानों की हरियाली के बीच आधुनिक ढंग की सड़कें और इमारतें हैं।

२

नया तशौज़ प्रथम पंचवर्षीय योजना-काल (१९२८-१९३२) में पनपा है। शवत के बायें किनारे पर खानशाही के दिनों का एक क़िला और वे जागीरें, फलोद्यान और खेत थे जो कभी स्थानीय शासकों की मिल्कियत थे। यहां कपास साफ़ करने की एक छोटी सी मिल भी थी।

अब शवत के उसी किनारे पर चौड़ी चौड़ी सीधी सड़कें हैं। सड़कों के दोनों ओर वृक्षों की क़तारें तथा आधुनिक ढंग के आरामदेह भवन हैं। यहां की एक मुख्य सड़क पर एक बड़ी आकर्षक इमारत है जिसमें एक अध्यापक-संस्था है जो इस क्षेत्र में उच्च शिक्षा की प्रथम संस्था है। भूतपूर्व क़िले के स्थान पर एक मनोरंजन-पार्क की स्थापना की गयी है। पार्क में मध्य युगों की विरासत का एक प्रतीक भी है—एक अर्द्ध-विनष्ट घंटाघर जिससे पार्क के सौन्दर्य में वृद्धि होती है। इस पार्क में बच्चों की कूद-फांद, खेल-कूद की प्रतिद्वंद्विताएं होती हैं और सन्ध्या के समय गाने-बजाने की धुनें कानों में पड़ा करती हैं। उपर्युक्त छोटी एवं प्राचीन मिल को एक आधुनिक और सुसज्जित उद्यम का रूप दिया गया जिसे क्षेत्र के सभी सातों

ज़िलों के सामूहिक फ़ार्मों के कपास के खेतों से कच्चा माल मिलता है। बिनौलों का तेल निकालनेवाले नये कारख़ाने में औद्योगिक तेल एवं साफ़ तेल तैयार किया जाता है।

यह कारख़ाना नगर भर की इमारतों में सबसे ऊंचा है और इसे तशौज़ आनेवाले सभी मार्गों से देखा जा सकता है।

प्रजातन्त्र का पहला पटसन-कारख़ाना युद्धोत्तर पंचवर्षीय योजना-काल में तैयार हुआ था। अब यहां एक दूसरा कारख़ाना बन रहा है। तशौज़ के सामूहिक फ़ार्म एक बड़े पैमाने पर केनाफ़ और जूट का उत्पादन कर रहे हैं। सम्प्रति तशौज़ उन्नति कर रहा है और इसके अधिकाधिक क्षेत्र में मकान और नयी नयी सड़कें बनायी जा रही हैं। अभी हाल तक वीरान पड़े हुए सीमावर्ती क्षेत्रों में भी मकान बनते और फलोद्यान लगते चले जा रहे हैं।

पहले-पहल भवन-निर्माण का कार्य बायीं ओर शवत के दक्षिणी किनारे पर ही सीमित था। किन्तु जैसे ही नगर से होकर चार्दज्हू – कुनग्राद रेलवे आने-जाने लगी वैसे ही निर्माताओं ने दाहिने किनारे की ओर भी ध्यान देना आरम्भ किया। शवत के लगभग एक मील उत्तर में एक स्टेशन बनाया गया जहां रेलवे-कर्मचारियों की एक बस्ती बसायी गयी। इस प्रकार प्राचीन तशौज़ तीन ओर से घिर गया। अब उसका सीमा-प्रदेश और भी संकुचित होता जा रहा है। अब आप हवाई जहाज़ पर से नये तशौज़ की सुन्दर सुन्दर सीधी सड़कों और पुराने नगर की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों को एक साथ देखकर उनका परस्पर मुक़ाबला कर सकते हैं। जिस समय आपका जहाज़ नये तशौज़ के हवाई अड्डे पर उतरने के लिए चक्कर काटना आरम्भ करेगा उस समय आपको लगेगा कि प्राचीन तशौज़ नगर की सम्पूर्ण दृश्यावली का लगभग एक तिहाई भाग घेरे हुए है।

पुश्किन मार्ग इस नगर की मुख्य सड़क है। इसी सड़क पर क्षेत्र भर की सर्वप्रमुख प्रशासनीय एवं सांस्कृतिक संस्थाएं हैं। यह सड़क उस ज़िले से लेकर, जो पिछले चार वर्षों में दक्षिणी सीमाओं पर बस गया है, शवत नदी पर बने हुए लकड़ी के कुबड़हे पुल तक जाती है। पुल के उस पार यात्री को सहसा कुछ मध्ययुगीन वातावरण भी दिखाई देगा जो कई शताब्दियों तक ख़ोरेज़्म के नख़लिस्तान, उसके

खेतों और मटियाले नगरों में उस समय तक व्याप्त रहा था जब तक कि अक्तूबर क्रान्ति ने खीवा के मेहनतकशों में जागरण पैदा करके उन्हें रूसी भाइयों की सहायता से एक नये, प्रतिष्ठित एवं सुखद जीवन के निर्माण के अवसर न दे दिये थे।

३

बड़ी नहरों में से एक का नाम है शवत। वस्तुतः बड़ी नहरों का प्रयोजन खेतों में पानी ले जानेवाली ढेरों छिछली अरीकों से जुड़ी हुई छोटी छोटी नहरों या याबों को पानी देना है।

ख़ोरेज़्म तथा तशौज़ के नख़लिस्तानों की सिंचाई-पद्धति का नक़्शा वस्तुतः उस पेड़ के समान प्रतीत होगा जिसका तना – आमू-दरिया, शाखाएं – मुख्य नहरें और शाखाओं से निकलनेवाली टहनियां – वितरक नहरों की प्रतीक होंगी। और खेतों तथा उद्यानों के बीच बीच में बनी हुई अरीकें पत्तियों पर बनी हुई उन शिरा-तुल्य रेखाओं की द्योतक हैं जो प्राण-पोषक रस-तत्व को पत्तों तक पहुंचाती हैं।

जिस समय क्षेत्र के सामूहिक फ़ार्मों में नयी पद्धति से सिंचाई होने लगेगी उस समय अरीकों का पूर्णतः परित्याग कर दिया जायेगा। अरीकों और उनके किनारों के अति उर्वर क्षेत्र पर जुताई की जायेगी, जिसके परिणामस्वरूप कपास, जुगरा (जौ की एक क़िस्म) और लुसर्न के क्षेत्रफल में वृद्धि होगी।

मध्य एशिया भर में ख़ोरेज़्म में नहरों तथा अरीकों की सदैव ही सबसे लम्बी प्रणाली कार्य करती रही है। कुल मिलाकर प्रधान नहरों की लम्बाई ३१० मील, वितरक नहरों की १८६० मील और अरीकों की भी प्रायः इतने ही मील है।

नख़लिस्तान में सिंचाई की इतनी विकसित प्रणाली के होते हुए भी देहक़ानों को क्रान्तिपूर्व काल में पर्याप्त जल न उपलब्ध हो पाता था।

जिस समय सोवियत शक्ति की स्थापना हुई थी उस समय खीवा की कृषि-व्यवस्था काफ़ी ख़राब थी। ख़ोरेज़्म के श्रमिक तुर्कमान बन्जारों अथवा बुखारा के देहक़ानों दोनों से अधिक ग़रीब थे।

जिस समय ग्रामू-दरिया का जल वितरित करने की पुरानी प्रणाली को कार्यान्वित किया गया उस समय नख़लिस्तान में बसनेवाले लोगों में एका न था। वंश के मुखिया के ग्रादेश ही ख़ीवा के किसानों की ग्रर्थ-व्यवस्था ग्रौर उनके जीवन-क्रम के संचालक थे। जिस समय वहां किसी वंश की स्थापना होती थी उस समय वह ग्रपने खेतों के लिए एक याब बना लेता था ग्रौर किसी पड़ोसी के खेतों को उसमें से एक बूंद भी पानी न देता था। जहां कई कई वंश एक साथ बसते थे वहां वे ग्रपने याब ग्रौर प्रधान नहर पर बांध बना लिया करते थे। ख़ीवा में दस प्रधान नहरों के किनारे किनारे ५०० से ऊपर बांध ग्रौर लगभग इतने ही याब थे। वंश-याबों के किनारे किनारे खेतों की संकरी भू-पट्टियां थीं। इन पट्टियों के बीच की भूमि पर वस्तुत: किसी का भी ग्रधिकार न था ग्रौर इसीलिए वह बिना जोती-बोई रह जाया करती थी। नहरों की लम्बाई की तुलना में सिंचित इलाक़ों का क्षेत्रफल बहुत कम था। उदाहरणार्थ, शवत नहर की प्रति मील लम्बाई से ३०७ एकड़ भूमि की सिंचाई होती थी।

प्रत्येक प्रधान नहर की कई कई संरचनाएं होती थीं, जिनमें पानी संगृहीत किया जाता था। संरचनाएं 'साके' कहलाती थीं। साकों का लाभ यह होता था कि नहरों में जल भरा रहता ग्रौर जब कभी नदी का तल बहुत ऊंचा हो जाता तो पानी को ग्रन्यत्र ले जाया जाता ग्रौर बाढ़ की ग्राशंका न रहती।

विभिन्न वंशों के भूखंडों के बीच की स्वामित्वहीन भूमि पर याबों का फ़ालतू पानी भर जाता था ग्रौर वह दलदली हो जाती थी। मध्य एशिया में दलदली भूमि लवण-युक्त है ग्रौर इसका कारण यह है कि वहां गर्मियों के महीनों में पानी भाप बनकर उड़ा करता है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उर्वर भूखंड लवण-युक्त दलदलों के रूप में परिवर्तित हो गये।

चिगीर नाम की एक बड़ी ग्रादिकालीन संरचना खेतों में पानी देने के लिए इस्तेमाल में लायी जाती थी। चिगीर वस्तुत: एक सीधा खड़ा हुग्रा लकड़ी का पहिया होता है जिसके घेरे में घड़े या बाल्टियों जैसे जल-पात्र बंधे होते हैं। इस व्यवस्था से नहर का पानी ग्ररीकों में उड़ेला जा सकता था। पहिये को ऊंट, बैल, घोड़े ग्रथवा गधे द्वारा घुमाया जाता था।

चिगीरों से होनेवाली भिनभिनाहट जैसी ग्रावाज़ रात दिन ख़ोरेज़्म में सुनाई पड़ा करती। कभी कभी बीच बीच में किसी ऊंट या गधे का रेंकना भी कानों में पड़ जाता और ऐसा लगता कि यह आवाज़ उस भूमि से निकल रही है जो वंशों और जन-जातियों के पारस्परिक संघर्षों तथा ख़ानों, स्थानीय शासकों और अन्य सभी शक्तिशाली व्यक्तियों और दौलतमन्दों की स्वेच्छाचारिता से जर्जर हो रही थी। यही वे लोग थे जिन्होंने जनता से उनके श्रम के फलों को छीनना अपना अधिकार समझ रखा था।

अच्छा हो या बुरा चिगीरों से यह लाभ अवश्य होता था कि खेतों को पानी मिल जाता था। इसमें संदेह नहीं कि इस पद्धति का उपयोग करने में बहुत अधिक श्रम की आवश्यकता पड़ती थी, लेकिन नहरों और अरीकों से मिट्टी निकालने के कामों में, जो ग़रीबों के लिए अभिशाप था, प्रतिवर्ष लगनेवाले श्रम को देखते हुए वह श्रम नगण्य ही था।

कृषि के क्षेत्र में सोवियत शक्ति को मध्य एशिया में एक महान सफलता यह मिली कि अधिकांश क्षेत्रों में, जिनमें आमू-दरिया के निचले क्षेत्र भी शामिल थे, मानव-श्रम द्वारा नहरों या अरीकों से मिट्टी निकालने की प्रणाली समाप्त करके उसके स्थान पर मशीनों की व्यवस्था की गयी। कहीं कहीं कुछ सामूहिक कृषक अब भी जाड़ों में वितरक नहरों में से मिट्टी निकालने के कामों में लगे हुए दिखाई पड़ते हैं लेकिन मुख्य नहरों से मिट्टी निकालने का काम केवल मशीनों द्वारा ही होता है।

४

तशौज़ नख़लिस्तान आमू-दरिया के निचले क्षेत्रों के जुते-बुए खेतों का ही एक भाग है। मुख्य नहरों के उस भाग पर, जिससे तशौज़ क्षेत्र के २७,००० सामूहिक कृषक-परिवारों को पानी मिलता है, तुर्कमनिया का आंशिक स्वामित्व है। इन नहरों के ऊपरी क्षेत्र उज़बेकिस्तान में हैं।

पुराने ज़माने में उज़बेकों के खेत मुख्य नहरों के ऊपरी क्षेत्रों में थे तथा तुर्कमान वंशों की भूमि उनके निचले क्षेत्रों में। घृणा और विरोध की आग भड़काने में ख़ानों और उनके कर्मचारियों ने इस स्थिति का लाभ उठाया। खीवा के शासक तुर्कमान जनता को अर्द्धमृत अवस्था में बनाये रखने के लिए आवश्यक मात्रा से अधिक पानी

देने के बजाय उसे रेगिस्तान में फेंक देना कहीं अच्छा समझते थे। खीवा के अमीरों के सिद्धान्त थे– "तुर्कमान को न तो बहुत अधिक पानी दो और न बहुत कम, क्योंकि जब उसका पेट ख़ूब भरा होगा तो वह तुम्हारा हुक्म न मानेगा और अगर वह भूखा होगा तो बग़ावत कर देगा। यदि उसका पेट ऊपर तक भरा न हुआ और न वह भूखा ही रहा तो वह सुबह से लेकर रात तक चिगीर पर काम करेगा।"

इस नीति ने पानी के प्रश्न पर तुर्कमान और उज़बेक जन-जातियों के बीच एक ऐसा संघर्ष स्थापित कर दिया जो हमेशा चलता रहा।

तशौज़ क्षेत्र के दक्षिण में पानी पहुंचानेवाली एक मुख्य नहर का नाम 'ग़ज़ावत' है, जिसका अर्थ होता है 'धर्म-युद्ध'। यह नाम इस कारण पड़ा था कि उसके तटों पर तुर्कमान और उज़बेक वंशों के बीच न जाने कितनी लड़ाइयां लड़ी गयी थीं।

सोवियत शक्ति के उदय के साथ ही विरोध के वे कारण भी समाप्त हो गये जो नख़लिस्तान की श्रमिक जनता को जर्जर बनाये हुए थे। अब तुर्कमान और उज़बेक सामूहिक कृषकों के बीच सहयोग और शान्ति बनाये रखने की सामाजिक भावना का उदय हुआ।

ख़ोरेज़्म नख़लिस्तान में प्राचीन जीवन-यापन के जिन तरीक़ों से काश्तकार और चरवाहे को सभी ओर से आक्रमणों का भय बना रहता था वे अब कुछ पुराने चिह्नों के रूप में ही इधर-उधर दिखाई पड़ते हैं। तशौज़ क्षेत्र की सड़कों के आस पास पुराने फ़ार्मों के कुछ अवशेष पाये जाते हैं जो तेजेन और मुर्ग़ाब की घाटियों अथवा कोपेत-दाग़ की तलहटियों के गांवों में तुर्कमान देहक़ानों की बस्तियों से थोड़ा-बहुत मिलते-जुलते हैं।

पहले तुर्कमान बंजारे उन औलों में रहते थे जिनका आकार फ़ेल्ट यूर्तों की संख्या पर निर्भर होता था। सोवियत शासन-काल में तुर्कमान औल ने एक सुनियोजित बस्ती का रूप ले लिया है जहां ईंटों के अनेक छोटे छोटे मकान, फलोद्यान, सीधी सीधी और वृक्षदार सड़कें, क्लब, वाचनालय और स्कूल हैं। प्राचीन काल में आमू-दरिया के निचले क्षेत्रों के किनारे रहनेवाले देहक़ान यत्र-तत्र छितरे हुए फ़ार्मों में मज़बूत दीवालों वाले मकान बनाया करते थे। इन फ़ार्मों का नाम 'क़ला' या 'क़िला' था।

क़ला प्रायः ग्ररीक के निकटस्थ उस खेत में बनाया जाता था जिसकी सिंचाई ग्ररीक द्वारा होती थी। क़ला में लकड़ी के उन भारी भारी फाटकों से होकर जाना पड़ता था जिनमें हमेशा ताला लगा रहता था। ऐसे मकानों के ग्राकार-प्रकार से उसके स्वामी की सम्पदा का भी ग्रनुमान लग जाता था। मकान के सामने एक छोटा-सा तालाब ग्रौर एक या दो पेड़ होते थे। वहीं दीवालों से लगे हुए कुछ ग्रोसारे भी बने होते थे। ग्रोसारों की छाया में ऊंट, घोड़े या गधे रहते थे जिनके निमित्त ग्रोसारों में जाड़ों भर के लिए पर्याप्त चारा इकट्ठा रहता था। ग़रीब देहक़ान ग्रहाते में फ़ेल्ट का ग्रपना एक किबित्का खड़ा कर लेता था। वहां उसे यह विश्वास रहता था कि ऊंची ऊंची दीवालें दुश्मनों के ग्राकस्मिक हमलों से उसकी रक्षा कर सकेंगी।

तुर्कमनिया के ग्रन्य सभी क्षेत्रों की भांति तशौज़ क्षेत्र में भी सामूहिक कृषक ग्रब सामूहिक फ़ार्म की उन नयी नयी बस्तियों में रहते हैं जहां उन्होंने ईंटों के मज़बूत मकान बना लिये हैं। फिर भी तशौज़ के पुराने नगर के कुछ मकानों की भांति कतिपय क़ला भी दिखाई पड़ जाते हैं। सभी जगह पुराना ग्रौर नयापन प्रायः साथ ही साथ नज़र ग्राता है। संरक्षित क़ला या तो सामूहिक फ़ार्मों के गोदामों ग्रथवा दफ़्तरों के रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं या पशुग्रों को बन्द करने के बाड़ों के रूप में।

फिर भी क़ला की दीवालों के जो ग्रवशेष फलोद्यानों के बीच यत्र-तत्र तथा सड़कों से लगे हुए दिखाई पड़ते हैं ग्रौर पुराने तशौज़ के जो मध्ययुगीन गृह नज़र ग्राते हैं एकमात्र वे ही इस प्राचीन भूमि के लम्बे ग्रौर संघर्षयुक्त इतिहास की याद दिलानेवाले चिन्ह नहीं हैं।

प्राचीन खोरेज़्म की राजधानी — पुराने उरगेन्च — के ग्रवशेषों में भी पुराने ज़माने के बहुत-से स्मारक मिलते हैं। ये ग्रवशेष कुन्या-उरगेन्च नामक एक ज़िला-केन्द्र के निकट हैं। कुन्या-उरगेन्च का ग्रर्थ है पुराना या बहुत पुराना उरगेन्च। कुन्या-उरगेन्च की चर्चा करते हुए हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उज़बेकिस्तान के खोरेज़्म क्षेत्र की राजधानी उरगेन्च है ग्रौर यह नगर कुन्या-उरगेन्च के ९३ मील दक्षिण-पूर्व में बसा हुग्रा है। ग्रतएव उरगेन्च ग्रौर कुन्या-उरगेन्च नाम के दो ग्रलग ग्रलग नगर हैं।

५

कुन्या-उरगेंच के वास्तु-कला स्मारक प्राचीन काल के उन थोड़े-से उत्कृष्ट स्मारकों में से हैं जो मध्य एशिया के विभिन्न स्थानों में काल के थपेड़ों से अभी भी बचे हुए हैं। यह स्मारक अति प्राचीन काल के सांस्कृतिक अध्ययन के लिए रोचक सामग्री प्रस्तुत करते हैं।

कुन्या-उरगेंच के स्मारकों में सबसे प्रसिद्ध शेख़-शरीफ़ का मक़बरा जो शायद १२ वीं शताब्दी में बना था, तुराबेक-ख़ानुम का मक़बरा, जिसका निर्माण-काल १४ वीं शताब्दी है, तथा कुन्या-उरगेंच की वह प्रसिद्ध मीनार है जो वाह्यतः १४ वीं शताब्दी की प्रतीत होती है।

चौदहवीं शताब्दी मध्य एशिया के लोगों के लिए शान्तिकालीन शताब्दी कही जा सकती थी। चंगेज़-ख़ां के ख़ूनी हमले के बाद जब ख़ोरेज़्म की जनता को कुछ शान्ति के साथ जीवन-यापन के अवसर मिले तो वह फिर कपास, चावल और सर्दे उगाने की ओर जुट पड़ी। और उसके शासकों ने मंगोलों द्वारा नष्ट-भ्रष्ट इमारतों से भी अधिक शानदार और ख़ूबसूरत इमारतें बनाने की बात सोची। उस समय कोई न जानता था कि एक ही शताब्दी के भीतर चंगेज़-ख़ां से भी अधिक ख़ूंख़ोर ऐसे विजेता जन्म लेंगे जो देश में विनाश की ज्वाला धधकाएंगे और जिनका नेता होगा तैमूरलंग।

कुन्या-उरगेंच के पुराने भवनों से ख़ोरेज़्म की जनता की वास्तु-कला सम्बन्धी मौलिकता और परिपक्वता तथा भवन-निर्माण सम्बन्धी उच्च कोटि के शिल्प का पता चलता है।

तुराबेक-ख़ानुम के मक़बरे के बाहरी भाग में और मक़बरे के भीतर भी उच्च कोटि की रंगीन पच्चीकारी के अवशेष मिलते हैं।

मध्य एशिया की बहुत-सी पुरानी इमारतों में पत्थरों को चमचमाने की एक उत्कृष्ट कला का इस्तेमाल किया गया था। यह कला बहुत समय तक प्राचीन काल की एक ऐसी पहेली बनी रही जिसका दीर्घ काल तक कोई हल न निकल सका। भूकम्पों, युद्धों और काल के कराल हाथों ने समरक़न्द,

बुख़ारा और उरगेंच के बहुत-से स्मारकों को क्षति पहुंचायी और कुछ को तो पूरा पूरा नष्ट कर दिया। द्वारों पर लगे हुए शानदार मेहराब भड़भड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़े, मीनारें या तो एक ओर झुकी रह गयीं या फिर ज़मीन से लग गयीं और दीवालें चरमराकर भूमिसात् हो गयीं। कुछ संरचनाएं तो मिट्टी के टीलों जैसी लगने लगीं, जिन्हें देखकर यह पता ही न चल पाता था कि कभी मनुष्य के हाथों ने उनका निर्माण किया होगा। किन्तु जहां कहीं चमचमाहट बच गयी है वहां उसके मूल रंग और रूप अभी तक बचे हुए हैं।

सोवियत विशेषज्ञों ने पत्थरों को चमकाने के उपर्युक्त रहस्य का पता लगाया। उन्होंने समरक़ंद में तैमूरलंग (गुर-अमीर) के मक़बरे – जिसके चमकदार नीले रंग ने प्राचीन काल के यात्रियों को चकित कर रखा था – के गुम्बद के प्राचीन रंग को पुनः जीवन दिया। ऐसे ही कार्य अब दूसरे स्मारकों के सम्बन्ध में भी किये जा रहे हैं।

शेख़-शरीफ़ का मक़बरा तुराबेक-ख़ानुम के मक़बरे से लगभग २०० वर्ष पुराना है। इसके गुम्बद का आकार-प्रकार मध्य एशिया की बहुत-सी इमारतों के गुम्बदों से भिन्न है इसीलिए रुचिकर भी है। शेख़-शरीफ़ के गुम्बद की शक्ल एक लम्बे कोण की तरह है।

मध्य एशिया के स्मारकों की वास्तु-कला के लिए और भी अधिक असाधारण बात कुन्या-उरगेंच की मीनार का आकार है, जो कोणाकार होने के साथ ही साथ २०३ फ़ीट ऊंची भी है। इस मीनार में चक्करदार ज़ीने हैं जिनमें १४३ सीढ़ियां हैं। प्रत्येक सीढ़ी की ऊंचाई लगभग डेढ़ फ़ीट है।

आधुनिक इमारतों को देखते हुए उपर्युक्त उंचाई निश्चय ही नगण्य है। परन्तु १४ वीं शताब्दी में बन्जारे लोग उक्त मीनार को देखकर न केवल प्रसन्न ही वरन् आश्चर्यचकित भी हो जाते थे, क्योंकि उनके लिए तो उनके वंश-मुखिया या सरदार का 'सफ़ेद' किबित्का ही सबसे ऊंची इमारत था।

उरगेंच के १२ वीं से १४ वीं शताब्दी तक के शिल्पियों ने प्रायः सभी ऊंची ऊंची इमारतों को एक कोण की शक्ल दी थी। कला की यह प्रवृत्ति उन्हें शायद नगर के पूर्वनिर्माताओं से विरासत के रूप से मिली थी। कुन्या-उरगेंच की सबसे पुरानी इमारत

फ़ह्राद-दीन-रज़ी के मक़बरे का गुम्बद द्वादश पार्श्वीय कोणिक पिरेमिड की तरह है, अर्थात् इसकी शक्ल कुछ पिरेमिड जैसी और कुछ कोण जैसी है।

नजमेन-दीन-कुबरा का मक़बरा चौदहवीं शताब्दी में बनाया गया था। इस मक़बरे के लकड़ी वाले मुख्य द्वार पर और उसके ऊपर के चौखटे की नक़्क़ाशी में उच्च कोटि की कला मुखरित हुई है।

मध्य एशिया के अन्य प्राचीन राज्यों की भांति ख़ोरेज़्म में भी लकड़ी पर की जानेवाली नक़्क़ाशी का बड़ा महत्त्व समझा जाता था। कुन्या-उरगेन्च के मक़बरे का दरवाज़ा तथा उसकी ऊपरी चौखट प्राचीन कला के सर्वोत्तम नमूनों में से हैं।

इस मक़बरे की क़ब्र और उसके ऊपर लगे हुए वर्गाकार पाषाण-स्तम्भ पर सुन्दरता के साथ खुदे हुए नमूने भी प्राचीन कला की संरक्षणीय वस्तुएं हैं।

यह केवल एक आकस्मिक घटना ही थी कि प्राचीन उरगेंच के स्मारक उन विनाशों की ज्वालाओं में न पड़ सके जो चंगेज़-ख़ां और तैमूरलंग ने धधकायी थीं। सन् १३८८ में ख़ोरेज़्म विजय कर लेने के पश्चात् तैमूरलंग ने अपने सिपाहियों को आदेश दिया था कि वे राजधानी को नष्ट-भ्रष्ट कर डालें, ज़मीन की जुताई करें और वहां जौ बो दें। प्रत्यक्षत: अपने क्रोध को इस प्रकार शान्त करने के लिए उसके पास कोई टेकनिकल साधन न थे। उसने उरगेंच (गुरगंज) के लोगों को मौत के घाट उतारा और उनके मकानों को खंडहर बना दिया। लेकिन इस प्राचीन नगर की याद को मिटा डालना उसके बूते की बात न थी।

प्राचीन उरगेंच में एक भी व्यक्ति जीवित न बचा और एक भी मकान खड़ा न रहा। लेकिन ख़ोरेज़्म को नष्ट कर डालनेवाले की मृत्यु के बाद भी इस प्राचीन नगर के ध्वंसावशेषों के दर्शक दूर से ही आकाश में लम्बी चली जाती हुई मीनार को और उन मक़बरों के गुंबदों को देख लेते थे जिनकी चमकदार सतह ऐसी दमकती थी मानो गगन के सितारे ही भिन्न भिन्न रूप धारण करके उसमें चिपक गये हैं।

यदि चंगेज़-ख़ां और तैमूरलंग की सेनाओं ने इतना अधिक विध्वंस न किया होता, तो प्राचीन उरगेंच को भी, मध्य एशिया के अन्य नगरों की भांति, बर्बर विजेताओं के प्रस्थान के पश्चात् अपना पूर्वरूप प्राप्त हो गया होता। वस्तुत: इस दिशा में पहली कार्यवाहियां उन उज़बेक और तुर्कमान जन-जातियों ने की थीं जो कभी उस नगर के आस-पास बस गयी थीं।

परन्तु उन जन-जातियां ने ग्रामू-दरिया की ओर कोई ध्यान न देते हुए भी अपना कार्य करने का निश्चय किया था। पहले इस नदी का एक भाग अरल सागर में और दूसरा कुन्या-उरगेंच से होता हुआ दक्षिण-पश्चिम में बड़े सरीकामिश जलाशय में गिरता था, जहां से कभी कभी फ़ालतू पानी पश्चिमी उज़बोई से होता हुआ क्रास्नोवोद्स्क की खाड़ी में भी चला जाता था। कुछ अज्ञात कारणों से नदी ने अपना मार्ग बदला जिसके परिणामस्वरूप उसका सारा पानी अरल सागर में गिरने लगा। अब कुन्या-उरगेंच के पश्चिम और दक्षिण की भूमि की सिंचाई का सहारा जाता रहा, नगर के चारों ओर की एक चौड़ी पट्टी में उगनेवाली फ़सलें सूखने लगीं तथा लोगों को अपने उन खेतों और फलोद्यानों का परित्याग करने के लिए बाध्य होना पड़ा जो कभी फल-फूलों से लहलहाया करते थे।

अध्याय ४

तशौज़ क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति तुर्कमनिया के अन्य नख़लिस्तानों– मुर्ग़ाब, तेजेन और चार्दज्हू–से काफ़ी भिन्न है। तशौज़ और प्रजातंत्र के दक्षिणी क्षेत्रों के बीच की दूरी लगभग २५० मील है। यद्यपि यह दूरी बहुत अधिक नहीं है फिर भी तशौज़ की जलवायु काफ़ी कठोर कही जा सकती है। यहां बर्फ़ के तूफ़ान काफ़ी भयावह होते हैं और काफ़ी समय तक रहते हैं। यहां सर्दी भी बहुत अधिक पड़ती है। वसंत की ऋतु प्रायः दो तीन हफ़्ते देर से आती है। फलतः ग्रीष्म की ऋतु भी उतनी ही छोटी हो जाती है। इसका कारण तशौज़ की उत्तरी स्थिति तो है ही, साथ ही यह भी है कि ग्रामू-दरिया के डेल्टा में साइबेरिया से बहनेवाली उत्तरी-पूर्वी हवाओं से बचने के लिए किसी प्रकार के भी अवरोध नहीं हैं। दूसरी ओर, इन हवाओं से मारी और चार्दज्हू की रक्षा के लिए उत्तरी उज़बेकिस्तान के पहाड़ और पर्वत-श्रेणियां– औमिंज़ताउ, कुलजुक्ताउ और तमदिताउ तथा त्यानशान के पश्चिमी उभरे हुए भाग–हैं।

तशौज़ का औसत वार्षिक तापमान ५२ अंश फ़ारेनहाइट और चार्दज्हू तथा मारी का ६१ अंश फ़ारेनहाइट है।

जाड़े के तापमान का अंतर विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मारी में न्यूनतम अन्तर –४ अंश और तशौज़ में –२२ अंश फ़ारेनहाइट है।

तशौज़ ग्रौर मारी में गर्मी का तापमान प्राय: एक-सा ही रहता है। जुलाई में मारी का ग्रौसत तापमान ८६ ग्रंश के ग्रास-पास ग्रौर तशौज़ का ८२ ग्रंश फ़ारेनहाइट के ग्रास-पास है। फिर भी तशौज़ क्षेत्र में वनस्पति उगने का काल मारी की ग्रपेक्षा २८ या ३० दिन कम होता है, जिसके कारण तशौज़ के सामूहिक फ़ार्मों में ग्रच्छे रेशे की कपास के उत्पादन में बाधा पड़ती है। इन फ़ार्मों में कपास की जल्दी पकनेवाली प्राय: वही क़िस्में पैदा की जाती हैं जो ग्रधिकांशतया उज़बेकिस्तान ग्रौर उत्तरी ताजिकिस्तान में पैदा होती हैं। जो भी हो, तशौज़ क्षेत्र मध्य एशिया में कपास पैदा करनेवाले मुख्य क्षेत्रों में से एक है।

कपास के ग्रलावा सामूहिक फ़ार्मों में जौ, गेहूं ग्रौर धान बोया जाता है। यहां की जलवायु ग्रौर मिट्टी में साग-सब्ज़ियों, ख़रबूज़ों ग्रौर फलों की खेती काफ़ी ग्रच्छी होती है। तशौज़ का सरदा सारे सोवियत संघ में बहुत पसंद किया जाता है। प्रसिद्ध चार्दज्हू का सरदा वस्तुत: तशौज़ का ही सरदा है जिसे चार्दज्हू का नाम इसी कारण दिया गया था कि उसे चार्दज्हू होकर नदी द्वारा ले जाया जाता था।

तशौज़ की लुसेरने घास भी काफ़ी प्रसिद्ध है। चारे का पौधा होने के ग्रलावा वह खेतों में कपास के साथ साथ भी उगती है। कपास की उपज बढ़ाने के लिए बारी बारी से कपास ग्रौर लुसेरने बोना हितकर सिद्ध हुग्रा है। एक ज़माना था जब कि तशौज़ की लुसेरने के बीज ग्रन्य सोवियत प्रजातंत्रों में लाये जाते थे ग्रौर विदेशों को भेजे जाते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध-काल में सामूहिक कृषकों ने इस मूल्यवान फ़सल की ग्रोर कम ध्यान दिया था, लेकिन इस समय इसपर पहले जैसा ही ग्रधिक ध्यान दिया जा रहा है।

लुसेरने से मिट्टी की संरचना में विकास होता है। इससे भी ग्रधिक ज़रूरी बात यह है कि उससे मिट्टी में नाइट्रोजन जमा होने में मदद मिलती है जिसके कारण कपास के पौधों को विशेष रूप से पौष्टिक तत्व मिल जाते हैं।

लुसेरने ग्रपनी विशेषता के कारण तशौज़, मारी, चार्दज्हू तथा तुर्कमनिया के ग्रन्य क्षेत्रों के उन खेतों के लिए ग्रनिवार्य हो गयी है जहां की भूमि में नमक मिलता है। लुसेरने की विशेषता यह है कि उसकी जड़ें ज़मीन में गहराई तक चली जाती हैं ग्रौर

लवण घुले पानी तक पहुंच जाती हैं। लुसेरने के कारण ये लवण ऊपर सतह तक नहीं पहुंच पाते। यह सिद्ध हो चुका है कि जिस भूमि पर दो या तीन वर्ष तक लुसेरने पैदा हो चुकी है उसमें नमक की मात्रा दो या तीन गुनी कम होगी। इसके अलावा भूगर्भस्थ पानी बहुत गहराई में बहता है जो इस दृष्टि से उपयोगी है कि उसमें घुले हुए लवण धरातलसे कम गहराई पर पाये जानेवाले ज़मीन की ऊपरी सतह तक जल्दी नहीं आ पाते और उस प्रकार उनका दुष्प्रभाव खेती पर जल की अपेक्षा अधिक नहीं पड़ पाता।

तुर्कमनिया में लवणयुक्त भूमि प्रायः हर जगह देखने को मिलती है। नेबित-दाग़ चारों ओर से केल्कोर खार से घिरा हुआ है जो जाड़े में एक झील की भांति लगता है। ग्रीष्म-काल में यह इतना श्वेत और चमकीला होता है कि यदि उसमें गर्मी न हो तो लोग उसे भ्रमवश खेतों पर पड़े हुए बर्फ़ के एक कम्बल ही के समान समझने लगेंगे। गर्मी में मुर्ग़ाब नख़लिस्तान में बड़े बड़े क्षेत्रों में सफ़ेद पाउडर छिटका-सा मिलता है। चार्दज्हू क्षेत्र की सड़कों के किनारे किनारे सफ़ेद झिल्ली से ढके हुए ढेरों खेत अप्रत्याशित स्थानों तक में दिखाई पड़ते हैं। यह झिल्ली या पाउडर वही नमक है जो ज़मीन से बाहर निकल आया है। भूगर्भस्थ पानी धरातल पर आता है और फिर भाप बनकर उड़ जाता है, फलतः उसका लवण ज़मीन की सतह पर ही छूट जाता है।

जहां भूगर्भस्थ पानी ज़मीन में अधिक गहराई पर होता है वहां वह कृषि के लिए ख़तरनाक नहीं होता। दुर्भाग्यवश तुर्कमनिया के नख़लिस्तानों में भूगर्भस्थ पानी प्रायः सतह के समीप मिलता है और यदि भूमि की अच्छी-ख़ासी सिंचाई हो जाये, तो भू-कर्षण के सिद्धान्तों के अनुसार ज़मीन के नीचे का पानी, सय लवण के, ऊपर आ जायेगा। पानी के सूख जाने के पश्चात् लवण न केवल पेड़-पौधों की बाढ़ ही रोक देता है वरन् वृक्षों और फ़सलों को भी नष्ट कर डालता है।

पानी के भाप बनने की क्रिया जितनी ही तेज़ होगी लवण उतनी ही जल्दी और अधिक छूटेगा। मध्य एशिया की गर्म और सूखी जलवायु में यह क्रिया बहुत तेज़ होती है। उदाहरणार्थ, ताशक़न्द में वर्षा तथा बर्फ़ की मात्रा की तुलना में भाप

तिगुनी अधिक बनती है। तशौज़ में यह अनुपात ३०:१ है जब कि गर्मी के कुछ महीनों में वह १००:१ और कभी कभी २००:१ भी हो जाता है।

जैसे जैसे लवण मिट्टी की ऊपरी सतहों पर छूटता जाता है वैसे ही वैसे उससे न केवल फ़सलें नष्ट होती हैं अपितु मकान तक धराशायी हो जाते हैं और टेकनिकल संरचनाओं को भी क्षति पहुंचती है। लवण लोहे को खा डालता है, लकड़ी को सड़ा देता है और पक्की ईंटों को राख कर देता है। प्राचीन इमारतों की मिट्टी की मोटी मोटी दीवारें तक ऐसी प्रतीत होती हैं मानो नीचे नीचे सड़ गयी हों। यह कारगुज़ारी लवण की है। फलतः इन क्षेत्रों में इमारतों, पानी के पाइपों, खम्भों तथा अन्य समस्त भवनों के भूगर्भस्थ भागों को लवण के हानिकर प्रभावों से बचाने के लिए यह आवश्यक है कि उनपर ख़ास तौर से वैज्ञानिक प्रक्रियाएं की जायें। जिस समय पुराने ख़ीवा और बुख़ारा के लोगों के पास लवण से अप्रभावित रहनेवाले ऐसे सामानों की कमी पड़ जाती थी जो इमारतों में नींव डालने के काम आते थे उस समय वे सूखे सरकण्डे का प्रयोग करते थे जो बहुत-सी इमारतों तथा मकानों को नष्ट होने से बचा लेता था। लवण ही यहां की प्राचीन इमारतों के शीघ्र नष्ट हो जाने का कारण रहा है। लोग प्रायः समझते हैं कि इमारतों के नष्ट होने का कारण विध्वंसात्मक युद्ध अथवा भूकम्प ही होता है। किन्तु मध्य एशिया में ऐसी बात नहीं है। यहां के ढेरों मकान तथा दीवालें इसी कारण गिर पड़ी थीं कि उनमें लवण की मात्रा उचित सीमा से अधिक थी।

सोवियत शासन-काल में लवण नष्ट करने के संबंध में पूरी पूरी कार्यवाही की गयी। लुसेरने के बाद कपास और कपास के बाद लुसेरने की खेती से फ़सलें तो अच्छी होती ही हैं, साथ ही भगर्भस्थ जल भी अधिक गहराई में पहुंच जाता है। फलतः यदि उचित रूप से फ़सलों को बारी बारी से बोया जाये तो भूमि को लवणहीन बनाने में बड़ी सहायता मिलेगी।

एक दूसरा अच्छा तरीक़ा है ज़मीन को धोना। जाड़े तथा वसन्त-काल के प्रारम्भ में, जब तापमान कम होते हैं, पानी लवणयुक्त खेतों में पहुंचाया जाता है। इससे लवण पानी में घुल जाता है, और जब पानी ज़मीन में जाने लगता है तो वह अपने साथ लवण को भी ले जाता है। स्थानीय कहावत है कि जाड़े में

पानी नमक को ज़मीन के अन्दर 'दबा देता' है। यदि लवणयुक्त यह पानी विशेष जल-निकासी-नहरों और संग्राहकों में बहा लिया जाये तो उसका अर्थ होगा कि ज़मीन धुल गयी है।

ठीक ठीक सिंचाई, लुसेरने तथा कपास की बारी बारी से खेती, बेकार जल निकालने के लिए बनायी गयी निकासी-नहरों और संग्राहकों के उपयोग से तशौज़ के सामूहिक फ़ार्मों की लवणयुक्त भूमि की वह समस्या हल हो जायेगी जो न जाने कितने प्राचीन काल से उनके सिर का दर्द बनी रही है। इस प्रकार वे फ़ार्म उस हज़ारों एकड़ भूमि का सदुपयोग कर सकेंगे जिसे स्थानीय ज़मींदारों और खानों ने इसीलिए त्याग दिया था कि उनके पास भूमि की ठीक ठीक सिंचाई करने के कौशल का अभाव था।

सन् १९५४ में एक ३१० मील लम्बा सामान्य संग्राहक बनाया गया था जो तशौज़ क्षेत्र के और उज़बेक ख़ोरेज़म के बहुत-से ज़िलों का बेकार पानी बहा ले जाता है। इसका नाम है दरियालिक संग्राहक। एतदर्थ दरियालिक के शुष्क तल का प्रयोग किया गया था। इस व्यवस्था से तशौज़ क्षेत्र में भूगर्भस्थ पानी की निकासी की समस्या प्रायः हल हो चुकी है।

तुर्कमान प्रजातंत्र की स्थापना के बाद के इन चौंतिस वर्षों में तशौज़ का क्षेत्र ख़ीवा ख़ानशाही के एक पुराने प्रान्त से बढ़कर सोवियत संघ का एक समुन्नत कपासोत्पादक क्षेत्र हो गया है।

तशौज़ के प्रसिद्ध सामूहिक फ़ार्मों के कार्यों और उनकी सफलताओं का ज्ञान प्रायः सारे देश को है। जिस समय उन क्षेत्रों में, जहां फ़सलें नहरों के पानी की सिंचाई पर निर्भर होती हैं, सिंचाई की नयी प्रणाली का आन्दोलन आरम्भ हुआ था उस समय तशौज़ क्षेत्र के बड़े बड़े खेतों को ही नयी प्रणाली का परीक्षण करने तथा उसकी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए चुना गया था।

भविष्य-मार्ग

१

तुर्कमनिया की यात्रा में हमारे सामने ऐसे बहुत-से अवसर आये थे जब हमें अतीत की ओर देखना पड़ा था। आइये, हम भविष्य पर भी एक दृष्टि डालें और कल्पना करें कि करा-कुम की नहर तुर्कमान प्रजातन्त्र की समुन्नति में अपना कितना योग देगी।

नहर का पहला कार्य मुर्गाब और तेजेन के नख़लिस्तानों की सूखी भूमि की सिंचाई करना है। नहर केरकी नगर के निकट आमू-दरिया से आरम्भ होती है। इसकी एक विशेषता यह है कि इसका पानी अपने आप बहता है और उसे हेड-डैमों की ज़रूरत नहीं पड़ती। अपने सारे मार्ग पर उसका जल-सतह आमू-दरिया से नीची रहेगी।

अपने ऊपरी क्षेत्र में नहर उस बसागा-केरकी नहर को आत्मसात् कर लेती है जिसका निर्माण सन् १९३० में हुआ था। बसागा-केरकी नहर सोवियत सरकार की प्रथम सिंचाई-योजनाओं में से एक थी। इसकी लम्बाई २३ मील है अथवा करा-कुम नहर के पहले सेक्शन का सिर्फ़ बारहवां भाग। लेकिन २८ वर्ष पूर्व जब यह छोटी-सी नहर खुली थी उस समय यह एक बड़ी भारी विजय समझी जाती थी और उसके निर्माताओं की प्रशस्ति में कविताएं और गीत रचे गये थे।

करा-कुम के प्रथम बोलशेविक निर्माण ने मरुभूमि के निवासियों में यह आशा पैदा कर दी थी कि वह दिन शीघ्र ही आयेगा जब आमू-दरिया का पानी बीसों नहीं सैकड़ों मीलों तक मरुभूमि के प्रदेश में प्रवेश करेगा।

और वह दिन निकट आ रहा है।

इस समय जो नहर निर्माणाधीन है उससे संबद्ध योजनाओं में सोवियत इंजीनियरों ने आमू-दरिया के पानी को बसागा-केरकी नहर से बहाकर रेगिस्तान में ले जाने के अपने परीक्षण को कार्यान्वित करने का निश्चय किया था। बसागा-केरकी नहर से बहने के पश्चात् आमू-दरिया का पानी वर्तमान केलिफ़ स्पिलवे से होता हुआ केलिफ़ उज़बोई तक गया जहां उसने एक झील का निर्माण किया। यह झील मुख्य नहर का उद्गम है और साथ ही यहां कीचड़ भी जमा होता है।

उज़बोई का अर्थ है एक सूखा हुआ जल-मार्ग। केलिफ़ उज़बोई वह नाम है जो प्रायः उन गहरे खड्डों को दिया जाता है जो केरकी से शुरू होकर करा-कुम के दक्षिण-पूर्वी भाग से होते हुए ऊच-अजी के रेलवे स्टेशन तक जाते हैं। ऐसा ख्याल किया जाता है कि ये खड्ड किसी प्राचीन नदी के जल-मार्ग के चिह्न हैं। दूसरा उज़बोई, जिसके कुछ चिह्न नेबित-दाग़ के निकट दिखाई पड़ते हैं, भौगोलिक उल्लेखों में पश्चिमी उज़बोई के नाम से विख्यात है। दोनों उज़बोइयों में कोई पारस्परिक संबंध नहीं है। वे एक दूसरे से सैकड़ों मील दूर स्थित हैं।

केलिफ़ जलाशय के आगे करा-कुम नहर मुख्य मरुभूमि में प्रवेश करती है और १४२ मील की यह दुष्कर यात्रा पूरी कर लेने के पश्चात् बैराम-अली के पूर्व ज़ख़मत स्टेशन के निकट रेलवे-लाइन तक पहुंचती है।

वहां से नहर पश्चिम की ओर मारी की तरफ़ बढ़ती तथा अपना पानी मुर्गाब नख़लिस्तान की मुख्य और वितरक नहरों को देती है। हम पहले ही कह चुके हैं कि इस नहर के पूर्ण हो जाने पर उक्त नख़लिस्तान का क्षेत्रफल दूना हो जायेगा।

इस भारी निर्माण-कार्य में निर्माताओं को इसलिए और आसानी होती है कि पानी उत्तर-पश्चिम की ओर ढालों से उतरता हुआ अपने मार्ग में पड़नेवाली समस्त बाधाओं को स्वयं ही पार कर लेता है।

ग्रामू-दरिया से लेकर मुर्ग़ाब तक नहर की लम्बाई २६० मील होगी।

नहर का दूसरा भाग मारी ग्रौर तेजेन के बीच होगा। इस भाग की लम्बाई १४३ मील होगी।

यदि हम ग्रौर भविष्य में देखें तो हम निर्माताग्रों को तीसरे भाग के निर्माण में व्यस्त देख सकेंगे। यह भाग ग्रामू-दरिया के पानी को कॉख़का ग्रौर ग्रशकाबाद होते हुए तेजेन से बहारदेन तक ले जायेगा।

जैसा हम ऊपर कह चुके हैं, उक्त तीनों ही भागों पर प्राकृतिक रूप से पहाड़ी ढालों से उतरता हुग्रा जल निर्माताग्रों के काम को ग्रासान बना देगा।

परन्तु इसका ग्रर्थ यह नहीं कि उन्हें कठिनाइयों का मुक़ाबला न करना होगा। निर्माताग्रों के सामने ग्रनेकानेक कठिनाइयां ग्रायेंगी ग्रौर वे उन्हें दूर करेंगे।

पहली कठिनाई पानी में घुल-मिल जानेवाली मिट्टी की है जिससे सदा नहर के भर जाने का भय बना रहता है।

दूसरी कठिनाई ज़मीन में पानी के छन जाने की है। इसमें सन्देह नहीं कि नहर का एक भाग ऐसी मिट्टी से होकर जायेगा जहां पानी के छन जाने की सम्भावना नहीं है, लेकिन फिर भी नहर का काफ़ी बड़ा भाग बालू पर है। यहां पानी के ज़मीन में छनने की ग्राशंका है। कीचड़ के कारण यह ख़तरा दूर होने में सहायता मिलेगी क्योंकि जब वह नीचे बैठेगी तो तह पर एक गेमी सतह बना लेगी जिससे छनने की प्रक्रिया कम से कम हो जायेगी।

तीसरी कठिनाई तटवर्ती बालू के उड़कर पानी के तल में बैठ जाने की है।

सोवियत सरकार निर्माताग्रों को शक्तिशाली मशीनें देने की व्यवस्था कर रही है। मिट्टी निकालनेवाली बड़ी बड़ी सक्शन-ड्रज मशीनें काम कर ही रही हैं ग्रौर नहर पर ग्रारम्भ से लेकर ग्रन्त तक पूरे ज़ोर-शोर से काम हो रहा है।

२

नहर के खुल जाने से प्रजातंत्र की सूखी भूमि के लिए सिंचाई की एक स्थायी प्रणाली की व्यवस्था हो सकेगी। इसके फलस्वरूप नयी भूमि के विकास की नींव पड़ेगी।

नहर प्रजातंत्र में न केवल बंजर-भूमि को उपजाऊ बनाने के कार्य में मदद देगी, अपितु उससे सामूहिक फ़ार्मों के चरागाहों को भी सभी मौसमों में ताज़ा पानी मिल सकेगा।

केरकी से लेकर मारी तक एक जल-मार्ग बनेगा जो नहर के दूसरे भाग के खुल जाने पर तेजेन तक चला जायेगा। फलत: सम्प्रति कगान होते हुए रेल द्वारा घुमा-फिराकर भेजा जानेवाला माल बजरों, बेड़ों तथा विशेष प्रकार के जलयानों द्वारा भेजा जा सकेगा। यात्रियों के आने-जाने के लिए तेज़ और आरामदेह स्टीमरों की व्यवस्था की जायेगी। नया जलाशय उन पक्षियों को भी शरण देगा जो जाड़ों में गर्म स्थानों के लिए परेशान रहते हैं। बरखानयुक्त किनारों के बीच बीच नहर तथा जलाशय में मछली पकड़नेवाली मोटर-बोटें और शिकारियों की नावें भी दिखाई पड़ने लगेंगी। किनारों पर सेब, नाशपाती, ख़ूबानी, बेर तथा अन्य फलों के वृक्ष लगाये जायेंगे।

नहर द्वारा सिंचित भूमि में सफ़ेद कपास के अलावा भूरी, हरी, नीली तथा अन्य उन क़िस्मों की कपास का भी उत्पादन किया जा सकेगा जिनके लिए कृत्रिम रंगाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। इयोलोतान निर्वाचन-केन्द्र में पहले से ही रंगीन कपास पैदा की जाने लगी है।

सरकार द्वारा प्रचारित निर्देशों से पता चलता है कि प्रजातंत्र में आगामी कुछ वर्षों में कपास साफ़ करनेवाली पांच नयी मिलें हो जायेंगी और सम्प्रति बैराम-अली और इयोलोतान में जो मिलें काम कर रही हैं उनका प्रसार तथा पुनर्निर्माण किया जायेगा। यह भी सम्भव है कि बैराम-अली, मारी अथवा इयोलोतान में सूती वस्त्रों का एक कम्बाइन और बन जाये। ऐसी दशा में बुनकरों तथा कतुओं को प्रशिक्षण देने के लिए कुशल श्रमिक युवक अशकाबाद से आयेंगे।

दूसरी सम्भावना यह है कि दक्षिणी करा-कुम में स्थित सामूहिक तथा सोवियत फ़ार्म गन्ने की खेती भी शुरू करेंगे और निर्वाचन द्वारा तुर्कमनिया में इसकी खेती को सम्भव बनाया जा सकेगा।

करा-कुम नहर कुगितांग के निकट आरम्भ होगी। कुगितांग के संबंध में कठिनाई यह थी कि इसकी आबादी कम थी और वह बाक़ी प्रजातंत्र से विच्छिन्न था। इस

नगर के साथ यातायात उज़बेकिस्तान स्थित कगान रेलवे-स्टेशन से होकर होता था। नहर द्वारा सम्पूर्ण चार्दज्हू क्षेत्र के आमू-दरिया पार के भूखंड में एक सुविधाजनक जल-मार्ग की व्यवस्था हो सकेगी। यह जल-मार्ग चार्दज्हू का संबंध तुर्कमनिया के केन्द्रीय भागों से स्थापित करेगा।

बैराम-अली, मारी तथा तेजेन की भी काया-पलट हो जायेगी। नहर के समस्त भागों के खुल जाने के पश्चात् अशकाबाद का भी नक़्शा बदल जायेगा। इन सभी स्थानों में हरियाली है और अधिक होगी, तथा मालियों के कार्य में बाधा पहुंचानेवाला जलाभाव न रहेगा। दुनिया में ऐसा एक भी पुष्प नहीं जो तुर्कमनिया के नगरों में न खिल सकता हो। सोवियत संघ के अन्य किन्हीं नगरों में भी और सम्भवतः सारी दुनिया में सूर्य का उतना प्रकाश नहीं आ पाता जितना तुर्कमनिस्तान के नगरों में आता है। नगर के बीच से नहर के बहने के कारण फूलों और वृक्षों के क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति की जा सकती है।

सड़क की पगडंडियों पर अंगूर की लताएं होंगी जो नीचे चलनेवाले व्यक्ति पर बराबर साया करती जायेंगी। शिशु-गृहों, स्कूलों, पुस्तकालयों और अस्पतालों का तो नक़्शा ही बदल जायेगा और वे फूलों और पत्तियों के बने हुए महल लगने लगेंगे।

ये सब ऐसी बातें हैं जो निश्चय ही होंगी। किन्तु यह सब स्वतः तो होगा नही। इसके लिए प्रयास करने होंगे। करा-कुम की नहर, जिसका पानी मरुभूमि के भीतरी इलाक़ों में प्रवेश करने ही लगा है; कपास की असीम खेती, जो उन स्थानों पर की जायेगी जहां आज परती भूमि और लवणयुक्त दलदलें हैं; नयी नयी मिलें और कारख़ाने, जो उन स्थानों पर बनेंगे जहां आज कुछ भी नहीं है, बदले हुए नगर, सिंचित चरागाहों में लाखों भेड़ें तथा अन्य पशु, अत्रेक के किनारे किनारे ज़ैतून या खजूर की नयी कृषि, गसन-कुली और चेलेकेन के तटों पर बिछी हुई हज़ारों टन मछलियां – ये सारी बातें उन हज़ारों हज़ारों सोवियत नर-नारियों के सम्मिलित प्रयासों के फलस्वरूप होंगी जो कम्यूनिस्ट पार्टी की छत्र-छाया में कम्युनिज़्म के निर्माण का एक महान् कार्य सम्पन्न कर रही हैं।

जैसे ही जैसे योजनाएं कार्यान्वित होती हैं वैसे ही वैसे उनसे दूसरी योजनाओं का उद्‌भव होता है। और ये योजनाएं नयी नयी पंचवर्षीय योजनाओं की रूपरेखाएं तैयार करती हैं। एक विजय दूसरी को जन्म देती है। एक महान् खोज-कार्य दूसरे की उत्पत्ति करता है। और यह क्रम बराबर चलता रहता है।

सम्प्रति सोवियत जनता अपने देश में जो कुछ भी कर रही है वह इस बात का प्रतीक है कि वह उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रही है। इसी भविष्य के लिए सोवियत नर-नारियों ने लाखों बलिदान किये हैं।

भविष्य का संकल्प सत्य होगा और इसलिए होगा कि बहुत-सी क़ौमों वाले सोवियत देश की जनता उसके लिए प्राणपण से जुटी हुई है और पिछली कुछ दशाब्दियों के इतिहास उसके प्रयासों की सफलताओं को मूर्त रूप दे चुके हैं। इन्हीं दशाब्दियों में तो विशाल सोवियत भूमि की पूर्णरूपेण काया-पलट हुई थी। अब तो तुर्कमनिया की शुष्क, कठोर और आतपस्नात भूमि भी सृजन शक्ति का योग पाकर खिल रही है, सजीव हो रही है।

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार, मास्को,
सोवियत संघ।